Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ya Samaj Foundation Chennai

C. K.
L. B.

omain. Gurukul Kangri Colle

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILE

131659

Stock Verification-2024

131659

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILE

बाल-भारती

चैत्र-वैशाख १८८२

अप्रैल १९६०

३५ नए पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

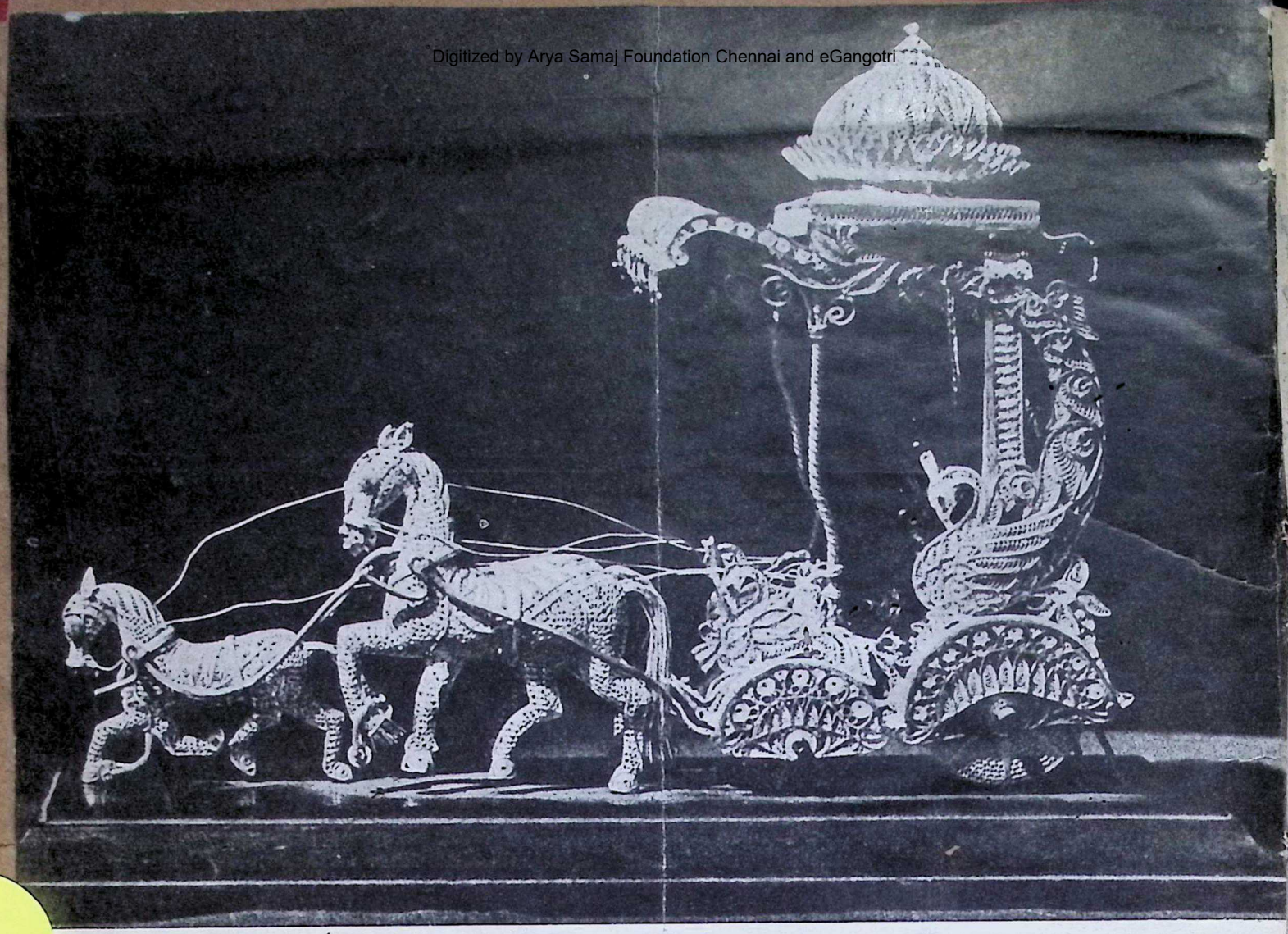

तारकशी के इस काम में सजावट की बहुत सी खूबसूरत चीजें बनाई जाती हैं ।

उड़ीसा का तारकशी का काम

हम में से बहुत से लोगों ने कभी-न-कभी चांदी के महीन तार का खूबसूरत काम देखा होगा और उसकी प्रशंसा की होगी । पिछले दशक में साड़ी और कोटों पर लगाने वाले पिनों, जंजीरों और अंगूठियों तथा बालों में लगाने वाले पिनों का काफी रिवाज रहा है । ये कुछ ऐसे उपहार थे जो कम खर्च भी थे, खूब पसंद भी किए जाते थे और जिन से महिलाएं बहुत खुश हुआ करती थीं । पहले तारकशी का यह काम पुरुषों के इस्तेमाल की चीजों पर किया जाता था । पिछली शताब्दी में हुक्का, पानदान और इत्रदान इसी तरीके से बड़े परिश्रम और साधना के साथ बनाए जाते थे ।

तारकशी का काम सोने या चांदी का बहुत खूबसूरत जालीदार काम होता है । इस काम के लिए कटक और, शायद आपको आश्चर्य हो, दक्षिण में तिरुचिरापल्ली बहुत प्रसिद्ध रहे हैं । दक्षिण भारत से यह कला पूर्ण रूप से लुप्त हो गई, परन्तु उड़ीसा में यह उन्नति करती रही और अब बंगाल, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में भी कई प्रकार का तारकशी का काम होता है ।

तार के ये सुन्दर जाले-से किस तरह से बनाए जाते होंगे ? अत्यधिक कुशल कारीगर अपना सामान खुद छांटते हैं और डिजाइनों के ढांचे तैयार करते हैं । इस काम के लिए सच्ची चांदी ही इस्तेमाल की जाती है । वस्तु का ढांचा बनाने के लिए इसमें थोड़ा-बहुत सीसा भी मिलाया जाता है । चांदी की पतली-पतली तारें बना ली जाती हैं और फिर उन्हें इस तरह से मरोड़ा जाता है जिससे वे बारीक रस्सी की तरह मालूम होने लगती हैं । जब ढांचा तैयार हो जाता है तो इस तार को आवश्यक लम्बाई के अनुसार काट लिया जाता है । कुशल कारीगर इसको अपनी अंगुली और अंगूठी में पकड़ कर एक तरफ से आधा मोड़ लेता है । तब वह इस तार को ढांचे में फंसा देता है और एक के बाद दूसरा तार जोड़ता जाता है । अन्त में ढांचे के अन्दरूनी हिस्से पर मुड़ी हुई तारें ही तारें नजर आने लगती हैं । इसके बाद सुनार का काम रह जाता है । वह इस ढांचे पर टांका लगाने वाला मसाला छिड़कता है । फिर इस ढांचे को अभ्रक के एक टुकड़े के ऊपर

(शेष तीसरे कवर पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

बच्चों के स्वास्थ्य के रक्षक

नौनिहाल बेबी टानिक

बच्चों की कमज़ोरी में काम आता है

नौनिहाल ग्राइप सीरप

बच्चों के क़ब्ज़, बदहज़मी दांत निकलना, और अफ़ारा में काम आता है

हमदर्द दवाखाना

(ट्रस्ट) देहली

बाल-भारती

संख्या ११ चैत्र-वैशाख १८८२ वर्ष १२

अप्रैल १९६०

सम्पादक मण्डल

विष्णु प्रभाकर — मोहन राव

के० शंकर पिल्ले — मन्मथनाथ गुप्त

फ्रीडा वेदी — सावित्री देवी वर्मा (मंत्री)

विषय-सूची

नए साल की बधाई (कविता)	निरंकार देव सेवक	२
चतुर राजकुमारी	प्रह्लादचन्द्र जोशी	३
हैवाथा की कथा	लांगफेलो	७
सत्य कहां है ?	पुरुषोत्तम जोशी	९
मिठाई का डिब्बा	कुन्दन लाल	१०
दानवीर खीमा हडालिया	कमलादेवी	११
टेढ़ी खीर	विश्वनाथ गुप्त	१३
आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान	देवीदयाल चतुर्वेदी	१४
बाल भारती चित्रावली		१५-१८
वसन्त	विष्णु प्रसाद शर्मा	१९
मादाम क्यूरी	सत्यकुमार	१९
शकुन्तला	वीरेश्वर भट्टाचार्य	२०
दीदी की चिट्ठी		२३
मेरा बगीचा	स्वतन्त्र कुमार जैन	२५
चीनी कहावतें	कान्तिलाल मोदी	२५
कुछ नवीन पुस्तकें		२७
नया वष (कविता)	कान्ति देवी जैन	२७
गदहे नहीं तम्बाक खाते ! (कविता)	मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'	२७
उपहार खुद तैयार करें	आशादेवी	२९
अवन्ती की करतूतें	राधाकृष्ण चौधरी	३१

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता—सावित्री देवी वर्मा
पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८
वार्षिक मूल्य—१ डालर या ७ शिलिंग
एक प्रति—३५ नये पैसे, १० सेंट या ८ पेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

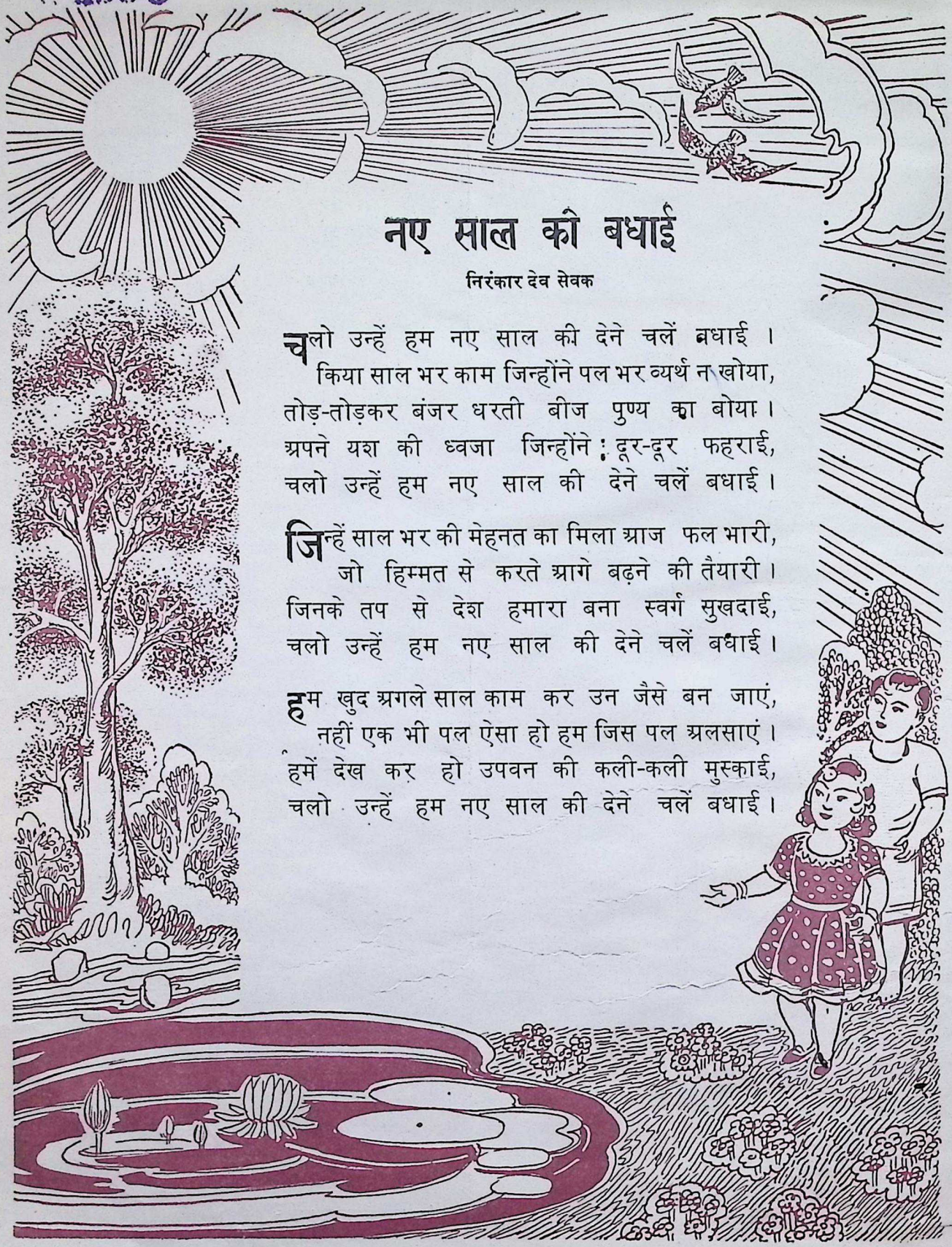

नए साल की बधाई

निरंकार देव सेवक

चलो उन्हें हम नए साल की देने चलें बधाई ।
किया साल भर काम जिन्होंने पल भर व्यर्थ न खोया,
तोड़-तोड़कर बंजर धरती बीज पुण्य का बोया ।
अपने यश की ध्वजा जिन्होंने दूर-दूर फहराई,
चलो उन्हें हम नए साल की देने चलें बधाई ।

जिन्हें साल भर की मेहनत का मिला आज फल भारी,
जो हिम्मत से करते आगे बढ़ने की तैयारी ।
जिनके तप से देश हमारा बना स्वर्ग सुखदाई,
चलो उन्हें हम नए साल की देने चलें बधाई ।

हम खुद अगले साल काम कर उन जैसे बन जाएं,
नहीं एक भी पल ऐसा हो हम जिस पल अलसाएं ।
हमें देख कर हो उपवन की कली-कली मुस्काई,
चलो उन्हें हम नए साल की देने चलें बधाई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर राजकुमारी

COMPILED

प्रह्लादचन्द्र जोशी

एक राजकुमार तथा दीवान के लड़के में गहरी मित्रता थी। राजा की मृत्यु हो चुकी थी। राजा ने अपने लड़के की शादी बचपन में कर दी थी, किन्तु राजकुमार को इसका पता न था। एक बार राजकुमार ने इसी सम्बन्ध में अपनी माता से पूछा, तब माता ने कहा--बेटा! तेरी शादी तो जब तू बहुत ही छोटा था, तभी कर दी गई थी।

राजकुमार अपनी माता की आज्ञा लेकर, नाई के साथ राजकुमारी को लेने चल पड़ा।

वे गांव की सीमा के पास बने तालाब के किनारे पहुंच गए। तालाब के पास ही राजा के खेत थे। राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ अपने भुट्टे के खेत की मेंड़ पर बैठी अपने बाल सुखा रही थी।

नाई बड़ा चालाक था। उसने कहा--कुंवर साहब, यह लड़की तो राजकुमारी जान पड़ती है। इससे कुछ बातचीत ही की जाए। राजकुमार ने परखने के लिए उस लड़की को सुना कर कहा--

एड़ी थारी लचलची ओ गोरी!
सिर का लांबा केस।
थारा भुट्टा म्हाने चखाय दे ओ गोरी!
हम परदेसी महमान री।

(हे गोरी! तुम्हारे पैर बहुत ही सुकुमार हैं। तुम्हारे सिर पर सघन, सुन्दर केश हैं। तुम हम परदेशी मेहमानों को खाने के लिए खेत से भुट्टे तो दे दो।)

राजकुमारी ने जब यह सुना तो बड़ी हैरान हुई। उसने सहेली से पूछा--क्यों सहेली, यह परदेसी मेहमान कौन हैं? सहेली ने कहा--कोई राहगीर होगा। किन्तु इसने आपसे प्रश्न किया है, अतः इसका उत्तर तो इसे मिलना ही चाहिए।

तब राजकुमारी ने प्रत्युत्तर दिया--

काचा भुट्टा कचमचा रे केवरा।
नख दिए रस जाय।
घर धणी ने चाख्या नहीं रे केवरा।
पर घर कैसे खाय जी।

(हे कुंवर, अभी खेत के भुट्टे इतने कच्चे हैं कि यदि उन पर नाखून भी लग जाए तो रस बहने लगता है। साथ ही अभी घर के लोगों ने भी नए नहीं किए हैं। फिर इन्हें दूसरों को किस प्रकार खिलाया जा सकता है?)

उत्तर सुनकर राजकुमार चलने को तैयार हुआ। किन्तु नाई फिर बोला--कुंवर साहब! इनसे एक और सवाल कर ही लेना चाहिए। तब राजकुमार बोला --

काचा भुट्टा कचमचा ओ गोरी,
नख दिए रस जाए।
घर धणी जो माल धणी ओ केवरी,
मन माने सब खाय री।

(हे सुन्दरी! यह माना कि खेत के भुट्टे अभी कच्चे हैं, नाखून भी लग जाए, तो रस बहने लगता है। किन्तु हे कुंवरी! जो घर का मालिक होता है वह तो माल का भी मालिक होता है और जब भी मन में आए खा सकता है।)

प्रश्न सुनकर राजकुमारी ने उत्तर में कहा--

पक्का कच्चा भुट्टा घर धणी केवरा,
कचे पके सब खाय।
थें तो पागल हो गया रे केवरा,
सोची या सब जाणजे।

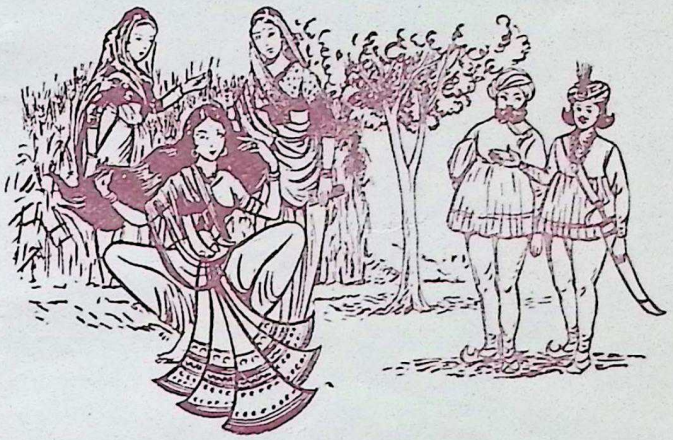

राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ अपने भुट्टे के खेत की मेंड़ पर बैठी अपने बाल सुखा रही थी।

(हे कुंवर! भुट्टे कच्चे हों या पके हुए, घर के मालिक सब प्रकार से खा सकते हैं। किन्तु हे कुंवर, तुम तो पागल हो गए हो, इसमें कोई सन्देह नहीं।)

इतना सुनकर नाई व कुंवर वहां से आगे चल दिए। चलते-चलते नगर के समीप आ गए। इतने में सहेलियों के साथ राजकुमारी भी आ पहुंची। तब नाई ने कहा--कुंवर साहब, इनसे एक बार फिर से प्रश्न करना चाहिए। तब राजकुमार ने कहा--

उलट पुलट थारी नदियां बहे ओ केंवरी,
देखे नैना निहार।
भूल्या ने गेलो बताय दे ओ केवरी,
कर दे ऊंची बाय री।

(हे कुंवरी! तेरी बातें बड़ी ही उल्टी-सीधी पहेलियां हैं और तू हमें घूर-घूर कर देखती है। हे कुंवरी, तू अपनी बांहों को उठाकर, हम जैसे भूले हुओं को रास्ता तो बतला दे।)

राजकुमारी ने तत्काल उत्तर दिया --

हरिया हरिया दोई रुंखड़ा,
सीतल वाकी छांय।
वाके नीचे गेलो निकले रे केवरा,
दुखे हमारी बाय री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सामने दो हरे-हरे वृक्ष खड़े हैं, जिनकी छाया बहुत ही ठंडी है। उन्हीं वृक्षों के नीचे से रास्ता निकलता है। उस रास्ते से चले जाओ। मैं कब तक इशारा करके बतलाऊं, मेरी बाहें दुखती हैं।)

उत्तर सुनकर नाई व राजकुमार आगे चल पड़े। चलते-चलते उन्हें प्यास लग गई। दोनों गांव के समीप ही पनघट पर पहुंच गए। वहां भी देखा कि राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ पानी लेने पनघट पर आ पहुंची है। तब तो राजकुमार ने फिर उससे परिचय बढ़ाना चाहा। राजकुमार ने कहा--

कणां धरां की उखड़ी ओ केवरी,
कई छे थोको नांवरी।
मुख से जरा तो बोल दो ओ केवरी,
सोची बात बताय जी।

(तुम किस की लड़की हो? तथा तुम्हारा नाम क्या है? जरा मुंह से बोलकर मुझे सत्य बात तो बतला दो?)

राजकुमारी ने प्रत्युत्तर दिया--

हम हंसा की हंसणी रे केवरा,
हंस हमरी जात।
तुम जात के कागले रे केवरा,
हम से काई काम जी।

(हे कुंवर! मैं तो किसी हंस पुरुष की हंसिनी हूं, किन्तु तुम तो जाति के कौए दीखते हो, तुम्हारा मुझ से क्या काम है?)

राजकुमारी इतना कह कर पानी खींचने लगी। किन्तु फिर भी राजकुमार को सन्तोष नहीं हुआ। उसने फिर एक प्रश्न किया --

रतन कुवो मुख सोकड़ों ओ केवरी,
लोवी रेसम डोर।
खेंचत खेंचत कहियों दुखे ओ केवरी,
घटे शरीर को जोर री।

(हे कुंवरी! इस रतन कुएं का मुंह बहुत ही छोटा है और लम्बी रेशम की डोरी से तुम पानी खींच रही हो। पानी खींचने से तुम्हारे हाथ दुखने लग गए होंगे और शरीर की ताकत भी कम हो गई होगी।)

उत्तर में राजकुमारी फिर कुछ कहना चाहती थी। किन्तु उसने परदेशी के मुंह लगना उचित न समझा और अपने घर की राह ली। इधर राजकुमार भी नाई के साथ नगर में राजमहल के समीप पहुंचा। राजकुमारी भी घर पहुंच कर अपने सिर पर रखा बेहड़ा उतार ही रही थी कि राजकुमार के द्वारा वहां के राजा का नाम पूछने पर उसे कुछ शक पैदा हो गया। राजकुमारी ने सोचा कि हो न हो यही मेरे पति हैं। मन में ऐसा विचार आते ही, वह अपनी सहेली से संकेत में कहने लगी--

धोला घोड़ा खमखम्या ओ सहेली,
केसरियो असवार।
राजा को घर पूछे छे,
घड़ल्यो लीजो उतार जी।

(हे सहेली, श्वेत रंग का घोड़ा है, जिस पर केसरिया वेशधारी एक सवार बैठा हुआ है। वह राजा के घर का पता पूछ रहा है। इससे मेरे मन में शक हो रहा है कि कहीं ये ही मेरे पति न हों। अतः तू जल्दी से मेरे सिर पर रखा पानी का घड़ा उतार ले।)

इतने में राजा के नौकर दौड़े आए। राजकुमार को ले जाकर कचहरी में बिठलाया गया। उनकी अनेक प्रकार से खातिरदारी होने लगी। पर नाई की पूछताछ किसी ने न की। नाई बड़ा चालाक था। उसने ऊपर से तो जाहिर होने नहीं दिया, पर मन में कसक रखी। निदान उसने समय पाकर एक तरकीब निकाली। उसने राजकुमार से कहा कि आप यहां संभल कर रहें, नहीं तो धोखा खाना पड़ेगा। रात को संभलकर सोना, कारण कि इस महल में चुड़ैलों का वास है।

राजकुमार नाई के कहने में आ गया। रात्रि को राजकुमार के लिए अन्तःपुर में सोने का खास प्रबन्ध किया गया। जब भोजन का समय हुआ, तब राजकुमारी अनेक प्रकार के व्यंजनों से सजी हुई भोजन की थाली लेकर राजकुमार के शयन कक्ष की ओर आई, किन्तु उनके कक्ष के किवाड़ लगे देखकर ठिठक गई।

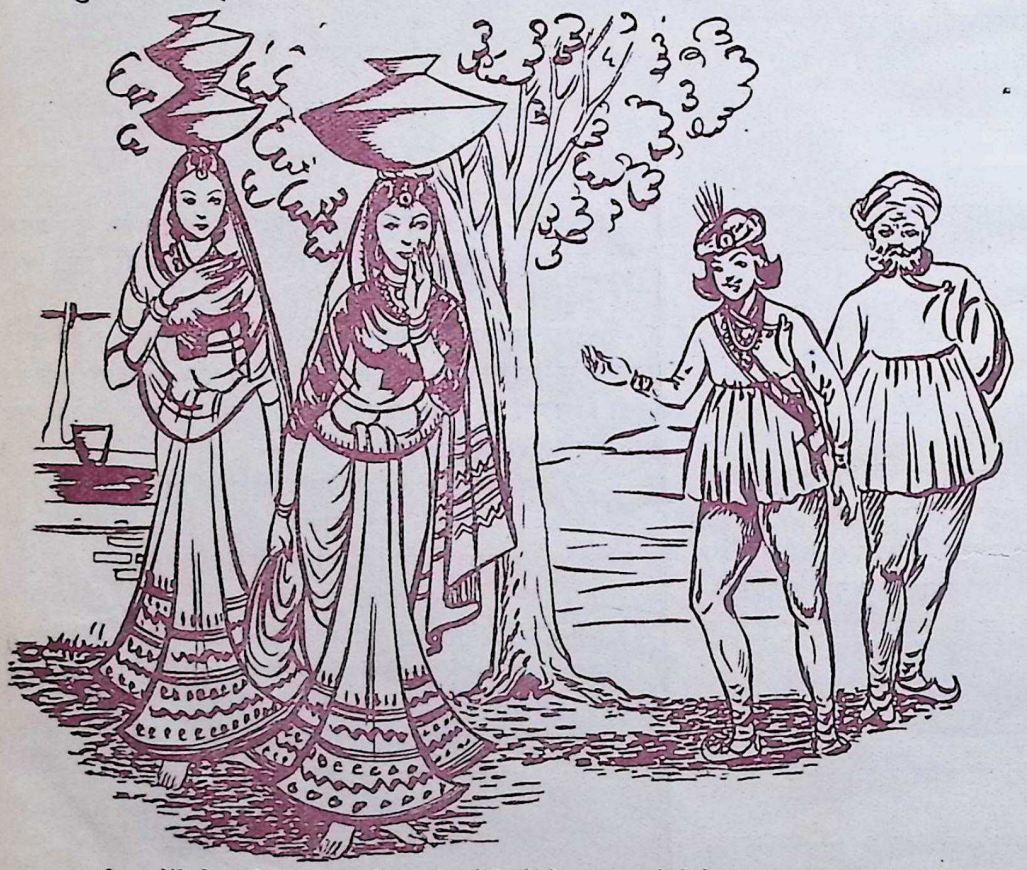

वहां भी उन्होंने देखा कि राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ पानी लेने पनघट पर आ पहुंची है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY Haridwar

वह अपनी सहेली से संकेत में कहने लगी—

इधर राजकुमार तो सजग था ही, उसने जैसे ही पायलों की छमाछम सुनी, उसे पसीना हो आया। उसने चुड़ैलों के विषय में भी ऐसा ही सुन रखा था, अतः भयभीत हो गया।

राजकुमारी ने आवाज दी, किन्तु राजकुमार ने किवाड़ नहीं खोले। तब राजकुमारी ने कहा:—

जगमग जगमग दविलो जले रे केवरा,
पलंग लहेरियों खाय।
ओड़ दुसाला सोय रहे केवरा,
किस बिद आवे वेरण नींद जी।

(हे राजकुमार, अभी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ है। सारा महल रोशनी के प्रकाश से जगमगा रहा है। पलंग की लहरदार रस्सी बल खा रही है और तुम अभी से कंबल ओढ़ कर सो रहे हो। इस बैरिन नींद के वश में तुम इतनी जल्दी कैसे हो गए?)

तब राजकुमार ने पहले की तरह व्यंग किया —

हम तो जात के कागले केवरी,
हम से काई काम जी।

(हे राजकुमारी! हम तो जाति के कौए हैं और तुम तो हंसिनी हो? हम से तुम्हें क्या काम हो सकता है।

इसी प्रकार बहुत सी मिन्नतें करने पर भी राजकुमार ने किवाड़ नहीं खोले। निदान थककर व गुस्से में राजकुमारी ने थाल फेंक दिया और अपने शयन कक्ष में चली गई।

दूसरे दिन हठ करके राजकुमार, राजकुमारी को लेकर नाई के साथ वापस चल दिया। राजकुमार को उसके ससुर ने अपार धन दौलत व हाथी घोड़े देकर विदा किया। नाई को गाड़ी के पीछे-पीछे पैदल चलना पड़ा था। उसने फिर एक नई चाल निकाली। उसने राजकुमार से कहा कि तुम्हारी पत्नी तो डायन है। देखना, जब गाड़ी चलेगी तब इसका सिर मुर्दों जैसा हिलने लगेगा। गाड़ी चलने पर ठीक वैसा ही हुआ। किन्तु मूर्ख राजकुमार यह भी न समझ सका कि ऊंची-नीची धरती पर गाड़ी चलने पर ऐसा होना स्वाभाविक है। उसने गुस्से में आकर अपनी पत्नी को वहीं घोर जंगल में छोड़ दिया और स्वयं नाई के साथ अपने घर वापस आ गया। घर आकर उसने सारा हाल ज्यों का त्यों अपनी माता को कह सुनाया। माता ने जब लड़के की बीती सुनी तो समझ गई कि यह सब धूर्त नाई की करतूत है। उसने तुरन्त दीवान के लड़के को बुलवाया और समझा कर राजकुमार के साथ राजकुमारी को ढूंढने को भेज दिया।

इधर राजकुमारी जंगल में अकेले बड़ी परेशान हुई। किन्तु वह थी बहुत चतुर। उसने हिम्मत नहीं त्यागी।

उसी जंगल में एक बुढ़िया लकड़ियां बीनने आया करती थी। उसने राजकुमारी का हाल सुना तो इस मौके से फायदा उठाना चाहा। उसने विचार किया कि अपने राजा के कोई पत्नी नहीं है, यदि इसे राजा को सौंप देंगे तो बहुत इनाम हाथ लगेगा। बस, बुढ़िया ने तुरन्त एक गाड़ी मंगवाकर राजकुमारी को उसमें बिठाया, फिर फुसलाकर अपने गांव की ओर चल पड़ी। राजकुमारी चतुर थी। उसने अपना हार तोड़ दिया। वह एक-एक दाना रास्ते में बिखेरती गई। राजकुमारी को लेकर बुढ़िया अपने गांव आ गई। वह राजकुमारी को महल दिखाने का लोभ देकर उसे राजमहल में ले आई तथा उसे राजा को सुपुर्द कर दिया। राजा ने बुढ़िया को इनाम देकर विदा किया।

इस राजा का नाम था गिलन। उसने राजकुमारी से शादी का प्रस्ताव किया। किन्तु चतुर राजकुमारी ने यह कहा कि वह एक व्रत कर रही है, अतः जब तक व्रत पूरा नहीं हो जाता, तब तक विवाह नहीं करेगी। साथ ही यह भी आग्रह किया कि उसके रहने के लिए एक नया महल बनवा दिया जाए। राजा ने नया महल बनवाने के लिए सैकड़ों कारीगरों

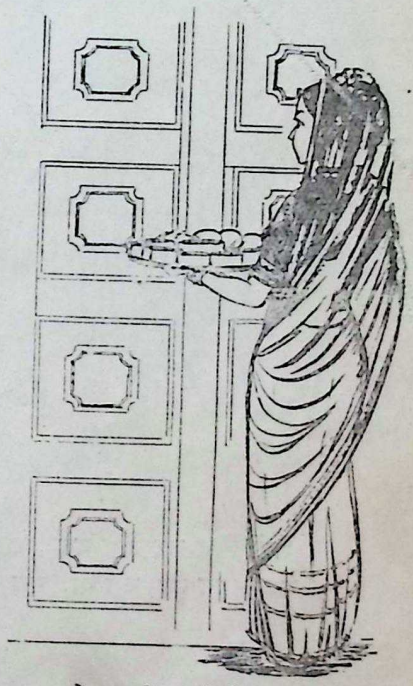

वह भोजन की थाली लेकर राजकुमार के शयन कक्ष की ओर आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं मज़दूरों को नियुक्त कर दिया। राजकुमारी के लिए नया भवन बनने लगा।

इधर राजकुमार अपने दोस्त दीवान-पुत्र को लेकर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसी स्थान पर आया, जहां उन्होंने राजकुमारी को छोड़ दिया था। किन्तु वहां उसको न पाकर बहुत दुखी हुए। अकस्मात् दीवान के बेटे को हीरों के दाने चमकते हुए दिखलाई दिए। उसी के आधार पर चलते-चलते वे उस राजा के राज्य में आ गए। चतुर दीवान कुंवर ने राज्य की समस्त हालात थोड़े ही समय में मालूम कर लिए। दीवान कुंवर व राजकुमार दोनों मिल कर उसी जगह, जहां नई रानी के लिए नया महल बन रहा था, मजदूरी को जाने लगे।

एक दिन वे दोनों काम कर रहे थे कि अकस्मात राजकुमारी की दृष्टि उन पर पड़ी। उसने कातर होकर कहा—

अणी माथे बांध्यो सेवरो रे केवरा,
अणी माथे ढोइए गार।
राजा गिलन से काम पड़्यो कांई,
हरि लगावे बेड़ा पार जी।

(हे राजकुमार, तुमने इसी सिर के ऊपर किसी दिन शादी का मुकुट धारण किया था, और आज इसी सिर पर गारा ढो रहे हो? आज राजा गिलन से तुम्हें काम पड़ा है, मेरा तो बेड़ा पार ईश्वर के ही हाथ है। अर्थात् ईश्वर ही मुझे इस दुख से उबार सकता है।)

दोनों मिल कर उसी जगह, जहां नई रानी के लिए नया महल बन रहा था, मजदूरी को जाने लगे।

एक दिन वे दोनों काम कर रहे थे कि अकस्मात राजकुमारी की दृष्टि उन पर पड़ी।

दीवान कुंवर ने राजकुमारी को तसल्ली बंधाई कि वे उसे तुरन्त ही यहां से छुड़ा लेंगे।

राजा गिलन की एक लड़की थी। जिसकी माता मर चुकी थी। राजा उसे बड़े लाड़ प्यार से रखता था।

उस राजकुमारी ने राज्य में डोंडी पिटवा रखी थी कि जो कोई उसे चौपड़ में हरा देगा, उसी के साथ वह विवाह करेगी और जो नहीं हरा सकेगा, उसे आजीवन कारावास का दण्ड भुगतना होगा।

एक दिन दीवान कुंवर भी वहां पहुंच गए। उन्होंने वहां की राजकुमारी को चौपड़ में हरा दिया। राजकुमारी ने अपने वचनानुसार दीवान कुंवर से शादी के लिए पिता से कहा। राजा गिलन ने बड़ी धूम धाम से दीवान कुंवर के साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। बहुत सा धन-दौलत, हाथी, घोड़े आदि दान में दिए। साथ ही एक वचन और मांगने को कहा। दीवान कुंवर तो सजग था ही, उसने तुरन्त अपनी पत्नी के साथ भेजने के लिए अपने मित्र की पत्नी को मांग लिया। राजा को अपना वचन निभाने के लिए राजकुमारी लौटानी पड़ी।

दीवान कुंवर अपनी पत्नी, राजकुमार तथा मित्र-पत्नी राजकुमारी को साथ लेकर वापस अपने देश में आया। राज्य में चारों ओर खुशी की लहर फैल गई। बड़ी धूमधाम के साथ इन सबकी अगवानी की गई।

राजकुमार ने राजकुमारी से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। दीवान कुंवर को राज्य में मंत्री पद से सुशोभित किया गया और दुष्ट नाई को सजा दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे

हैवाथा की कथा

(२)

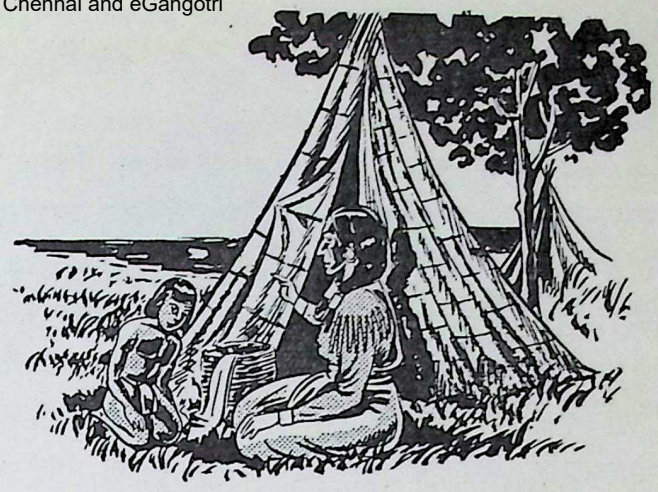

उसके पिता ने जब हैवाथा को देखा तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ । उसने देखा हैवाथा का चेहरा उसकी मां विनोनाह जैसा ही सुन्दर है।

बहुत देर तक वे दोनों बैठे बातें करते रहे। वीर मुडजीकिविस ने अपनी वीरता के शिकार की बहुत सी कहानियां उसे सुनाईं । उसने अपनी खतरनाक यात्राओं का हाल सुनाया । हैवाथा अपने पिता की बातें धीरता से सुनता रहा । लेकिन कभी-कभी वह बड़ा विचलित और परेशान नज़र आता था और गुस्से के मारे कांप-कांप जाता था।

अचानक ही हैवाथा उठ खड़ा हुआ और गुस्से से बोला—ओ! मुडजीकिविस ! लगता है, तुमने ही मेरी मां को मारा है।

यह कहकर हैवाथा ने काली चट्टानों को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला और उन्हें अपने पिता की ओर फेंकने लगा, लेकिन पश्चिमी पवन के राजा मुडजीकिविस ने अपने बल से उन्हें वापस लौटा दिया ।

फिर उन दोनों में बड़ा भयानक मल्लयुद्ध होने लगा । पृथ्वी कांपने लगी, सागर हिलोरें लेने लगा और पहाड़ों में कड़कड़ाहट पैदा होने लगी।

मुडजीकिविस तीन दिन तक बराबर पीछे हटता-हटता भीषण युद्ध करता रहा । पीछे हटते-हटते वे क्षितिज के उस पार तक जा पहुंचे।

मुडजीकिविस ने कहा—ठहरो, बेटा हैवाथा! तुम मुझे मार नहीं सकते। तुम लौट जाओ। घरवालों की सेवा करो , उनके दुख-सुख में हाथ बंटाओ और जब मृत्यु समीप आएगी, तो मैं अपने राज्य में तुम्हें हिस्सा अवश्य दूंगा।

यह सुनकर हैवाथा घर की ओर लौट पड़ा।

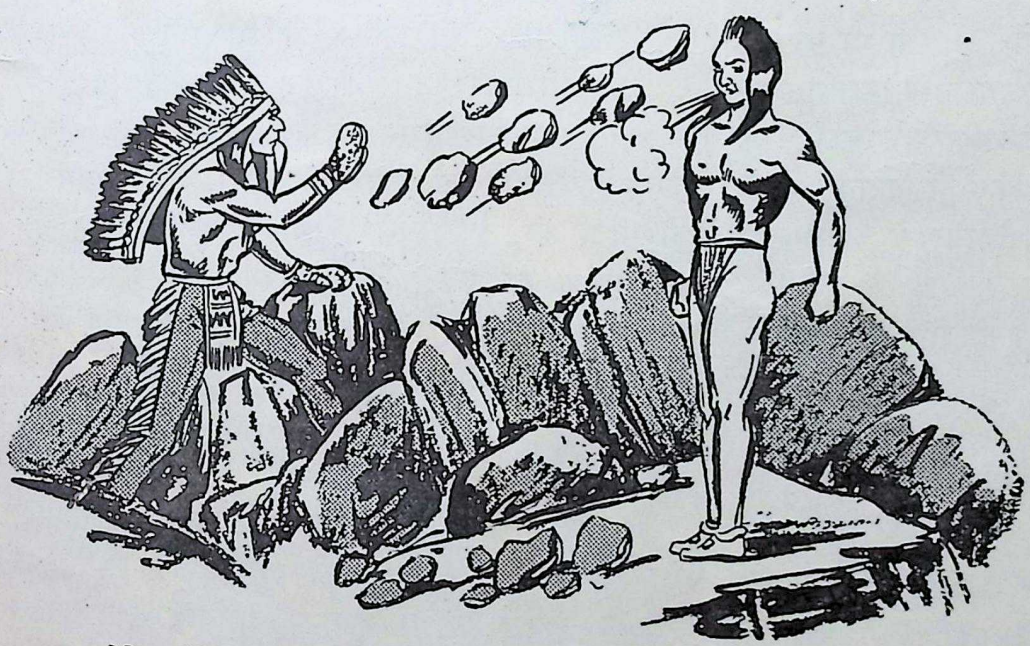

लेकिन पश्चिमी पवन के राजा मुडजीकिविस ने अपने बल से उन्हें वापस लौटा दिया।

रास्ते में वह केवल एक जगह पत्थर के तीर बनाने वाले के यहां ठहरा। उसकी एक सुन्दर लड़की थी, जिसकी आंखें काली, शरीर सुन्दर और सुडौल तथा आवाज बड़ी सुरीली थी । उसका नाम था मिनीहाहा (हँसता जल) । उस लड़की पर उसका मन रीझ गया । पर यह बात उसने किसी से कही नहीं।

जब वह घर पहुंचा, तो सूर्य अस्त हो चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूढ़ी निकोमिस से उसने अपनी यात्रा का सब विवरण कह सुनाया, लेकिन तीर बनाने वाले तथा उसकी कन्या मिनीहाहा का जिक्र नहीं किया।

हैवाथा ने निश्चय किया कि वह जंगल में जाकर आत्म-शुद्धि तथा जनता की भलाई के लिए उपवास करेगा। उसने जंगल में जाकर विगवैम (खेमा) तैयार किया।

पहले दिन वह घने जंगलों में घूमता रहा और भगवान से प्रार्थना की—हे भगवान, हमें कुछ भोजन भेज, ताकि हमें इन भोलेभाले पशु-पक्षियों को न मारना पड़े।

अपने उपवास के चौथे दिन जब कि हैवाथा अपने डेरे के बाहर बैठा था, उसने देखा कि एक युवक जिसकी पोशाक हरे और पीले रंग की है, उसकी ओर आ रहा है।

उस युवक ने पास आकर कहा—मैं अन्न देवता का भेजा हुआ दूत हूं। मैं मनुष्य जाति का मित्र मोण्डामिन हूं। मैं तुम्हें चेतावनी देने तथा समझाने आया हूं कि तुम किस प्रकार की मेहनत तथा कोशिश से वह वस्तु पा सकते हो, जिस के लिए तुमने प्रार्थना और उपवास किया है। पर पहले तुम्हें मुझ को कुश्ती में हराना होगा।

हैवाथा भूख-प्यास से कमजोर हो चला था, पर वह उठा और मोण्डामिन से भिड़ गया। मोण्डामिन को छूते ही उसके शरीर में एक नई शक्ति और स्फूर्ति का संचार हुआ, नई हिम्मत आई। वे दोनों बराबर लड़ते रहे, जितनी देर तक वे लड़े, हैवाथा ने अपने को उतना ही अधिक बलवान पाया।

—आज इतना ही काफी है। कल मैं सूर्यास्त से पहले आऊंगा और तुम्हारी परीक्षा लूंगा।—यह कहकर मोण्डामिन गायब हो गया।

दूसरे दिन मोण्डामिन सूर्यास्त से पहले फिर आया और हैवाथा से बोला—कल तुम हिम्मत से लड़े। अन्न देवता तुम पर जरूर प्रसन्न होंगे। तुम अवश्य विजयी होगे। पर मेरी एक बात मानना। तुम मेरी कब्र ऐसे स्थान पर बनाना जहां खूब वर्षा

इसी प्रकार वहां मक्का के बहुत से पौधे निकल आए।

हो और प्रभात सूर्य का प्रकाश मिले। मुझे जमीन में गाड़ देना और मिट्टी को हल्की और ढीली बना देना और देखो मुझे कोई न छेड़े।

दूसरे दिन हैवाथा और मोण्डामिन में फिर मल्लयुद्ध हुआ? हैवाथा की विजय हुई और मोण्डामिन मारा गया।

जिस प्रकार मोण्डामिन ने बतलाया था, हैवाथा ने ठीक उसी प्रकार उसके शरीर को दफना दिया।

वह रोज मोण्डामिन की कब्र देखने जाता। कुछ दिनों के बाद उसने देखा कि वहां से जहां मोण्डामिन को गाड़ा था, छोटी और कोमल कोपलें निकल रही हैं। एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी। इसी प्रकार वहां मक्का के बहुत से पौधे निकल आए।

हैवाथा ने प्रसन्न होकर कहा—ठीक! यही मोण्डामिन है, मनुष्य जाति का मित्र। यह इस रूप में कब्र से बाहर निकला है।

उसके बाद पतझड़ ने बड़ी हरी पत्तियों को पीले रंग में बदल दिया। पकी हुई कुकड़ियों को इकट्ठा करके हैवाथा ने एक शानदार दावत दी।

[क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य कहां है ?

पुरुषोत्तम जोशी

राजा ब्रह्मदत्त के चार पुत्र थे।

एक दिन इन चारों राजकुमारों के मन में किंशुक (पलाश) का पेड़ देखने की इच्छा हुई। उन्होंने अपने मन की बात सारथी से कही। सारथी ने कहा—अब जब कभी जंगल जाना हुआ तो आप को साथ ले जाकर किंशुक का पेड़ अवश्य दिखा लाऊंगा।

एक दिन सारथी सबसे बड़े राजकुमार को अपने साथ जंगल ले गया और उसे किंशुक का पेड़ दिखाया। उस समय वृक्ष में सिवाय डालियों के कुछ न था। कहीं-कहीं कोपलें फूट रही थीं। पेड़ देखने की इच्छा पूर्ण होने पर कुमार ने कहा—किंशुक का वृक्ष बड़ा तो होता है, परन्तु उसमें फूल-पत्ते नहीं लगते।

दूसरी बार सारथी जंगल गया तो अपने साथ दूसरे राजकुमार को ले जाकर उसे वह पेड़ दिखाया। उस समय पेड़ पूरी तरह से हरे पत्तों से लद गया था। हरे पत्तों वाले इस किंशुक वृक्ष को देख कर राजकुमार बहुत खुश हुआ।

सारथी ने तीसरे राजकुमार को भी ले जाकर वह वृक्ष दिखाया। इस समय किंशुक अपनी पूरी बहार पर था। हरे पत्तों के बीच रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। फूल-पत्तियों से लदे हुए इस सुन्दर पेड़ को देखकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ और बोल उठा—फूलों से लदा यह पेड़ कितना सुन्दर लगता है ? जी चाहता है, इसे देखता रहूं।

फिर एक दिन सारथी सबसे छोटे राजकुमार को भी वह वृक्ष दिखाने ले गया। पतझड़ का मौसम था। उस वृक्ष के सारे फूल-पत्ते झड़ चुके थे और हवा से इधर-उधर बिखरे पड़े थे। चौथे राजकुमार ने किंशुक का यह रूप देखा।

एक दिन चारों राजकुमार एक जगह इकट्ठे होकर ज्ञान की बातें कर रहे थे। इधर-उधर की बातें होते-होते किंशुक वृक्ष की चर्चा चल पड़ी। पहला कुमार बोला कि वृक्ष तो बहुत बड़ा है, परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि उसमें फूल-पत्तियां नहीं लगतीं।

धीरे-धीरे बहस बढ़ कर आपसी तकरार में बदल गई। सब अपने पिता राजा ब्रह्मदत्त के पास पहुंचे और अपनी-अपनी बात कही।

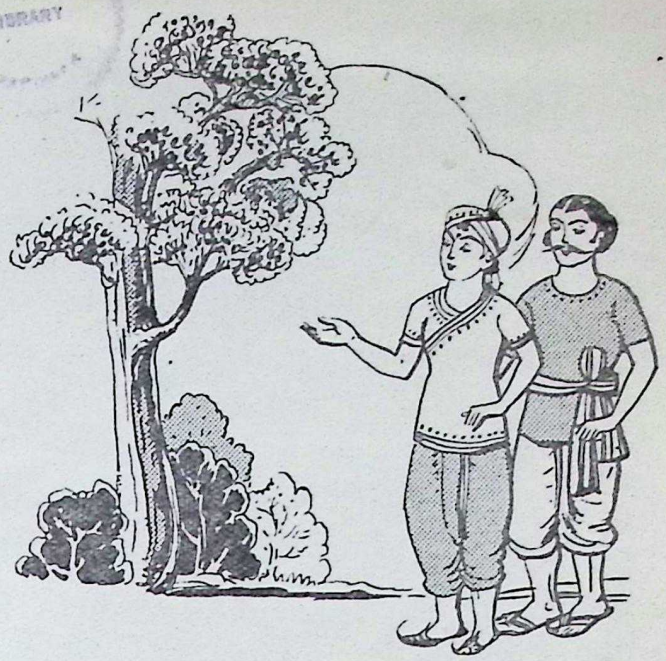

हरे पत्तों वाले इस किंशुक वृक्ष को देख कर राजकुमार बहुत खुश हुआ।

यह सुनकर दूसरा राजकुमार बोला—क्या कहते हो, भाई ? किंशुक के तो बहुत बड़े-बड़े पत्ते होते हैं। वे हरे पत्ते इतने सुन्दर लगते हैं, कि बस देखते ही बनते हैं।

तीसरा राजकुमार बोला—वाह, भाई साहब, आपने भी खूब कही ! किंशुक वृक्ष तो फलों से लदा होता है। बड़े-बड़े हरे पत्तों के बीच खिले रंग-बिरंगे फूलों की शोभा ही न्यारी है। मैंने ऐसा सुन्दर वृक्ष पहले कभी नहीं देखा।

तीनों भाइयों की बातें सुनकर चौथे राजकुमार को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला—आप तीनों किस वृक्ष के सम्बन्ध में बातें कर रहे हैं ? किंशुक वृक्ष में न तो पत्ते होते हैं और न फूल। हां, किसी-किसी डाली पर फल अवश्य लगे होते हैं।

इस प्रकार चारों भाइयों में बहस छिड़ गई। जिसने किंशुक को जिस रूप में देखा था, वह उसे वैसा ही समझ बैठा। सभी एक दूसरे को गलत बता रहे थे। सभी का यह दावा था कि उन्होंने किंशुक वृक्ष अच्छी तरह से देखा है।

धीरे-धीरे बहस बढ़ कर आपसी तकरार में बदल गई। वे अपने पिता राजा ब्रह्मदत्त के पास पहुंचे और अपनी-अपनी बात कही। राजा इनकी बातें समझ गए। उन्होंने समझाया—देखो कुमारो, तुम में से प्रत्येक ने किंशुक को जैसा देखा है, वह ऋतु के अनुसार ठीक है। यदि तुमने दिखाने वाले व्यक्ति से पेड़ देखते समय यह भी पूछा होता, कि दूसरी ऋतुओं में यह कैसा हो जाता है, तो वह तुम्हें समझा देता। परन्तु तुमने उसका अधूरा रूप देखा और उस पर बहस करने बैठ गए।

अज्ञान की नींव पर कहीं ज्ञान का मन्दिर खड़ा हो सकता है क्या ? तुम सब एक दूसरे को गलत समझ रहे हो। वास्तव में अपनी-अपनी जगह तुम सब ठीक हो। परन्तु इस उदाहरण से तुम्हें समझ लेना चाहिए, कि सत्य के लिए कभी-कभी जो फालतू झगड़े उत्पन्न हो जाया करते हैं, वे इसी कारण होते हैं। इसलिए भविष्य में सत्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी बात के प्रत्येक पहलू को तोलना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी करना बुरी बात है

मिठाई का डिब्बा

कुन्दन लाल

जब से बाबा मिठाई का डिब्बा लाए थे, उस समय से घर में बखेड़ा मचा हुआ था। नन्हें बाबू चाहते थे कि किसी तरह इस डिब्बे की मिठाई थोड़ी-थोड़ी करके हर रोज़ उड़ाई जाए। नीना और कमला नन्हें का पीछा न छोड़ती थीं। वह भी मिठाई पर अपना पूरा अधिकार समझती थीं।

आखिर थे वह भी नन्हें बाबू। धुन के पक्के। हिम्मत न हारी। रोज़ किसी न किसी समय मिठाई के डिब्बे के पास पहुंच ही जाते और परमात्मा की करनी, क्या होता कि रोज़ कोई न कोई ऐसी बात हो जाती, जिससे उन्हें मिठाई से हाथ धोना पड़ता।

नीना और कमला ने कई बार भाई की शिकायत भी की थी। परन्तु मां ऐसे क्योंकर मान लेतीं। जब तक खुद न देख लेतीं, सज़ा देनी ठीक न थी। एक दिन ऐसा भी हुआ कि नीना और कमला ने नन्हें को रंगे हाथों जा पकड़ा और खींच-खींच कर मां के पास ले गईं। वहां जाकर नन्हें बाबू ने साफ इन्कार कर दिया और कहा--ये झूठ बोलती हैं। मुझे फंसाना चाहती हैं--यह कह कर रोने लगे, मां ने जाकर देखा। मिठाई का डिब्बा ज्यों का त्यों पड़ा हुआ था और उसमें से कुछ निकाला नहीं गया था। इस पर मां नीना और कमला पर खूब नाराज़ हुईं।

उस दिन नन्हें भइया नीना और कमला को चिढ़ाते रहे, और चटखारे ले-ले कर कहते फिरे--दिलाई सज़ा? और करो शिकायत, बड़ी बनती फिरती थीं।

लेकिन इस बात से नन्हें बाबू को कुछ लाभ न हुआ, क्योंकि उस दिन जब वह फिर मिठाई उड़ाने लगे, तो नीना और कमला फिर कहीं से टपक पड़ीं, इस बार तो यह बाल-बाल बचे, क्योंकि दोनों बहिनें मां को पहले ही कह आई थीं, वह तो सौभाग्य समझो कि मां उस समय कमरे में आईं, जब नन्हें भाग चुके थे, नहीं तो रंगे हाथों पकड़े जाते।

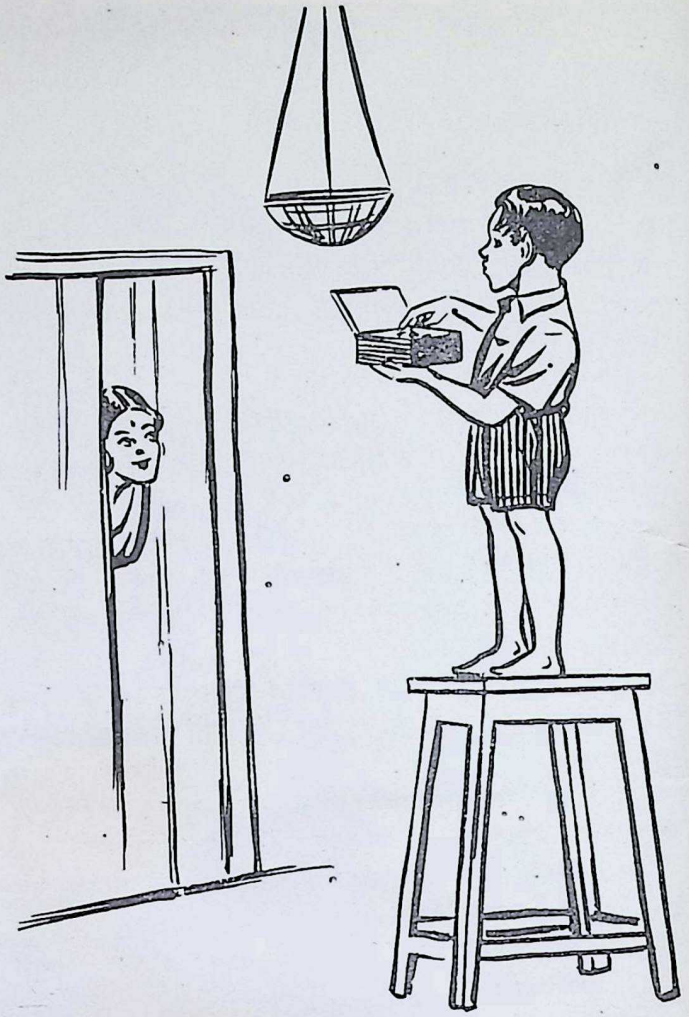

दरवाजे में से किसी ने सिर निकाल कर कहा--बेटा, मैं सब देख रही हूं। नीना और कमला सच ही तो कहती थीं।

आखिर नन्हें बाबू भी कब तक देखते रहते कि मिठाई उनके हाथों तक आए और मुंह तक न जाए। उन्होंने सोचा, दिन के समय मिठाई उड़ाना मुश्किल है। कभी नीना आ जाती है और कभी कमला। और कभी वह डरावनी आंखों वाली बिल्ली। इसलिए उन्होंने ठान लिया कि मिठाई दिन के समय नहीं बल्कि रात को उड़ाई जाए और इसके लिए यह सोचा कि दिन के समय मिठाई के डिब्बे के पास स्टूल रख दिया जाए और रात को जब सब सो जाएं तो मिठाई आराम से खाई जाए।

उस रात वह बिस्तर पर पड़े तारे गिनते रहे,

(शेष पृष्ठ २४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवीर खीमा हडालिया

कमलादेवी

बहुत दिन हुए, सुल्तान मुहम्मद शाह गुजरात में शासन करता था। वह अपने आपको ही सब से बड़ा धनी मानता था। एक दिन दरबार के मुंहजोर चारण सतीदान और सुल्तान में कहा-सुनी हो गई।

बादशाह ने कहा——मैं बड़ा हूं।

सतीदान ने कहा——हमारा साह बड़ा है।

——नहीं, नहीं, मैं बादशाह हूं——सुल्तान बोला।

——हां-हां, आप हमारे साह (बनिया) से बाद (कम) है तभी बादशाह कहलाते है।——सतीदान ने सुल्तान की बात काटते हुए कहा।

सुल्तान इस उत्तर से बहुत चिढ़ गया। अब बादशाह सतीदान को नीचा दिखाने की ताक में रहने लगा। उसकी इच्छा थी कि सतीदान उसे सुल्तान माने, उसकी प्रशंसा के गीत गाए, किन्तु सतीदान ने कभी भी सुल्तान की जी-हुजूरी नहीं की।

इसी बीच लगभग दो साल के बाद गुजरात और सौराष्ट्र में भीषण अकाल पड़ा। सभी लोग भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मरने लगे। सतीदान से यह दृश्य देखा न गया। उसने सुल्तान से जाकर प्रार्थना की——हुजूर, गुजरात और सौराष्ट्र की हालत आपसे छिपी नहीं है। यदि कुछ उचित प्रबन्ध न किया गया तो सारी जनता भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मर जाएगी। अतः कृपया सूचित करें कि आप कितने दिनों तक जनता का भरण-पोषण कर सकेंगे।

सुल्तान ने सतीदान से कागज़ लेकर ६० दिन लिख दिए।

सतीदान दान-पत्र लेकर वीरमगांव होता हुआ सौराष्ट्र के झालावाड़, बढ़वाण और लीम्बड़ी के सभी धनवान लोगों से मिला। सभी ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-पत्र में धन-राशि लिख दी।

सतीदान और आगे बढ़ता गया। अब वह हडालागांव की सरहद में पहुंचा। उसे प्यास लगी। उसके पास लोटा-डोर तो थी, किन्तु अकाल के कारण उसकी छोटी-सी डोर से कुएं से पानी नहीं निकल पा रहा था। अचानक उसकी नजर पास के एक पौंसड़े में गाय-गोरुओं को पानी पिलाते हुए एक ग्रामीण पर पड़ी। सतीदान ने उसी के पास जाकर पानी पिया।

यात्री को अधिक थका-मांदा जान ग्रामीण ने उससे एक दिन उसी के यहां ठहर जाने की प्रार्थना की। पहले तो सतीदान ने बड़ी आनाकानी की, किन्तु ग्रामीण के बहुत कहने-सुनने पर वह एक दिन के लिए उसके यहां ठहर गया।

ग्रामीण ने उसकी बड़ी आव-भगत की। शाम को बड़ी श्रद्धा से सतीदान के पैर दबाते हुए ग्रामीण ने कहा——सचमुच में मैं बड़ा भाग्यशाली हूं। आज परम पूज्य कविराज सतीदानजी हमारी कुटिया में पधारे हैं। हमारी झोपड़ी पवित्र हो गई। पर आप कहां जा रहे हैं, महाराज ?

——पर आप कहां जा रहे हैं, महाराज ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीदान ग्रामीण का यह प्रश्न सुन कर सहसा चौंक से उठे। फिर भी उन्होंने सकुचाते हुए दान-पत्र की बात बता ही दी। दान-धर्म का नाम सुनते ही ग्रामीण ने बड़ी श्रद्धा से कहा––हां, महाराज, यह तो बड़े पुण्य का काम है। जरूर इस धर्म-यज्ञ में सभी को कुछ न कुछ देना चाहिए। अन्न तो बांट कर ही खाना चाहिए, नहीं तो बरकत नहीं रहती। यह तो जनता की अमानत है।

ग्रामीण की यह बात सुनते ही सतीदान ने अपना दान-पत्र उसके आगे बढ़ाकर कहा––तो तुम भी कुछ लिख दो, भाई।

ग्रामीण ने दान-पत्र ले लिया। वह सब के नाम पढ़ गया। उसने भी सब के नीचे ३६० दिन लिखकर और दस्तखत करके दान-पत्र चारण को वापस कर दिया।

सतीदान खीमा हडालिया का नाम पढ़कर अवाक-सा हो गया। वह बड़ी देर तक एकटक उस भोले-भाले ग्रामीण के मुंह की ओर ताकता रहा। उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसे गरीब ग्रामीण ने कैसे इतनी बड़ी बात लिख दी।

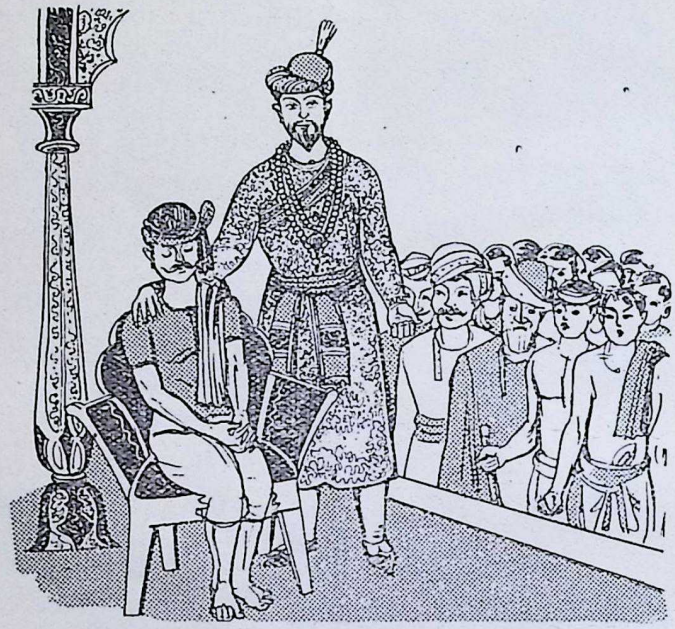

वे अपने सिंहासन से उठकर खीमा के पास चले गए और उसे अपने साथ ले जाकर सिंहासन पर बिठाया।

ग्रामीण ने सतीदान का मतलब समझ लिया। उसने पूछा––क्या सोच रहे हैं, आप ?……अब यहीं से अहमदाबाद वापस चले जाइए। कल भोर होते ही सारे गुजरात और सौराष्ट्र को साल भर तक खाने के लिए अनाज पहुंच जाएगा।

सतीदान खीमा पर बहुत खुश हुआ और वह रास्ते भर उसके गीत गाता हुआ अहमदाबाद वापस लौट गया।

सतीदान ने दान-पत्र ले जाकर सुल्तान के सामने रख दिया। सुल्तान भी बड़ी देर तक खीमा हडालिया के नाम को पढ़ता रहा। फिर उसने बड़ी श्रद्धा से खीमा हडालिया को मन ही मन नमस्कार कर अपना माथा झुका लिया और गदगद होकर बोला––सतीदानजी, मैं उस महान पुरुष के दर्शन करना चाहता हूं।

––जो आज्ञा !––कहकर सतीदान दरबार से बाहर हो गया।

इधर खीमा ने हडालिया के आस-पास के सभी गांवों की बैल-गाड़ियां बुलवा लीं। उसने सभी घरों से दूनी कीमत देकर, सारा अनाज रातों-रात बल-गाड़ियों में खचाखच भरवा कर अहमदाबाद की ओर रवाना करवा दिया। कहते हैं कि इतना अनाज इकट्ठा हो गया था कि गाड़ियों की कतार की पहली गाड़ी अहमदाबाद में और अन्त की गाड़ी हडाला गांव में थी।

सुल्तान यह दृश्य देखकर दंग रह गया। भण्डार में इतना सारा अनाज रखने की जगह तो थी नहीं। अतः जो अनाज कोठियों में भरे जाने के बाद बचा, वह जनता को बांट दिया गया।

दूसरे दिन मुहम्मदशाह का दरबार भरा। दरबार में सभी लोग उपस्थित थे। वहीं एक कोने में खीमा हडालिया भी फटे-पुराने कपड़े पहने बैठा था। सुल्तान को उसे पहचानते देर न लगी। वे अपने सिंहासन से उठकर खीमा के पास चले गए और उसे अपने साथ ले जाकर सिंहासन पर बिठाया।

प्रजा इस प्रकार से खीमा का आदर करते देखकर सुल्तान की जय-जयकार बोल उठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेढ़ी खीर

विश्वनाथ गुप्त

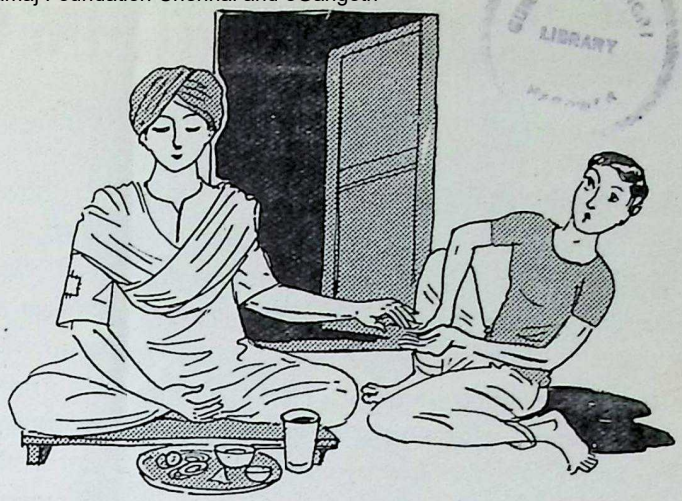

किसी सेठ ने अपने घर पर
सूरदास को दिया निमन्त्रण।
कहा—विप्रवर ! पितृ श्राद्ध है,
आज वहीं करिएगा भोजन।
चला गया तब सेठ वहां से,
यथासमय आ गए विप्रवर।
खीर परोसी उन्हें सेठ ने,
बड़े प्रेम से आसन देकर।
सूरदास ने खीर चखी जब
उन्हें अचम्भा हुआ बड़ा।
पहले कभी न खाई थी बस,
इसीलिए पूछना पड़ा
—यह क्या है थाली में ? —बोले
सूरदास जी हो गम्भीर।
कहा सेठ ने नम्र भाव से
—देव, इसे कहते हैं खीर।
इतने पर भी सूरदास जी,
समझ न पाए उसका भेद।
पूछा—यह होती है कैसी ?
कहा सेठ ने—धवल-सफेद।
समझ न पाए सूरदास जी,
पूछा फिर—सफेद कैसी ?
कहा सेठ ने—आप समझ लें
ठीक वही बगुले जैसी।
किन्तु न सुलझा भेद तभी भी,
उलझा रहा पूर्व जैसा।
प्रश्न किया झट सूरदास ने—
—पर होता बगुला कैसा ?
—बतलाता हूं—कहा सेठ ने
सूरदास जी को तत्काल
—आप तनिक भी ना घबराएं
सुलझा देता हूं मैं जाल।
यह कह अपना हाथ दाहिना
रखा हथेली बाईं पर।
फिर मोड़ा ऊपर से उसको
बगुले की ही नाईं कर।
उसे टटोला जभी विप्र ने
बोल उठे वे रहे न धीर।
—मैं तो इसको खा न सकूंगा,
यह तो है कुछ टेढ़ी खीर।
कठिन काम को तभी लोग सब,
टेढ़ी खीर बताते हैं।
सूरदास की भांति उसे
वे करने से घबराते हैं।

समय की पाबन्दी

. . . नियमितता का गुण जीवन पर्यन्त लाभ देता है। समझदार माता-पिता और अध्यापक बच्चों को हमेशा समय का पाबन्द होने की शिक्षा देते हैं।

बढ़ते हुए बच्चों की एक और अच्छी आदत है जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फूड बिस्कुटों को खाने की; जो स्वास्थ्य-प्रद ढंग से धूप में पके हुए गेहूँ, माल्ट, ग्लूकोज़, दूध आदि से तैयार किये जाते हैं।

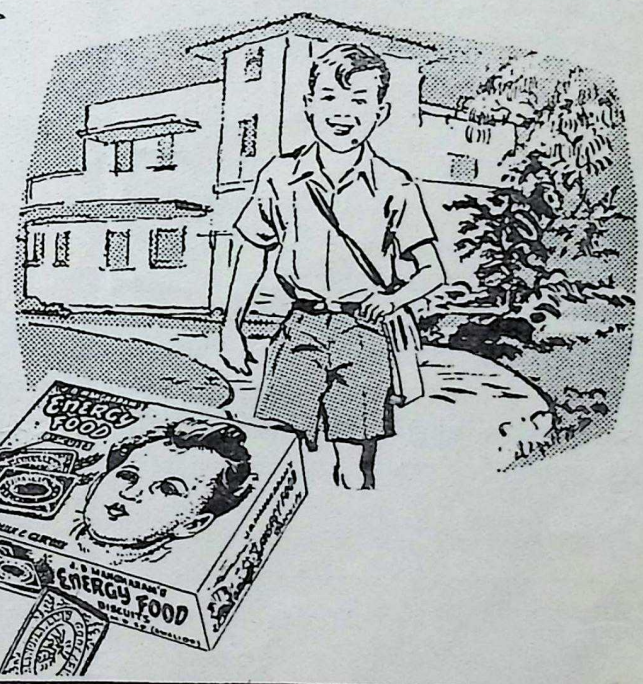

जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी फूड
बिस्कुट

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर, भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान

देवीदयाल चतुर्वेदी

बचपन में हमने अपनी दादी-नानी से ऐसी कहानियां सुनीं थीं, जिनमें किसी दरी या कालीन पर बैठकर जादूगर हवा में उड़ जाता था। यह भी सुना था कि किसी परी के जादू से कोई राजकुमार लकड़ी के घोड़े पर बैठकर हवा में उड़ता हुआ अपने राजमहल में या मनचाहे स्थान पर जा पहुंचता था।

उस समय ऐसी बातें सुनकर हमें हैरानी होती थी। कुछ बड़े हो जाने पर हमें लगता था कि इन बातों में सचाई कम और झूठ अधिक है। कभी-कभी यह भी मन में आता कि दादी-नानी शायद हमारा मन बहलाने के लिए ही ये बातें सुनाया करती हैं।

परन्तु आज यही सब हम अपनी आंखों देख रहे हैं। हवाई जहाज पर बैठकर मनुष्य आकाश में हजारों फुट ऊपर उड़ता है, हजारों मील की यात्रा वह कुछ ही घण्टों में हवा में उड़कर पूरी कर डालता है, ऊंचे-ऊंचे पर्वतों और अगम समुद्रों को वह बड़ी आसानी से लांघता हुआ जहां चाहे चला जाता है। समुद्र में जहाज और धरती पर रेलगाड़ियां, मोटरें आदि हमें एक स्थान से दूसरे तक, कम से कम समय और खर्च में पहुंचा देती हैं।

संसार के किसी भी भाग में और कितनी ही दूरी पर बसे नगरों में अब कोई ऐसी दूरी नहीं रह गई है, जिसे हम अपनी शक्ति और पहुंच से बाहर कह सकें। टेलीफोन के द्वारा हम जब चाहें, न केवल अपने नगर में, बल्कि संसार के किसी भी कोने में बैठे हुए अपने मित्र से बातचीत कर सकते हैं। बेतार के तार द्वारा हम जब चाहें, संसार के किसी भी कोने में अपना समाचार कुछ ही मिनटों में भेज सकते हैं।

यह सब किसी जादू से नहीं होता। यह विज्ञान का चमत्कार है। आज हम वैज्ञानिक अनुसन्धानों के युग में अपना जीवन बिता रहे हैं। पहल की तरह अब हमें रात का अंधेरा दूर करने के लिए मिट्टी का दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं रह गई। बिजली के वैज्ञानिक अनुसन्धान ने हमारी यह आवश्यकता पूरी कर दी। अब हमें न तो मिट्टी का दीपक या तेल चाहिए, न रुई की बाती। एक बटन दबाया नहीं कि बिजली का लट्टू जगमगा उठा और हमारे घर या कमरे का सारा अंधेरा दूर हो गया।

गर्मी के दिनों में शरीर से पसीना बह रहा हो, तो बिजली का पंखा चलाकर हम आसानी से हवा का आनन्द ले सकते हैं। लकड़ी और ईंधन की परशानी भी अब नहीं रही। बिजली के चूल्हे जलाकर हम सर्दियों में अपने कमरे गरम रख सकते हैं और भोजन तथा चाय भी तैयार कर सकत हैं।

बिजली के वैज्ञानिक आविष्कार ने आज हमें ऐसी कितनी ही सुविधाएं दे रखी हैं, जिनकी बात हम पहले सोच भी नहीं सकते थे। वैज्ञानिक अनुसन्धानों में फोटो लेने वाले कैमरे और एक्सरे का चमत्कार भी निराला है। एक पल में ही किसी चलती हुई अथवा खड़ी हुई वस्तु का चित्र कैमरे से ले लिया जाता है। शरीर के अन्दर किसी अंग में कोई विकार हो गया हो, तो एक्सरे द्वारा उसका भी चित्र ले लिया जाता है। इसको देखकर डाक्टर बड़े से बड़े रोगों को भी अच्छा कर देते हैं।

हमारा मनोरंजन करने में भी विज्ञान के अनुसन्धानों ने बड़ी सहायता पहुंचाई है। ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन और बोलते हुए सिनेमा इसके कुछ उदाहरण हैं। रेडियो और टेलीविजन से हम घर बैठे अपना मनोरंजन तो करते ही हैं, साथ ही संसार की प्रगति और नए-नए अविष्कारों का भी हमें पता चल जाता है।

वैज्ञानिक अनुसन्धानों के इतिहास में परमाणु (एटम) शक्ति का चमत्कार सबसे निराला है। दूसरा महायुद्ध समाप्त हो जाने पर, परमाणु-शक्ति का पहला परिचय हमें तब मिला, जब ६ अगस्त १९४५ को परमाणु-बम के विस्फोट ने जापान के हिरोशिमा नगर को पलक मारते भस्म कर दिया। इस विस्फोट ने बड़ी-बड़ी और ऊंची इमारतों को बात की बात में मिट्टी में मिला दिया, लोहे की दीवारों को भाप बनाकर हवा में उड़ा दिया। भूकम्प आ गया। इस विनाश से बचने के लिए जो हजारों प्राणी मकानों, गुफाओं आदि के नीचे जीवित बच गए, उन्हें भी परमाणु-बम की बची-खुची किरणों का बुरी तरह शिकार हो जाना पड़ा और अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। उदजन-बम (हाइड्रोजन-बम) तो और भी भयंकर है।

बहुत लोग यह समझते हैं कि इन वैज्ञानिक अनुसन्धानों का उपयोग मनुष्य का नाश करने में ही सहायक है। परन्तु ऐसा समझ लेना बहुत बड़ी भूल है। परमाणु-शक्ति का उपयोग ऐसे कामों में भी किया जा रहा है, जो मनुष्य के लिए बहुत ही उपयोगी होंगे। बर्फ के बड़े-बड़े पहाड़ों को, इसके सहारे आसानी से तोड़-फोड़कर आने-जाने के मार्ग बनाए जा सकते हैं। वायु-मण्डल की सर्दी-गर्मी को घटा-बढ़ाकर मनचाहा बना लेना, इसके सहारे साधारण सी बात हो गई है।

आजकल लोग राकेट के सहारे चन्द्रमा तथा मंगल ग्रहों पर भी जाने की तैयारी कर रहे हैं। यही नहीं, नकली चन्द्रमा भी बना चुके हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैज्ञानिक अनुसन्धानों से जहां विनाशकारी चीजें बनाई जा रही हैं, वहीं मनुष्य के और संसार के हित की भी अनेक सुविधाएं हो गई हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानों के पहले संसार की उन्नति केवल धर्म पर टिकी हुई थी। अब यह उन्नति विज्ञान पर आ टिकी है। विज्ञान के कारण आज संसार में धर्म की अनेक रूढ़ियां मिट चुकी हैं और बची-खुची भी तेजी से मिटती जा रही हैं। विज्ञान के कारण मनुष्य के रहन-सहन और विचारों में जो प्रगति आ रही है, वह संसार की उन्नति का ही सूचक हैं।

हमारा देश भी वैज्ञानिक अनुसन्धानों में आगे बढ़ रहा है। हमारे देश में भी सर जगदीशचन्द्र बसु और सर प्रफुल्लचन्द्र राय जैसे महान वैज्ञानिक पैदा हुए। श्री जगदीशचन्द्र बसु के अनुसन्धान ने दुनिया को यह बतलाया कि वृक्षों में भी जीव है। वे भी जीवों की तरह दुख-सुख का अनुभव करते हैं। थक जाने पर वे भी आराम करते अथवा सो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ १९ पर देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर दाहिने—सूरजमुखी

नीचे दाएं—रंग-बिरंगे पैंजी

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

नीचे बाएं—यह गुलाब फूलों का राजा
(देशी गुलाब की एक किस्म, जिनकी बहार साल में दो बार अगस्त और फरवरी में आती है।)

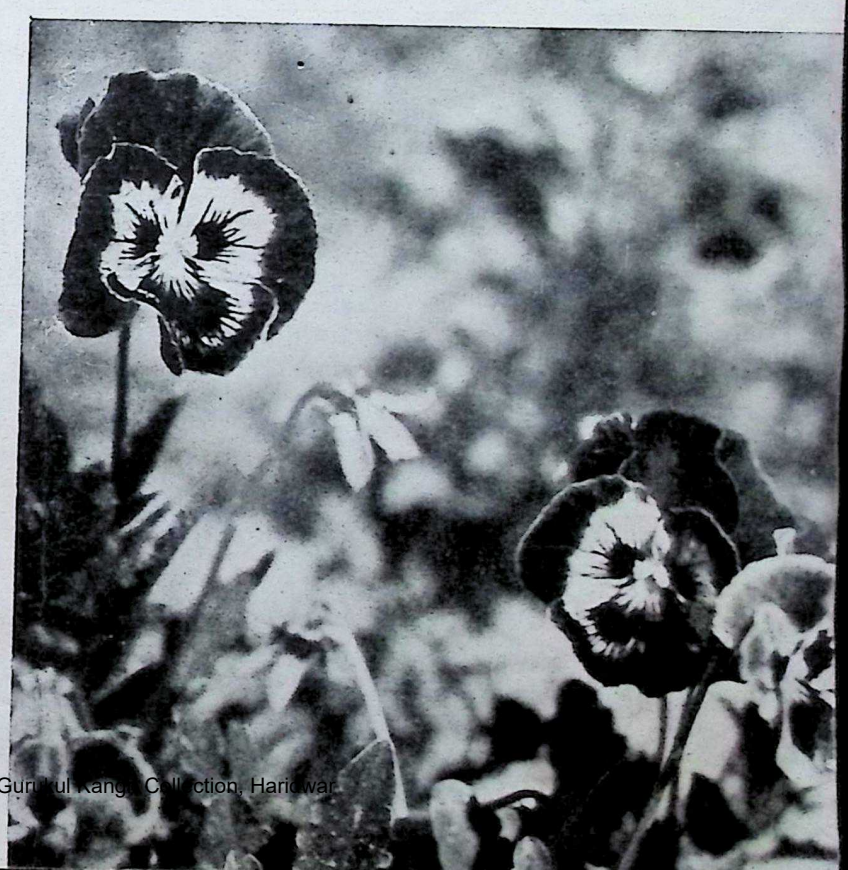

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसन्त

विष्णु प्रसाद शर्मा

प्यारी ऋतु वसन्त की आई,
सर, सरोज सुषमा सरसाई ।
वन उपवन की छटा निराली,
सभी दिशाएं शोभा वाली ।
फूल खिले हैं हर डाली में,
थिरक रही छवि हरियाली में ।
निर्मल जल बहती है नदिया,
सजी हुई दुलहिन सी बगिया ।
जुही, मोगरा और चमेली,
आपस में करते अठखेली ।
बेलें झूमीं चटकीं कलियां,
किसी लता में लटकी फलियां ।
चली हवा सुरभित मतवाली,
लगी कुहकने कोयल काली ।
गूंज उठी है अब अमराई,
खेतों में सरसों लहराई ।

GURUKULA KANGRI LIBRARY Haridwar

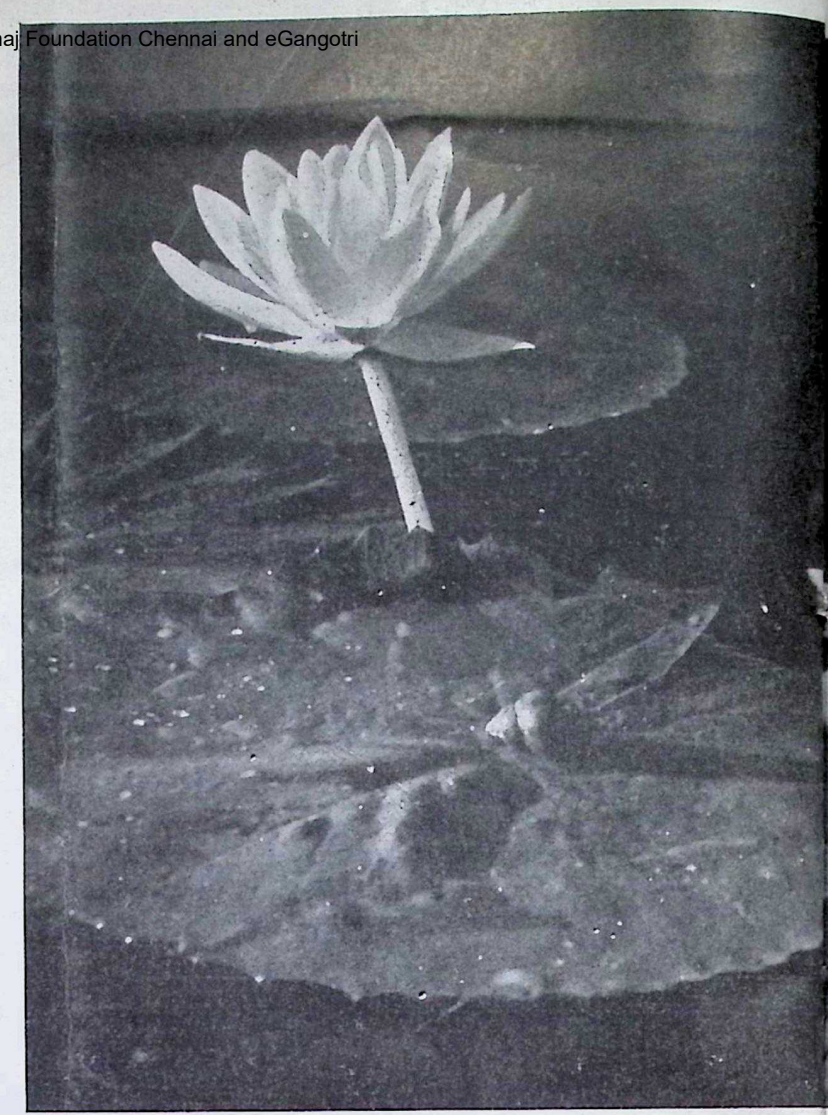

कुमुदनी

तीन फूल साथ फूले
(काश्मीर का एक सुन्दर फूल) रेननकूल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों की बहार

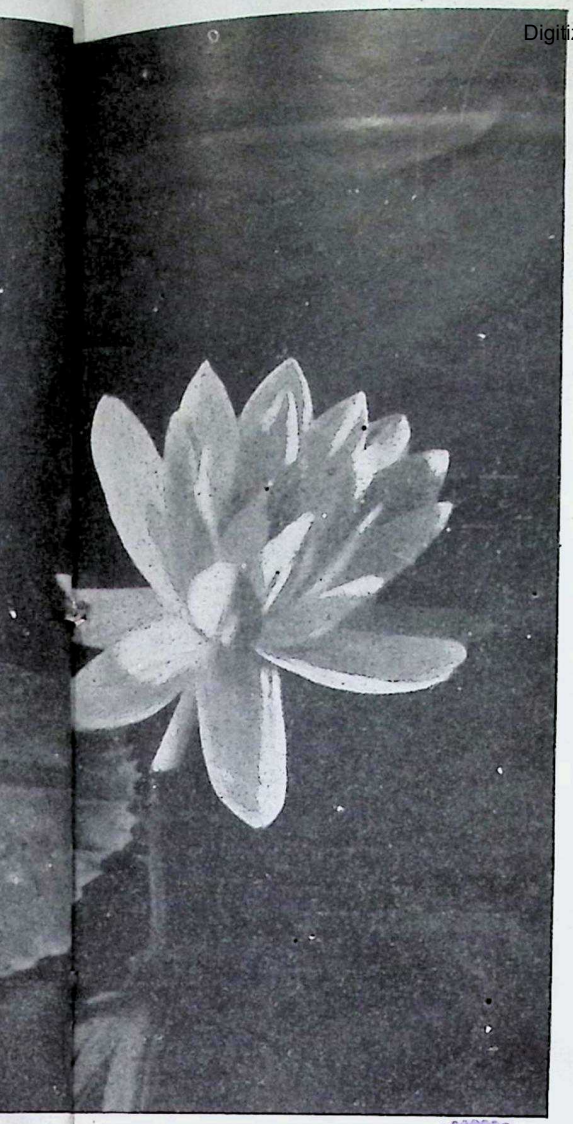

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

की शोभा (मारगेरिटा)

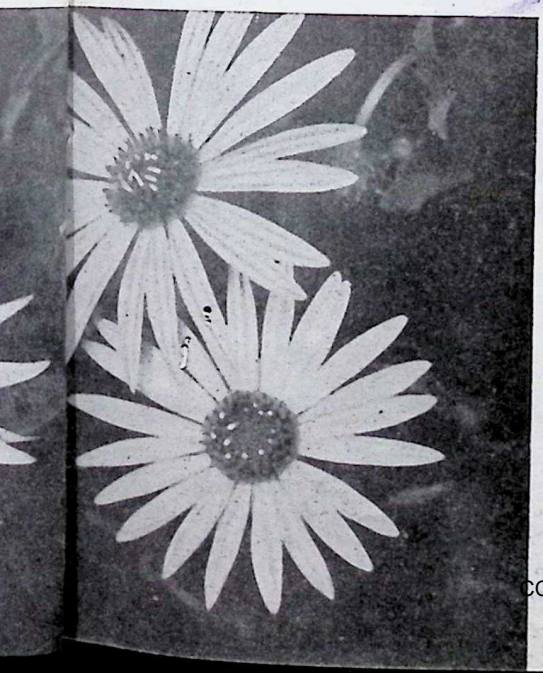

पीले फूलों की बहार (कौसमस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त-कमल

भौंरे गुन-गुन शोर मचाते,
कलियों पर जाकर मंडराते ।

चम्पक फूलों का गुच्छा

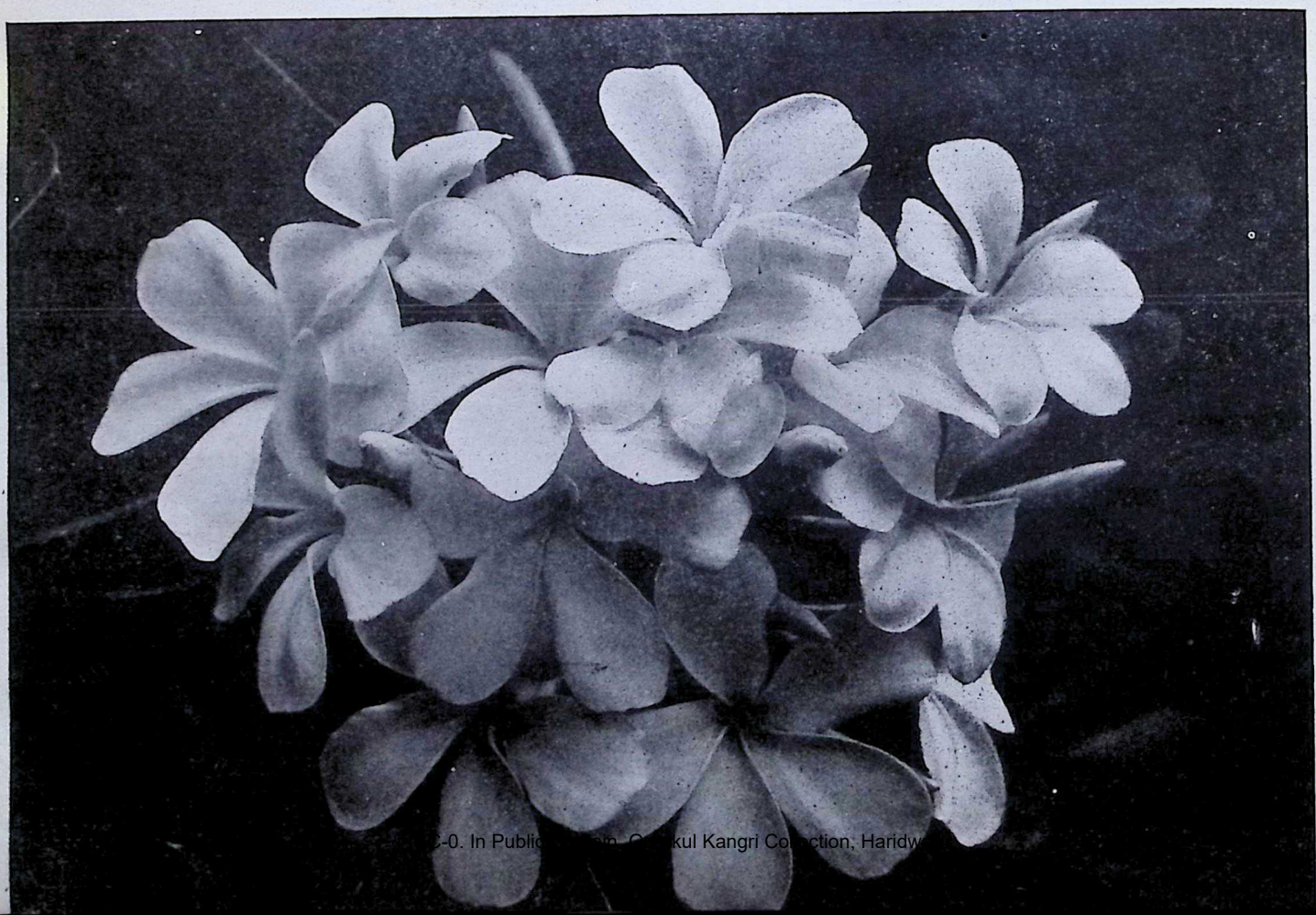

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मादाम क्यूरी

सत्यकुमार

मादाम क्यूरी का जन्म वारसा (पोलैण्ड) में ७ नवम्बर १८६७ को हुआ था। इस महिला वैज्ञानिक ने दो तत्वों की खोज की। एक का नाम अपने देश पोलैण्ड के नाम पर पोलीनियम रखा और दूसरे का रेडियम। रेडियम का ज्ञान होने से वैज्ञानिक जगत में हलचल मच गई। इस से हरे रंग की चमकदार किरणें निकलती हैं, जो अंधकार में भी दिखाई पड़ती हैं। घड़ियों के 'डायल' पर तुमने देखा होगा कि गिनती में हरा सा रंग भरा होता है और सूइयों पर भी लगा रहता है। ऐसी घड़ियों से रात को बिना प्रकाश किए समय देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त 'रेडियम' का उपयोग 'केन्सर' जैसी असाध्य बीमारी के इलाज में भी होता है।

मादाम क्यूरी को संसार का सब से बड़ा पुरस्कार 'नोबल पुरस्कार' दो बार दिया गया था। एक बार १९०३ में और दूसरी बार १९११ में। उनके कार्य का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि हमारे देश में यह नोबल पुरस्कार अब तक केवल दो व्यक्तियों को मिला है। एक थे कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुर और दूसरे हैं वैज्ञानिक सी० वी० रमन।

बचपन से ही क्यूरी को पढ़ने का चाव था। पढ़ने में वह इतना डूब जाती थी कि उसे छोटे भाई-बहनों के खेलकूद के शोर का कुछ पता नहीं रहता था। एक दिन सभी बच्चों ने मिलकर उसे तंग करने का निश्चय किया। जिस कुर्सी पर वह बैठी पढ़ रही थी, उसके दोनों ओर कुर्सियां रख दीं और एक कुर्सी पीछे रख दी। फिर दो कुर्सियां इन तीनों कुर्सियों के ऊपर टिका दीं और एक कुर्सी इन दो कुर्सियों पर। कुर्सियों का अच्छा खासा मीनार बन गया पर ऐसा कि क्यूरी तनिक गर्दन हिलाए तो अरर धम। सब बच्चे कमरे के कोने में तमाशा देखने को खड़े रहे। पर आधा घण्टे तक क्यूरी हिली-डुली ही नहीं। आध घण्टे बाद जब पाठ समाप्त कर के उसने गर्दन उठाई तो कुर्सियों का मीनार गिर पड़ा। पढ़ने में या किसी अन्य काम में इतना ध्यान जमाना निश्चित ही सफलता का लक्षण है। ऐसे ही व्यक्ति संसार में कुछ कर सकते हैं।

मादाम क्यूरी का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। ऊंची शिक्षा का सपना उन्होंने नौकरी से पैसा जमा कर के पूरा किया। गणित और भौतिक विज्ञान में एम० ए० किया तथा डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। पर इस पढ़ाई में उन्हें बड़ी साधना करनी पड़ी। जाड़े से बचने के लिए पहनने को, ओढ़ने को पर्याप्त कपड़े नहीं थे। कमरा गरम रखने को कोयला खरीदने का पैसा नहीं था। होटल में खाना खाने की गुंजाइश नहीं थी और खाना बनाना भी नहीं आता था, फिर उसमें समय भी नष्ट होता था। वहां तो एक ही उद्देश्य सामने था—अध्ययन!

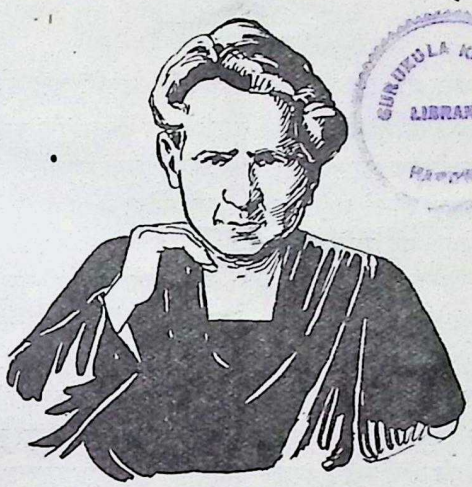

मादाम क्यूरी

रात के दस बजे तक वह पेरिस की एक प्रसिद्ध लायब्रेरी में पढ़ती। जब वह बन्द हो जाती, तो अपने कमरे में लौट कर तब तक पढ़ती रहती जब तक कि आंख स्वयं न बन्द हो जातीं। रात के दो बजे तक तो साधारण बात थी। जब किसी तरह सर्दी से नहीं बच पाती तो अपने दो तीन जोड़ी अर्थात सभी कपड़े पहन कर और एक दो चादर भी ऊपर डाल कर लेट जाती, तथा कमरे की कुर्सी भी ऊपर सरका कर गुड़ीमुड़ी पड़ी रहती।

पिये क्यूरी नाम के एक वैज्ञानिक से ही उसने विवाह किया। विवाह के पश्चात भी उसका जीवन कष्ट और साधना में बीता। अपनी विज्ञान सम्बन्धी खोजों के लिए, स्वतः कार्य करने को पैसे की कमी रहना स्वाभाविक था, किन्तु अनेक कठिनाइयां होते हुए भी वह सफलता के उच्च से उच्च शिखर पर चढ़ती गई तथा कीर्त्ति व सम्मान पाया।

६ जुलाई १९३४ को मादाम क्यूरी का स्वर्गवास हो गया। मादाम क्यूरी के जीवन से हमको कार्य के प्रति सच्ची लगन व कठिनाइयों में हिम्मत न हारने की अमूल्य शिक्षा मिलती है। वैज्ञानिक जगत में उनका नाम सदा 'रेडियम' के अक्षरों में चमकता दमकता रहेगा।

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान—(पृष्ठ १४ का शेषांश)

सर प्रफुल्लचन्द्र राय ने यह सिद्ध किया कि तीन हजार वर्ष पहले ही भारतीय वैज्ञानिकों ने कितने ही औषधि-विज्ञान सम्बन्धी अनुसन्धान कर डाले थे।

हमारे देश के वैज्ञानिक सर चन्द्रशेखर को तो सन १९३० में उनके अनुसन्धान पर जगप्रसिद्ध नोबल पुरस्कार भी मिला था। इनके अतिरिक्त डाक्टर मेघनाद साहा, सर उपेन्द्रनाथ, डा० बीरबल, सर शांतिस्वरूप भटनागर, नीलरतन धर, सर ज्ञानचन्द्रघोष और डाक्टर होमी भाभा भी अपने वैज्ञानिक अनुसन्धानों से हमारे देश की तरक्की में चार चांद लगा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला

वीरेश्वर भट्टाचार्य

बहुत पहले हस्तिनापुर में पुरुवंशी राजा दुष्यन्त राज्य करते थे। वह बहुत योग्य और निपुण राजा थे। एक दिन शिकार खेलते समय एक हिरण के पीछे दौड़ते-दौड़ते वह बहुत दूर निकल गए और उस पर बाण चलाना ही चाहते थे कि दो ऋषि बालक उनके सामने खड़े हो गए और बोले—महाराज, इस हिरण को मत मारिए। यह ऋषि कण्व के आश्रम का हिरण है।

राजा ने पूछा—क्या कण्व ऋषि यहीं हैं ?

लड़के बोले—वे तो सोमतीर्थ यात्रा के लिए गए हैं। अतिथियों के स्वागत का भार अपनी कन्या को सौंप गए हैं। आप आश्रम में पधारिए।

रथ बाहर ही रोक कर वह आश्रम में गए। उसी समय राजा ने देखा कि शकुन्तला अपनी सखियों के साथ पेड़ों को सींच रही है। राजा पास ही एक पेड़ की ओट में खड़े होकर सोचने लगे कि कण्व ऋषि कैसे आदमी हैं, जो उन्होंने इतनी सुन्दर लड़की को तपस्विनी बना दिया। पर छाल पहने हुए भी यह कितनी सुन्दर लग रही है! ठीक कहा है कि सुन्दर आकृतिवालों के लिए शृंगार की जरूरत नहीं।

उसी समय एक भौंरा शकुन्तला के मुंह पर मंडराने लगा। शकुन्तला सखियों से सहायता पाने के लिए चिल्लाने लगी। उसकी सखी अनुसूया बोली—तुम राजा दुष्यन्त का नाम लेकर चिल्लाओ, वही तुम्हारी सहायता करेंगे।

यह सुनते ही राजा सामने आ गए। अपने को छिपा कर बोले—राजा दुष्यन्त ने प्रजा की सेवा के लिए मुझे नियुक्त किया है और इसीलिए मैं आश्रम में आया हूं।

वे सब बोलीं—आपके दर्शन करके हम लोग धन्य हुए।

राजा शकुन्तला पर मोहित हो गए।

राजा और शकुन्तला ने गन्धर्व रीति से विवाह कर लिया। शकुन्तला गर्भवती हो गई। कुछ दिन बाद राजा अपनी राजधानी को चल पड़े। जाते समय वह अपने नाम की अंगूठी शकुन्तला को पहना गए। और वादा कर गए कि राजधानी पहुंच कर वे जल्दी ही शकुन्तला को वहां बुलवाने का प्रबन्ध करेंगे।

एक दिन शकुन्तला दुष्यन्त की चिन्ता में कुटिया पर बैठी सोच रही थी कि उसी समय दुर्वासा ऋषि आए। शकुन्तला सोच में इतनी मग्न थी कि उनके आने पर बेखबर-सी बैठी रही। इस पर दुर्वासा ऋषि ने शाप दिया कि तू जिसकी चिन्ता में लीन होकर मेरा अपमान कर रही है, वह तुझको ही भूल जाएगा। तेरे याद कराने पर भी तुझे नहीं पहचानेगा।

शकुन्तला ने तो उनकी बात सुनी ही नहीं, पर प्रियम्वदा और अनुसूया यह शाप सुनकर बहुत घबड़ाईं। उन्होंने ऋषि से बहुत विनती की, तब दुर्वासा ऋषि ने कहा—मेरा शाप झूठा तो नहीं होगा, पर हां इतनी छूट देता हूं कि कोई चिह्न दिखाने पर राजा शकुन्तला को पहचान लेगा।

लौटने पर कण्व को शकुन्तला और दुष्यन्त के विवाह की बात मालूम हुई तो वह बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने शकुन्तला को गौतमी तथा दो ऋषि कुमारों के साथ दुष्यन्त के घर भेजने की तैयारी की। जब शकुन्तला जाने लगी तो किसी पेड़ ने अपना वल्कल (छाल) दिया, किसी पेड़ ने पैर में लगाने का महावर दिया, किसी ने फूल दिया, इसी प्रकार वन के सभी पेड़-पौधों, लताओं और पक्षियों तक ने शकुन्तला को अनेक वस्तुएं भेंट कीं। यह देख कर ऋषि कण्व व्याकुल हो उठे। वृक्षों को देख कर वह बोले—हे तपोवन के वृक्षो, जो शकुन्तला तुम्हें पानी दिए बिना खुद पानी नहीं पीती थी और शृंगार करने की चाव होते हुए भी प्रेम के मारे तुम्हारे फूल-पत्ते नहीं तोड़ती थी, जब तुम में पहला फल लगता था तो उसे देखकर जो शकुन्तला खुशी से फूली नहीं समाती थी, आज वह अपने ससुराल जा रही है। तुम सब उसे विदा करो।

शकुन्तला की दोनों सहेलियां अनुसूया और प्रियम्वदा रोने लगीं। शकुन्तला आगे बढ़ी तो किसी ने उसका वल्कल पकड़ कर रोक लिया। शकुन्तला मुड़कर बोली—मुझे कौन रोक रहा है ?

कण्व ऋषि बोले—बेटी, यह वही हिरण का बच्चा है, जिसके मुंह में घाव हुआ था, तो तू बड़े प्यार और दया के साथ उसमें हिंगुलौटी का तेल लगाती थी, आज तेरे जाने से वह विकल हो रहा है।

यह कहते हुए कण्व का गला रुंध गया और उनकी आंखों में आंसू आ गए। वह सोचने लगे कि एक तपस्वी होकर भी मेरा यह हाल हो रहा है, पता नहीं गृहस्थ अपनी कन्या के विछोह का दुख कैसे सहते होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने शकुन्तला को आशीर्वाद दिया और समझाया कि तुम ससुराल जाकर बड़ों की सेवा करना, दूसरी रानियों के साथ सखी के समान रहना। पति क्रोध भी करें तो तुम उनके खिलाफ मत जाना। नौकरों पर दया रखना और सुख में भटक मत जाना। जो लड़कियां गृहिणी का कर्तव्य करती हैं, उन्हीं का गृहस्थ जीवन सफल हो पाता है।

शकुन्तला ने आंखों में आंसू भरकर पूछा--पिताजी, मैं अब आश्रम में कब आऊंगी ?

कण्व बोले--तुम दुष्यन्त के विशाल राज्य के सिंहासन पर अपने पुत्र को बैठा कर ही तपोवन में आओगी। बेटी तो पराए धन के समान है। उसे पति के हाथों सौंप कर मैं निश्चिन्त हो गया।

शकुन्तला के पास से लौटने पर राजा दुष्यन्त कुछ अनमने से रहने लगे। एक दिन एक द्वारपाल ने खबर दी कि हिमालय की तराई में कण्व ऋषि के आश्रम से कुछ लोग कोई सन्देश लेकर आए हैं। राजा ने उनको आदर के साथ हवनगृह में ठहराने की आज्ञा दी। थोड़ी देर बाद खुद वहां जाकर पूछा--मुनि कण्व ने मेरे लिए क्या आज्ञा दी है ? कहिए।

शकुन्तला, गौतमी तथा दोनों ऋषि-पुत्र वहां बैठे थे। राजा से कुशल-क्षेम की बात हो जाने पर ऋषि-पुत्रों ने बताया कि मुनि ने सन्देश भेजा है कि आपने मेरी बेटी शकुन्तला से गन्धर्व विवाह किया। मैं बहुत प्रसन्न हूं, अब यह गर्भवती है, इसे आप अपनी धर्मपत्नी के रूप में स्वीकार करें।

राजा ने कहा--मुझे याद नहीं है कि मैंने इस स्त्री से विवाह किया है या नहीं। फिर यह गर्भवती भी है, मैं किसी की स्त्री को अपने पास रखने का पाप कैसे कर सकता हूं !

इस पर गौतमी ने कहा--बेटी, तुम घूंघट उठा दो, तो राजा तुम्हें पहचान सकेंगे। यह कहकर उसने शकुन्तला का घूंघट उलट दिया। तब भी राजा को कुछ याद नहीं आया।

शकुन्तला बोली--अच्छा, मैं आपको प्रमाण देती हूं।

वह अंगूठी खोजने लगी पर वह तो खो गई थी। कहीं नहीं मिली तो वह व्याकुल होकर बोली--मेरी अंगूठी कहां गई ?

गौतमी ने कहा--शायद शची तीर्थ में स्नान करते समय ढीली होने के कारण हाथ से गिर पड़ी होगी।

राजा ने कहा--स्त्रियां बात बनाने में बड़ी चतुर होती हैं। शकुन्तला ने बहुत सी बातें याद दिलाईं, पर राजा ने एक नहीं मानी।

शारंगव ने कहा--इसी लिए विवाह आदि काम समाज के सामने करने चाहिएं। चुपचाप कर लेने से यह फल भोगना पड़ता है।

आखिर शकुन्तला को वहीं छोड़ कर वे तीनों चले गए। राजा ने उन्हें रोकना चाहा, पर वे लोग नहीं रुके।

उनको जाता देखकर शकुन्तला विलाप करने लगी--हे धरती, मुझे अपनी गोद में स्थान दो।

उसी समय एक तेज-सा प्रकट हुआ और आकाश मार्ग से आकर शकुन्तला को उसकी माता मेनका अपने संग ले गई।

कुछ दिन बाद किसी मछेरे ने शक्र तीर्थ में एक मछली पकड़ी। उसका पेट फाड़ने पर उसे एक अगूंठी मिली। उसे लेकर वह बाजार में बेचने गया, तो कोतवाल ने उसे पकड़ लिया। यह अगूंठी राजा की थी। राजा ने देखते ही अगूंठी पहचान ली। उसी समय उन्हें शकुन्तला की सारी बातें याद आ गईं। उन्होंने मछेरे को धन देकर छुड़वा दिया और उदास रहने लगे। अब उन्हें शकुन्तला के प्रति किए गए अपने व्यवहार पर बड़ा दुख था।

कुछ दिनों बाद स्वर्ग से इन्द्र ने अपने सारथी मातलि को भेजकर दुष्यन्त को किसी युद्ध में अपनी सहायता करने के लिए बुलवा भेजा। स्वर्ग से लौटते समय राजा मारीच ऋषि के आश्रम में पहुंचे। उन्होंने देखा कि एक लड़का सिंह को पकड़कर उसके दांत गिन रहा है।

बच्चे के साथ की तापसी बोली--अरे निष्ठुर, तू सिंह के बच्चे के साथ ऐसा मत कर। तू आश्रम में पाले गए इस बच्चे को क्यों तंग करता है ? ऋषि ने तेरा नाम सर्वदमन ठीक ही रखा है। अगर तू इस बच्चे को नहीं छोड़ेगा, तो सिंहिनी आकर तुझे सताएगी।

सर्वदमन बोला--हुं ! मुझे डराने चली है। --उसने मुंह चिढ़ा दिया।

राजा सोचने लगे, यह किसी महान बलशाली का पुत्र है।

एक ऋषि कन्या ने बच्चे को लालच दिखाई कि तू इस सिंह के बच्चे को छोड़ द तो खिलौना दूंगी। यह कह कर वह खिलौना लाने चली गई। दूसरी ऋषि कन्या ने राजा से कहा--श्रीमान्, आप ही उस सिंह के बच्चे को छुड़ा दीजिए। यह तो किसी की बात ही नहीं सुनता।

राजा बालक से बोले--अरे, तुम ऋषि-पुत्र हो कर आश्रम के नियमों के खिलाफ ऐसे काम क्यों कर रहे हो ?

ऋषि-कन्या ने बताया कि यह ऋषि-पुत्र नहीं है। फिर वह कन्या राजा को देखकर सोचने लगी कि सर्वदमन से इसका चेहरा बहुत मिलता-जुलता है। राजा ने पूछा कि यह किस वंश का लड़का है ? कन्या ने बताया कि यह पुरुवंशी है। पर यह हमारे आश्रम में ही पैदा हुआ है। राजा ने उसके पिता का नाम पूछा। इस पर तापसी बोली--अपनी पत्नी का त्याग करनेवाले उस पापी का नाम कौन लेगा ?

इसी बीच दूसरी तापसी बच्चे को एक मिट्टी का मोर दिखा कर बोली--देख तो यह कितना सुन्दर शकुन्त (मोर) है !

यह सुनते ही सर्वदमन बोला--कहां है मेरी मां ?

उतने में पहली तापसी घबड़ाकर चिल्लाई कि अरे इसके हाथ का गंडा कहां गिर गया ? राजा ने कहा--घबड़ाइए नहीं। शायद सिंह से लड़ते समय गिर पड़ा था, यह रहा।

राजा गंडा उठाने चले तो तापसी ने रोका--नहीं-नहीं, उसे उठाना मत, क्योंकि ऋषि ने कहा है कि सर्वदमन के मां-बाप के सिवा कोई गंडे को छुएगा तो उसे यह सांप बनकर डस लेगा।

पर राजा ने गंडा उठा लिया था। वह भी आश्चर्य में पड़ गए। फिर तो वह बच्चे को गोद में उठा कर प्यार करने लगे और बेटा-बेटा कहकर उसे दुलारने लगे।

सर्वदमन बोला--मेरा बाप तो दुष्यन्त है। तुम नहीं हो।

उधर दोनों तापसियों ने शकुन्तला को सारी खबर कह सुनाई। शकुन्तला भी आ पहुंची। राजा ने शकुन्तला से क्षमा मांगी और मारीच-ऋषि की अनुमति लेकर शकुन्तला और पुत्र को ग्रहण किया। मारीच ने शकुन्तला को समझाया कि इसमें राजा का कोई अपराध नहीं है, राजा तो दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण तुम्हें भूल गए थे।

शकुन्तला सब जानकर प्रसन्न हो गई। मारीच ने आशीर्वाद दिया कि सर्वदमन सारी पृथ्वी का चक्रवर्ती राजा होगा। इस समय यह सब प्राणियों का दमन करता है, इसलिए इसका नाम सर्वदमन है। बाद में प्रजा का पालन-पोषण करने के कारण यह भरत नाम से प्रसिद्ध होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DL. 478A-50 HI

DL. 478B-50 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी की चिट्ठी

प्यारे मुन्ना मुन्नी,

अब तो कुछ मास के लिए तुम्हें परीक्षा और पढ़ाई दोनों से अवकाश है। छुट्टियां आईं। उन्हें कैसे बिताया जाए, इसकी योजना बना लो। योजना बनाए बिना कोई भी काम सफल नहीं होता। छुट्टियों का यह मतलब कभी नहीं है कि आप उसे केवल मटर-गश्ती करके बेकार में गुजार दें। अधिकांश माताओं की यह शिकायत होती है कि बच्चों को जब छुट्टियां होती हैं तो उनके नाकों दम आ जाता है। वे न तो समय पर खाते-पीते हैं, न सोते-उठते हैं। नतीजा यह होता है कि माताओं का काम बढ़ जाता है और घर की व्यवस्था बिगड़ जाती है। अगर माताएं कुछ रोकती-टोकती हैं तो बच्चे बिगड़ते हैं, क्या आफत आ गई है। छुट्टियों में भी आराम करना नहीं मिलता। पर आलसियों की तरह समय गुजारना तो चैन लेना नहीं कहलाता। माना कि तुम छुट्टियों में अधिक नींद लेना चाहते हो तो घंटा दो घंटा दोपहर में सोओ। गर्मियों में ६ बजे तो जरूर उठ जाना चाहिए। अच्छा हो कि सुबह ५ या ५।। बजे उठ कर एक घंटा वायु सेवन के लिए चले जाओ। नाश्ता करने के बाद आधा घंटा अपनी चीज़ों की सार-संभाल, कमरे की सफाई आदि भी करो। मां पर सब काम छोड़ना ठीक नहीं है।

दिन में एक-दो घंटा पढ़ना भी चाहिए। अखबार ध्यान से पढ़ो, या फिर अपना साधारण ज्ञान बढ़ाने के लिए कुछ नई पुस्तकें लायब्रेरी से लाकर पढ़ डालो। स्कूल से यदि कोई होमवर्क करने को मिला हो तो थोड़ा-थोड़ा रोज़ करके उसे खतम कर डालो। यदि और कुछ काम नहीं है तो एक घंटे छोटे बहन-भाई को ही पढ़ाओ। अगर वह पिछली कक्षा में फेल हो गया है या उसे मास्टर लगवाना पड़ा है, तब तो तुम्हें चाहिए कि अब उसकी नींव पक्की कर दो। ट्यूशनों में जो पैसा खर्च होगा, वह तुम्हारे सहयोग से यदि बच जाएगा तो मां-बाप को कितनी खुशी होगी। तुम्हारी ऐसी सेवाएं ही उनका मन जीत लेंगी।

अगर तुम्हारे बहन-भाई सभी पढ़ने में अच्छे हैं तो उनके सहयोग से सुबह एक घंटा मोहल्ले के बच्चों को ही पढ़ाने की योजना बनाओ। विद्यादान सब से बड़ा दान है। अपने मोहल्ले के आस-पास जहां कहीं खुला मैदान या बगीचा हो वहां गरीबों के बच्चों को इकट्ठा कर लो। उन्हें अक्षर ज्ञान करवाओ। खेल खिलवाओ, साफ-सफाई से रहने की आदत डलवाओ और कहानियां पढ़ कर सुनाओ। इस काम में तो तुम्हारे छोटे बहन-भाई भी सहयोग दे सकते हैं।

गली-मोहल्ले की सफाई का आन्दोलन चलाओ। बच्चों को संगठित कर लो। किसी भी घर के आस-पास कूड़ा जमा न किया जाए। प्रत्येक घर में कनस्तर में कूड़ा डाला जाए, ताकि मेहतर आकर उसे उठा कर ठीक जगह डाल आएं। तुमने देखा होगा कि लोग सड़कों पर थूकते, खखारते हैं, केले, सन्तरों, गंडेरियों और मूंगफली के छिलके डाल देते हैं। घर का कचरा सड़क पर ढेर लगा देते हैं, दिवाल की ओट में बैठ कर मलमूत्र त्यागते हैं, इससे गलियां और सड़कें बहुत गंदी हो जाती हैं। नन्हें नागरिकों का यह कर्त्तव्य है कि खुद भी ऐसा न करें और दूसरों को भी ऐसा करने से विनम्रतापूर्वक रोकें।

तुम्हें यदि कभी विदेश जाने का मौका मिले तो देखोगे कि वहां का प्रत्येक बच्चा सफाई का महत्व समझता है। वे पिकनिक के लिए जाएंगे तो सब कचरा बटोर कर अपनी टोकरी में रख लेंगे। पब्लिक स्थानों को कभी गंदा नहीं करेंगे।

हां, तो मेरा कहने का यह अभिप्राय था कि छुट्टियों में तुम अपना समय उपयोगी कामों में बिताओ। जब धूप तेज हो तो घर में ही रहो। मनोरंजन के लिए यह जरूरी नहीं है कि तुम दिन भर ताश पीटा करो या सिनेमा देखो और मटर-गश्ती किया करो। बागवानी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशुपालन, चित्रकारी, दस्तकारी, बढ़ईगीरी, टाइपराइटिंग, भोजन बनाना, सिलाई, कढ़ाई आदि कार्य, मनोरंजन और काम दोनों की दृष्टि से उपयोगी हैं। तुम्हारे पास समय हो तो कोई दूसरी प्रान्तीय भाषा सीखो, ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़ो। छुट्टियों में मां-बाप का हाथ भी बटाना चाहिए। लड़कियां भोजन बनाने और गृह-व्यवस्था में मां को सहयोग दे सकती हैं। लड़के पिता की साइकिल या मोटर की सफाई, बाजार-हाट, टूटे-फूटे सामान की मरम्मत, हिसाब-किताब की जांच आदि कामों में यदि हाथ बंटा लें तो पिता का काम काफी आसान हो जाए। यदि तुम एक ब्रुश, वार्निश, और रेगमाल ले आओ तो अपने पुराने फर्नीचर, सन्दूक, दरवाजे, खिड़कियों को रेगमाल से रगड़कर; हिदायत के अनुसार रंग बना कर, ब्रुश से रंग कर इन सब चीज़ों को नया रूप भी दे सकोगे। यह कुछ मुश्किल काम नहीं है। पहले मामूली फर्नीचर, गमलों आदि पर हाथ जमाओ फिर बढ़िया फर्नीचर को रंग सकोगे।

साल भर में घर में काफी काठ-कबाड़, पुरानी रद्दी, डिब्बे, बोतलें आदि जमा हो जाते हैं, इनको बेच दो। जो पैसा आए, उससे घर सजाने के लिए कुछ चीज़ या रंग-रोगन का सामान ले आओ। घर के फर्श यदि मैले हों तो गर्म पानी, साबुन या विम से फर्श रगड़-रगड़ कर धो डालो। तुम यदि होशियार हो तो घर की सफेदी भी कर सकते हो। विदेशों में बच्चे ही ऐसे काम संभालते हैं। छुट्टियों में फार्म पर जाकर वे खेतीबाड़ी, मुर्गीपालन, शहद एकत्रित करना, रंगाई-पुताई, चौपायों की देख-भाल आदि कामों में हाथ बंटाते हैं। दुख की बात है कि हमारे देश के बच्चे इन अच्छी बातों की नकल नहीं करते।

तुम छोटे हो, अभी कमाते नहीं, पर इसका यह मतलब नहीं कि तुम अपने माता-पिता की मदद नहीं कर सकते या समाज के लिए अपने आपको उपयोगी नहीं साबित कर सकते। बच्चे भी कर्त्तव्य करते हुए घर और समाज दोनों के मददगार साबित हो सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि वे समय का मूल्य समझें, उपयोगी मनोरंजनों में अपना समय बिताएं और योजना बना कर ठीक से काम करने की आदत डालें। बचपन की यह आदत ही बड़ी उम्र में तुम्हारे जीवन की सफलता का कारण बन सकेगी।

मिठाई का डिब्बा—(पृष्ठ १० का शेषांश)

अभी तक मां का काम-काज समाप्त न हुआ था। दस बज चुके थे। नन्हें को बड़ा गुस्सा आ रहा था कि मां को आज ही इतना काम क्यों आ पड़ा। आखिर वह आईं और साथ वाले बिस्तर पर लेट गईं। अभी थोड़ी देर भी नहीं हुई थी कि नन्हें ने सोचा, चलो, मां तो सो गईं। वह बिस्तर से उठे और धीरे-धीरे, दुबकते-दुबकते दूसरे कमरे के दरवाजे के पास पहुंचे। दरवाजे की कुंडी खोली और अन्दर पहुंचे। स्टूल पर चढ़ कर डिब्बा उतारा और अभी डिब्बे का ढकना उतार कर उसमें हाथ डाला ही था कि दरवाजे में से किसी ने सिर निकाल कर कहा—बेटा, मैं सब देख रही हूं। नीना और कमला सच ही तो कहती थीं।

नन्हें बाबू पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया। अगर मां न थामती, तो वह लड़खड़ा कर गिर ही पड़ता। मां ने उसे सहारा देकर उतारा और प्यार से समझाया—बेटा, जो चुरा कर अकेले खाता है, वह दूसरों का हिस्सा खाता है। बांट कर खाने में ही सुख है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा बगीचा

स्वतन्त्र कुमार जैन (आयु १२ वर्ष)

हमारी रसोई घर के पीछे एक छोटा-सा मैदान है। वहां पर अक्सर रसोई का पानी इकट्ठा हो जाया करता था। एक दिन मैंने सोचा कि क्यों न इस पानी को काम में लाया जाए। मैंने अपनी ममी से कहकर एक खुर्पी और एक फावड़ा मंगाया। गर्मियों में मैंने और मेरे छोटे भाई ने उस धरती को खोद कर बराबर-बराबर क्यारियां बना दीं। बीचोंबीच दोनों तरफ ईंटें लगा कर एक नाली बना दी, जिससे रसोई का पानी क्यारियों को मिलता रहे। अब मेरा बगीचा खूब हरा-भरा हो गया है। उसके किनारों पर मैंने गुलाब की और मोतिये की कलमें लगा दी हैं, जिसमें बड़े ही सुन्दर फूल लगते हैं।

दीवार के साथ-साथ मैं गर्मियों में तोरी की बेल और सर्दियों में सेम की बेल बो देता हूं, जिसमें खूब अच्छी-अच्छी तोरी और सेम लगती हैं। मैंने एक क्यारी में पोदीना और दूसरी में धनिया भी बो दिया है। चार पांच पौदे हरी मिर्च के भी हैं। मेरी ममी को जब भी चटनी पीसनी होती है, मैं उन्हें झट से धनिया, पोदीना तोड़ कर ला देता हूं। इन सर्दियों में मेरे बगीचे में मूली, गाजर, पालक, और गोभी बहुत बढ़िया पैदा हुए। इस साल में मैंने अपने बगीचे में क्यारियों के साथ-साथ पपीते, अमरूद और केले के पेड़ भी लगा दिए हैं। ये तीनों तरह के पेड़ बहुत जल्दी फल देने लगते हैं और मुझे पूरी आशा है कि अगले दो वर्षों में मेरे बगीचे में सब्जी के साथ-साथ फल भी होने लगेंगे।

पतझड़ के दिनों में मैं पेड़ों के पत्तों को इकट्ठा करके एक गड्ढे में दबा देता हूं, जिससे खाद बन जाती है और वह क्यारियों के काम आती है। मैंने सबको मना कर रखा है कि मेरे बगीचे में मुझ से पूछे बिना न तो कोई चीज़ तोड़े और न ही गन्दा पानी या कूड़ा वगैरह वहां फेंके।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

चीनी कहावतें

कान्तिलाल मोदी

अच्छा आदमी तीन गांवों को सहारा देता है, अच्छा कुत्ता तीन घरों को।

अच्छा सीखने के लिए हजार दिन भी कम, बुरा सीखने के लिए एक घंटा भी ज्यादा।

बहुत बोलो तो मुसीबत, बहुत खाओ तो बदहजमी।

जैसे दूसरों का दोष देखते हो, अपना भी देखो, जैसे अपने को माफ करते हो, दूसरों को भी माफ करो।

दुर्गुणों को तुच्छ समझकर उनका आचरण न करो, सद्गुणों को तुच्छ मानकर उनका त्याग न करो।

भूखों मरो, पर चोरी न करो। उकताकर मरो, पर अदालत की सीढ़ी न चढ़ो।

जो क्रोध की एक घड़ी में धीरज से काम लेता है, उसे पछताने के सौ दिन नहीं देखने पड़ते।

चकमक को घिसने से ही चिनगारी निकलती है, पड़ा रहने दें तो धुआं भी नहीं निकलता।

निश्चयहीन मनुष्य और बिना पानी की तलवार, दोनों बराबर हैं।

निश्चयी और मेहनती व्यक्ति से काम भी घबराता है।

अच्छे शब्द का मिलना कठिन। खराब शब्द का देना सरल।

लड़के-बच्चे सद्गुणी हों तो धन का क्या करना है? लड़के बच्चे दुर्गुणी हों तो धन का क्या करना है?

संतोषी गरीब भी सुखी, असंतोषी अमीर भी दुखी।

कपड़े नए अच्छे, मित्र पुराने।

सौ चीजों के बारे में सुननेवाले की अपेक्षा एक चीज को हस्तगत करनेवाला उत्तम।

बढ़िया ढोल को जोर से पीटना नहीं पड़ता।

दस साल सदाचारी रहना काफी नहीं, एक दिन दुराचार करना नाकाफी (कम) नहीं।

एक क्षण की मूर्खता समस्त जीवन के लिए पश्चात्ताप होती है।

तुम्हारा दूसरा विचार पहले विचार से बेहतर होता है।

तुम जितना ही कठोर कार्य करोगे, शय्या तुम्हारी उतनी ही कोमल होगी।

हल्का पल्ला ऊंचा उड़ता है।

बगुले को जहां मछली मिल जाए, उसके लिए वहीं मानसरोवर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

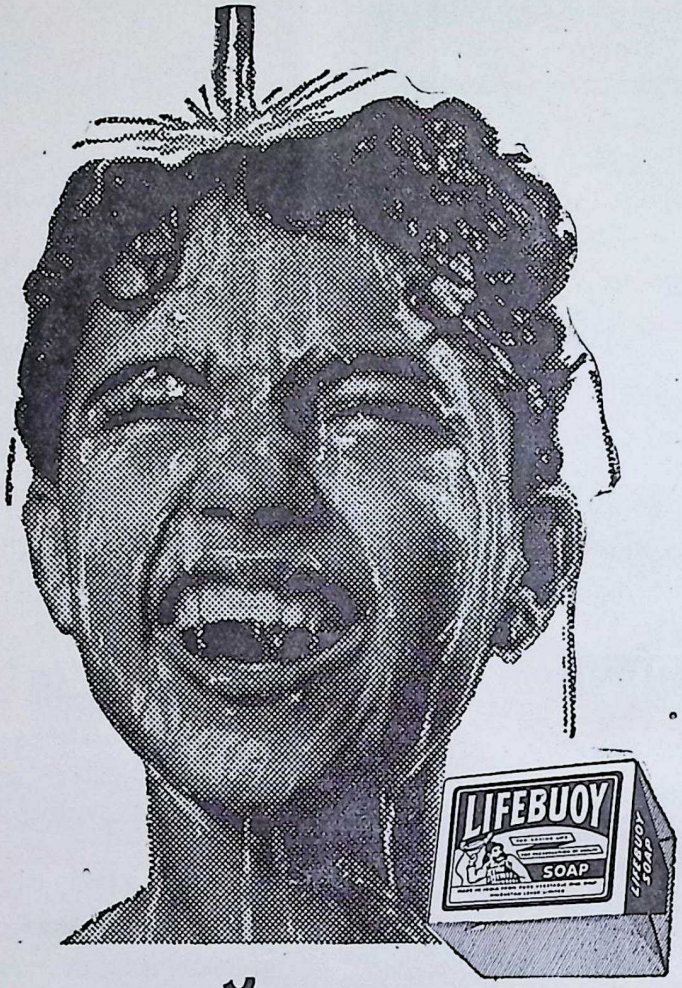

लाइफ़बॉय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहां!

लाइफ़बॉय से नहाने का आनन्द ही अनोखा है!
ऐसी ताजगी मिलती है कि तबीअत खिल उठती है।

आप काम-काज में लगे हों या खेल-कूद में, गन्दगी से नहीं बच सकते। लाइफ़बॉय का भरपूर झाग गन्दगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है और आपकी तन्दुरुस्ती की रक्षा करता है। आज ही से घर भर की तन्दुरुस्ती के लिए लाइफ़बॉय इस्तेमाल कीजिये।

·X29 HI

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नवीन पुस्तकें

मुलतानी लोक कथाएं—लेखक—सत्यप्रिय शान्त । यह आठ लोक कथाओं का एक संग्रह है। इसमें 'एक धेला' और 'झगड़ू चाचा' ये दो कहानियां बहुत रोचक हैं।

मध्यकालीन लोककथाएं—लेखक—विराज। इसमें पांच लोक-कथाएं हैं। सभी कहानियां रोचक और सुन्दर हैं। शुरू की चार कहानियों का आधार कथा-सरित् सागर है।

उपरोक्त दोनों पुस्तकों के प्रकाशक हैं आत्माराम एण्ड सन्स। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य है १ रु० ५० नए पैसे।

मकड़ी का जाला—लेखक—सन्हैयालाल ओझा। मूल्य आठ रुपए, पृष्ठ संख्या ५३८, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

इस उपन्यास की नायिका है कमला, और नायक कमला का पति नट-नागर है। कमला अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है, पर नटनागर मानसिक और शारीरिक रूप से हीन होते हुए भी अपने पुरुष अधिकार से उस पर कुठाराघात करता है। परिणामस्वरूप नारी विद्रोह करती है तब पुरुष अपने अधिकार के जाले में उसे फंसाने का जाल रचता है। कमला का चरित्र-चित्रण बहुत ही सुन्दर हुआ है। उपन्यास की रोचकता कमला के मां बन जाने के बाद से बढ़ जाती है। उससे पहले घटनाओं के प्रवाह में शिथिलता है। अच्छा होता कि अनावश्यक पात्र और दफ्तर के बाबुओं की गपशप कुछ कम कर दी जाती तो पुस्तक का कलेवर भी सिमट जाता। लेखक ने भारतीय नारी के मातृत्व तथा पतिव्रत के संस्कारों को बहुत सफलतापूर्वक कसौटी पर कसा है।

सूरज किरन की छांव—लेखक—राजेन्द्र अवस्थी 'तृषित,' प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, मूल्य ३ रुपया।

कुछ सालों से हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों का प्रकाशन काफी संख्या में हुआ है। यह उपन्यास भी उसी श्रेणी का है। इसकी नायिका है एक बंजारी। स्वतन्त्रता के बाद आदिवासियों में किस प्रकार चेतना आई। अपनी परिस्थितियों से जूझती हुई मीठे-कड़वे, अनुभव लेकर, भटकती हुई बंजारी किस प्रकार अपने प्रेमी कंगला को अन्त में पाती है, यह सब एक बहुत रोचक कथानक के रूप में हमारे सामने आता है। बंजारी का चरित्र अच्छा उभरा है।

लेखक का प्रयास और शैली सराहनीय है।

सावित्री देवी वर्मा

नया वर्ष

कान्ति देवी जैन

नया वर्ष यह मंगल मय हो,
दिन-दिन भारत भाग्य उदय हो।
प्रेम संगठन को अपनाएं,
सत्य-अहिंसा-पथ पर जाएं।
पढ़ें, लिखें निज ज्ञान बढ़ाएं,
मानवता का फल यह पाएं।
जिससे आत्म-शक्ति संचय हो,
नया वर्ष यह मंगल-मय हो।
ईश्वर ! बल है हमें तुम्हारा,
निर्बल के हो तुम्हीं सहारा।
नाम तुम्हारा हमको प्यारा,
कृपा करो, दो हमें किनारा।
जिससे विश्व-दुखों का क्षय हो,
नया वर्ष यह मंगल-मय हो ।।

गदहे नहीं तम्बाकू खाते !

मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'

मुगल राज में गजब बीरबल का प्रभाव था,
बड़ा विनोदी था, काफी हाजिर जवाब था
हँसा-हँसा कर मन बहलाव किया करता था
कभी चुटकियां ले अकबर का मन हरता था।
सदा सलाम बजाते झुक-झुक सब दरबारी
नवरत्नों में था उसका ही आसन भारी
हरता दुखियों का हरदम दुख दर्द गरीबी
खुश थे उससे बादशाह औ" उनकी बीबी।
आदत उसकी सुबह टहल फिर कर आने की
लत थी उसकी लगी तम्बाकू भी खाने की
एक रोज तड़के दोनों चल पड़े टहलने
बगल तम्बाकू के खेतों से लगे गुजरने।
दूर घास चर रहा गधा था हट्टा-कट्टा
उसे देखकर बादशाह को सूझा ठट्ठा
कहा—बीरबल, बुरा तम्बाकू भी कैसा है ?
अरे, गधे भी इसे नहीं खाते, ऐसा है।
इतना कह हंस पड़े जोर से मार ठहाका
और बीरबल ने भी दिया जवाब कड़ाका
कहा छूटते ही—जनाब तो ठीक बताते
जी हुज़र, हां, गधे ही नहीं तम्बाकू खाते !!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा चरण

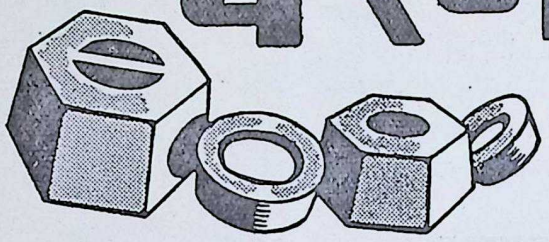

१ अक्तूबर, १९५८ को सभी राज्यों व केन्द्र शासित क्षेत्रों के कुछ चुने हुए इलाकों में और नियंत्रित मंडियों में मेट्रिक बाटों का प्रयोग चालू किया गया था और इस प्रकार का परिवर्तन पूरा करने के लिए २ वर्ष का समय रखा गया था।

यह दो वर्ष की अवधि ३० सितम्बर, १९६० को समाप्त हो जाएगी और उसके बाद इन क्षेत्रों में मेट्रिक बाटों का प्रयोग अनिवार्य्य हो जाएगा।

इस प्रकार के परिवर्तन का दूसरा चरण शुरू करने और बाकी क्षेत्रों में मेट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू करवाने के लिए योजनाएं बनाई जा रही हैं। समूचे केरल प्रदेश में मेट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू हो चुका है और शीघ्र ही अन्य राज्यों में भी ऐसा ही होगा।

अपनाइये | **मेट्रिक प्रणाली**

सरलता व एकरूपता के लिए
भारत सरकार द्वारा प्रसारित

DA 59/541

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार खुद तैयार करें

आशादेवी (एक विद्यार्थिनी)

परीक्षा समाप्त हो जाने के बाद विद्यार्थियों को काफी अवकाश रहता है। ऐसी सूरत में कितना अच्छा हो कि हम लोग अपना खाली समय कुछ खेल-खिलौने या अन्य उपहार बनाने में खर्चें। उपहार ले लेने में ही सुख नहीं है, देने में भी है। यह जरूरी नहीं है कि उपहार कीमती हो। आप अपने मां-बाप, छोटे बहन-भाई, सखी-सहेलियों के लिए अपने हाथ की बनी कोई चीज तैयार करें। कोई अच्छा बैग, स्वेटर, शाल, टेबल क्लाथ, थैली, कैलेन्डर, हाथ से चित्रित कार्ड आदि उपहार बहुत ही उपयोगी हैं।

यदि हम छुट्टियों में अच्छी-अच्छी गुड़ियां बना कर उन्हें कपड़े पहना दें, तो हमारे पास अपनी सहेलियों को देने के लिए सजी सजाई गुड़ियों का अच्छा खासा संग्रह हो जाएगा। जब सहेलियों के जन्म-दिन पर हमें न्योता मिले तो हम अपनी सहेली को उपहार में एक गुड़िया दे सकते हैं।

तैयार गुड़िया

देखने में आता है कि आम तौर पर बच्चे अपने मां-बाप को परेशान करते हैं कि हमें दो-चार रुपए दो, ताकि हम अपनी सहेली के लिए उपहार खरीद कर ले जाएं। यह ठीक नहीं है। चाहिए तो यह कि उपहार के रूप में अपने हाथ की बनी हुई कोई चीज दें। जो बहनें कसीदा काढ़ना जानती हैं, वे रूमाल, ट्रे क्लाथ, टेबल मैट्स, मेज़पोश, टी-कोजी आदि बना सकती हैं। यदि आपके पास केवल बचे-खुचे कपड़ों की कतरनें हैं या ऊन है, तो आप उनसे सुन्दर-सी गुड़िया बनाएं। हाथ-पांव और धड़ आप रुई भर कर तैयार करके जोड़ दें। गुड़िया का चेहरा बाज़ार में बना-बनाया भी मिलता है।

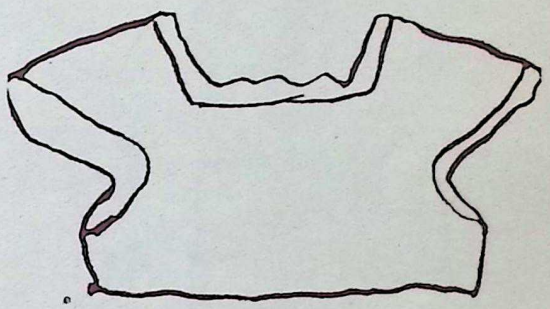

गुड़िया का ब्लाउज

पेनीफोर

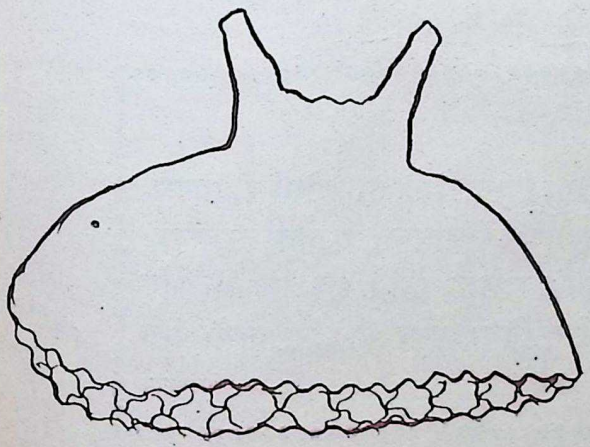

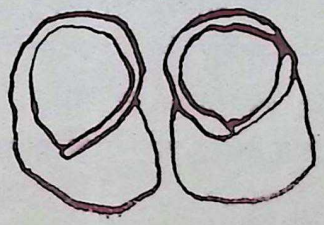

जूते

टोपी

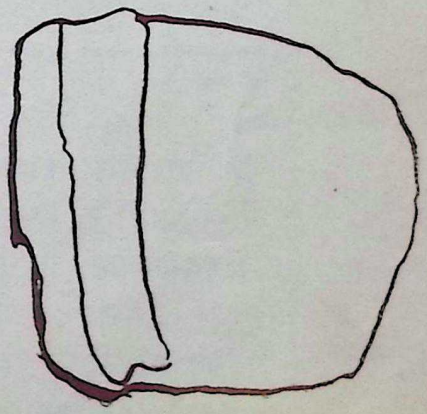

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

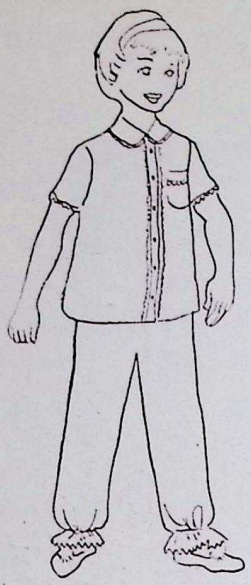

यह है लीलू

लीलू की पोशाक—इसे रंग कर, काट कर लीलू को पहना दें।

उस चेहरे को आप चेहरे के आकार की रुई भरी हुई गद्दी पर खोल की तरह सी लें। बालों के स्थान पर नायलोन, रेशम की लच्छी या भूरी अथवा काली ऊन भी इस्तेमाल कर सकती हैं। यदि आपके पास सिलोलाईड की गुड़िया या बब्बू है तो उसे ही कपड़े सीकर या बुनकर पहना दें। इसमें एक गुड़िया का चित्र है, जिसमें वह बुने हुए कपड़े पहने हुए है। आप अपनी गुड़िया को बुनकर या सीकर कपड़े पहना सकती हैं। अपनी माता जी या दादी से पूछ-पूछ कर बुन लें। सीधी-सादी बुनाई में एक लाईन सीधी एक लाइन उल्टी बुनें। बुनने के बाद फिर दूसरे रंग की ऊन या धागे लेकर सुई से उसमें नमूना डाल दें। रिबन लगाकर टोपी सजा दें। चाहे तो कमर पर बारीक रिबन की बेल्ट टांक कर पीछे को बांध दें।

यदि आपके पास ऊन नहीं है तो छींट के टुकड़ों से गुड़िया के लिए पेनीफोर, ब्लाऊज, टोपी और मोज़े जैसे कि तसवीर में अलग-अलग दिखाए गए हैं, सीकर उसे पहना दें।

अच्छा हो कि आप दो गुड़ियां बनाएं, एक को नीले कपड़े पहनाएं दूसरी को गुलाबी, और एक कार्ड बोर्ड के डिब्बे में दोनों को टांक कर ढक्कन की जगह प्लास्टिक पेपर लगा दें। देखिए कितना अच्छा उपहार बनकर तैयार हो गया है।

अच्छा एक दूसरी चीज़ बनानी बताती हूं। यह है लीलू। इसका पायजामा और कोट आप हल्के पीले रंग का रंगें। जब रंग सूख जाए तब आप लीलू का चित्र काटकर एक पतले पुट्ठे पर चिपका दें। अब आप उसका कोट पीले और नीले रंगों से सुन्दरता से रंगें। जब वह सूख जाए तो उसे काट कर लीलू को इस प्रकार पहनाएं कि उसका एक हाथ कोट की जेब में चला जाए (देखिए चित्र) काली सादी पट्टियां गर्दन व पीठ के पीछे चिपका दें। इस तरह आप लीलू को रंग-बिरंगे कपड़े पहना सकती हैं।

अगली बार आपको इसी तरह की और चीज़ें बनानी बताऊंगी।

सूचना

बाल-भारती की पाठिकाओं को यह जान कर हर्ष होगा कि आगे से हम हमेशा दो पृष्ठों में कन्याओं के लिए कढ़ाई-बुनाई, सिलाई, सजावट की चीजें बनाना, मकान सजाना, भोजन-विज्ञान, गृह-विज्ञान, व्यवहार-ज्ञान आदि विषयों पर लेख देंगे। इस अंक में भी पृष्ठ २९ पर 'उपहार खुद तैयार करें' एक सचित्र लेख दिया गया है। आशा है कि पाठिकाओं को यह पसंद आएगा।

—संपादिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवन्ती की करतूतें

राधाकृष्ण चौधरी

उल्लू क्या बोलता है

एक बार अवन्ती डींग हांकने लगा कि वह पक्षियों की बोली समझता है। राजा ने जब यह जाना, तो उसे शिकार पर ले गया। रास्ते में एक खण्डहर मिला, जिसकी दीवार पर बैठा हुआ एक उल्लू कर्कश आवाज में कुछ बोल रहा था।

राजा ने अवन्ती से पूछा--उल्लू क्या बोलता है ?

--उल्लू यह कह रहा है कि यदि राजा अपनी प्रजा के साथ दुर्व्यवहार करना नहीं छोड़ेंगे, तो उनका भी राज्य मेरे घोंसले के समान ही खण्डहर हो जाएगा।

GURUKULA KANGRI LIBRARY Haridwar

प्यासी जेब

एक दिन अवन्ती किसी विवाह के भोज में सम्मिलित हुआ। अतिथियों में से एक ने न केवल खाया ही बल्कि अपनी जेब में भी बहुत सारी मिठाइयां रख लीं। जब अवन्ती ने ऐसा देखा तो धीरे से चाय की एक केतली उठा ली और उसकी जेब में थोड़ी चाय डाल दी। जब उसने अवन्ती की करतूत देखी तो वह तनिक भी लज्जित होने के बदले बिगड़ कर बोला--हमारी जेब से तुमको क्या मतलब कि तुमने आकर इसमें चाय डाल दी ?

--मैंने कोई नुकसान नहीं समझा--अवन्ती ने जवाब दिया--जब मैंने देखा कि तुम्हारी जेब ने इतनी मिठाइयां निगल लीं, तो मुझे डर हुआ कि कहीं प्यास न लगे, सो मैंने उसे चाय पिला दी।

भगवान ने बचा लिया

एक दिन अवन्ती की पत्नी ने उसकी कमीज धोकर आंगन में पड़े हुए डंडे पर सूखने को टांग दी।

बहुत रात बीत गई। अवन्ती इतना थका मांदा था कि वह बिना चारों तरफ नजर डाले घर में घुस गया। ज्योंही वह बिछावन पर पड़ा, उसे गहरी नींद आ गई। आधी रात बीतने पर वह उठा और आंगन में गया। रात के अंधेरे में डंडे पर टंगी हुई कमीज उसे ऐसी लगी कि कोई आदमी खड़ा है। चुपचाप वह घर में घुसा और बन्दूक उठा ली। बाहर निकल कर उसने बन्दूक चला दी। रात जाड़े की थी ही, कमीज पर थोड़ी बर्फ जम गई थी। वह धड़धड़ाकर डंडे पर से गिर पड़ी।

बन्दूक की आवाज सुनकर उसकी पत्नी जाग गई। अवन्ती ने उससे कहा--आंगन में एक चोर दुबका हुआ था, लेकिन मैंने उसे मार दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब वह किसी प्रकार तंग नहीं करेगा । चलो, सो जाएं । सुबह उठकर मुर्दे को फेंक देंगे ।

दूसरे दिन बड़े सवेरे अवन्ती ने देखा कि उसने अपनी कमीज पर ही बन्दूक चलाई थी । इतना देखते ही वह खुश हो गया, तालियां बजाने लगा और ताल ठोंकते हुए अपनी पत्नी से बोला--भगवान ने मुझे बचा लिया । जरा सोचो तो, बन्दूक छूटने के समय यदि मैं कमीज के अन्दर होता, तो क्या तुम विधवा नहीं हो जातीं ?

अवन्ती और चोर

एक दिन अवन्ती के घर में चोर घुसा । अवन्ती उसे देखते ही सन्दूक में छिप गया ।

चोर ने सारा घर छान डाला, परन्तु कोई भी ऐसी चीज नहीं मिली जिसे वह ले जाए । अन्त में उसने सन्दूक खोला और उसमें अवन्ती को छिपा पाया । देखते ही पूछा--अरे, तुम सन्दूक के अन्दर क्या कर रहे हो ?

--मैं लज्जित हूं, कि मेरे घर में ऐसा कुछ नहीं है, जिसे तुम ले जा सको । इसीलिए मैं यहां छिप गया हूं--अवन्ती ने कहा ।

प्रायश्चित्त

एक बार अवन्ती को एक भटकी हुई भेड़ मिली । वह उसे घर ले गया और मार कर खा गया । उसके एक दोस्त ने जब अवन्ती के इस पाप को जाना तो पूछा--मरने के बाद जब भगवान तुमसे इस विषय में पूछेगा तो क्या जवाब दोगे ?

--मैं कहूंगा कि मैंने भेड़ नहीं खाई ।

--लेकिन इससे तुम बच नहीं सकोगे । यदि भेड़ ही आकर गवाही देने लगे तब ?

--क्या, भेड़ आएगी ? ऐसा होने पर तो मैं उसके मालिक के पास ले जाकर सारा मामला ही तय कर दूंगा ।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

हँसी के गोल गप्पे

रमेश : मेरे पिताजी तो एक हाथ से मोटर रोक लेते हैं ।

अशोक : तब तो तुम्हारे पिताजी पहलवान हैं ।

रमेश : पहलवान नहीं, वह तो पुलिस के सिपाही हैं ।

मास्टर : (समझाते हुए) मैं तुम्हें इसलिए पीटता हूं कि मुझे तुम से बहुत प्रेम है । तुम योग्य बन जाओ ।

लड़का : मास्टर साहब ? प्रेम तो मुझे भी आप से बहुत है, मगर मैं छोटा होने के कारण इसका प्रमाण नहीं दे पाता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखता है। उसके बाद वह उसे भट्टी के अन्दर तब तक गरमाता है जब तक वे तारें आपस में और ढांचे के साथ जुड़ न जाएं। इस वक्त यह ध्यान रखने की जरूरत होती है कि कोई चीज बिगड़ न जाए। इसी से उनकी कारीगरी और कुशलता प्रगट होती है। फिर मुख्य डिजाइन के अनुसार एक-एक पत्ती और एक-एक पत्ता जोड़ा जाता है।

अन्त में इस धातु को साफ करने और चांदी को चमकाने का काम बाकी रह जाता है। यह काम किस तरह से किया जाता है, यह इन कारीगरों के अतिरिक्त बाकी सब के लिए गोरखधंधा बना हुआ है। बहुत से कारीगर चांदी की चमक और ढांचे की सफाई को देख कर ही बता देते हैं कि यह किस कारीगर या कारीगरों के किस वंश का तैयार किया हुआ है।

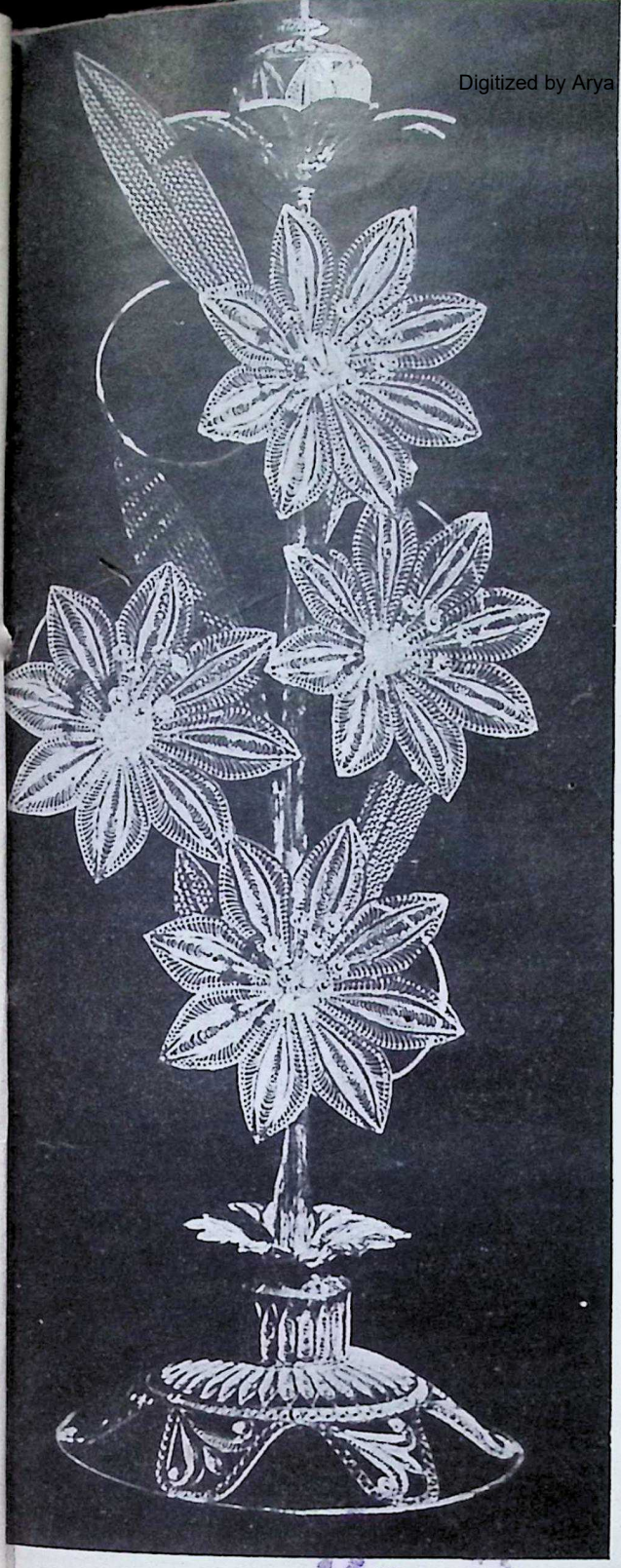

गुलाब दान

LIBRARY

उड़ीसा की तारकशी का एक उत्कृष्ट नमूना : एक मकबरा

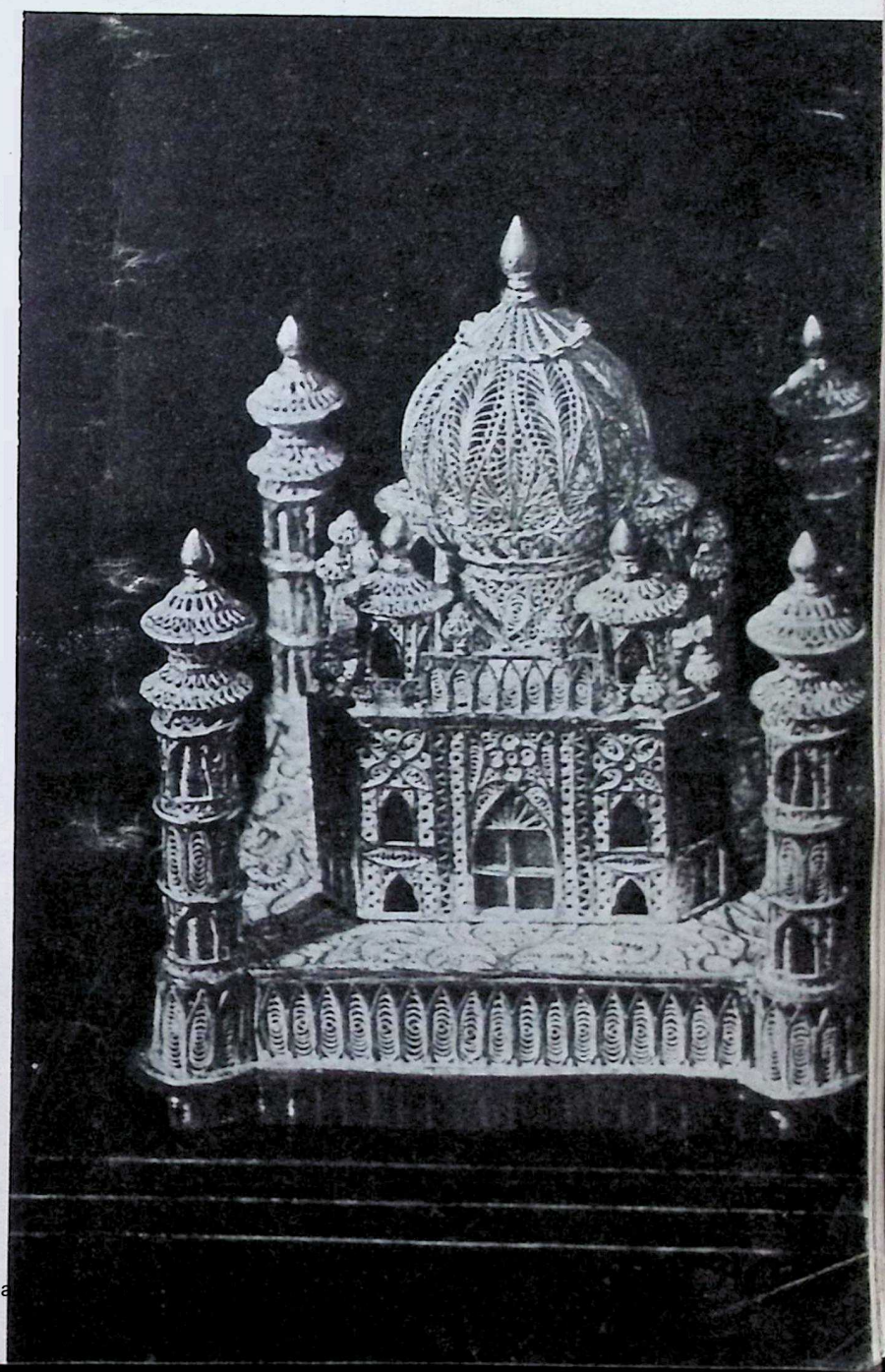

CC-0. In Public Doma

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

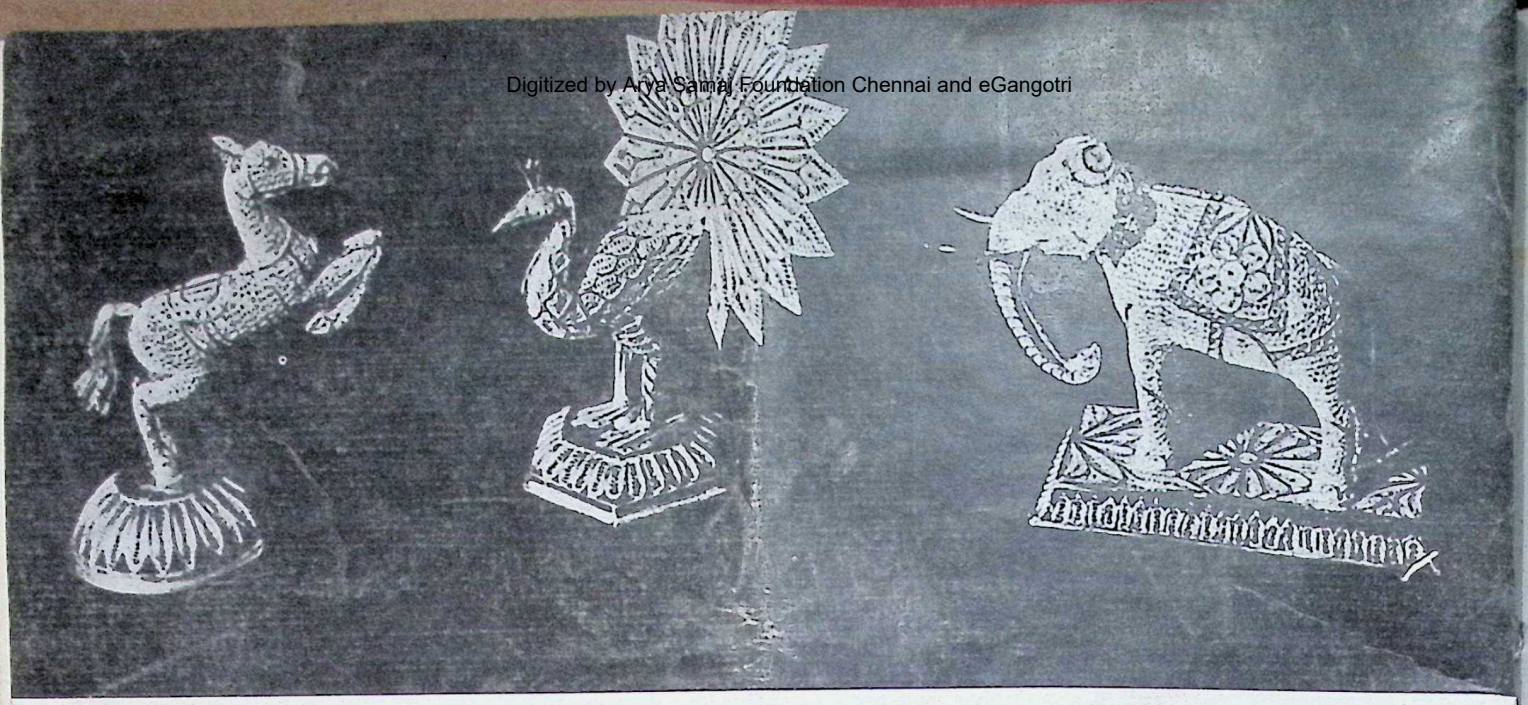

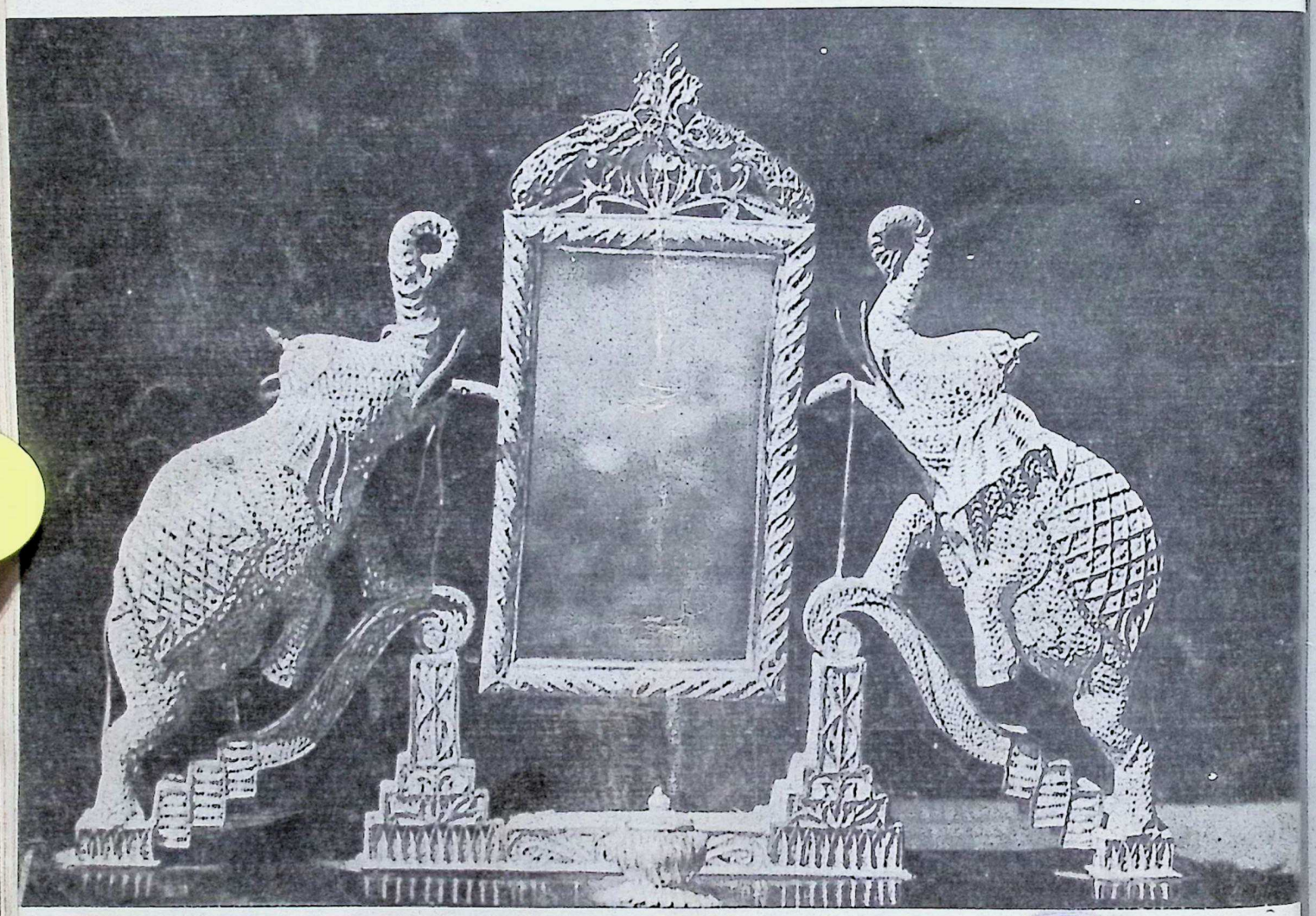

निदेशक, प्रकाशन विभाग, पुराना सचिवालय, दिल्ली–८, द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित
तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मद्रणालय, फरीदाबाद, द्वारा मुद्रित ।

Regd. No. D– 508.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY HARIDWAR

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-भारती

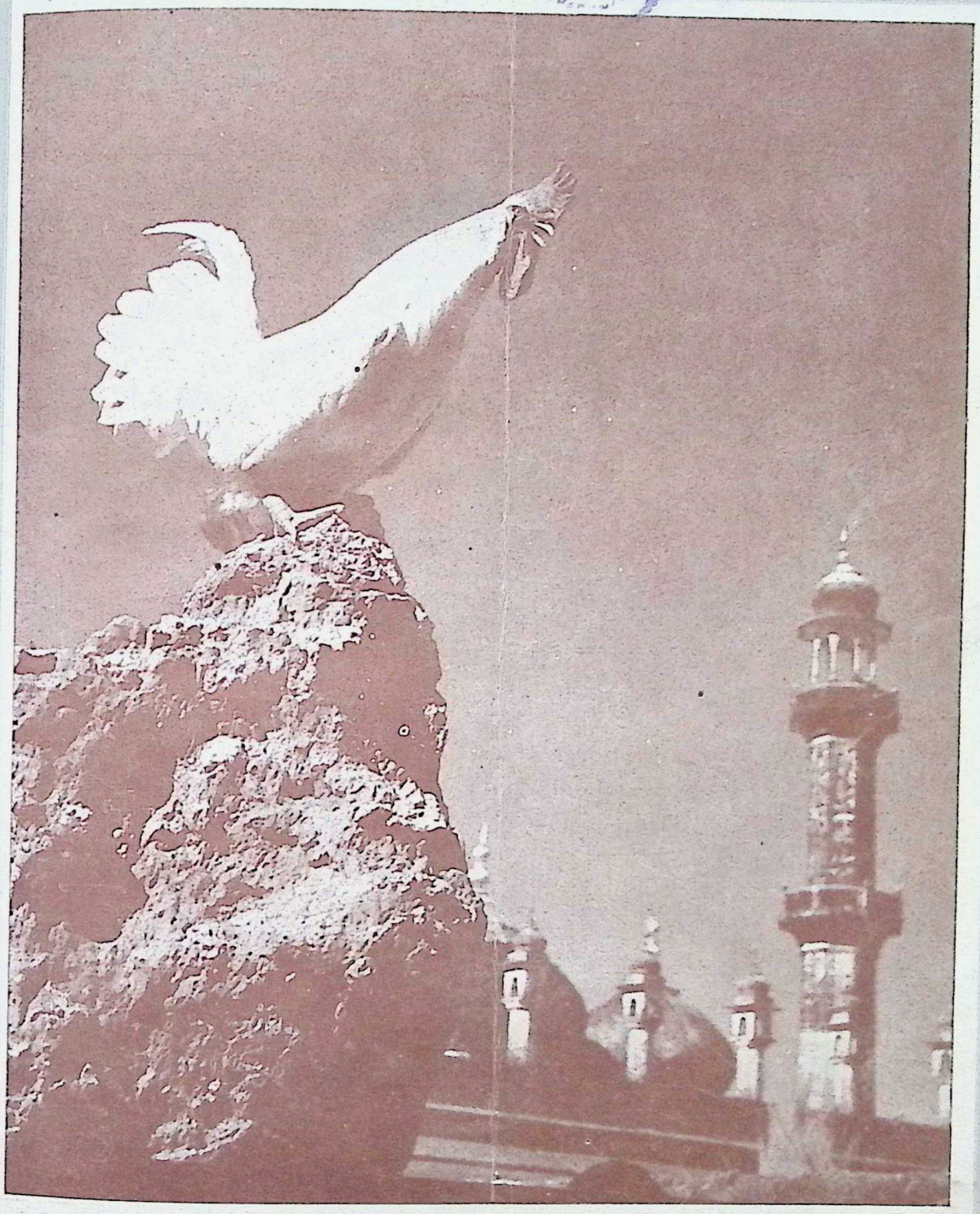

वैशाख-ज्येष्ठ १८८२
मई १९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य
३५ नए पैसे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-चित्र

के. कृष्णमूर्ति

1. तुम ते हो

2. उसने 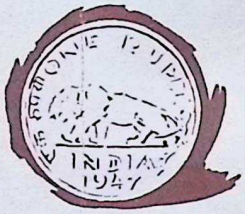 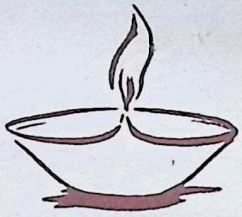

3. 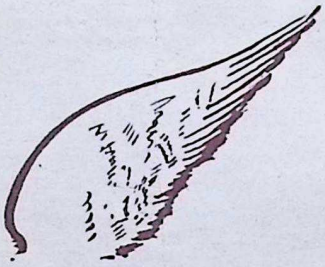 बैठो

4. मेरा 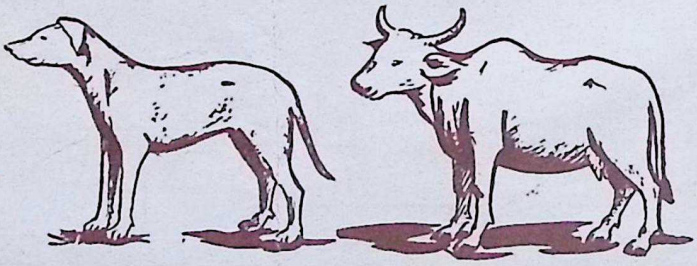 ब है

5. 1 1/4 ल 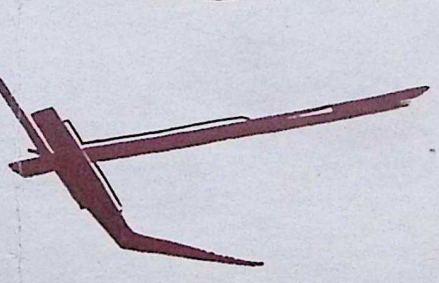 करो

(शेष तीसरे कवर पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के स्वास्थ्य
के रक्षक

नौनिहाल
बेबी टानिक

बच्चों की कमज़ोरी में काम आता है

नौनिहाल
ग्राइप सीरप

बच्चों के कब्ज़, बदहज़मी दांत निकलना,
और अफ़ारा में काम आता है

हमदर्द दवाखाना
[ट्रस्ट] देहली

बाल-भारती

संख्या १२ वैशाख-ज्येष्ठ १८८२ वर्ष १२

मई १९६०

LIBRARY
HARIDWAR

सम्पादक मण्डल

विष्णु प्रभाकर
के० शंकर पिल्ले
फ्रीडा वेदी
मोहन राव
मन्मथनाथ गुप्त
सावित्री देवी वर्मा (मंत्री)

विषय-सूची

चन्दामामा में खरगोश	डा० कैलाश चन्द्र भाटिया	२
भगवान के दर्शन	मुन्नालाल देवासे	३
बचपन की याद (कविता)	राजेश यादव	५
गर्मी आई (कविता)	केशरी किशोर भाटी	५
सच्चाई की जीत	मालिनी बिसेन	६
बैल डर गया	भारतप्रकाश भाटिया	७
चिड़िया की खिचड़ी	सरजप्रकाश कपूर	८
फूट करे नाश	राम रण विजय सिंह	९
मूख बन्दर (कविता)	शम्भुदयाल चतुर्वेदी	१०
बढ़िमती बहू	अनु० जगन्नाथ प्रभाकर	११
बताओ तो जानें (कविता)	अशोक कुमार	१२
जसा ीज वसा धान (कविता)	नरेन्द्र 'पागल'	१३
घास की रोटी (कविता)	जगदीशचन्द्र शर्मा	१३
गांव चत रहे हैं	सुशील कुमार	१४
बाल-भारती चित्रावली (गांवों में जागृति की लहर)		१५-१८
दीदी की चिट् ी (यदि आप लोकप्रिय बनना चाहते हैं)	सावित्री देवी वर्मा	१९
गणित के विलक्षण परिणाम	सन्तराम	२०
ताजमहल (कविता)	अम्बाशंकर नागर 'अमिताभ'	२१
गिलहरी और पहाड़ (कविता)	ब्रह्मानन्द 'बन्धु'	२१
हैवाथा	अनु० ब्रह्मदेव शर्मा	२४
भूल भुलैया		२६
चित्र-जगत		२७
समुद्र यात्रा में परमाणु शक्ति का प्रयोग		२८
मलेरिया से लड़ाई	मन्मथनाथ गुप्त	२८
जनियर राष्ट्रीय कैडटकोर	कृष्ण कुमार गर्ग	२९
सेवा (एकांकी)	गुलज़ार हुसैनी	३०
घड़ों पर चित्रका ी	लालचन्द	३२
शब्द-चित्र	के० कृष्णमूर्ति (दूसरा और तीसरा कवर)	

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता—सावित्री देवी वर्मा
पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८
वार्षिक मूल्य—चार रुपये, १ डालर या ७ शिलिंग
एक प्रति—३५ नए पैसे, १० सेंट या ८ पेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातक कथा—

चन्दामामा में खरगोश

डा० कैलाश चन्द्र भाटिया

किसी जंगल में एक खरगोश रहता था । उसके तीन साथी थे——बन्दर, गीदड़ और ऊदबिलाव । बेचारे साथ-साथ रहते थे । अपने-अपने खाने-पीने की चिन्ता वे आप ही करते थे । खा-पीकर फिर इकट्ठे हो जाते थे । इन चारों में खरगोश अधिक बुद्धिमान था और उसकी कही हुई बात सभी साथी मानते थे । एक दिन खरगोश ने अपने साथियों से कहा कि हमें सदाचार का पालन करना चाहिए । दान में कुछ देना चाहिए और उपवास करना चाहिए । तीनों साथी इस उपदेश को मान कर अपने-अपने खाने की चीज़ें इकट्ठी करने लगे । ऊदबिलाव को सात मछलियां मिलीं । गीदड़ कुछ मांस की बोटियां ले आया और बन्दर कुछ पके हुए आम । खरगोश को उस दिन कुछ भी न प्राप्त हुआ । तब उसने सोचा कि तिनके-पत्ते ही खा लूंगा और यदि कोई मांगने वाला आया तो उसको अपने ही को दान में दे दूंगा ।

इन्द्र ने कहा——अरे खरगोश ! मैं ब्राह्मण नहीं हूं । मैं तो इन्द्र हूं । तेरी परीक्षा लेने के लिए आया हूं ।

खरगोश के मन के इस भाव को इन्द्र ने जान लिया । वे उसकी परीक्षा लेने चले । पहले उन्होंने ब्राह्मण के रूप में ऊदबिलाव, गीदड़ तथा बन्दर की परीक्षा ली । उन सबने अपना-अपना रखा हुआ भोजन इन्द्र भगवान को दे दिया । जब वे खरगोश के पास आए, तो खरगोश ने बड़ी ही विनती से कहा कि आप आंच जला लीजिए, मैं अपने को उसमें फेंक दूंगा और फिर आप मेरे शरीर के पके मांस से भोजन कर सकते हैं ।

इन्द्र ने ऐसा ही किया और खरगोश ने अपने को उसमें फेंक दिया, पर सदाचार के कारण खरगोश के शरीर के रोम तक भी गरम न हो पाए । तब खरगोश ने इन्द्र से कहा कि आपके द्वारा तैयार की गई आग तो बहुत ठंडी निकली ।

इन्द्र ने कहा----अरे खरगोश ! मैं ब्राह्मण नहीं हूं । मैं तो इन्द्र हूं । तेरी परीक्षा लेने के लिए आया हूं ।

खरगोश ने गरज कर कहा——तू ही क्या सारे लोकों के आदमी मेरी परीक्षा ले सकते हैं ।

इसके उत्तर में यह कहते हुए कि तेरा गुण हमेशा प्रकट होता रहे, इन्द्र ने पहाड़ों को निचोड़कर पहाड़ के रस से चन्द्रमा में खरगोश की आकृति बना दी ।

बच्चो ! खरगोश की यही शकल हम, तुम, सबको चन्दामामा में दिखलाई पड़ती है । यह खरगोश ही भगवान बुद्ध थे ।

तुम्हें शायद यह भी मालूम हो कि अब इन्हीं चन्दामामा के पास वैज्ञानिक मनुष्य भेजने की तैयारी कर रहे हैं और अमेरिकावालों ने तो ११ अक्तूबर, १९५८ को एक राकेट यहां के लिए छोड़ भी दिया था, जो वहां तक न पहुंच सका । अभी हाल में रूस ने एक राकेट वहां पहुंचा दिया है । यह चन्द्रमा पर मानव की प्रथम विजय है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान के दर्शन

मुन्नालाल देवासे

उस कमरे में एक छोटी-सी खिड़की थी। खिड़की के नीचे से ही रास्ता जाता था। उस खिड़की में बैठकर गनपत अपना रोज का काम करता था। रास्ते पर से जानेवाले व्यक्ति को गनपत उसके जूतें देखकर पहचान लेता था। उसका कारण यह था कि गनपत उस गांव में कितने ही वर्षों से चमार का धंधा कर रहा था। नए जूते बनाना, पुराने जूते की पालिश, कहीं एकाध थिगली लगाना, ऐसे अनेक काम उसने किए थे।

गनपत अब बूढ़ा हो गया था। उसके मुंह को देखकर कोई भी व्यक्ति यह जान सकता था कि यह आदमी बहुत दुःखी है। और यह बात सच भी थी। उसकी पत्नी हैजे से चल बसी। वह अपने पीछे एक लड़का छोड़ गई। लड़के को देखकर गनपत संतोष करता, पर उसका यह संतोष बिल्कुल ओस के मोती जैसा था। किसी रोग के कारण उस बच्चे का भी अन्त हो गया। अब तो किसी भी बात में उसका मन नहीं लगता। किसी-किसी से वह कहता—परमेश्वर ने मुझे भला अब क्यों जीवित रखा?

उसके एक मित्र ने उससे कहा—गनपत, जीना और मरना हमारे हाथ में कहां है? सब बातें प्रभु के इच्छानुसार होती हैं। तुमको जो दुःख होता है, इसका कारण यह है कि तुम्हारा सुख तुम्हारे पास से कम हो गया है।

इस बात पर क्या कहा जाए, यही गनपत की समझ में नहीं आया। गनपत पूरा भावुक बन गया। आजकल उसका ध्यान परमेश्वर की ओर ही लगा था। रोज रात को सोने से पूर्व वह धार्मिक पोथी पढ़ता था। पोथी पढ़ने में वह इतना मग्न हो जाता कि दीये का तेल समाप्त हो कर बत्ती भी बुझने लगे तो उसे भान नहीं रहता था।

दिन पर दिन बीत रहे थे। गनपत का नियमित काम चल रहा था। परमेश्वर में उसका विश्वास दृढ़ हो गया। एक रोज रात को वह सदा की भांति पुस्तक पढ़ते हुए बैठा था, किसी ने उसे—गनपत, गनपत—कहकर पुकारा। गनपत ने चारों ओर देखा। पर वहां कोई नहीं था। पुनः आवाज आई—गनपत, कल सड़क की ओर ध्यान देकर बैठना, मैं आऊंगा।—गनपत ने आंखें मल-मल कर देखा, किन्तु उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया। विचारों में डूबे-डूबे ही उसे नींद आ गई।

दूसरे दिन गनपत रोज की तरह अपनी खिड़की के पास बैठा। कल की बात पर वह लगातार विचार कर रहा था। आज हमारे घर परमेश्वर विठोबा (श्रीकृष्ण) आएंगे, ऐसा उसका मन बार-बार कहने लगा। वह ध्यानपूर्वक राह से आने-जाने वालों

गनपत ने उस मेहतर को अन्दर बुलाया। गरम करके उसे एक गिलास भरकर दूध पिलाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जूतों की ओर देखने लगा। क्या नए जूते पहिने हुए कोई आदमी दिखेगा ? यही उसके देखने का उद्देश्य था।

खिड़की के नीचे हमेशा की तरह साफ-सफाई करने वाला मेहतर आकर खड़ा हो गया। झाड़ते-झाड़ते उसका दम चढ़ आया था। वह हांफ रहा था। गनपत ने यह देखा। उसे उस पर दया आ गई। गनपत ने उस मेहतर को भीतर बुलाया। गरम करके, उसे एक गिलास भरकर दूध पिलाया। वह मेहतर स्वस्थ होकर पुनः अपने काम पर निकल गया।

गनपत की आंखें पुनः सड़क पर किसी को खोजने लगी। उसी समय रास्ते के किनारे पर उसे एक स्त्री दिखलाई दी। वह दीवार के सहारे खड़ी थी। उसके शरीर पर फटे कपड़े और पैर में टूटी चप्पलें थीं। अपनी छाती से उसने एक बालक चिपका रखा था। ठंड से थोड़ी रक्षा हो जाए, यही उसकी कोशिश थी। पर वह बच्चा रो रहा था। गनपत ने यह देखा। उसने उस स्त्री से कहा——अरी बाई, वहां ठंड में क्यों खड़ी हो ? अन्दर आओ। उस बाई ने अचरज से गनपत की ओर देखा। वह स्त्री भीतर आई। वह भूखी थी। गनपत ने उसे दूध दिया। उस स्त्री को तो वह अमृत ही मालूम पड़ा। छोटे बच्चे से गनपत उसकी भाषा में ही तुतलाकर बातें करने लगा। उसे आनन्द हुआ। जाते समय गनपत ने उस स्त्री को अपना कम्बल दे दिया। उस स्त्री ने बहुत कृतज्ञता से गनपत की ओर देखा।

गनपत फिर खिड़की के पास बैठा। खिड़की के सामने एक संतरेवाली बुढ़िया खड़ी थी। उसने अपनी टोकरी सिर से उतारकर नीचे रखी और वह पैसे गिनने लगी। इसी समय वहां एक लड़का आया और वह संतरे चुराने लगा। बुढ़िया ने बालक का कुरता पकड़ लिया। उसके बाल खींचकर पीटने लगी। गनपत ने दौड़कर उस बालक को छुड़ाया। गनपत ने कहा——जाने दो बुढ़िया, बालक ही है, उसे माफ कर दो। क्या भगवान भी हमको क्षमा नहीं करता ?

वह लड़का भी गिड़गिड़ाकर बोला——मुझे माफ कर दो। मैं फिर ऐसा कभी नहीं करूंगा।

गनपत ने दो संतरे लड़के को ले दिए और उस बुढ़िया को संतरे का मूल्य दे दिया। अन्त में बुढ़िया की टोकरी उठा कर उसके सिर पर रखने में उस बालक ने ही हाथ लगाया। फिर संतरेवाली और वह बालक अपनी-अपनी राह निकल गए।

गनपत फिर खिड़की में आ गया। अब तो दीया जलाने का समय हो आया था। उसने अपना काम बन्द किया। चिराग जलाया और चश्मा लगा कर सदा की भांति पोथी पढ़ने लगा। कल जो स्वप्न देखा था उसकी याद आई। उसी समय किसी के पैरों की आवाज़ आई, किन्तु कोई भी दिखलाई नहीं दिया। उसे सुनाई पड़ा——गनपत,गनपत, क्या तुमने मुझे पहिचाना नहीं ?

——कौन हो तुम ?——गनपत बुदबुदाया।

——मैं हूं——आवाज़ आई। और कमरे के एक कोने में उस मेहतर की आकृति दिखी। उसे ही गनपत ने आज दूध दिया था। वह आकृति एकाएक अदृश्य हो गई।

——मैं ही हूं वह——पुनः आवाज आई और

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गनपत ने कहा——जाने दो बुढ़िया, बालक ही है, उसे माफ कर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन की याद

राजेश यादव

मुझे याद आती बचपन की ।
कभी हँसना तो कभी रोना,
खेल कूद में सब दिन खोना,
मन में आ जाए तब सोना,
था न कोई रोकने वाला--
इच्छा पूरी करता मन की ।
मुझे याद आती बचपन की ।
दादी अपने पास सुलाती,
रोज कहानी मुझे सुनाती,
एक था राजा, कभी बताती,
कभी कहती रात को परियां--
उतरा करतीं नील गगन की ।
मुझे याद आती बचपन की ।
किसी चीज को कभी तोड़ना,
तोड़-ताड़ कर उसे जोड़ना,
नहीं जुड़े तब उसे छोड़ना,
छोड़-छाड़ रोने लग जाना--
किस को हिम्मत फिर डपटन की ।
मुझे याद आती बचपन की ।
हँसता था तो फूल बरसते,
रोता था तो मोती झड़ते,
सोता मीठे सपने सजते,
नहीं भूल सकता मैं यादें--
हँसी खुशी से भरे चमन की ।
मुझे याद आती बचपन की ।

केशरी किशोर भाटी

धूल उडाती गर्मी आई
आंधी लाई, लूएं लाई
हंजे की है नानी गर्मी
लू की चाची बनकर आई
आती है गुर्राती भाई
गर्मी आई गर्मी आई
नदियां सोत सरोवर सोखे
पशु पक्षी तक उमस गए सब
लख-लख करते प्राण सभी के
आलस में है प्राणी सब अब
मिट्टी को गरमाती आई
मस्तक पांव जलाती आई
धूल उड़ाती गर्मी आई
आंधी लाई लूएं लाई ।

भगवान् के दर्शन--(पृष्ठ ४ का शेषांश)

सवेरे बालक को गोद में लिए हुए ठण्ड से ठिठुरती वही स्त्री उसे दिखलाई दी। उसकी गोद का बालक गनपत की ओर देखकर हँसने लगा। क्षण भर में वे दोनों गायब हो गए ।

--अरे, वही मैं हूं--पुनः वैसी ही आवाज़ आई। और गनपत को वह संतरेवाली तथा वह लड़का दिखने का आभास हुआ । हँसते-हँसते वे दोनों भी अदृश्य हो गए।

गनपत को बहुत अधिक आनन्द हुआ। उसने फिर पोथी पढ़ना शुरू किया। वह पढ़ने लगा--मैं भूखा था, तूने मुझे अन्न दिया। मैं प्यास से व्याकुल था, तूने मुझे पानी पिलाया । तुम्हारी मेरी पहिचान नहीं थी, पर तुमने मुझे आश्रय दिया।

अन्त की पंक्ति गनपत पढ़ने लगा--भूखे को अन्न, प्यासे को पानी, अनाथ को आश्रय जो कोई भी देता है, वह मेरी ही सेवा करता है ।

और फिर गनपत को इस बात का विश्वास हो गया कि मेरा कल का स्वप्न सत्य हुआ। आज सचमुच परमेश्वर हमारे घर आए, और उन्होंने इस प्रकार हमारी सेवा ग्रहण की । मैंने आज प्रत्यक्ष भगवान का, विठोबा का स्वागत किया, इस आनन्द में ही गनपत को उस रात सुख की नींद आई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चाई की जीत

मालिनी बिसेन

धन्नू का बाप छुटपन ही में मर गया था और उसकी बेसहारा मां मेहनत मज़दूरी करके अपना और अपने बेटे का पेट पालती थी। अपनी मां के कष्ट और उसकी परेशानियां नन्हें धन्नू के दिल पर बड़ा आघात करतीं। उससे वह सब देखा और सहा न जाता था। इसी कारण पढ़ाई छोड़कर छोटे धन्नू ने बाज़ार में फल और तरकारियों की एक दुकान खोल ली।

एक दिन दोपहर के समय एक ग्राहक उसके दुकान पर पहुंचा और एक तरबूज की तरफ इशारा करते हुए उसने पूछा—क्या यह ताज़ा है?

धन्नू ने फौरन उत्तर दिया—जी नहीं, हुजूर!

फिर वह ग्राहक पास वाली दूसरी दुकान पर गया। एक तरबूज हाथ में उठा कर उसने पूछा—क्या यह ताजा है?

—हां, हां, हुजूर—कहते हुए, उस दुकानदार ने मीठी-मीठी बातों से उसे यकीन दिलाया कि उसकी दुकान में सभी तरबूज ताज़े और मीठे हैं। उसने कहा—हुज़ूर, एक खरीद के तो देख लीजिए, इतने स्वादिष्ट और रसभरे हैं कि आप भी याद करेंगे।

उसके कहने में आकर ग्राहक ने तरबूज खरीद लिया। ग्राहक के चले जाने के बाद वह दुकानदार धन्नू से बोला—कितने मूर्ख हो तुम! इस ढंग से कोई व्यापार होता है। अरे भई, अपने ही माल को हम खुद ही खराब कहेंगे तो भला दूसरा क्योंकर खरीदेगा?

एक ग्राहक उसके दुकान पर पहुंचा और एक तरबूज की तरफ इशारा करते हुए उसने पूछा—क्या यह ताजा है?

बीच ही में उसे टोक कर धन्नू ने कहा—मगर क्या झूठ बोलना चाहिए?

दुकानदार ने समझाते हुए कहा—अभी तुम नादान हो। यह व्यापार-धंधे की बारीकियां तुम्हें मालूम नहीं। मेरा तरबूज सड़ा है, यह जानते हुए भी मैंने ग्राहक को उसके ताज़ा होने का विश्वास दिलाया, वर्ना वह उसे खरीदता ही नहीं। व्यापार में ईमानदारी काम नहीं देती, समझे?

धन्नू ने केवल इतना ही कहा—मैंने तो जो सच था वह बता दिया। भला इस तरह से दूसरे को धोखा कैसे दिया जा सकता है। सच्चाई पर ही व्यापार टिकता है।

घर पहुंच कर, बड़े उत्साह से उस ग्राहक ने जब तरबूज काटा तो वह तो अन्दर से सारा सड़ा निकला। उसे उस बेईमान दुकानदार पर बड़ा क्रोध आया। और उसी समय उसे सच बोलने वाले धन्नू का भोला चेहरा याद आ गया। दूसरे दिन उसने धन्नू की दुकान से फल खरीदे।

उस दिन से उस ग्राहक ने अपनी सारी ज़रूरत की फल, सब्जियां छोटे धन्नू के ही दुकान से खरीदना शुरू किया क्योंकि उसे उस पर विश्वास था कि धन्नू उसे जो कुछ भी खरीदने को कहता है वह ताज़ा और अच्छा होता है।

चन्द ही दिनों में धन्नू ने अपनी सच्चाई से खूब नाम कमाया और व्यापार में भी सफल होकर काफी रुपयों पैसों का मालिक बना। उसके दुकान पर पाटिया भी लगगई—धन्नू राम फलवाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैल डर गया

भारतप्रकाश भाटिया

एक था जाट। उसके पास एक बैल तथा एक घोड़ा था। दोनों ही बड़े हट्टे-कट्टे थे। बैल से वह हल जोतने का काम लेता और घोड़े से केवल सवारी का काम। प्रातः होते ही वह बैल को लेकर अपने खेतों में हल चलाने के लिए चला जाता। सारा दिन बैल को हल में जोत कर रखता। और फिर ऊपर से उसे खाना कम देता। इस कारण बैल कुछ कमजोर होता जा रहा था। अब तो वह बिना मार खाए अर्थात सीधी तरह कोई भी काम करने में आनाकानी करता रहता था।

परन्तु, उसका घोड़ा बड़ा सुखी था। जाट जब प्रातः खेतों में जाता तो वह घोड़े पर ही सवार हो कर जाता था। बस यही घोड़े का काम था। वहां पहुंच कर वह उसे खुला छोड़ देता। घोड़ा मजे से इधर-उधर चरता। कभी आराम करता, कभी इधर चरता तो कभी उधर। जब शाम होती तो मालिक उसकी पीठ पर बैठ कर घर वापस आ जाता।

अतः बैल के मन में घोड़े के प्रति जलन स्वाभाविक ही थी। बैल को वह घोड़ा एक आंख भी न भाता था। बैल ने एक दिन सोचा, मैं सारा दिन काम करता रहता हूं। गधे की तरह पिसता रहता हूं। फिर भी मालिक मुझे खाने को कम देता है और पुचकारता तक नहीं। परन्तु यह मुआ घोड़ा इसको कितना प्रिय है! यह इससे केवल सवारी के सिवाय और कोई भी काम नहीं लेता।

एक दिन बैल ने साहस कर घोड़े से पूछ लिया—भइया, जरा यह तो बताओ कि तुममें ऐसी क्या खासियत है, जिसके कारण तुम मालिक के प्रिय बने हुए हो? मालिक तुमसे ज्यादा काम भी नहीं लेता। मुझे भी वह उपाय बता दो। तुम्हारा बड़ा भला होगा।

इस पर घोड़े ने हँस कर उत्तर दिया—अरे, यह भी कोई मुश्किल है। आज शाम को जब मालिक तुम्हें खाने के लिए दाना डाले तो तुम मत खाना। आनाकानी करना, और हां, शरीर को ढीला अवश्य डाल लेना, जिससे वह समझे कि तुम बीमार हो। बस, वह तुम्हें कल से यहीं छोड़ जाएगा और किसी दूसरे बैल का प्रबन्ध कर लेगा। कुछ दिन बाद तुम ठीक हो जाना। तब तुम दो होगे और फिर काम अधिक न रहेगा।

बैल को यह बात जंच गई। अतः शाम को उसका मालिक बैल को दाना डालने आया तो बैल ने घोड़ेवाली तरकीब ही बरती। मालिक ने सोचा—शायद यह बीमार है। इस कारण इसने दाना नहीं खाया।

अब जाट को बड़ा दुःख हुआ। वह गरीब था। उसके पास इतने पैसे न थे कि दूसरा बैल खरीद सके, और खेतों का काम भी होना जरूरी था। यदि समय पर हल न चलाया गया तो साल भर क्या खाएंगे। अच्छी फसल नहीं होगी। इस प्रकार वह चिन्ता में डूब गया। परन्तु जल्दी ही उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा क्यों न घोड़े से ही बैल का काम लिया जाए।

बस, फिर क्या था। जब दूसरे दिन वह खेतों में गया तो उसने घोड़े को हल के आगे बैल की जगह जोत दिया। परन्तु घोड़े के लिए यह काम नया था। अतः उसने पहले आनाकानी की, परन्तु इस पर जाट ने उसको छड़ी से पीटा। उसकी टांगों पर छड़ी से चोट की, जिससे उसकी टांगें सूज गईं और उसका अधिक चलना दूभर हो गया।

शाम को जब घोड़ा घर आया तो बैल ने पूछा—कहो भाई, आज कैसी रही? क्या मालिक ने किसी और बैल का प्रबन्ध करने की सोची है?

परन्तु घोड़े ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उत्तर देता भी कैसे। बैल की मुसीबत अब उसके गले पड़ गई थी। उसने आंखें नीची कर लीं।

यह क्रम कई दिन तक चलता रहा। इससे छुटकारा पाने के लिए घोड़े को एक उपाय सूझा।

शाम को जब घोड़ा बैल के पास बैठा हुआ था तो उसकी आंखों में आंसू थे। इस पर बैल को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—भइया घोड़े, आज ऐसी क्या बात है कि तुम बड़े उदास हो?

इस पर घोड़े ने एक ठंडी सांस भरी और कहा—क्या बताऊं, मुझ से तो यह बात कही नहीं जाती। परन्तु कहना ही पड़ता है। आज प्रातः मालिक यह कह रहा था कि मेरा यह बैल अब बूढ़ा हो गया है। इसको किसी कसाई के यहां बेच कर कोई जवान-सा बैल ले आऊंगा। इस कारण मुझे चिन्ता हो रही है कि तुम अब बचोगे नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जी कैसे लगेगा, इसी पर मुझे दुःख हो रहा है। तुम्हारा जीवन खतरे में हो, और मैं आंसू भी न बहाऊं, भला यह कैसे हो सकता है?

बस फिर क्या था, बैल डर गया। जान किसे प्यारी नहीं होती।

शाम को जब जाट बैल को दाना डालने आया तो बैल ने झटपट उसमें मुंह मारना शुरू कर दिया। उसने यह दिखाना शुरू कर दिया कि मैं अब भला-चंगा हूं। तुम अब मुझ से जो भी काम लेना चाहो, ले सकते हो।

जब जाट ने देखा कि बैल तो अब भला-चंगा है, तो उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा।

और दूसरे दिन वह बैल को भी खेतों में ले गया। अब फिर से बैल खेतों का काम करने लगा और घोड़ा केवल मालिक की सवारी का ही साधन बन गया।

परन्तु अब बैल को घोड़े से कोई जलन न थी।

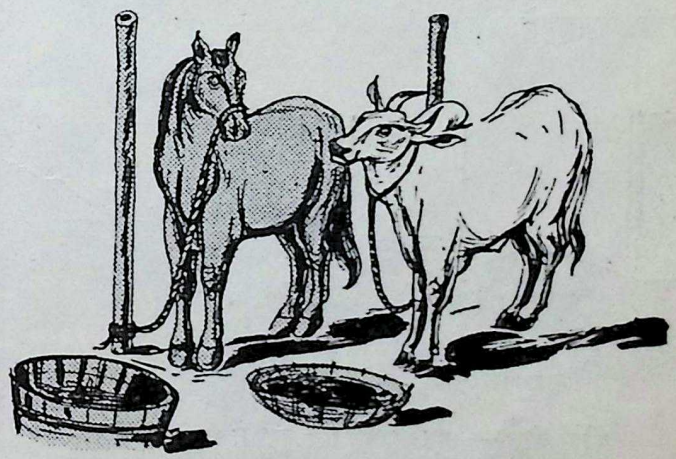

—तुम्हारे बिना मेरा जी कैसे लगेगा, इसी पर मुझे दुख हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिड़िया की खिचड़ी

सूरजप्रकाश कपूर

एक दिन एक चिड़िया और एक कौवा जंगल में दाना चुग रहे थे। चिड़िया को मिला हल्दी का टुकड़ा और कौवे को मिला नमक का टुकड़ा। बरसात का मौसम आने वाला था, इसलिए दोनों ने घर बसाने की सोची। चिड़िया कौवे से बोली--कौवा भाई, तुम नमक का टुकड़ा मुझे दे दो। हम नमक और हल्दी को मिला कर घर बनाएंगे और दोनों उसमें रहेंगे। कौवा न माना, बोला--वाह, मैं अपना नमक क्यों दूं, मैं तो अलग घर बनाऊंगा।

चिड़िया ने हल्दी का घर बनाया और कौवे ने नमक का।

जब बरसात की ऋतु आई तो चिड़िया का हल्दी का मकान तो न गिरा, परन्तु पानी पड़ने से नमक गलने लगा और कौवे का नमक का मकान गिर गया।

कौवा पानी में भीगने लगा। ऐसे समय में उसे चिड़िया की याद आई। उसने सोचा कि चिड़िया के पास चलना चाहिए, शायद वह मदद कर दे।

वह चिड़िया के घर पहुंच गया। उस समय वह चावलों की खिचड़ी बना रही थी। कौवा बोला--चिड़िया बहन, मेरा मकान गिर गया है, ड्योढ़ी में थोड़ी जगह दे दो।

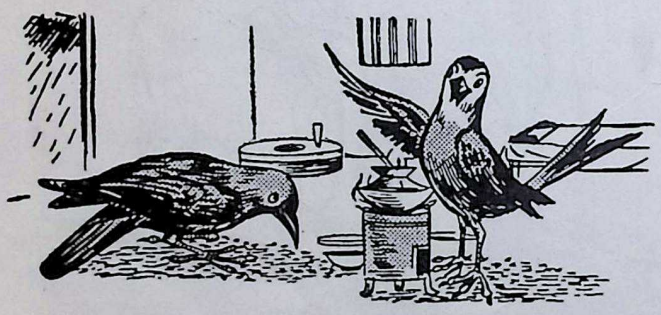

कौवा बोला--बहन, अगर तुम बुरा न मानो तो मैं चूल्हे के पास आ बैठूं। यहां मुझे ठण्ड लग रही है।

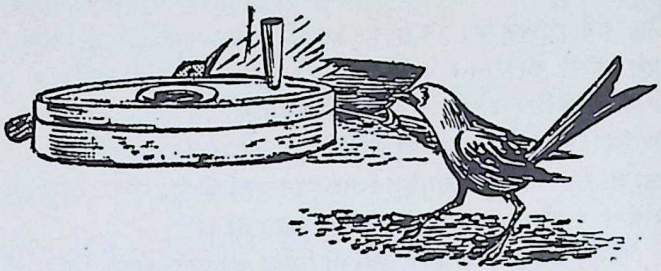

गर्म-गर्म सीख लगने से कौआ वहीं मर गया।

चिड़िया बोली--

ओहा लूण खड्डिती,
मैं मंगी तूं न दित्ती,
आ कुमापा ऐथे बै।

--वही छोटी सी नमक की डली थी न, मैंने मांगी पर तू ने नहीं दी। आ, आकर बैठ जा।

कौवा ड्योढ़ी में बैठ गया। परन्तु वहां भी उसे ठण्ड लगी। चिड़िया को खिचड़ी बनाते देख कर उसका मन भी वहां न लग रहा था। बोला--बहन, अगर तुम बुरा न मानो तो मैं चूल्हे के पास आ बैठूं। यहां मुझे ठण्ड लग रही है--चिड़िया फिर बोली--

ओहा लूण खड्डिती,
मैं मंगी तूं न दित्ती,
आ कुमापा ऐथे बै।

कौवा अन्दर आकर बैठ गया। चिड़िया बोली--कौवे भाई, तुम ज़रा मेरी खिचड़ी का ध्यान रखना मैं पड़ोस से थोड़े मूंग ले आऊं।

कौवे ने हां भर दी और चिड़िया मूंग लेने चली गई। कौवा तो मौके की ताक में था ही। उसके जाते ही सारी खिचड़ी चट कर गया और चक्की के पीछे जा छुपा।

चिड़िया जब मूंग लेकर वापस आई तो उसने देखा कि सारी खिचड़ी खतम हो गई है। जब उसने

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूट करे नाश

राम रण विजय सिंह

बात उस समय की है जब मगध की राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी। वहां के राजा थे बिम्बिसार। वह बड़े ही दयालु थे। अपनी प्रजा को अपने बेटे के समान मानते थे। उनके पुत्र का नाम अजातशत्रु था। वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी था। उसने राजगद्दी को हथियाने के लिए अपने पिता को भी कैद कर लिया था।

अनेक राज्यों को जीतने के बाद अजातशत्रु ने वैशाली पर भी आक्रमण किया। उन दिनों वैशाली में कोई राजा नहीं था। प्रजा के चुने हुए सदस्य ही राज-काज संभालते थे। मतलब यह कि वहां सच्चे अर्थ में प्रजातन्त्र राज्य-व्यवस्था थी। अजातशत्रु का पहला आक्रमण विफल हुआ।

एक दिन राजा अपने विश्वासी मंत्री वर्षकार से बोला--मंत्रीवर, मेरी हार रह-रहकर मुझे ठोकर देती है। ओह! मैं सोचते-सोचते परेशान हो उठता हूं। मैं जल्द से जल्द वैशाली को जीतना चाहता हूं।

--ओह! मैं सोचते-सोचते परेशान हो उठा हूं। मैं जल्द से जल्द वैशाली को जीतना चाहता हूं।

मंत्री बोला-- महाराज, धैर्य से काम लें। मैं कुछ उपाय करूंगा।

दूसरे दिन मंत्री वर्षकार श्रमण गौतम के पास उनके निवास-स्थान गृद्धकूट पर्वत पर पहुंचा। प्रणामादि के पश्चात उसने राजा की चिन्ता का विषय बताते हुए वैशाली-विजय के सम्बन्ध में उनकी राय जाननी चाही।

जानते हो बच्चो, गौतम को अजातशत्रु के विचार जानकर बहुत दुःख हुआ। वे दया की मूर्त्ति थे। व्यर्थ का खून बहाना उन्हें कैसे सुहाता? वैशाली तो उन्हें इसलिए भी प्यारी थी कि वहां के लोग किसी का कभी अहित नहीं चाहते थे। फिर भी चेतावनी देने के भाव से उन्होंने अपने शिष्य आनन्द को देखते हुए कहा--आनन्द, सुना है कि वज्जी बार-बार सभा करके सलाह करके राज्य का काम करते हैं?

--सुना है, भगवन!--आनन्द बोले।

--आनन्द, जब तक वज्जी बार-बार सभा करके काम करेंगे तब तक वज्जियों की उन्नति ही होगी, हानि नहीं। जब तक वज्जी प्रजातन्त्री सभा में बहुत से निर्णय करके किसी काम को करेंगे, एक राय से काम करेंगे, उठेंगे, बैठेंगे, अपने वृद्धों का सम्मान-सत्कार करेंगे, उनकी बात पर कान देंगे और स्त्रियों, कन्याओं पर अत्याचार अथवा जबर्दस्ती नहीं करेंगे और धर्म की उन्नति की ओर ध्यान देंगे, तब तक वज्जियों की उन्नति ही होगी, हानि नहीं।

गौतम की भविष्यवाणी सुनकर मंत्री वर्षकार की बांछें खिल गईं। उसे मन मांगी मुराद मिल गई। उसके कानों में एक ही शब्द गूंजने लगा--जब तक.... जब तक.... अर्थात जब तक उनमें एकता है, मेल है, संगठन है..... लेकिन जब उनमें फूट हो जाएगी तब? और मन ही मन कुछ निश्चय कर वह मुस्करा पड़ा। अब उसके रुकने की कोई जरूरत भी नहीं थी, अतः वह गौतम को प्रणाम कर लौट आया।

सारी बातें उसने राजा को बताईं और अपनी ओर से यह भी बताया कि उसने फूट डालने की राह भी सोच निकाली है। इसके बाद दोनों बहुत देर तक धीरे-धीरे बातें करते रहे।

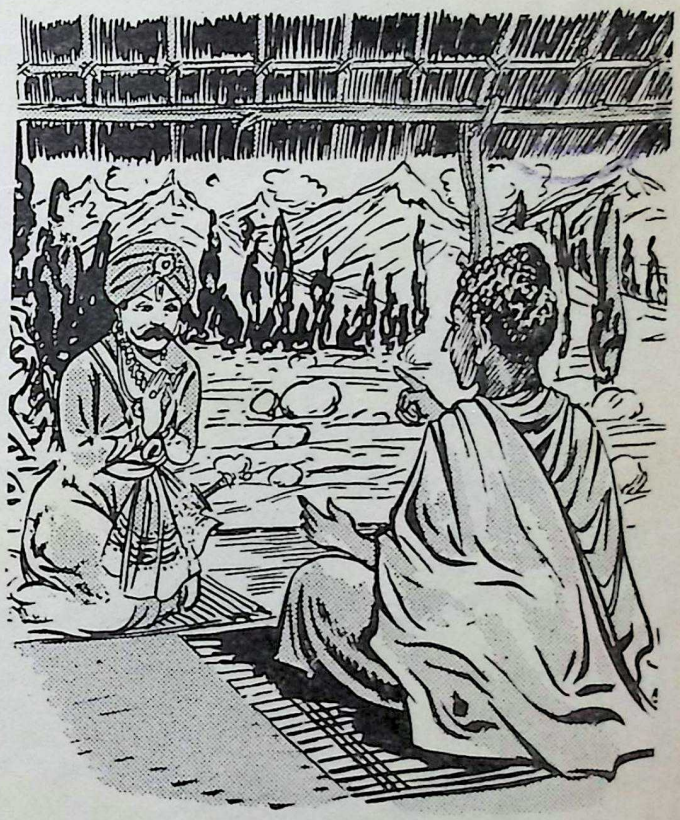

--जब तक वज्जी बार-बार सभा करके काम करेंगे तब तक वज्जियों की उन्नति ही होगी, हानि नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे ही दिन मगध की जनता यह सुनकर सन्नाटे में आ गई कि मंत्री वर्षकार राजद्रोही हो गया है और राजा ने उसका सिर, दाढ़ी और मूंछ के बाल मूंड, मुंह काला कर राज्य से निकाल दिया है। उसको अपने घर में शरण देने वाले को भी राज-दण्ड का भागी बनना होगा-- ऐसी राजाज्ञा निकाली गई थी। वर्षकार का अपराध यह घोषित किया गया कि वह वैशाली के लोगों को तरह-तरह के उपहार भेजा करता था और उस पर आक्रमण करने से राजा को रोकता था। भला ऐसे निकम्मे मंत्री को जो राज्य का अहित चाहता हो दण्ड का भागी क्यों न बनना पड़ता।

देश निकाले की सजा पाकर वर्षकार पागल जैसा हो गया। वह इधर-उधर भटकता रहा। एक दिन घूमता-घामता वह वैशाली जा पहुंचा। वहां के लोगों को भी यह मालूम हो गया था कि उन्हीं लोगों के कारण वर्षकार की वैसी दुर्दशा हुई है, अतः उन लोगों ने उसका खूब स्वागत-सत्कार किया। वर्षकार बड़े आनन्द से वहां रहने लगा। कुछ दिनों के बाद वैशाली के लोगों ने वर्षकार का सम्मान बढ़ाने के उद्देश्य से उसे न्याय-मंत्री का पद भी दिया, वर्षकार तो इसी दिन का इंतजार कर रहा था। वह शिकार बनकर नहीं आया था-- शिकार करने आया था। उसने धीरे-धीरे फूट का बीज बोना शुरू किया। सारा वातावरण ही जहरीला हो गया। और तब उसने अजातशत्रु को सूचना दी-- समय आ गया है, आ जाइए।

अजातशत्रु तो पहले से ही तैयार बैठा था। उसने तुरंत वैशाली पर चढ़ाई कर दी और बिना विशेष खून-खराबी के वैशाली पर अधिकार कर लिया।

वैशाली के लोगों ने भी तब अपनी भूल समझी। पर अब क्या होता? चिड़िया तो खेत चुग कर उड़ चुकी थी।

हितोपदेश से

मूर्ख बन्दर

शम्भुदयाल चतुर्वेदी

किसी एक राजा ने पाला
बन्दर एक बड़ा-सा लाल।
हो प्रसन्न उसकी सेवा से
राजा रखता उसे निहाल।
सेवा-टहल सभी वह करता
राजा का बन पहरेदार।
उसके लिए खुले रहते थे
राजमहल के सारे द्वार।
पंखा झलता था यह बन्दर
राजा करता जब विश्राम।
इसी तरह के और बहुत-से
करता था यह बन्दर काम।
एक दिवस जब राजा सोया
बन्दर ने देकर कुछ ध्यान--
देखा, मक्खी आकर बैठी
राजा पर सहसा अनजान।
बन्दर ने पंखे से उसको
उड़ा दिया झुककर तत्काल।

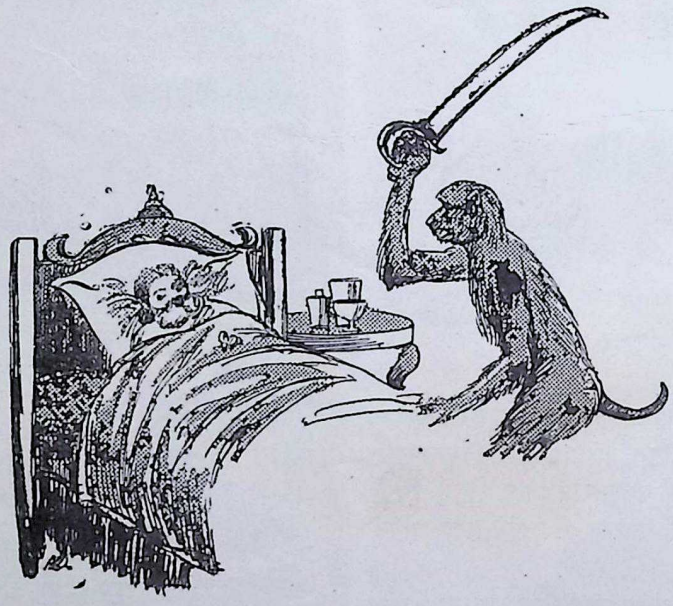

बार बार पर आ जाती थी
राजा पर मक्खी विकराल।
मक्खी की यह धींगाधींगी
बन्दर सह न सका अनजान।
ले तलवार बना वह फौरन
वीर बहादुर अजब महान।
किया वार बन्दर ने ज्योंही
मक्खी पर कसकर तत्काल।
राजा भी यमलोक सिधारा
बहा रक्त का नाला लाल।
बुद्धि कहां बन्दर में इतनी
कर सकता जो तनिक विचार।
मक्खी को मारेगा यदि वह
राजा पर ही होगा वार।
मूर्ख मित्र से शत्रु भला वह
रहे बुद्धि से जो भरपूर।
चाहे जितना अहित करे वह
नहीं करेगा जग से दूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमती बहू

एक था साहूकार। उसके चार थे बेटे। चारों ही ब्याहे हुए थे। साहूकार ने सोचा, भगवान का दिया धन-दौलत तो मेरे पास बहुत है, सन्तान भी है, लेकिन चिन्ता इस बात की है कि इस धन को ठीक-ठीक काम में कोई भी नहीं लाता। जब तक जीता हूं, तब तक तो इसकी रक्षा करूंगा। मेरे मर जाने के बाद जाने क्या हो?

वह हर समय इसी चिन्ता में डूबा रहता था। आखिर उसके मन में आया कि सब बेटों और बहुओं की बुद्धि की जांच करनी चाहिए। जो जांच में पूरा उतरेगा, उसे घर की कुंजी सौंप दूंगा।

इस निश्चय के अनुसार एक दिन साहूकार ने सब से बड़ी बहू को बुलाया। उससे कहा—देखो बेटी! आज मैं तुम्हारे यहां खाना खाऊंगा, पर खाना रसोइए के हाथ का पका हुआ न हो। तुम अपने हाथ से पकाओ।

बहू ने अपने ससुर की आज्ञा सिर-आंखों पर रखी। वह बड़ी लगन से खाना तैयार करने लग गई। उसे चिन्ता थी कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाए। खाना तैयार करने के बाद उसने एक सुन्दर आसन बिछाया फिर ससुरजी को बुलवा कर उस पर बिठाया।

साहूकार ने कहा—बेटी! मैं खाना तब खाऊंगा, जब तुम मेरे प्रश्न का उत्तर दे दोगी।

बहू ने पूछा—पिता जी! आप का प्रश्न क्या है?

साहूकार बोला—देखो बेटी, एक वर्ष में बारह महीने होते हैं और खास तौर पर चार मौसम। अब तुम बताओ कि तुम्हें कौन-सा मौसम अच्छा लगता है?

बहू ने उत्तर दिया—पिता जी! मुझे तो बहार का मौसम अच्छा लगता है।

साहूकार ने पूछा—इसका कारण?

बहू ने उत्तर दिया—इस मौसम में अनोखी अनोखी चिड़ियां चहकती हैं। वे मीठी-मीठी बोलियां बोलती हैं। रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं। सारा देश-हरा भरा हो जाता है। तरह तरह के मेले-उत्सव मनाए जाते हैं। भांति-भांति के फल-फूल मिलते हैं। यही मौसम तो मौसमों का राजा कहलाता है। इसलिए मुझे यह अच्छा लगता है।

साहूकार ने अपने खजाने की चाबियां छोटी बहू को सौंप दीं।

साहूकार ने उत्तर सुन लिया। इसके बाद पेट भर कर रोटी खाई।

दूसरे दिन साहूकार ने दूसरी बहू को खाना तैयार करने के लिए कहा। उसे भी अपने हाथ से खाना बनाने की आज्ञा दी। उस बहू ने भी बड़ी लगन से खाना तैयार किया। जब साहूकार खाना खाने के लिए आसन पर बैठा, तो इस बहू से भी वही प्रश्न पूछा।

दूसरी बहू ने उत्तर दिया—पिता जी! मुझे वर्षा का मौसम अच्छा लगता है। इस मौसम में सर्दी नहीं होती। हाथ-पांव नहीं ठिठुरते। नहाने-धोने, सैर-सपाटे और खाने-पीने में खूब आनन्द मिलता है। फूल-फल भी खूब होते हैं।

साहूकार ने उत्तर सुना और रोटी खा ली। तीसरे दिन उसने तीसरी बहू को खाना तैयार करने को कहा। बहू ने बड़ी सावधानी से खाना बनाया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि कोई कमी न रह जाए। जब साहूकार खाने के लिए बैठा, तो इस बहू से भी उसने वही प्रश्न पूछा।

बहू ने उत्तर दिया--मुझे पतझड़ के महीने अच्छे लगते हैं। क्योंकि उन दिनों सब प्रकार का अन्न तैयार हो जाता है। लोग बहुत हर्ष मनाते हैं। तरह-तरह के फल भी मिल जाते हैं। इस मौसम में न अधिक जाड़ा होता है, न गर्मी।

साहूकार ने यह उत्तर सुन कर रोटी खा ली।

चौथे दिन चौथी बहू को खाना तैयार करने को कहा। वह बहू सब से छोटी थी। उसने भी अपने हाथ से खाना तैयार किया। बनाते समय बड़ा ध्यान रखा कि कहीं कोई त्रुटि न रहने पाए। जब साहूकार खाना खाने बैठा, तो वही प्रश्न उस बहू से भी उसने पूछा।

छोटी बहू ने उत्तर दिया--पिता जी! मेरे लिए सभी मौसम और सभी महीने एक से हैं। सभी अच्छे हैं। मैं हर हाल में, हर अवस्था में खुश हूं। जैसा भी समय हो, उसी के अनुसार गुजारा कर लेती हूं।

यह उत्तर सुन कर साहूकार बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसे छोटी बहू के खाने में अमृत का-सा स्वाद मिला। वह भूख से अधिक खा गया। उसके उत्तर पर बार-बार विचार करके साहूकार को ऐसा लगा कि यह बहू अच्छे घराने की जान पड़ती है। यही सबसे अधिक बुद्धिमती और संतोषी है। इसे अच्छे या बुरे समय से कोई मतलब नहीं। हर हाल में खुश रहती है। अपने मन को खूब तोल कर रखती है। किसी मौसमी लहर में बह जाने को अच्छा नहीं समझती। बाकी सब बहुएं तो बस खाने, पीने और ऐश मनाने की ही बात सोचती हैं। पर यह छोटी होते हुए भी बहुत ऊंची बात सोचती है। बस यही मेरा घर, मेरा कारोबार और सम्पत्ति-जायदाद सम्भालने के योग्य है।

साहूकार ने अपने खज़ाने की चाबियां छोटी बहू को सौंप दीं। सारी सम्पत्ति और कारोबार की बागडोर भी उसी के हाथ में दे दी। और स्वयं ईश्वर भजन में मग्न हो गया। छोटी बहू ने बड़ी शान से कारोबार चलाया। अपने काम में खूब चौकस रही, बन्दोबस्त अच्छा किया। इससे धन-धान्य की खूब उन्नति हो गई। सब परिजन सुख से रहने लगे।

--अनु० जगन्नाथ प्रभाकर

बताओ तो जानें

अशोक कुमार

(१)
हंसने से भी लाल हुआ मुंह
रोने से भी लाल!
सोने का मुंह चुप्पी साधे
गुस्से से बेहाल।

(२)
हुक्का पीने वाले का
मुंह कभी न दीखे,
धुआं निकलता रहे
खेत, घर, आंगन लीपे।

(३)
हरे रंग के मुंह पर
खुलती सौ-सौ आंखें,
जितनी आंखें--
उतनी ही खुशबू की पांखें।

(४)
एक आइना पिघल गया है,
एक चेहरा डूब गया है,
एक चेहरा निकल गया है।

(५)
छाल लपेटे हुए देह में
भूरी लम्बी दाढ़ी,
बिना सूत की माला पहने
डोल रहे बाबाजी।

(६)
सात रंग की कटी तिलंगी
बिना डोर के उड़ती,
मगर न हिलती, हाथ न आती,
और नहीं वह गिरती।

उत्तर (१) सूरज (२) कोहरा (३) फूल का बाग (४) तालाब (५) भुट्टा (६) इन्द्रधनुष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा बीज वैसा धान

नरेन्द्र 'पागल'

(१)

रामू श्यामू सहपाठी थे
दोनों ही थे एक समान,
रामू शाला जाया करता
पढ़ने में था उसका ध्यान।

(२)

लेकिन श्यामू गुल्ली-डन्डे
खेला करता था दिन रात,
बीड़ी पीता चोरी करता
सच्ची-झूठी करता बात।

(३)

रामू ने समझाया उसको--
यह न तुम्हारा अच्छा काम,
इन कर्मों से इज्जत जाती
और बिगड़ता घर का नाम।

(४)

फिर भी श्यामू ने रामू का
किया साथियों में अपमान,
अच्छा और बुरा क्या जग में
इसका रहा न उसको ध्यान।

(५)

रामू पढ़कर गुण के कारण
बना शहर का थानेदार,
लेकिन श्यामू बाबू बनकर
करता काला कारोबार।

(६)

एक रात को बीच शहर में
उसने जाकर डाका डाल,
लूट लिया था सब दुकान का
सोना-चांदी नगदी माल।

(७)

लेकिन ले जाने के पहले
उसे पुलिस ने पकड़ लिया,
माल जब्त कर लूट-पाट का
थाने में था बन्द किया।

(८)

श्यामू जी थे मुंह लटकाए
रामू था तब थानेदार,
रामू रहता रोब-दाब से
श्यामू करता--हां, सरकार !

(९)

हुई सजा श्यामू को इसमें
रहा न कोई सच्चा यार,
रामू को तब मिली तरक्की
सब करते थे उसको प्यार।

(१०)

इसीलिए मैं कहता बच्चो
पढ़ लिखकर बनना गुणवान,
यहां कर्म का फल मिलता है
जैसा बीजा, वैसा धान।

—प्रताप-जयन्ती पर

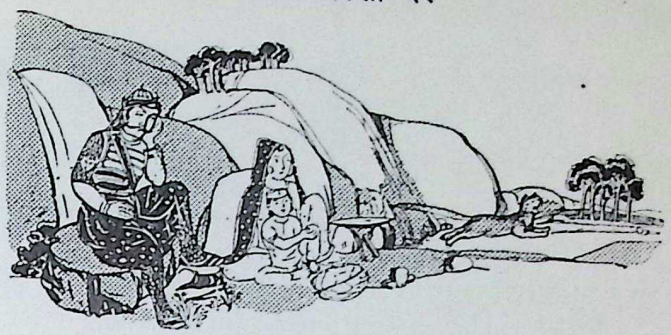

घास की रोटी

जगदीशचन्द्र शर्मा

हल्दी घाटी, बतला दो तो
वह अमर-कहानी जी भर कर,
जब नग-अरावली फूट-फूट
रो पड़ा घास की रोटी पर।
वह रोटी क्या छिन गई वहां
छिन गया हृदय बनवासी का--
आजादी पर मिटने वाले
आजादी के विश्वासी का।
विद्रोह भभकता हुआ उठा
कर्तव्यों की बलिवेदी पर,
जब राजतन्त्र की परम्परा
हिल गई घास की रोटी पर।
आजादी प्यारी हुई अधिक
राणा को अपने प्राणों से,
वे जुटे रहे, वे डटे रहे
दुखों की भीषणताओं से।
दिन रात इसी में कटते थे
मगरों की दुर्गम छाती पर,
कर्तव्य चरम-सीमा पर था
उस छिनी घास की रोटी पर।
वह रोटी क्या थी, उसमें थे
आजादी के अरमान भरे,
प्रणवीरों के अभिमान भरे
कर्तव्यों के सम्मान भरे।
युग अंगड़ाई ले उठा प्रबल
परिवर्तन की चिनगारी पर,
आजादी का अभिषेक हुआ
अनमोल घास की रोटी पर।

सूचना

बाल-भारती का सितम्बर अंक भारतीय-त्योहार-कथा-अंक के रूप में निकालने का विचार है। उसके लिए उपयुक्त रचनाएं जून तक आ जानी चाहिएं। रचनाएं संक्षिप्त, सरल और रोचक हों।

—सावित्री देवी वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव चेत रहे हैं

सुशील कुमार

धानू बेचारा हर साल परेशान रहता। जब उसका बाप मरा तो सारी खेती १५ बीघे थी। धानू अपने छोटे भाई गनेश के साथ खेती-बारी में जुट गया। लेकिन कभी काम कायदे से न चला। हर साल कुछ न कुछ बिगड़ ही जाता था। कभी हल ठीक होता तो बैल न होते, कभी हल-बैल होते तो बीज न होता और कभी सब कुछ होता तो सूखा पड़ जाता। अगर किसी साल एड़ी-चोटी का पसीना एक करके कुछ हो भी जाता तो गांव के लखई साहु का सिपाही पहुंच जाता और खलिहान में ही औना-पौनी करके अनाज तौला लेता। साल भर रोटी के लाले पड़ जाते।

देखते-देखते गनेश ऊब गया। वह शहर चला गया। मौके से उसकी नौकरी एक दफ्तर में लगी, जहां गांव वालों की भलाई के लिए तमाम कारोबार होता था। ग्रामसेवक तथा समाज सेवकों को ट्रेनिंग दी जाती थी और किसानों के हित की बातें सिखाई जाती थीं।

दो साल बाद गनेश गांव लौटा तो बहुत होशियार हो गया था। अब वह पहले का बुद्धू गनेश नहीं रहा। आते ही उसने देखा कि एक बैल बीमार पड़ा है। धानू भैया सिर पर हाथ रखे बैठे थे। गनेश ने हाल-चाल पूछी तो धानू ने झुंझला कर कहा--बिकते-बिकाते पांच बीघे तो निकल गए। अब तो मन होता है यह हल बैल और बाकी खेत भी बेच कर सबका देना-पावना चुका दूं और कहीं देश-परदेश जा कर रोजी-मजदूरी करूं।

गनेश समझ गया कि भैया दुख झेलते-झेलते ऊब गए हैं। सो उस समय तो चुप रहा। शाम को खाने-पीने के बाद दोनों भाई बहुत दिन बाद एक साथ बैठे तो गनेश ने कहा--भैया, हमारा काम इसलिए खराब हो गया कि हमने योजना बनाकर काम नहीं किया। कोई काम करने के पहले उस पर अच्छी तरह सोच समझ कर काम करने का एक ढंग तैयार कर लेना चाहिए कि हमें पहले यह चीज जुटानी है, फिर यह ठीक करना है, तब काम आगे बढ़ाना है। हम लोगों की तरक्की का खयाल रखकर ही सरकार ने पंचवर्षीय योजना बनाई है और हम लोगों का फर्ज है कि इस योजना को सफल बनाएं।

धानू बोला--भैया, भला हम गरीब लोग क्या सहयोग दे सकते हैं? यह तो अमीरों के बूते का काम है।

गनेश ने कहा--दादा, देखो, धनी लोगों से रुपया निकालने के लिए सरकार ने तरह-तरह के कर लगा रखे हैं। वह सारा रुपया जनता की भलाई के कामों में ही खर्च होता है।

धानू बोला--तो यह कहो कि हम इस ओर से भी मारे गए। बेचारे साहु-महाजन मौके पर कर्ज-उधार देते थे, अब वह भी नहीं मिलेगा। अब मेरा बैल बीमार है, बोलो भला, लखई साहु से रुपए नहीं मिलेंगे तो क्या होगा?

गनेश ने कहा--यही तो सब से बड़ी विपत्ति है, भैया! अब देखो कि लाखों कोशिश करके हम अपनी कमर तोड़कर जो कुछ उपजाते हैं, सब लखई के हाथ लगता है। पर अब ऐसा उपाय हो गया है कि उनके पास जाना ही न पड़ेगा। सहकारी ऋण संस्थाएं खुल रही हैं। उसमें हम लोगों का धन जमा होगा। हम लोग उसके हिस्सेदार बनेंगे। जरूरत पड़ने पर हम वहां से रुपए लेंगे और किश्त के अनुसार धीरे-धीरे कर्ज अदा करेंगे। यह तो नहीं होगा कि उधर खेत काट कर फसल खलिहान में पहुंची नहीं कि लखई साहु का सिपाही लाठी लेकर हाजिर हो गया।

धानू ने कहा--जरा धीरे-धीरे बोल, कोई सुन न ले। अभी लखई साहु से चार-छः सौ लेकर गया तीर्थ जाना होगा, फिर लौट कर दादा के श्राद्ध का भोज-भात करना होगा।

गनेश बोला--यही सब तो बेकार की बातें हैं, भैया! भला इस तरह बेकार रुपए फेंकने से क्या फायदा? यह सब तो पंडितों ने इसलिए बना रखा है कि उनका पेट और उनकी झोली भरे। इतने रुपए लगाकर कोई रोजगार करो तो अपना भी पेट भरे, दूसरों का भी भला हो।

धानू जरा तेजी से बोला--तू भी इसे बेकार कहता है। यही बात हमें भोला ने भी समझाई थी। सोचता तो मैं भी हूं कि कोई दादा के पेट में तो जाता नहीं, फिर बेकार रुपए क्यों फेंके जाएं, पर दुनिया की रीत...

--दुनिया की रीत नहीं, खाने वालों की रीत कहो, भैया!

धानू कुछ सोच कर बोला--भला, खेती बारी के साथ रोजगार कैसे चल सकता है? फिर इतने रुपए कहां से आएंगे?

गनेश ने कहा--जोताई-बोवाई के बाद और फिर बीच के कुछ दिन हम लोग खाली ही तो रहते हैं, भैया। उन दिनों हम लोग नए काम कर सकते हैं। छोटे-छोटे धंधे, जैसे चर्खे पर सूत कातना, लकड़ी के खिलौने बनाना, बांस की डलिया बनाना, अरे हजारों काम तो हैं। इसको सिखाने का भी बड़ा इन्तजाम है, और छोटे धंधे करने के लिए सरकार की ओर से अलग कर्ज भी मिलता है। उससे तो बड़ी कमाई की जा सकती है। नए-नए कामों में मन भी बहलता है, पैसे भी बनते हैं। वह कर्ज हम अपनी सुविधा से धीरे-धीरे दे सकते हैं। कोई सिपाही नहीं आएगा।

बात धानू को भा गई। वह बोला--लेकिन अपने गांव में तो यह सब कुछ नहीं है, गनेश। इन सबके लिए सौ बार दौड़ दौड़कर शहर कौन जाएगा?

गनेश बोला--सब हमारे गांव में हो सकता है, पर जब हम हाथ लगाएं तब तो। गांव की पंचायत यह सब कर सकती है। इसीलिए तो पंचायतें बनाई गईं हैं कि गांवों का सुधार हो और गांव वाले अपने आप रास्ता बनाना सीखें। लोगों के बहकावे में न आकर अपना भला-बुरा खुद सोचें।

--पर लखई साहु तो पंचायत के सभापति हैं और ठाकुर बनराज सिंह सरपंच हैं। ये लोग तो कुछ करते नहीं। उल्टा धमकाते रहते हैं। मैंने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

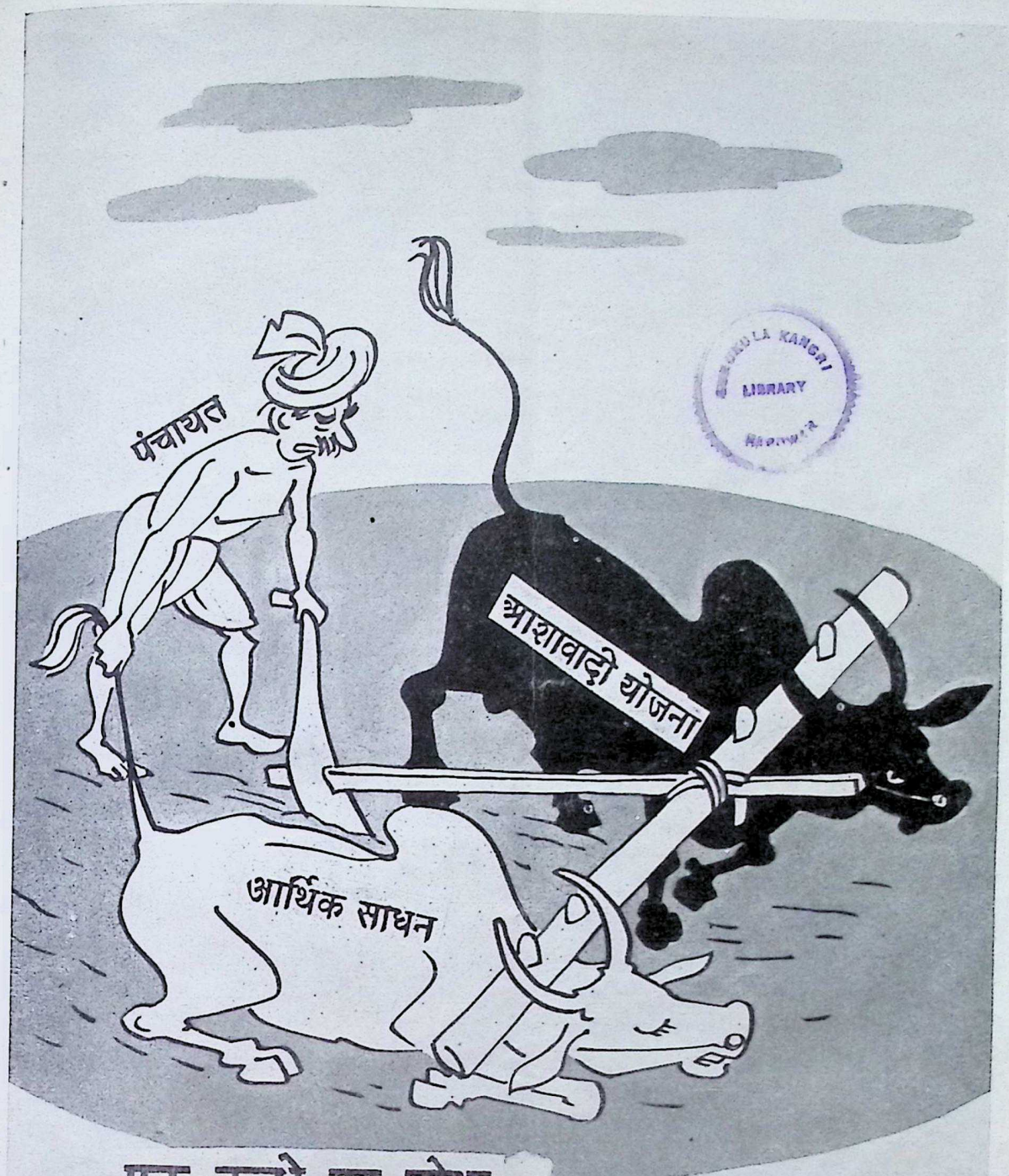

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

एक कन्धे का बोझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुटापा भी कम हो और पसीना भी न लगे

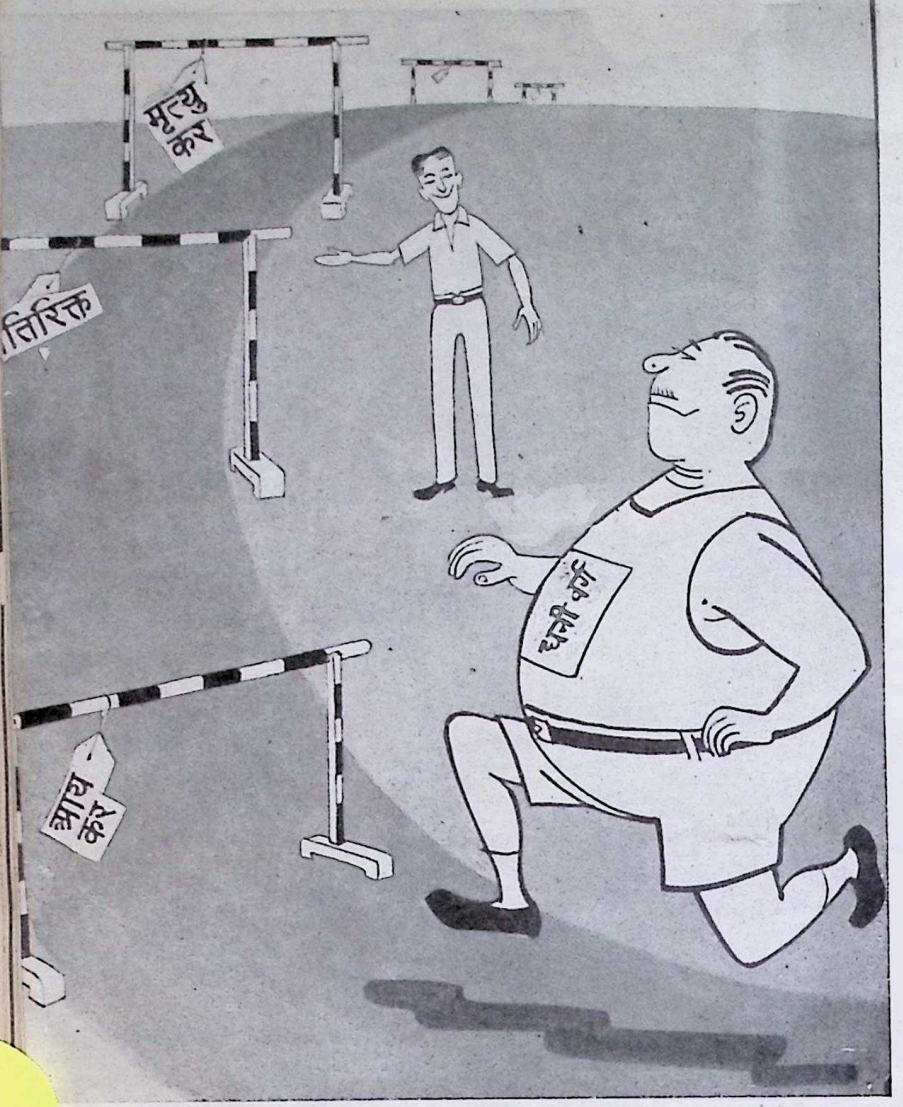

गांव चेत रहे हैं—(पृष्ठ १४ का शेषांश)

दरवाजे पर कुछ भिंडी-गाजर बो दिया तो बोले, यह पंचायत की जमीन है। तुम्हारे ऊपर मुकदमा चलाया जाएगा। दस रुपया देकर जान छुड़ाई, बैल की दवा तक न कर सका। अब बेकार हो गया।

गनेश ने कहा—तुमने बिलकुल गलत किया जो घूस दी। अगर वह घस मांगता था तो तुम्हें फौरन थाने में खबर करनी थी। फिर यह अपना ही कसूर है। लखई साहु और बनराज सिंह हमारा भला कैसे चेतेंगे। हमको तो अपनी भलाई-बुराई समझने वाला आदमी चुनना चाहिए।

धानू ने कहा—वे लोग अमीर हैं। दूसरे को कौन चुनेगा।

गनेश ने उठते हुए कहा—वोट देने वाले हम हैं। हमारे हाथ में ताकत है। हम जिसे चाहें अपना वोट दें। अमीर-गरीब की बात नहीं है। नए चुनाव होने वाले हैं। चलो हम लोग सबको समझाएं और अपने काम का योग्य आदमी चुनें, जो गांव की भलाई कर सके। पंचायत किसी एक की नहीं, हम सबकी है।

धानू कुछ देर सोचता रहा, फिर अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। बोला—चलो! शुभ कार्य आज ही से शुरू करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-भारती चित्रावली

गांवों में जागृति की लहर

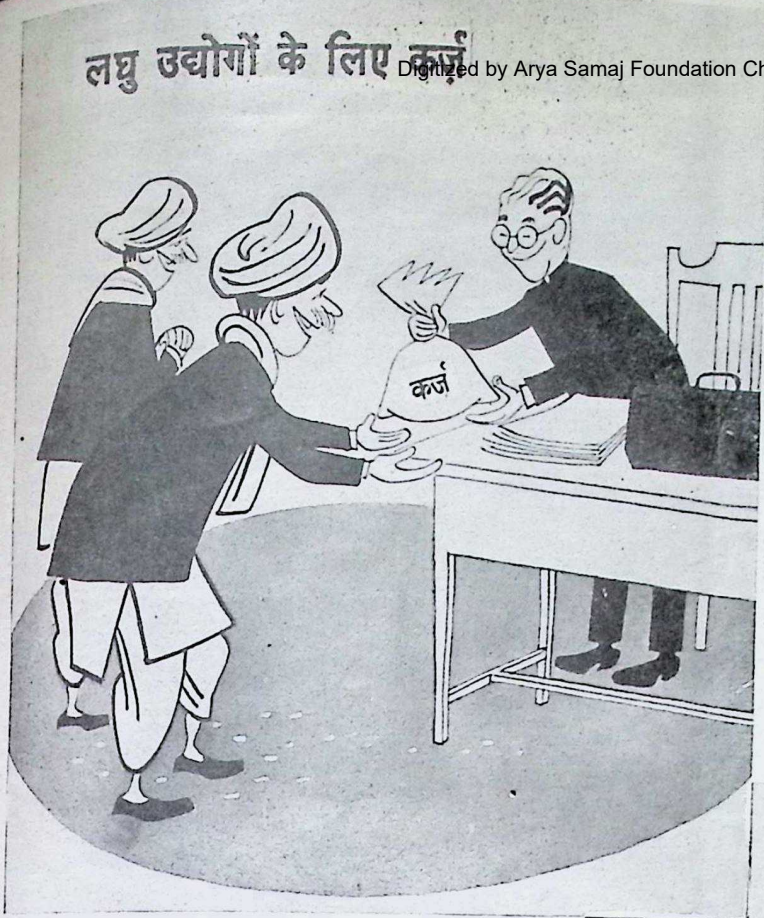

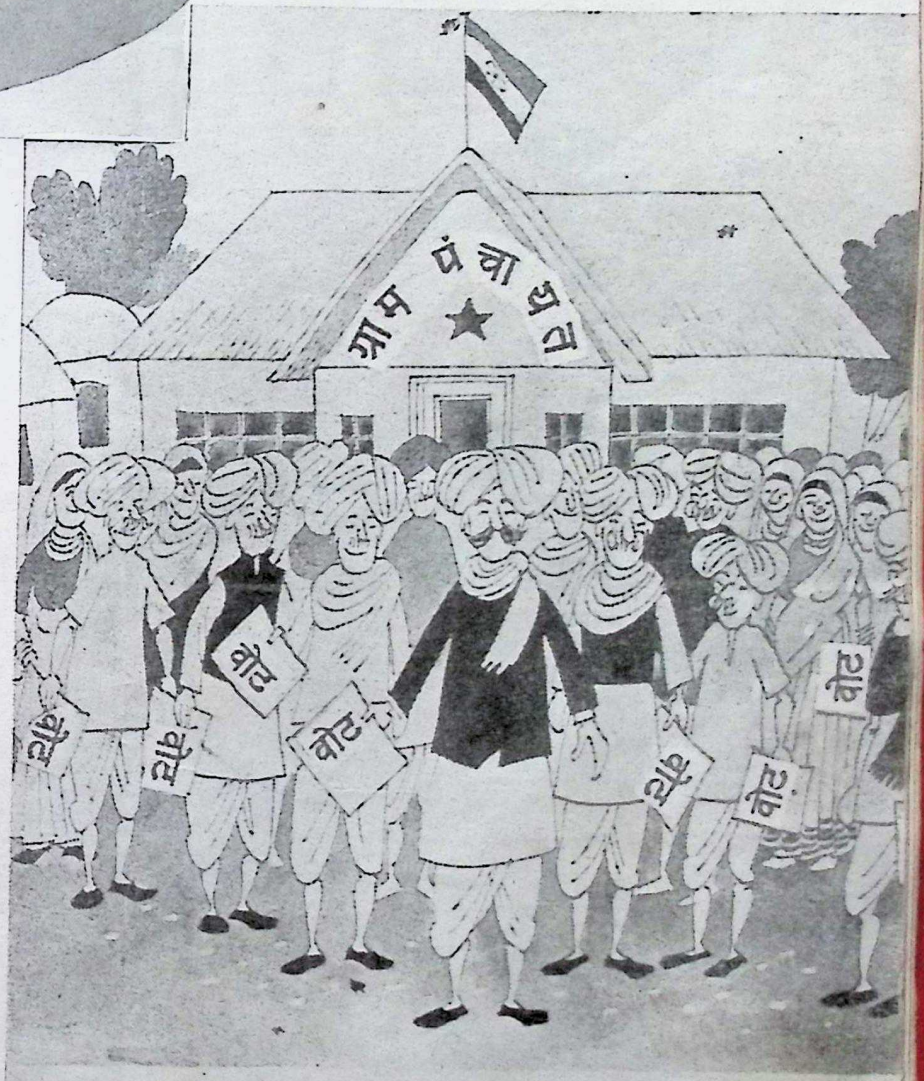

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

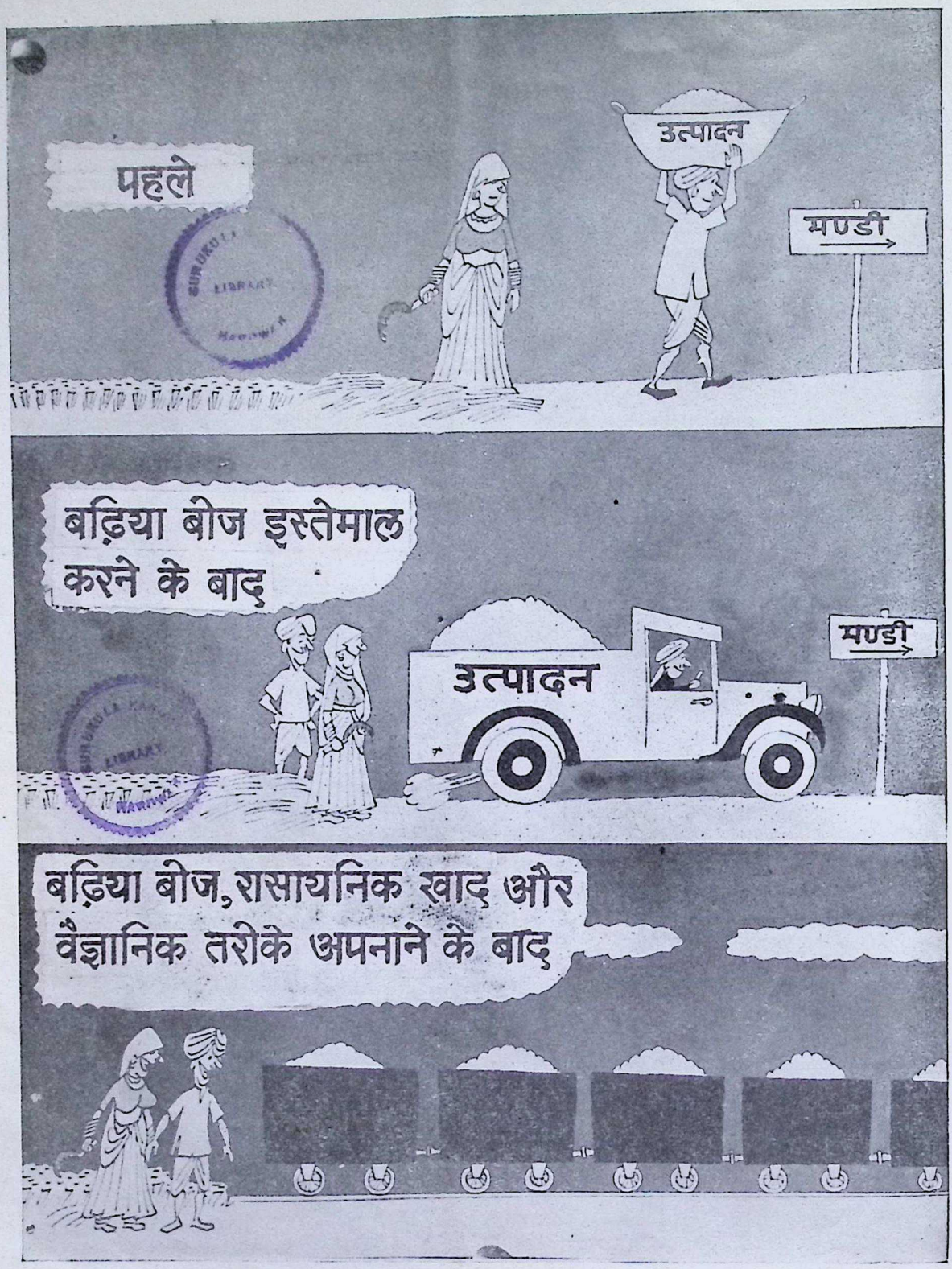

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप लोकप्रिय बनना चाहते हैं--

दीदी की चिट्ठी

प्रिय मुन्ना, मुन्नी,

लोकप्रिय होने की चाहना तो सभी को होती है, पर किशोर और किशोरियों में लोकप्रिय होने की लालसा बहुत तीव्र होती है। छुटपन में तो बच्चे की दिलचस्पी का दायरा मां तक ही सीमित होता है, पर बच्चा ज्यों-ज्यों बड़ा होता है उसका हेल-मेल अपने संगी-साथियों से बढ़ता है। वह बाहरी दुनिया से परिचय बढ़ाता है। उसकी इच्छा होती है मेरे अनेक मित्र हों, उनमें मैं चमकूं, क्लास में, खेल के मैदान में, घर पर सभी जगह मेरी पूछ हो, मेरे सुझाव और सहयोग की सब दाद दें, लोगों के सामने मेरी प्रशंसा हो। क्योंकि इसी प्रशंसा से आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। तुमने देखा होगा कि जिन बच्चों को घर पर बहुत अधिक रोक टोक होती है, पड़ोसी जिन की आलोचना करते हैं, मित्र जिनसे दूर रहते हैं और कक्षा में जिन्हें मास्टरों की डाट-फटकार मिलती रहती है, वे बच्चे अक्सर समस्यापूर्ण बन जाते हैं। दूसरों को सताते हैं। बड़ों के संग मुंहजोरी करते। छोटे बहन-भाइयों से लड़ते हैं और अपने साथियों का खेल बिगाड़ देते हैं।

मालूम है ऐसा वे क्यों करते हैं? क्योंकि वे लोकप्रिय नहीं बन पाते। उनमें प्यार, दुलार की भूख बनी रहती है। वे अपने लोकप्रिय साथियों से चिढ़ते हैं। इस कारण वे विनाशकारी प्रवृत्ति अपना लेते हैं। ऐसे बच्चों को यह बात समझनी चाहिए कि किसी चीज को पाने की आशा तभी करनी उचित है, जबकि तुम उसके योग्य हो, उसे पाने या जीतने की तुमने पूरी कोशिश की हो।

एक बार कुछ बच्चों को इकट्ठा करके पूछा गया कि उनकी राय में कैसे लड़के-लड़कियां लोकप्रिय होते हैं। उनके जवाब का सारांश नीचे दिया जाता है। आप यदि लोकप्रियता प्राप्त करना चाहें तो निम्नलिखित सुझावों पर अवश्य अमल करें।

१. जब आप किसी से मिलें उनके खूबियों को परखें, उनके दिलचस्पी के विषयों को समझें और मिलने पर उनके प्रिय विषय की चर्चा अवश्य करें।

२. जब आप किसी के गुणों के कारण उसे पसंद करते हैं तो अपना प्रेम, आदर या प्रशंसा अवश्य प्रगट करें। पर वह खुशामद के रूप में नहीं होनी चाहिए।

३. किसी मंडली में अपनी ही न हांकते जाएं, अच्छे श्रोता भी बनें।

४. सबके साथ सभ्यता से पेश आएं। यह नहीं कि आप के रुख और व्यवहार में गरीब, अमीर या छोटे बड़े के लिए फर्क हो। इन्सानियत से पेश आना सीखें।

५. जब कोई दुखिया, गरीब या हीन भावना से पीड़ित व्यक्ति आपसे मिलने आए, तो उसकी हिम्मत बढ़ाएं। यदि आप उसकी कुछ अधिक मदद नहीं कर सकते, तो कम से कम सहानुभूति और दिल-दिलासे के दो शब्द तो कह सकते हैं। उसकी समझ और कोशिशों की प्रशंसा करके उसके महत्व और विश्वास को बढ़ाएं।

६. यदि किसी से आपका झगड़ा हो गया है या किसी ने आपके प्रति दुर्व्यवहार किया है तो मन में मलाल मत जमा होने दें। लोगों की बुराइयों को भूल जाना ही ठीक है। इससे मन की शान्ति बनी रहती है।

७. केवल मूर्ख और जिद्दी लोग ही अपनी गलती नहीं मानते। समझदारी इसी में है कि अपनी भूल स्वीकार करके उसे आगे के लिए सुधार लिया जाए। हार को भी खुशी-खुशी स्वीकार करना महानता की निशानी है।

८. बड़ी पुरानी, कई बार सुनाई हुई, घिसी-पिटी बात, या कहानी बार-बार मत सुनाएं। नहीं तो आपकी संगत में लोग ऊब जाएंगे। मौका देखकर बातचीत करना सीखें। बातचीत की कला में निपुण व्यक्ति जल्द ही लोकप्रिय बन जाता है।

९. प्रभुत्व की भावना से दूर रहें।

१०. मजाक-ठट्ठा अपने घनिष्ठ मित्रों के साथ ही करना चाहिए। अपने से बड़े या किसी अनजान को अपने मजाक का शिकार बनाना उचित नहीं है।

११. दूसरों के सुझाव या अनुभव चाहे आपको ठीक न जंचें, पर उन्हें उपेक्षा से मत सुनें।

१२. अपना सम्मान बनाए रखें, पर मैं-मैं तू-तू करने पर मत उतर आएं। शिष्ट और अल्पभाषी व्यक्ति से कोई लड़ने की हिम्मत नहीं करता। जब कोई अशिष्टता पर उतर आए तो सब से अच्छा तरीका यह है कि वहां से टल जाएं।

१३. चाहे आप हारें या जीतें, पर उस वजह से किसी के सम्मान पर चोट न करें। ताने और उलहाने न दें और जलीकटी भी मत सुनाएं।

१४. मंडली में लोकप्रिय होने के लिए यह जरूरी है कि आप में कुछ ऐसी खासियत भी होनी चाहिए कि आप उत्सवों को सफल बना सकें। यदि आप खेल-कूद, अभिनय, संगीत, नृत्य, चित्रकारी, कथा-वार्ता कहने, प्रबन्ध करने, सजाने, पकाने परोसने आदि में चतुर हैं तो लोग आप का सहयोग पाने के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगे।

१५. मित्रों की सद्भावना, उपहार, प्रशंसा और सहयोग की हमेशा दाद दें और कद्र करें।

१६. मित्रता निभाना न भूलें। लेन-देन का सन्तुलन बनाए रखें।

१७. दुख-सुख आदि के मौके पर उचित व्यवहार करें। अपनी समवेदना या प्रसन्नता प्रगट करना न भूलें।

१८. अपने दल, कक्षा या परिजन समूह में से किसी को अपनी मंडली में से किसी पुरानी रंजिश या मलाल के कारण न निकालें। तीज-त्योहार उत्सव आदि पर मेल-मिलाप बढ़ाना चाहिए। इसीलिए होली-दीवाली पर लोग पुरानी शिकायतें भूल कर आपस में मिलते हैं।

१९. अपनी बुरी आदतों की एक सूची बना लें और उन्हें दूर करने की भरसक चेष्टा करें। अपनी दुर्बलताओं को जीतना ही इंसान के लिए सब से बड़ी जीत है।

२०. अपने मित्रों की दुख के समय यथाशक्ति मदद करें। उनका भरोसा और विश्वास जीतें। मुंह देखे की प्रीत करने वालों का कोई सहायक नहीं होता। पर सब पर भरोसा करना भी ठीक नहीं है। अपने रहस्य या गलती की चर्चा सब से मत करते फिरें।

२१. आप बकवास मत करें। आपकी बातचीत मधुर, सरल और रोचक होनी चाहिए। उसमें हास्य और विनोद का पुट हो और शब्दों का चुनाव प्रभावशाली होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२. अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाएं। अच्छी आदतें, सुडौल काया, साफ-सुथरी वेशभूषा, सुरुचिपूर्ण शृंगार, शिष्टतापूर्ण बातचीत, शानदार चाल-ढाल और सदाचार मनुष्य के व्यक्तित्व को उभारता है। किशोर-किशोरियों के लिए तो इसका बड़ा महत्व है।

२३. न केवल संगी-साथी, बल्कि मां-बाप तथा अन्य गुरुजनों के साथ भी लोकप्रिय होने से जीवन में बड़ी सफलता मिलती है। इस उम्र में आप अपने गुरुजनों पर अपने आचरण की छाप छोड़ते हैं। मां-बाप आप पर भरोसा करके आपकी लियाकत पर विश्वास करके आपके भविष्य को बनाने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करने की प्रेरणा पाएंगे, उनके मित्र आपके सद्व्यवहार से प्रभावित होकर आपको पूर्ण सहयोग देंगे।

२४. बड़ों के प्रति हमेशा शिष्ट और विनम्र रहें। उनसे जी कहकर बात करें। उन्हें उठकर आसन दें।

२५. अपने माता पिता से कुछ मत छिपाएं। कसूर हो भी जाए तो सच्चे दिल से उनके आगे अपनी गलती पर पश्चात्ताप करें।

२६. यदि कोई चीज आपको अधिक चाहिए तो नम्रतापूर्वक मांगें न कि धौंस जमाकर। बड़े यदि चीज देने में असमर्थ हैं, तो बड़बड़ मत करें और न दूसरों के मां-बाप से अपने मां-बाप की तुलना करके उन्हें दोषी ठहराएं। याद रखें, अधिकांश मां-बाप अपने बच्चों को सन्तुष्ट रखने का यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं।

२७. यदि मां-बाप से कुछ भूल चूक हो गई है, तो बच्चों को मुंहफट होकर उन्हें खरी-खोटी नहीं सुनानी चाहिए।

२८. अपने मां-बाप को अपनी इंतजार में मत रखें। निश्चित समय पर घर लौट आएं। यदि कहीं आप लाचारी में अटक गए हों तो उन्हें टेली-फोन आदि से सूचित कर दें। यदि आप कहीं परदेश गए हों तो उन्हें अपनी पहुंच की चिट्ठी डालना न भूलें।

२९. छुट्टी के दिन अपने माता-पिता का हाथ जरूर बटाएं। यदि उनकी तबियत ठीक नहीं है, तो आपके दो मीठे शब्द, बदन दबा देना, एक प्याला चाय या गर्म पानी की थैली लाकर देनी, या हमदर्दी दिखाने से उनके मन को काफी तसल्ली पहुंच सकती है।

३०. मां ने यदि स्वादिष्ट भोजन पकाया है, पिता जी यदि आपके लिए कोई अच्छी खाने-पीने की चीज खरीद कर लाए हैं, तो उसकी प्रशंसा अवश्य करें। अपने माता-पिता की सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना आपका फर्ज है।

३१. आदतें मनुष्य का स्वभाव बन जाती हैं। अपने गुरुजनों की आदतों, विचारों और पसंद की मजाक मत उड़ाएं।

३२. मां-बाप की इजाजत के बिना किसी जगह कुछ लेना-देना, या दावत खाना भूल है। वे यदि किसी बात से दूर रहने या किसी आदत, बुराई या कुसंग से बचने की आपको चेतावनी देते हैं, तो उनकी हिदायतों का पालन करें। वे अनुभवी हैं और आपके हितैषी।

३३. अपना कमरा साफ रखें, अपनी चीजों की संभाल रखें और सब काम समय पर करें।

३४. जितना जेब खर्च आपको मिलता है, उसी में गुजारा करें। उधार देने और लेने वाला व्यक्ति हमेशा अप्रिय बन जाता है।

३५. चुगली-चपटी की आदत से दूर रहें। किसी की निन्दा मत करें। किसी के मामलों में मत उलझें।

गणित के विलक्षण परिणाम

सन्तराम

गणित में रुचि रखने वाले बच्चों का नीचे लिखे आंकड़ों से मनोरंजन होगा—

१२३४५६७८९	गुणित ९ धन १० बराबर है	१११११११११
१२३४५६७८९	गुणित १८ धन २० बराबर है	२२२२२२२२२२
१२३४५६७८९	गुणित २७ धन ३० बराबर है	३३३३३३३३३३
१२३४५६७८९	गुणित ३६ धन ४० बराबर है	४४४४४४४४४४
१२३४५६७८९	गुणित ४५ धन ५० बराबर है	५५५५५५५५५५
१२३४५६७८९	गुणित ५४ धन ६० बराबर है	६६६६६६६६६६
१२३४५६७८९	गुणित ६३ धन ७० बराबर है	७७७७७७७७७७
१२३४५६७८९	गुणित ७२ धन ८० बराबर है	८८८८८८८८८८
१२३४५६७८९	गुणित ८१ धन ९० बराबर है	९९९९९९९९९९

इन आंकड़ों में एक और मजे की बात है कि प्रत्येक गुणक ९ पर बांटा जा सकता है और प्रत्येक उत्तर के अंकों को जोड़ने और उसमें से जोड़ी ई राशि को निकाल देने से शेष ० रह जाता है। उदाहरण के लिए दूसरी पंक्ति में, उत्तर में दस बार २ हैं। इन का जोड़ २० होता है। अब इस पंक्ति में धन की राशि भी २० है। सो २० में से २० निकाले तो शेष ० रह जाता है।

नीचे लिखे आंकड़े भी बहुत मजेदार हैं—

९८७६५४३२१	गुणित ९ बराबर है	८८८८८८८८८९
९८७६५४३२१	गुणित १८ बराबर है	१७७७७७७७७७८
९८७६५४३२१	गुणित २७ बराबर है	२६६६६६६६६६७
९८७६५४३२१	गुणित ३६ बराबर है	३५५५५५५५५५६
९८७६५४३२१	गुणित ४५ बराबर है	४४४४४४४४४४५
९८७६५४३२१	गुणित ५४ बराबर है	५३३३३३३३३३४
९८७६५४३२१	गुणित ६३ बराबर है	६२२२२२२२२२३
९८७६५४३२१	गुणित ७२ बराबर है	७१११११११११२
९८७६५४३२१	गुणित ८१ बराबर है	८०००००००००१

इन अंकों में भी प्रत्येक गुणक ९ पर बांटा जा सकता है। और यदि प्रत्येक उत्तर के अंकों को जोड़ा जाए, तो, योग-फल ऐसा निकलता है, जो जोड़ने पर ९ के बराबर होता है। उदाहरण के लिए दूसरे उत्तर १७७७७७७७७७८ को लीजिए। इन अंकों का योगफल ७२ होता है और ७+२=९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

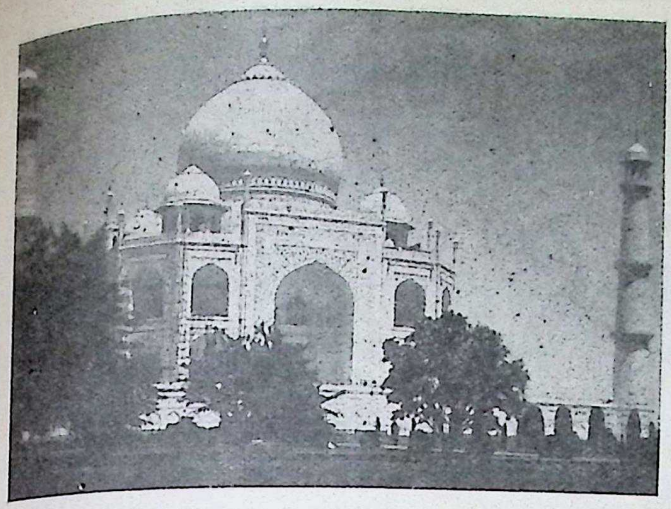

ताजमहल

अम्बाशंकर नागर 'अमिताभ'

ताज महल ! हे ताज महल तू
सब महलों का ताज है ।
सुन्दरतम है तू इस जग में
हमको तुझ पर नाज़ है ।
विश्व मानता सात वस्तुएं
अद्भुत इस दुनिया की हैं ।
पर तू इन सातों से बढ़कर
नई वस्तु अचरज की है ।
मुग़ल काल के कला प्रेम की
तू जीवन्त निशानी है ।
शाहजहां, मुमताज महल की
तू एक अमर कहानी है ।
झलक देखते ही बस तेरी
बजता दिल का साज है ।
मन मयूर नाच उठता है
क्या दिलकश अन्दाज़ है ।
दूर-दूर के लोग देखने
तुझको भारत आते हैं ।
फिर स्वदेश में जाकर तेरी
गौरव-गाथा गाते हैं ।
यमुना तेरे पद पखारती
वर्षा तुझे नहलाती है ।
शुभ्र ज्योत्स्ना तेरे ऊपर
शोभा-श्री बिखराती है ।
देख देख कर तेरी शोभा
शशि को आती लाज है ।
वह नभ का राजा है तो क्या
तू भूतल का ताज है ।

चिड़िया की खिचड़ी—(पृष्ठ ८ का शेषांश)

कौवे को चक्की के पीछे छुपे देखा तो वह समझ गई कि यह सारी करतूत कौवे की है ।

उसे बहुत क्रोध आया । उसने एक लोहे की सीख गर्म की और चक्की के पीछे घुसा दी । दर्द के मारे कौवा चीखने लगा । बोला—चूं चूं कि मेरा पूंछल सड़या (हाय-हाय । मेरी पूंछ जल गई)

चिड़िया बोली—

मौर मुकाले, क्यों पराया खिच्चड़ खादा ?
(तेरा मुंह काला हो, तुम नें पराई खिचड़ी क्यों खाई ?)

गर्म-गर्म सीख लगने से कौवा वहीं मर गया और चिड़िया आराम से रहने लगी ।

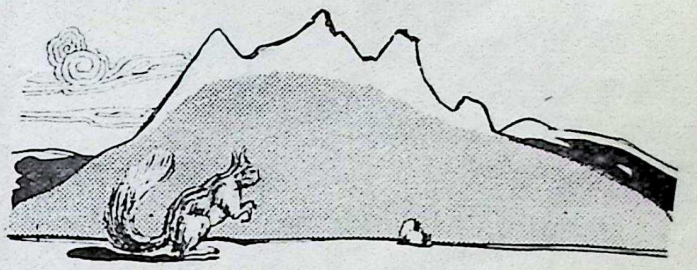

गिलहरी और पहाड़

ब्रह्मानन्द 'बन्धु'

कहा गिलहरी से पहाड़ ने—तुम नन्हीं हो तात ।
—तो इसमें है-बोल उठी वह—अचरज की क्या बात ?
तुम पहाड़ ठहरे तो क्या है ? तनिक न हिल सकते हो !
कूद-फांद का प्रश्न दूर है, उछल नहीं सकते हो ।
कदम-कदम पर मुझ नन्हीं को, मिली पूर्ण आज़ादी ।
एक ठौर पर बंधूं, करूं क्यों, जीवन की बरबादी ?
जहां-तहां जब जितना चाहूं, फिरूं सदैव उछलती,
मेरी दुनिया नहीं एक-सी, रहती सदा बदलती ।
जुदा-जुदा सबका स्वभाव है, नन्हा होना तुमको,
जितना अधिक बुरा लगता है,उतना ही शुभ मुझको ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

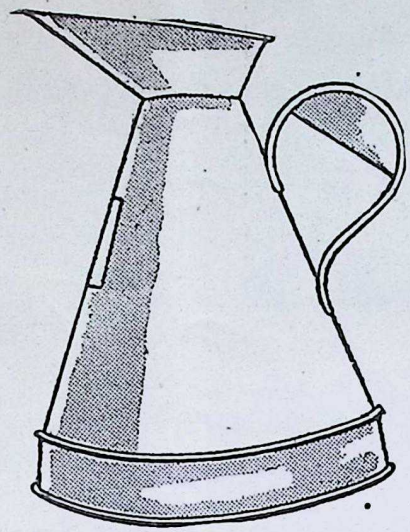

और अब
तरल पदार्थ मापने के
मेट्रिक पैमाने

तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने—लिटर—का प्रयोग अप्रैल. १९६० से शुरू हो गया है।
रंग-रोगन और पेट्रोल उद्योग ने मेट्रिक प्रणाली अपना ली है।
अब रंग-रोगन लिटरों के हिसाब से बिका करेगा और पेट्रोल का वितरण भी लिटरों के हिसाब से होगा।

परिवर्तन तालिका

१ गैलन = लगभग ४½ लिटर

१ लिटर = १,००० मिलिलिटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरल औंस	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलि० तक)
१	२८
२	५७
३	८५
४	११४
५ (=१ गिल)	१४२

गिल	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलिलिटर तक)
१	१४२
२	२८४
३	४२६
४ (=१ पिण्ट)	५६८

पिण्ट	लिटर (लि)	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	...	५६८
२(=१ क्वार्ट)	१	१३६

क्वार्ट	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	१	१३६
२	२	२७३
३	३	४०९
४ (=१ गैलन)	४	५४६

मिलिलिटर	तरल औंस निकटतम ½ (तरल औंस तक)
१०	¼
२०	¾
३०	१
४०	१½
५०	१¾
६०	२
७०	२½
८०	२¾
९०	३¼
१००	३½

मिलिलिटर	पिण्ट	गिल	तरल औंस (निकटतम ½ तरल औंस तक)
२००	–	१	२
३००	–	२	½
४००	–	२	४
५००	–	३	२½
६००	–	४	१
७००	१	०	४½
८००	१	१	३
९००	१	२	१½
१०००(=१ लिटर)	१	३	–

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १० मिलि० तक)
१	४	५५०
२	९	९०
३	१३	६४०
४	१८	१८०
५	२२	७३०
६	२७	२८०
७	३१	८२०
८	३६	३७०
९	४०	९१०
१०	४५	४६०

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १०० मिलि० तक)
२०	९०	९००
३०	१३६	४००
४०	१८१	८००
५०	२२७	३००
६०	२७२	८००
७०	३१८	२००
८०	३६३	७००
९०	४०९	१००
१००	४५४	६००

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट	गिल (निकटतम गिल तक)
१	–	–	१	३
२	–	१	१	२
३	–	२	१	१
४	–	३	१	–
५	१	–	–	३
६	१	१	–	२
७	१	२	–	१
८	१	३	–	–
९	१	३	१	३

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट (निकटतम पिण्ट तक)
१०	२	१	–
२०	४	१	१
३०	६	२	१
४०	८	३	–
५०	११	–	–
६०	१३	१	–
७०	१५	१	१
८०	१७	२	१
९०	१९	३	–
१००	२२	–	–

अपनाइये **मेट्रिक प्रणाली**

सरलता व एकरूपता के लिए

भारत सरकार द्वारा प्रसारित DA-59/577

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे--३

हैवाथा

अनुवादक ब्रह्मदेव शर्मा

उसने लोगों को मोण्डामिन की आवश्यकता तथा महत्व समझाया।

हैवाथा के दो अच्छे मित्र भी थे। उनमें से एक का नाम चिवियावौस और दूसरे का क्वासिंड था।

चिवियावौस एक चतुर गवैया था। उसके गाने पर सारा गांव लट्टू था।

क्वासिंड बहुत ही बलवान था। हैवाथा को उसकी ताकत पर बड़ा भरोसा था। वह खड़ा होकर और एक हाथ को सीधा करके कई लड़कों को एक साथ ही हाथ पर लटका लेता था। लोगों को यह देखकर आश्चर्य होता। पर क्वासिंड में एक दो बुराइयां भी थीं। वह बड़ा आलसी और जुआरी था। लेकिन समय आने पर अपने बल का सदुपयोग जरूर करता था।

वह नदियों पर से बड़े-बड़े पेड़ों के टूटे हुए तनों को उठाकर अकेला फेंक देता। दंगलों आदि में वह सर्वदा प्रथम रहता। एक दिन जब उसके कुछ मित्रों ने उसे आलसी कहकर पुकारा तो उसने एक बड़ी चट्टान उठा ली और इतने वेग से उसे फेंका कि वह दूर नदी में जाकर गिरी।

एक दिन हैवाथा भोजपत्र के वृक्ष के पास गया और बोला--भाई ! मुझे अपनी छाल दे दो जिस से मैं ऐसी नाव बना सकूं, जो पतझड़ के पत्ते के समान पानी पर तैर सके।

भोजपत्र ने उत्तर दिया--ए हैवाथा ! जितनी चाहो उतनी छाल ले लो और अपना काम बनाओ।

इसी प्रकार दूसरे वृक्षों से उसने काठ का चौखटा बनाने के लिए कुछ लकड़ियां मांगी। बबूल के वृक्ष से उसने उसकी जड़ के मजबूत रेशे भोजपत्र की छाल को सिलने के लिए मांगे। सबने बड़ी खुशी से अपनी-अपनी चीजें हैवाथा को दे दीं। एक सुन्दर नाव बनकर

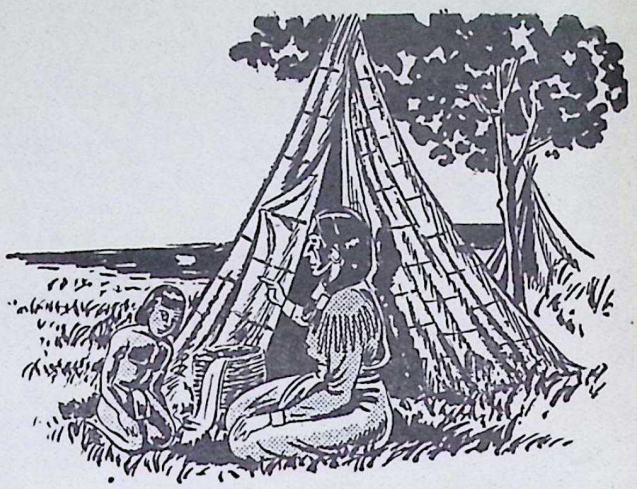

तैयार हो गई। उसने नाव की हर छेद को भली प्रकार राल से भर दिया जिस से पानी अन्दर न जा सके।

सेह से उसने कांटे मांगे, जिनसे उसने अपने लिए एक रंगीन टोकरी तैयार की। इस प्रकार हैवाथा अपनी यात्रा के लिए तैयार हो गया। यद्यपि उसकी नाव बगैर पतवार के थी। पर वह नाव को अपने इच्छानुसार चलने को मजबूर कर सकता था।

रास्ते में उसका मित्र क्वासिंड मिला। हैवाथा ने क्वासिंड से प्रार्थना की कि वह नदी में पड़े वृक्षों के तने हैं, उनको उठाकर बाहर फेंक दे जिससे नावों के लिए रास्ता साफ हो जाए।

क्वासिंड तत्काल नदी में कूद पड़ा और उसने एक-एक करके सब तनों को उठाकर बाहर फेंक दिया। इससे रास्ता नावों के लिए साफ और सुरक्षित हो गया। पर्वत से लेकर सागर तक किसी प्रकार की कोई रुकावट न रही।

अब हैवाथा गीचीगूमी (लेक सुपीरियर) की चमकीली जल राशि के नजदीक मच्छ राजा स्ट्रागियन, नाहामा को पकड़ने के लिए जा पहुंचा। इस मच्छ ने यात्रियों का आना-जाना रोक रखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने गीचीगूमी के स्वच्छ जल में बहुत गहराई में मछलियों को तैरते देखा। बहुत नीचे तली में उसने मच्छराज मीशी-नाहामा को देखा, जो सफेद रेत के ऊपर पसरा पड़ा था। हैवाथा ने चिल्ला कर कहा—ओ नाहामा! अपना भोजन ले और ऊपर आ। देखें, हम दोनों में कौन अधिक बलवान है।

हैवाथा के ये शब्द सुनकर ईसा नाम की मछली ऊपर आई। हैवाथा ने कहा—मैं ने तुम्हें नहीं बुलाया, नाहामा को भेजो।

तत्पश्चात नाहामा ने सूर्य मछली से कहा—तुम जाओ और शिकार को पकड़ लाओ।

हैवाथा ने फिर कहा—तुम सूर्य मछली हो, तुम्हारी आवश्यकता मुझे नहीं है। मैं चाहता हूं कि मछलियों का राजा मीशी-नाहामा यहां आए और मेरा मुकाबिला करे।

हैवाथा के ये शब्द सुनते ही मीशी-नाहामा तेजी से पानी के ऊपर आया और नाव सहित हैवाथा

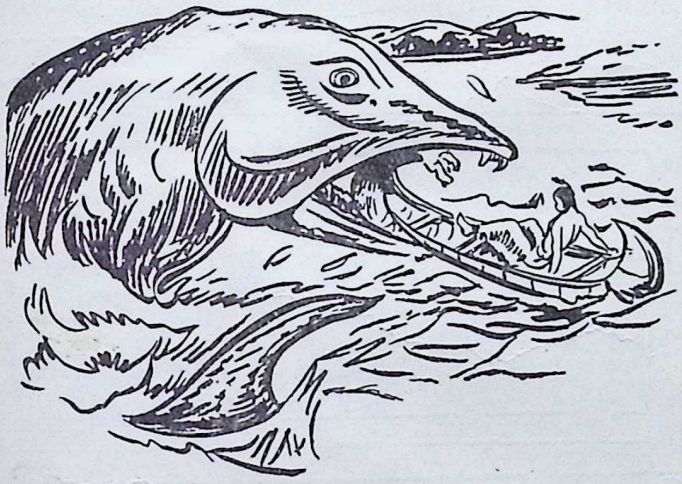

हैवाथा के ये शब्द सुनते ही मीशी-नाहामा तेजी से पानी के ऊपर आया और नाव सहित हैवाथा को निगल गया।

को निगल गया। उसके पेट के अन्दर हैवाथा ने अन्धेरा-ही अन्धेरा पाया। वह मच्छराज के धड़कते हुए हृदय की ओर बढ़ा और उसको पकड़ कर जोर से दबा दिया।

हृदय की गति बन्द होते ही मच्छराज प्राणहीन होकर पानी की सतह पर तैरने लगा और किनारे से आ लगा। मच्छराज के किनारे लगते ही सैकड़ों समुद्री पक्षियों ने उसे चीर-फाड़ डाला और हैवाथा बाहर निकल आया। उसके बाहर निकलते ही पक्षी बड़े प्रसन्न हुए। पक्षियों ने भर पेट मच्छराज का भोजन किया।

फिर हैवाथा की नानी निकोमिस ने सर्दियों के लिए मच्छराज की चरबी इकट्ठी की। तट पर अब सिवाय मीशी-नाहामा के ढांचे के और कुछ बाकी न रह गया था।

एक दिन बूढ़ी निकोमिस ने पश्चिम की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए हैवाथा से कहा—बेटा! देखो, वहां एक दुष्ट जादूगर रहता है। जिसकी रक्षा बड़े-बड़े सर्प और वह काला पानी का टुकड़ा करता है। वह हम लोगों पर नाना प्रकार के कष्ट और बीमारियां भेजता है। तुम अपना धनुषबाण लो और उस दुष्ट को मार डालो।

हैवाथा लड़ाई के लिए अपने को पूरी तरह से तैयार करके नाव पर सवार हो गया, फिर सांपों और काली जल-राशि की ओर चल पड़ा।

कुछ ही देर में वह काली जल-राशि के निकट पहुंच गया। वहां उसने दो अजगर पड़े देखे, जो बहुत भयानक थे। उनके मुंह घोड़े के सामान थे और उनके सिर पर भयानक सींग थे। उनका विशाल और भयंकर शरीर, मीलों तक फैला हुआ था। उनकी दृष्टि को बचाकर निकल जाना असम्भव था।

सांपों ने जब हैवाथा को देखा तो भयंकर फुंकार मारी। एक तूफान-सा आता प्रतीत हुआ। पर हैवाथा इससे घबड़ाया नहीं, उसने भयंकर तीरों की बौछार की। दोनों अजगर वहीं ढेर हो गए।

अब हैवाथा के लिए मार्ग साफ था। वह निडर होकर आगे बढ़ा।

उसने दूर से उस भयानक जादूगर के खेमे को देखा जो सूर्य के प्रकाश में चमक रहा था।

तट के समीप पहुंचते ही उसने एक तीर छोड़कर लड़ाई का सन्देश मोती पंख (जादूगर) के पास भिजवा दिया, और उसे जाकर ललकारा—ओ मोती पंख, अपने खेमे से बाहर निकल आ, हैवाथा तेरी प्रतीक्षा में है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्ट और बलवान जादूगर अपने चमकते खेमे से बाहर निकला और बोला—ओ कमजोर दिल हैवाथा ! मैं तुम्हें जानता हूं, तुम शीघ्र निकोमिस के पास लौट जाओ, वरना मैं तुम्हें यहीं और इसी समय मार डालूंगा।

हैवाथा ने उत्तर दिया—बढ़-चढ़ कर बातें बनाने अथवा गप्पें मारने की अपेक्षा कुछ कर दिखाना अधिक महत्वपूर्ण होता है, मोती पंख !

और फिर तुरन्त ही दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। ऐसा युद्ध शायद सूर्य देव ने भी अपने जीवन में न देखा हो। ग्रीष्म ऋतु में युद्ध पूरे दिन भर चलता रहा लेकिन हारने का कोई भी नाम न लेता था। सन्ध्या को हैवाथा थक गया, घायल हो गया और निराश होकर आराम करने के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठ गया।

तुरन्त ही ऊपर वृक्ष पर बैठी मामा नाम की एक चिड़िया ने गाना शुरू कर दिया। उसने अपने गाने में हैवाथा को इशारा किया कि यदि जादूगर को

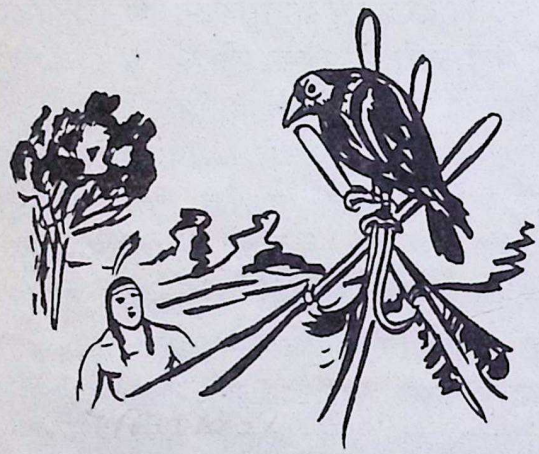

तुरन्त ही ऊपर वृक्ष पर बैठी मामा नाम की एक चिड़िया ने गाना शुरू कर दिया

मारना हो तो उसके सिर पर चोट मारो। हैवाथा तत्काल ही उठा, उसने जादूगर के सर को निशाना बनाया। पहले और दूसरे तीर बड़ी तेजी से गए लेकिन जादूगर के सिर में न लगे। तीसरा तीर जो सबसे अधिक तेज था, ठीक निशाने पर लगा और तत्काल ही दुष्ट जादूगर गिर पड़ा और मर गया।

तब हैवाथा ने जो खुद भी खून में लथपथ था, छोटी मामा के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा—तुम मेरी विजय की साथिन हो।

इसके बाद हैवाथा ने जादूगर के खेमे से बहुत-सा धन बटोर लिया जिस में सुन्दर जानवरों की खालें और अधिक मूल्यवान चीजें थीं।

घर आने पर हैवाथा का बड़ा आदर सत्कार हुआ। वह अवतार की तरह पूजा जाने लगा। मोती पंख के मारे जाने की खुशी में बड़ा स्वागत और नाच गाना हुआ। अपनी इस सफलता के लिए वह उस छोटी चिड़िया मामा का बहुत शुक्रगुजार था। जादूगर के यहां से जो सामान वह लाया था वह उसने अपने साथियों में बांट दिया।

यह है भूल भूलैया

बच्चो, इस भूल भूलैया का एक रास्ता है। उसके मुहाने पर मुन्नू-चुन्नू खड़े हैं। भूल भूलैया के छोर पर एक सेब रखा है। मुन्नू-चुन्नू उस सेब तक कौनसे रास्ते से होकर पहुंचेंगे, जरा बताओ तो सही।

लालचन्द

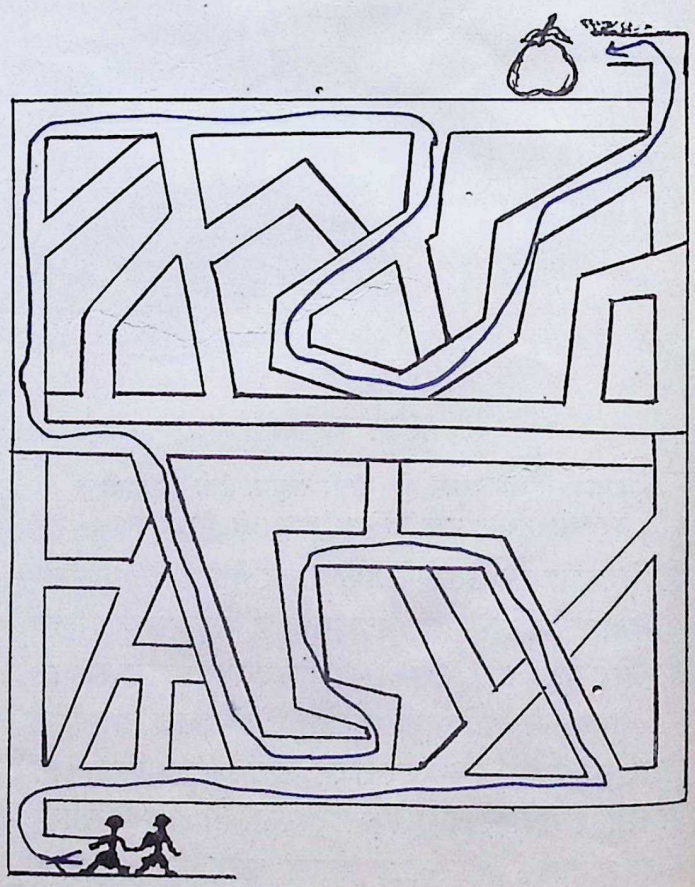

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र जगत

पिछले ७ वर्षों में प्रथम बार राजकपूर ने वर्ष का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'फिल्म फेयर' पुरस्कार जीता है। राजकपूर को यह पुरस्कार 'अनाड़ी' में उनके शानदार अभिनय के लिए दिया गया। यद्यपि पहले भी राजकपूर का नाम इस पुरस्कार के लिए प्रस्तुत होता रहा, किन्तु उन्हें इसे प्राप्त करने में इससे पूर्व सफलता नहीं मिली।

'सीमा' में अपने सुन्दर अभिनय के लिए दो वर्ष पूर्व नूतन ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त किया था और इस वर्ष भी उन्हें 'सुजाता' में श्रेष्ठ अभिनय के लिए यह पुरस्कार मिला है। नूतन ने, जो अब एक गृहिणी है, सचमुच थोड़ी ही समय में काफी सफलता प्राप्त की।

ऐसा लगता है कि निर्माता-निर्देशक विमल राय ने तो 'फिल्म फेयर' पुरस्कार प्राप्त करने की आदत-सी बना ली है। कई बार 'फिल्म फेयर' पुरस्कार प्राप्त करने वाले विमल राय को, उनके चित्र 'सुजाता' के लिए "सर्वश्रेष्ठ चित्र" का और इसी चित्र के निर्देशन के लिए 'सर्वश्रेष्ठ निर्देशन' का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखन का पुरस्कार सुबोध घोष ने जीता है। 'फिल्म फेयर' के प्रबन्धकों ने अच्छी कहानी के लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए पांच हजार रुपए के जिस नकद पुरस्कार की स्थापना की थी, वह भी सुबोध घोष को मिला।

यह प्रोत्साहनजनक बात है कि सिने दर्शक मंजे हुए कलाकारों की कला का उचित मूल्यांकन तो करते ही हैं, उसकी खुलकर प्रशंसा भी करते हैं। ललिता पवार जो लगभग २० वर्ष से सिने-उद्योग की सेवा कर रही है, 'अनाड़ी' में अपने अविस्मरणीय अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के पुरस्कार के लिए उपयुक्त पात्र हैं।

'धूल का फूल' में अपने स्वाभाविक एवं सजीव अभिनय के लिए मनमोहन कृष्ण को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का पुरस्कार मिला है।

तीनों ही संगीत पुरस्कार 'अनाड़ी' को मिले हैं। शंकर व जयकिशन

गायक-मुकेश

सुजाता में नूतन

को सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का, शैलेन्द्र को सर्वश्रेष्ठ गीत लेखक का (सब कुछ सीखा.....) और मुकेश को सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक का पुरस्कार दिया गया है।

"पैगाम" में अपने प्रभावशाली संवादों के लिए रामानन्द सागर को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ संवाद लेखक घोषित किया गया और तदनुसार पुरस्कार दिया गया।

ये सातवें वार्षिक 'फिल्म फेयर' पुरस्कार उक्त व्यक्तियों को एक शानदार समारोह में ८ अप्रैल को दिए गए हैं।

उत्तरी फिल्मों पर नए कर की जो घोषणा १९६०–६१ के बजट में की गई, उसकी फिल्म उद्योग में काफी आलोचना की जा रही है। फिल्म-प्रयोगशालाओं में काम ठप्प-सा पड़ गया है। विभिन्न फिल्म संस्थाओं के अध्यक्षों ने प्रधानमंत्री श्री नेहरू तथा अन्य व्यक्तियों को तार भेजकर अनुरोध किया है कि तब तक यह कर लागू न किया जाए, जब तक कि फिल्म उद्योग का एक प्रतिनिधिमंडल दिल्ली जाकर अपना पक्ष प्रस्तुत न करे।

बैंक व्यवसाय के कुछ प्रमुख व्यक्तियों के सम्मान में राजकमल स्टूडियो में 'झनक झनक पायल बाजे' के विशेष प्रदर्शन का आयोजन किया गया। रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री आयंगर तथा बैंकर्स ट्रेनिंग कालेज के प्रिंसिपल श्री बालसुब्रह्मण्यम इस अवसर पर उपस्थित थे।

दूसरे अफ्रेशियाई फिल्म समारोह का उद्घाटन २९ फरवरी को काहिरा में हुआ। इस समारोह का आयोजन संयुक्त अरब गणराज्य के सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा किया गया।

सांभर उद्धृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र-यात्रा में परमाणु शक्ति का प्रयोग

कुछ सप्ताह हुए, जर्मनी में १५ राष्ट्रों के लगभग एक हज़ार वैज्ञानिकों ने इस प्रश्न पर विचार किया कि सामुद्रिक जहाज़ों के चलाने में परमाणु शक्ति का प्रयोग किस प्रकार किया जाए। इस क्षेत्र में अभी तक दो प्रयत्न अमरीकियों और रूसियों ने किए हैं। अमरीकियों ने एक पनडुब्बी बनाई है जो परमाणु शक्ति से चलती है। रूसियों ने लेनिन नामक जहाज़ बनाया है, जो ठंड के कारण जम जाने वाले समुद्र की बर्फ को तोड़ कर अन्य जहाज़ों के लिए रास्ता खोलने के काम में लाया जाता है।

ये दोनों ही प्रयत्न ऐसे हैं कि इनका सामुद्रिक यात्रा में प्रयोग कठिन है। अमरीकियों और रूसियों के सामने अपने नाम का सवाल था, इस बात का नहीं कि कितना रुपया खर्च होता है। लेकिन यात्री जहाज़ों के बनाने वालों को इस बात का ख्याल रखना पड़ेगा कि व्यय केवल इतना हो कि जहाज़ से रुपया कमाया जा सके।

जर्मनी ने स्वेच्छा से निर्णय किया है कि वह परमाणु शक्ति को युद्ध के प्रयोग में नहीं लगाएगा। इस कारण जर्मन वैज्ञानिकों का ध्यान प्रधान रूप से इस शक्ति को शान्ति के प्रयोगों में लगाने पर केन्द्रित है।

नाना प्रकार के परमाणु-रिएक्टरों को देखने के पश्चात जर्मन इस निश्चय पर पहुंचे हैं कि यदि अमरीकियों और रूसियों द्वारा प्रयोग में लाए गए पानी के दबाव के सिद्धान्त के बजाय, तेल के सिद्धान्त का प्रयोग किया जाए, तो सस्ते में काम चल जाएगा।

इस पर और खोज करने के लिए हैम्बर्ग में लगभग १०० जर्मन वैज्ञानिक व्यस्त हैं। उन्होंने १६,००० टन का बीस वर्ष पुराना एक टैन्कर जहाज़ ख़रीदा है। इसमें वे ३०–४० मेगावाट का परमाणु रिएक्टर और दूसरे आवश्यक यन्त्र लगा रहे हैं। अन्दर से भी जहाज़ को सामुद्रिक यात्रा और खोजों के योग्य बनाया जाएगा। अनुमान है कि लगभग २-३ करोड़ रुपया व्यय करने पर यह कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हो सकेगा।

यद्यपि अन्य राष्ट्रों के वैज्ञानिकों का विचार है कि परमाणु शक्ति से सस्ता जहाज़ बनाने के लिए अभी २० वर्षों की खोज की आवश्यकता है। जर्मन इससे पहले ही इस जहाज़ को तैयार करके पहली सामुद्रिक यात्रा के लिए भेजने वाले हैं।

सूचना

पाठकों से निवेदन है कि यदि बाल-भारती का अंक महीने की १५ ता० तक न पहुंचे तो वे सीधे बिजनेस मैनेजर, पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली ८ को ही इसकी शिकायत लिखें। पत्र लिखते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें। वार्षिक शुल्क भी संपादिका के व्यक्तिगत नाम से न भेजा जाए। पते पर केवल संपादिका बाल-भारती लिखें। जो मनीआर्डर संपादिका के पते पर आते हैं, वे चेक द्वारा बिजनेस मैनेजर को तुरन्त भेज दिए जाते हैं।

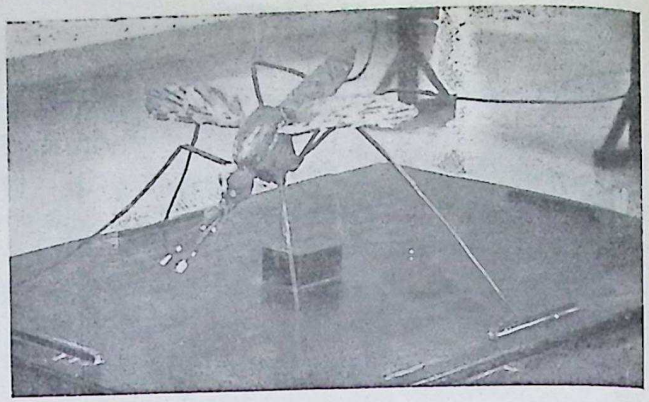

मलेरिया से लड़ाई

मन्मथनाथ गुप्त

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अब की सारे संसार में मलेरिया निवारण को ही अपने वार्षिक दिवस का विषय रखा है। यों तो डाक्टर लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह कर ही रहे हैं और विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इस सम्बन्ध में बहुत अच्छा कार्य कर रहा है, पर जनता का भी इसमें कुछ कर्त्तव्य है। वह कर्त्तव्य यह है कि वह सही रूप से समझे कि मलेरिया किन कारणों से होता है और तदनुसार आचरण करे। वह यह भी समझे कि मलेरिया का निवारण राष्ट्र की आर्थिक तथा अन्य दृष्टियों से कितना महत्वपूर्ण है जिससे कि बजट बनाते समय राष्ट्र इस मद में अधिक से अधिक रकम मंजूर कर सके।

भारत की परिस्थिति

डाक्टर विश्वनाथन के अनुसार भारत को मलेरिया से प्रति वर्ष जो हानि होती है, वह ५० करोड़ डालर यानी २,५०० करोड़ रुपए के बराबर है। ५ करोड़ भारतीय हर साल इस रोग के शिकार होते हैं। डाक्टर विश्वनाथन ने हिसाब लगाकर देखा है कि भारत में कुछ ही सालों तक मलेरिया निवारण का कार्यक्रम जारी रखना पड़ेगा और उस पर कुल खर्च १९ करोड़ डालर या ९५ करोड़ रुपए बैठेंगे। इस प्रकार एक साल में हमें मलेरिया से जो घाटा बैठता है, उससे कम खर्च बैठेगा।

भारत में मलेरिया निवारण का सबसे बड़ा कार्यक्रम डी०डी०टी० तथा अन्य मच्छरमारक दवाइयों का छिड़काव है। हिमालय की तराई, अन्दमन द्वीपपुंज तथा अन्य कई स्थान भारत में ऐसे हैं जहां मलेरिया के कारण बसना करीब-करीब असम्भव है। इस कार्य में जनता का भी सहयोग चाहिए।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूनियर राष्ट्रीय कैडेटकोर

(एन० सी० सी०)

कृष्ण कुमार गर्ग

स्कूलों में तुम लोग केवल पढ़ाई करने ही नहीं जाते बल्कि खेल-कूद अभिनय, डिबेट आदि में भी भाग लेते हो। इसके अलावा कुछ ऐसीभी संस्थाएं हैं, जिनका सम्बन्ध स्कूलों से है। इन संस्थाओं की हलचलों में सक्रिय भाग लेने से तुम्हारा केवल शारीरिक विकास ही नहीं अपितु चारित्रिक और मानसिक विकास भी अच्छा हो पाता है। तुम जीने का सलीका भी सीखते हो और जिम्मेदार नागरिक बनने का पाठ पढ़ते हो। भारत सरकार द्वारा संचालित एन० सी० सी० भी एक ऐसी ही संस्था है।

इस संस्था का जन्म जुलाई सन् १९४८ में हुआ था। लाखों बच्चे और युवक-युवतियां इसके सदस्य हैं, जिन्हें कैडेट कहा जाता है। एक बैच अथवा टोली में ४५ कैडेट होते हैं। तुम सब, लड़के-लड़कियां इसमें भर्ती हो सकते हो। स्कूल में पढ़ने वाले, १३ से १८ १/२ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए जूनियर राष्ट्रीय कैडेटकोर, तथा कालेजों में पढ़ने वाले तुम्हारे बड़े भाई-बहनों के लिए सीनियर राष्ट्रीय कैडेटकोर हैं। थोड़े से वर्षों में ही यह संस्था बच्चों में इतनी लोकप्रिय हो गई है कि हर वर्ष पहले से अधिक बच्चे इसके सदस्य बन रहे हैं। अभी १९५९ के आरम्भ में जूनियर कैडेटकोर में ९२,२५८ लड़के और १७,३४२ लड़कियां थीं।

इस संस्था का उद्देश्य है तुम में चरित्र, मैत्रीभाव, सेवा की भावना और नेतृत्व करने की क्षमता का विकास करना तथा देश की रक्षा करने के लिए तुम्हें सैनिक शिक्षा देना। तीनों प्रकार (थल, जल, वायु) की सेनाओं की शिक्षा यहां दी जाती है। बस, डाक्टरी जांच के पश्चात कोई भी स्कूल जाने वाला बच्चा इन तीनों में से किसी एक शाखा का सदस्य बन सकता है। उसी स्कूल के अध्यापक बच्चों को ट्रेनिंग देते हैं, जिससे दोनों को ही आसानी रहती है। कोई अधिक लम्बा चौड़ा सिलसिला नहीं है। वर्ष भर में चालीस मिनट क केवल ८० पीरियड होते हैं। तुम्हारे अध्ययन में कोई बाधा नहीं पड़ती। और फिर खेलते-कूदते ही अधिक बातें सिखाई जाती हैं। केवल एक कठिनाई है। परीक्षा यहां भी देनी पड़ती है। भई, यह परीक्षा ऐसी बला है कि पीछा ही नहीं छोड़ती। एक वर्ष की ट्रेनिंग के पश्चात सर्टिफिकेट 'ए' 'पहला भाग' और दो वर्ष के पश्चात 'दूसरा भाग' परीक्षा पास की जा सकती है।

कैडेटों को यूनिफार्म, जूते तथा कुछ हाथ खर्च भी मिलता है। इन्हें बाकायदा सैनिक कवायद और ट्रेनिंग दी जाती है। इस प्रकार ये लोग नागरिक रक्षक का काम भली प्रकार संभालने के योग्य हो जाते हैं।

कठिन परिश्रम के साथ ही साथ बच्चे यहां पर खेल-कूद अभिनय कैम्पिंग आदि में भी भाग लेते हैं। आजकल के जमाने में केवल किताबी ज्ञान से ही तो काम नहीं चलता। जो विद्यार्थी अच्छे खिलाड़ी, अच्छे वक्ता होत हैं, उन्हें आगे जाकर किसी भी प्रतियोगिता में अच्छी सफलता मिलनी आसान होती है। फिर एन० सी० सी० की ट्रेनिंग जिन लोगों ने ली हो उनको सेना अथवा पुलिस विभाग में प्रवेश आसानी से प्राप्त हो सकता है। इन विभागों म प्रवश पाने के लिए परीक्षाएं देनी पड़ती हैं, उनमें सेहत, फर्तीलापन, मेहनत आदि का बड़ा अधिक महत्व है। सिर्फ किताबी ज्ञान रखने वाल छात्र वहां मुंह देखते रह जाते हैं।

ऐसे सुन्दर वातावरण में कौन बच्चा रहना नहीं चाहता? शाबाश! शाबाश! तुम सब राष्ट्रीय कैडेटकोर में भर्ती हो जाओ। और आड़े समय अपने देश के काम आने योग्य बन जाओ। आज के युग में वही देश तरक्की कर सकता है, जिसका बच्चा-बच्चा कर्त्तव्य पालन के लिए हर समय तैयार रहता है, परिश्रम करने में और अपने देश के लिए मर मिटने को तत्पर रहता है।

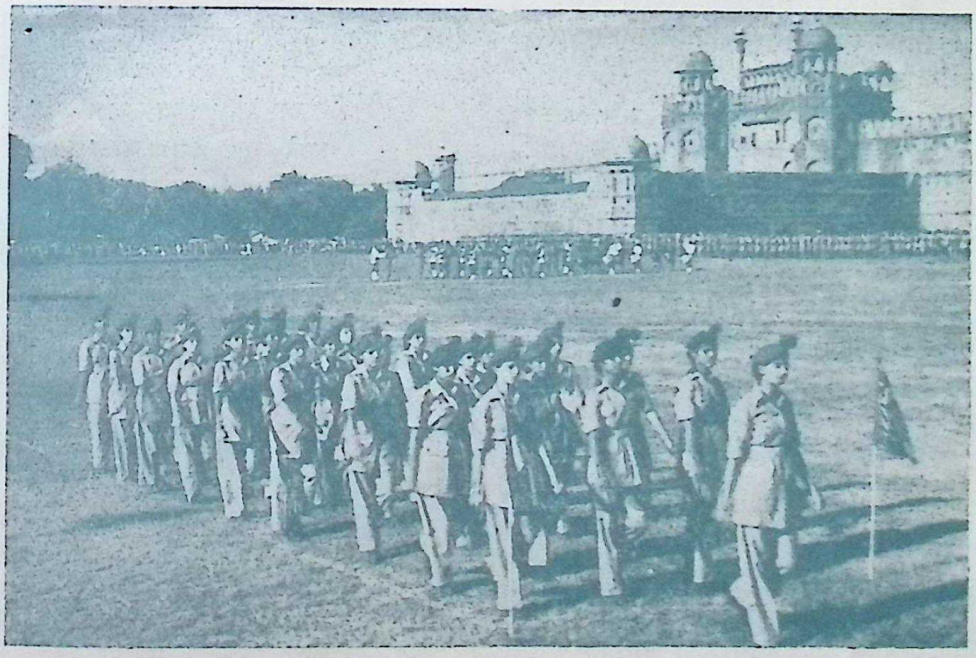

लड़कियों की कैडेटकोर मार्च करती हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा

गुलज़ार हुसैनी

पहला दृश्य

[कक्षा का शोर]

एक लड़का : अरे, इतना शोर न करो, मास्टरजी आ रहे हैं ।

मास्टर : आज मुझे तुम लोगों से कुछ कहना है । यह दूसरा मौका है जब इस क्लास में से एक लड़के का पूरे का पूरा बस्ता गायब हो गया है । अगर बाहर से कोई आकर यहां से किताबें उठा ले जाता है, तो इसमें सबसे ज्यादा तुम लोगों का अपना कसूर है, क्योंकि यह तुम लोगों का काम है कि आधी छुट्टी के वक्त क्लास को यूंही अकेला छोड़ कर खेलने न चले जाओ, बल्कि अपनी-अपनी बारी पर इसकी रखवाली करो । अब निकालो पाठ नम्बर ६ । इसे थोड़ी देर खुद ही पढ़ो, तब तक मैं कापियां जांचता हूं ।

[लड़कों में खुसुर-फुसुर शुरू हो जाती है]

विपिन : क्या बात है ?

भूषण : (सिसकियां भरते हुए) मुझ पर घर से मार पिटेगी ।

विपिन : क्यों ?

भूषण : वह बस्ता मेरा ही गुम हुआ है । अब मुझे घर से नया बस्ता लेकर कोई नहीं देगा ।

विपिन : तो फिर अब तुम क्या करोगे ? (कुछ सोच कर)……भूषण तुम मेरी किताबें ले जाना ।

भूषण : क्या……! लेकिन तुम क्या करोगे ?

विपिन : भई, सारी किताबें रोज़ तो पढ़ने में आती नहीं, इसलिए आज जो किताबें तुम ले जाओगे उन्हें मैं कल ले जाऊंगा और आज जो मेरे पास हैं उन्हें मैं कल दे दूंगा ।

भूषण : दोस्त, उस बस्ते में मेरी सभी विषयों पर लिखी हुई कापियां भी थीं । अब तक क्लास में जितना भी काम मिला था, वह मैंने उनमें कर रखा था ।

विपिन : अच्छा !

भूषण : हां……और तुम जानते हो……इन दिनों जबकि इम्तहान सिर पर आ रहा है……उन कापियों पर नम्बर भी दिए जाएंगे ।

विपिन : तो तुम इसकी भी कोई चिन्ता न करो……यह काम भी किसी रोज़ मिलकर कर डालेंगे ।

[दोनों हँसते हैं, तभी घंटी बज उठती है ।]

दूसरा दृश्य

[विपिन का सहपाठी विजय छत पर पतंग उड़ा रहा है]

विपिन : हूं, तो आज फिर तुम छत पर पतंग उड़ा रहे हो, विजय ?

विजय : तुम भी आ जाओ……एक-दो हाथ मार लो ।

विपिन : न, मुझे तो माफ़ ही करो ।

विजय : तुम्हारी मर्ज़ी ।

विपिन : (पुकारते हुए) माता जी !

मां : आ विपिन, स्कूल से कब आया ?

विपिन : अभी आया हूं । घर अकेला छोड़ कर आप कहां चली गई थीं ?

मां : अंगीठी जला कर गली में रख आई थी, उसे लेने गई थी ?

विपिन : अंगीठी !

मां : हां, हां, नहीं तो सारा घर धुएं से भर जाता है ।

विपिन : तो फिर माता जी, अंगीठी को चिमनी के नीचे जलाया कीजिए, क्योंकि गली में से यही धुआं दूसरों के घर भी जाता है ।

मां : (हँसते हुए) तुझे तो हरदम औरों का ख़याल रहता है ।

विपिन : माता जी, अगर हम औरों का ख़याल नहीं रखेंगे तो हमारा ही ख़याल कौन रखेगा ?

[गली में से शोर सुनाई देता है । विपिन लपक कर बाहर जाता है ।]

[दृश्य परिवर्तन । लोगों का शोर]

विपिन : अरे, यह क्या हो गया ? बेचारे विजय के घुटने से ख़ून का फव्वारा छूट रहा है । (लोगों से) कृपया आप लोग यहां से हट जाइए……साफ हवा आने दीजिए, नहीं तो विजय की हालत और भी खराब हो जाएगी । (मां से) माता जी ! मेरी मेज़ की दराज़ में से वह लाल थैला उठा लाइए, और थोड़ा गर्म दूध भी ले आइए ।

मां : अभी लाती हूं । (जाती है)

मां : (आते हुए) लो बेटा, ले आई हूं । यही है न ?

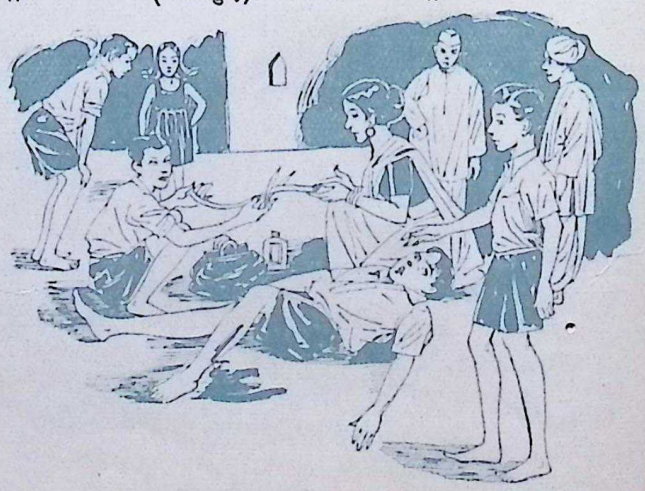

—हां, यह लीजिए, जरा पट्टी पकड़िए, मैं इसे कैंची से काटता हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिन : हां, यह लीजिए, ज़रा पट्टी पकड़िए, मैं इसे कैंची से काटता हूं। (दवाई लगा कर पट्टी बांध देता है)

विजय : (घाव पर दवा लगने के कारण चीखते हुए) उई……हाय !

विपिन : (फूंक मारते हुए) बस, बस, हो गया।

विजय की मां : (आते हुए, घबराई हुई आवाज़ में) अरे, क्या हो गया मेरे बेटे को ? अरे, अब किसी डाक्टर को भी तो बुलाओ।

विपिन : अब उसकी ज़रूरत नहीं, चाची, मैंने पट्टी कर दी है। माता जी दूध ला रही हैं, अभी ठीक हो जाएगा।

विजय की मां : क्या, सच ! कहीं और चोट तो नहीं आई ?

विपिन : नहीं, चाची।

विपिन की मां : (आते हुए) यह ले दूध। तुम कहां थीं बहन ? बच्चे का कुछ तो ख्याल रखा करो।

विजय की मां : बहन, कहां तक इसे गले के साथ बांधे रखूं ?

विपिन : लो विजय, दूध पी लो।

विजय : (घूंट भरते हुए) विपिन, अब मैं कभी पतंग नहीं उड़ाऊंगा।

विपिन : (बिगड़ कर) कैसे नहीं उड़ाएगा। अरे, पतंग उड़ाना कोई बुरा थोड़े ही होता है……हां, छत पर उड़ाने का परिणाम तुम्हारे सामने है।

विजय की मां : अब कैसे हो मेरे लाल ?

विजय : अच्छा हूं, मां !

विपिन : तो फिर आओ, घर चलें। (सहारा देकर विजय को ले जाता है।)

तीसरा दृश्य

[विपिन स्कूल जा रहा है। रास्ते में एक बूढ़े के कराहने का स्वर]

बूढ़ा : हाय……हाय……हूं……ओह……ओह !

विपिन : क्या है, बाबा ? तुम्हें क्या हुआ ?

बूढ़ा : बेटा, आखों से ठीक दिखाई देता नहीं, सड़क पार करते वक्त 'बस' की झपट से बचा तो एक फटफट से टकरा गया हूं !

विपिन : उफ़, यह तो बहुत बुरा हुआ। बाबा, तुम्हारे कन्धे पर तो बड़ी चोट लगी है।

बूढ़ा : हां बेटा, यहां पसली में भी सख्त चोट आई है।

विपिन : चलो बाबा, तुम्हें मैं अस्पताल लिए चलता हूं।

बूढ़ा : बेटा, मुझ से तो उठा भी नहीं जाता।

विपिन : तो फिर आओ, तुम्हें मैं अपनी साइकिल पर लिए चलता हूं……यहां बैठ जाओ……बैठ गए ?

बूढ़ा : हां, बेटा।

विपिन : यह गद्दी अच्छी तरह थाम लो। तो साइकिल चलाऊं।

बूढ़ा : चलाओ, बेटा।

[दृश्य परिवर्तन]

पिता : बेटा, आज इतनी जल्दी आ गए।

विपिन : आज मैं स्कूल नहीं गया।

पिता : क्यों ?

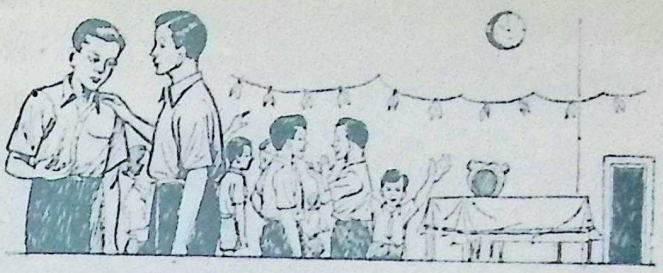

—मास्टर जी, इस पुरस्कार का वास्तव में विपिन ही उचित अधिकारी है, जिसने मेरी हर प्रकार से सहायता की।

विपिन : पिता जी, आज मैं बहुत लेट हो गया था। एक बूढ़े बाबा को जिनका एक्सीडेंट हो गया था, मुझे अपनी साइकिल पर अस्पताल ले जाना पड़ा। क्या आपका सिर दुख रहा है जो सिर पर पट्टी बांधी हुई है।

पिता : हां, दर्द से सिर फटा जा रहा है।

विपिन मैं अभी आपके सिर में बाम की मालिश किए देता हूं।

विपिन : आप अपना सिर इधर कीजिए। (मालिश करते हुए) हूं, बस……दो हाथ में ही सारा दर्द उड़नछू कर दूंगा।

पिता : सच कहता हूं बेटा, तेरा हाथ लगते ही मेरे सिर में ठंडक पड़ गई। तू वाकई बड़ा अच्छा है, तभी तो तेरी मां तेरी हर वक्त प्रशंसा करती रहती है। [हँसता है]

चौथा दृश्य

[स्कूल में बच्चों का शोर]

एक लड़का : कहो विपिन, तुम्हें भी कोई इनाम मिलेगा ?

विपिन : अरे, नहीं दोस्त, हिसाब में बड़ी मुश्किल से पास हुआ हूं, नहीं तो अपने राम परीक्षा में लुढ़क ही गए थे।

मास्टर : शान्त हो जाइए। (शोर बंद होता है) अब हमारे स्कूल के वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम शुरू होता है। सबसे पहले हमारे स्कूल के माननीय प्रधान श्रीयुत दीनदयाल जी उन बच्चों को पुरस्कार देंगे, जो अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम आए हैं। (तालियां) रवि भूषण जिसने वार्षिक परीक्षा में पांच सौ नम्बर में से चार सौ चौरासी नम्बर प्राप्त किए और जो 'ए' और 'बी' दोनों सेक्शनों में प्रथम आया। [तालियां]

भूषण : मास्टर जी, इस पुरस्कार का वास्तव में विपिन ही उचित अधिकारी है, जिसने मेरी हर प्रकार से सहायता की।

[तालियां]

मास्टर : तुम अपना पुरस्कार ले लो……विपिन का अपना पुरस्कार है……अब विपिन को प्रधान जी एक ऐसा पुरस्कार देंगे जो आज से पहले इस स्कूल के इतिहास में कभी किसी को प्राप्त नहीं हुआ। विपिन का यह पुरस्कार दूसरों की हमेशा मदद करने पर दिया जा रहा है।

[तालियां]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ों पर चित्रकारी

लालचन्द

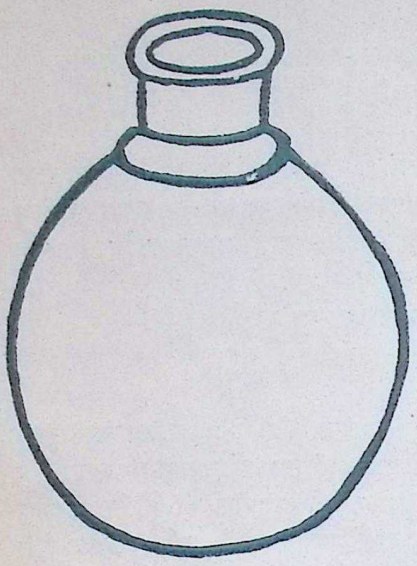

नं० १

घड़ों का हमारे घरों में बड़ा महत्व है । विवाह, उत्सव, पूजा-पर्व आदि शुभावसरों पर द्वार पर या वेदी पर मंगल-घट सजाए जाते हैं । किसी विशेष अतिथि के स्वागतावसर पर भी द्वार पर मंगल-घट रख कर उन पर दीये जलाए जाते हैं ।

आप अपनी खिड़कियों में या तुलसी चौरा के पास घट या क्रम से बड़ी फिर उस पर छोटी मटकियों को कलात्मक ढंग से सजाएं ।

आप कुम्हार के यहां से कच्चे घट ले आएं और उन पर चूना पोत कर सूखने दें । तब रंग-बिरंगे रंगों को प्यालियों में घोल कर रख लें । फिर कूची से घट पर बराबर की दूरी पर आड़ी लकीरें खींचें जैसा कि चित्र २ में दिखाया गया है । उसके बाद चित्र ३ की तरह खानों में रंग भरें और अन्त में चित्र ४ में दिखाए गए ढंग से समाप्त करें । इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रंगों का मेल सुन्दर हो । रंग फैलें नहीं, इसलिए उसमें थोड़ी गोंद मिला लें ।

कच्चे घट न मिलें तो पिछली गर्मियों में इस्तेमाल करने के बाद जो घड़े बेकाम पड़े हों उन्हें भी आप धोकर साफ करने के बाद चूने से पोत कर रंग सकती हैं ।

कुम्हार क यहां कई ऐसे बर्तन भी मिलते हैं जिन्हें रंग कर आप सजावट के कामों के लिए इस्तेमाल कर सकती हैं । मिट्टी के हुक्के का नीचे का हिस्सा रंग कर फूल सजाने के काम में लें । गमले पक्के रोगन से रंगें और इसमें हमेशा हरा रहने वाला किसी करोटन का पौधा या पाम का पौधा लगाकर अप ी बैठक या खाने के कमरे के कोने या खिड़की में सजा दें । मिट्टी की छोटी नाद रंग कर फूल सजाने के लिए अच्छी रहेगी । इसके अलावा छोटे-छोटे मटके या गमलों को रंग कर उनमें बेलें लगाकर छज्जे से लटका दें । इन सबसे आपके घर की शोभा बढ़ जाएगी ।

नं० ३

नं० २

नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(द्वितीय कवर का शेषांश)

6. 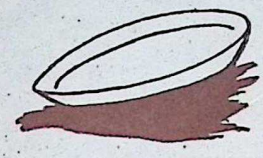 में खाना 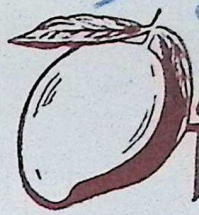 रिवाज है

7. 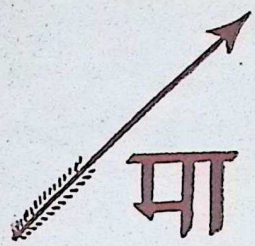 मा जी मेरे 2स्त हैं

8. तुम्हारा म 9 कहाँ है ?

9. बे मत रहो

10. 9कर को जाने 2

संकेत—

१. तुम हँसते हो ।
२. उसने रुपया दिया ।
३. कुर्सी पर बैठो ।
४. मेरा कुत्ता गायब है ।
५. सवाल हल करो ।
६. थाली में खाना आम रिवाज है ।
७. शर्मा जी मेरे दोस्त हैं ।
८. तुम्हारा मकान कहाँ है ?
९. बेकार मत रहो ।
१०. नौकर को जाने दो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायरेक्टर, पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८ द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित और
प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फ़रीदाबाद द्वारा मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. D—508.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

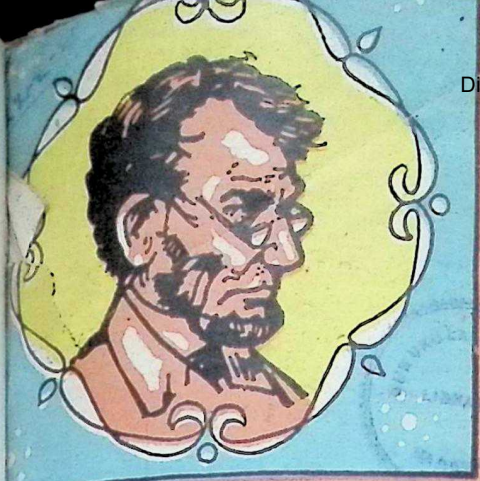

बाल-भारती

जून १९६०

संस्मरण-वार्षिक-अंक

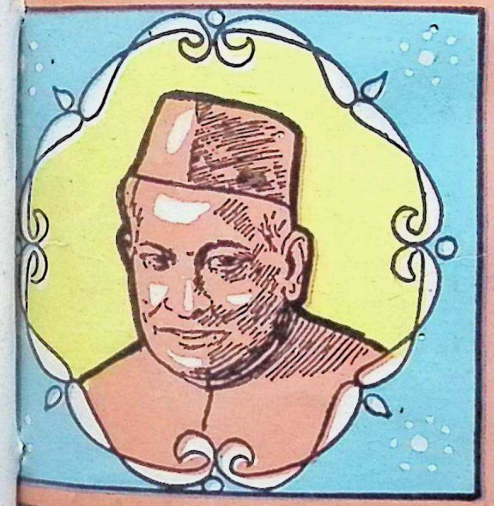

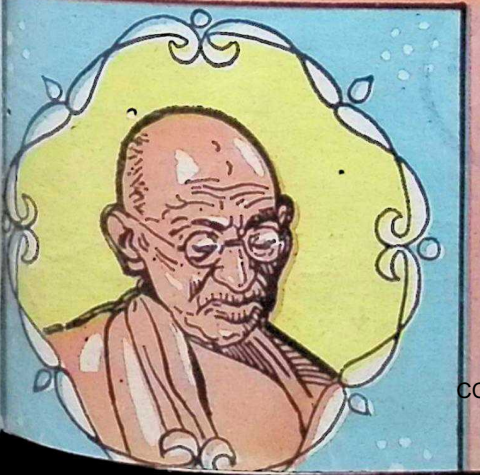

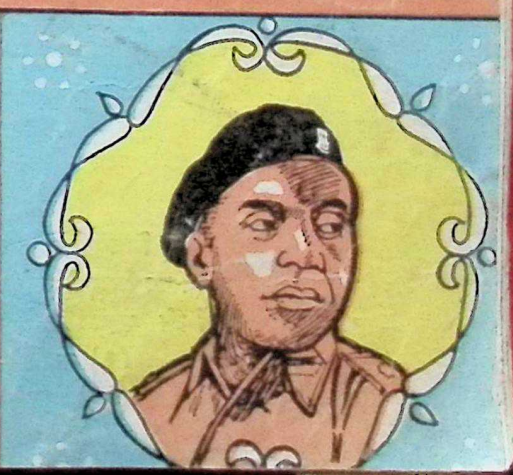

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-गणित

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

(१) 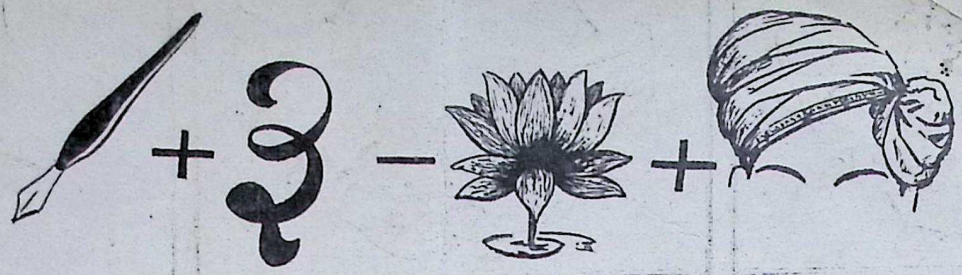

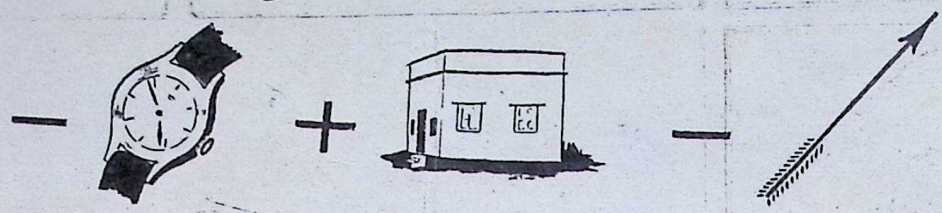

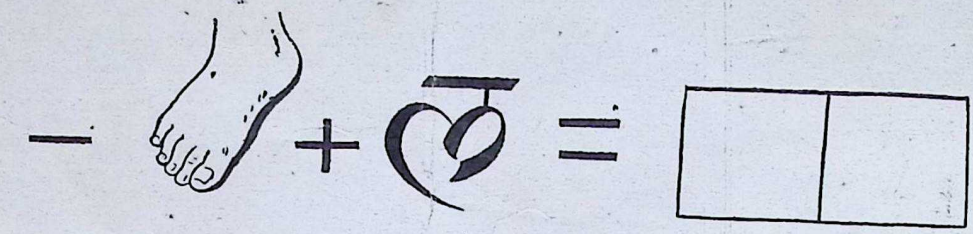

(२) 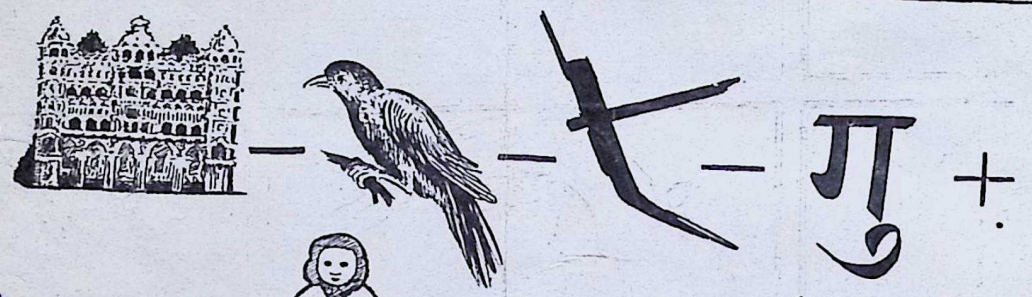

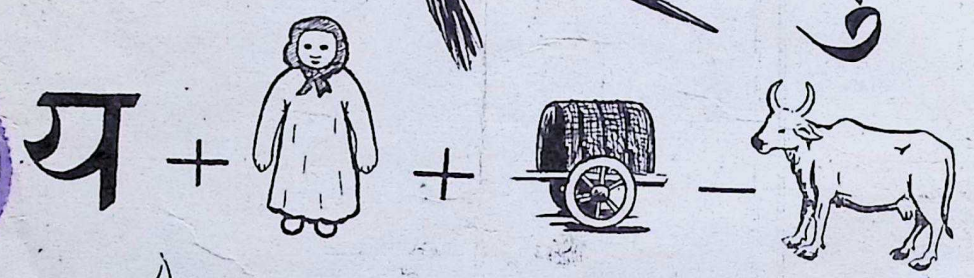

के कृष्णमूर्ति

चित्र-गणित के सवाल को सरल करके निकालो। इस का तरीका यह है कि जिन शब्दों के आगे धन का चिह्न है उन्हें एक ओर लिख लें। ऋण चिह्न के शब्दों को दूसरी ओर। और जोड़ शब्दों के अक्षरों में जो ऋण शब्दों के अक्षर मिलें उन्हें काटते जाएं। अन्त में दो अक्षर बचेंगे वही उत्तर है।

(१) कलम + तीन -- कमल + पगड़ी -- पड़ी + घर -- तीर -- पग + ल = नल

(२) महल + चिड़िया -- हल -- ग + गुड़िया + गाय -- चिड़िया -- डीम = राग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के स्वास्थ्य के रक्षक

नौनिहाल बेबी टानिक

बच्चों की कमज़ोरी में काम आता है

नौनिहाल ग्राइप सीरप

बच्चों के क़ब्ज़, बदहज़मी दांत निकलना, और अफ़ारा में काम आता है

हमदर्द दवाख़ाना

(ट्रस्ट) देहली

बाल-भारती

संस्मरण विशेषांक

संख्या १ ज्येष्ठ-आषाढ़ १८८२ वर्ष १३

जून १९६०

सम्पादक मण्डल

विष्णु प्रभाकर — मोहन राव
के० शंकर पिल्ले — मन्मथनाथ गुप्त
फ्रीडा वेदी — सावित्री देवी वर्मा (मंत्री)

विषय-सूची

दो महान व्यक्ति	विष्णु प्रभाकर	२
मैं अपने कर्त्तव्य से क्यों चूकूं ?	श्याम सुन्दर सेन	३
अमर अहल्या (कविता)	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	४
बहादुर जैक	शाकिर पुरुषार्थी	५
नेपोलियन और फलवाली	रमाकान्त आचार्य	६
सिकन्दर की आंखें	एच० एम० सुनन्दा	७
तेरह या तेरा	सत्या जैन	८
बड़े जब छोटे थे	सत्यदेवनारायण सिन्हा	११
जब मेरी खिल्ली उड़ी	वृन्दावनलाल वर्मा	१२
ये अमर शहीद	मन्मथनाथ गुप्त	१४
महारानी लक्ष्मी बाई	दीदी	१५
ये बेजोड़ मजाक	नवीन दवे	१६
रानाडे की उदारता	गोविन्द झा	१७
मंगल पाण्ड	माणिक पण्डित	१८
कस्तूरबा	शान्ति भटनागर	१९
हजरत मोहम्मद साहब	ज़हूर बख्श	२०
बड़ों का विनोद	नारायण सिंह	२१
पहेलियां	एस० कुमार नवीन	२१
राजस्थान का कठपुतली नाच		२२
नन्हें-मुन्ने (कविता)	रमेश पगला	२२
मुझको तो अच्छी लगती है (कविता)	देवेन्द्र मोहन नेहरू	२२
बाल-भारती चित्रावली	—	२३–२६
दो महान महिलाएं	चन्द्रकिरण सोनरिक्सा	२७
दो मित्र	—	२९
अनुपम त्याग	रघुनाथ प्रसाद	३३
खूब रही	नवीन दवे	३३
झोला बनाइए	लीला प्रकाश	३७
जीवन डोर	सावित्री देवी वर्मा	४१
तुलसी का राम प्रेम (एकांकी)	केशरी किशोर भाटी	४४
वीरबाला लाइना (कविता)	जनार्दन दुबे 'पीड़ित'	४५
बड़ों की महानता	नारायणसिंह सावन	४५
बापू की विनोद-प्रियता	डा० हरिनन्दन पांडे	४६
पाक-विज्ञान	शकुन्तलादेवी भल्ला	४७
गुड़ियों का परिवार	दरिया अहमद खान	४७
चित्र-गणित	के० कृष्ण मूर्ति	द्वि० कवर

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता—सावित्री देवी वर्मा
पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८
वार्षिक मूल्य—चार रुपये, १ डालर या ७ शिलिंग
प्रति प्रति—३५ नए पैसे, १० सेंट या ८ पेंस

SURHOLA KANGRI LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये दो महान व्यक्ति

विष्णु प्रभाकर

शरत्चन्द्र एक बालक था। उस के मां-बाप बहुत गरीब थे। अपने मामा के घर रह कर वह पढ़ता था। वह बड़ा शरारती था। लेकिन पढ़ने में बहुत चतुर था। ऐसा मन लगा कर पढ़ता कि सारी दुनिया को भूल जाता। शरारत करता तो सबको परेशान कर देता।

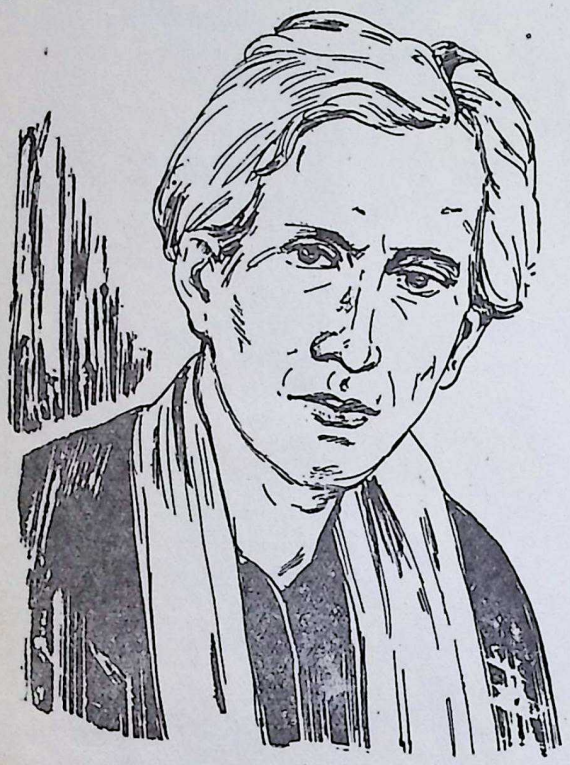

शरत्चन्द्र

लेकिन आज हम उसकी शरारत की बात नहीं, पढ़ने की बात बताएंगे। उसने दसवीं पास कर ली। एफ० ए० में पढ़ने के लिए कालेज में पहुंचा। एक दिन उसके प्रोफेसर ने कहा——कल परीक्षा होगी। सुनकर वह परेशान हो गया। अभी तक तो उसने कुछ पढ़ा ही नहीं था। खैर, वह घर पहुंचा। वह पढ़ता ही नहीं था। बल्कि घर के बालकों को पढ़ाया भी करता था। उस दिन उन सबको बुला कर उसने कहा——देखो, कल मेरी परीक्षा है। आज रात मैं तुम को नहीं पढ़ाऊंगा। मुझे परेशान मत करना। जो कुछ पूछना हो, कल आकर पूछना।

बालक चले गए और वह लड़का पढ़ने बैठ गया। दूसरे दिन सवेरे वे बालक पढ़ने के लिए आए। दरवाजा बन्द था। डरते-डरते जरा-सा किवाड़ खोल कर उन्होंने अन्दर झांका, देखा लालटेन जल रही है और वह लड़का पढ़ रहा है। आहट पाकर उसने इन बालकों की ओर देखा। नाराज हो उठा। बोला——परेशान करने के लिए आ गए न? मैंने तुमसे कहा था कि आज नहीं पढ़ाऊंगा। जाओ, जाओ, कल सवेरे आना।

बालक हैरान परेशान। डरते-डरते एक ने कहा——सवेरा तो कभी का हो चुका।

अब वह लड़का हैरान होकर उठा। खिड़की खोली। देखा, सचमुच सूरज निकल आया है। बेचारा लजा कर रह गया। लेकिन देखा तुमने, पढ़ने की कैसी धुन थी उसमें? पूरी रात बीत गई और उसे पता ही नहीं लगा। इतना मन लगा कर पढ़ता था। तभी तो वह एक दिन इतना बड़ा लेखक हुआ कि हम उसकी कहानी आप सबको सुना रहे हैं। जानते हो वह कौन थे, वह थे शरतचन्द्र चटर्जी। वह बंगाल में पैदा हुए थे। उनकी लिखी किताबें सारे भारत में पढ़ी जाती हैं। भारत से बाहर भी पढ़ी जाती हैं।

अब्राहम लिंकन का नाम तुमने सुना ही है। दुनिया के सबसे बड़े महापुरुषों में उनकी गिनती की जाती है। उन्होंने अमरीका देश से दासता ो मिटाया। जब वह बच्चे थे तब दासों को पकड़ कर बाजार में बेचा जाता था। उनको जंजीरों में बांधा जाता था, कोड़ों से पीटा जाता था। उनके साथ पशुओं से भी बुरा बर्ताव किया जाता था। उनमें बूढ़े होते, बालक होते, बालिकाएं होतीं, जवान स्त्री-पुरुष सभी होते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार लिंकन अपने दोस्तों के साथ कहीं जा रहे थे। वह बहुत से लोगों से मिले। बहुत से सुहावने नजारे देखे। उसी यात्रा में उन्होंने यह भी देखा कि जगह-जगह दासों को बेचा जा रहा है। वह एक ऐसी जगह पहुंचे जहां एक लड़की को बेचा जा रहा था। उसका पिता गोरी जाति का था और मां काली जाति की। उस लड़की पर बोली लगाई जा रही थी। बेचने वाला बार-बार उस लड़की को चुटकी काटता, जिससे वह कमरे में दौड़े और ग्राहक उसकी चाल देख सके। लड़की जब भी रुकती तभी उसको फिर बुरी तरह चुटकी काटी जाती। बेचारी गरीब असहाय लड़की, उसे सब कुछ सहना पड़ता। अपने शरीर के हर अंग की हरकत दिखानी पड़ती। लिंकन ने यह सब देखा। उसका दिल भर आया। वह बोल नहीं सका। कुछ देर तक चुप खड़ा रहा। फिर एकाएक उसने कहा—भगवान के लिए हम लोगों को यहां से चल देना चाहिए। अगर मुझे कभी इस दासता पर चोट करने का अवसर मिला तो मैं कस कर चोट करूंगा।

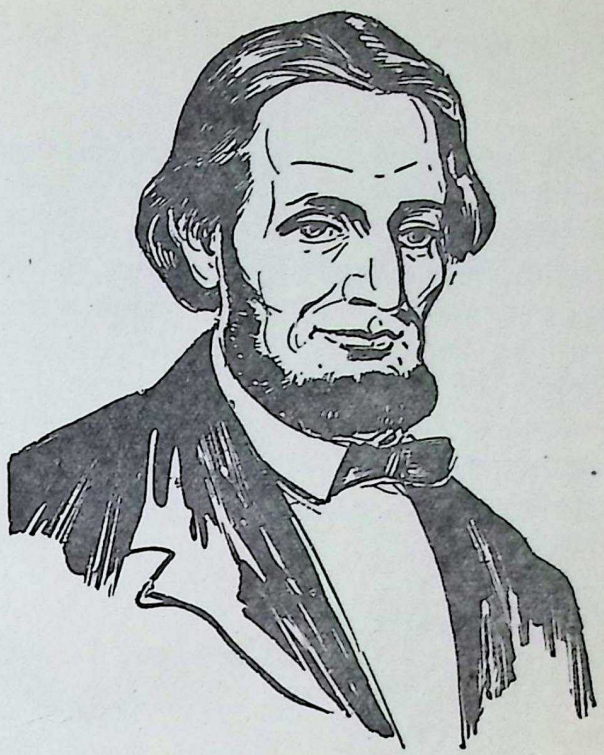

अब्राहम लिंकन

तब क्या कोई जानता था कि लिंकन जो कुछ कह रहा है, वह एक दिन पूरी तरह सच साबित होगा। वह बहुत गरीब था, लेकिन यही गरीब बालक एक दिन आगे चलकर अमरीका का शासक बना। और जैसा उसने बचपन में कहा था, उसने दासता पर कस कर चोट की। अमरीका से दासता मिट गई और लिंकन अमर हो गया। यह सभी जानते हैं कि इसके बदले में उसे अपनी जान देनी पड़ी थी। हर बड़ा आदमी अपनी जान देकर ही दुनिया की भलाई करता है।

मैं अपने कर्त्तव्य से क्यों चूकूं ?

श्याम सुन्दर सेन

कलकत्ता हाईकोर्ट में एक प्रसिद्ध जज थे। वह बड़े ही उदार एवं सज्जन थ। उनमें कर्त्तव्य की भावना कूट-कूट कर भरी थी। गरीब-अमीर सभी उनकी निगाह में समान थे। वह सबों के प्रति न्याय करते थे। एक बार जज साहब का एकमात्र पुत्र बीमार पड़ा। उसे हैजा हो गया था। कलकत्ते के बड़े-बड़े सिविल सर्जन बुलाए गए, लेकिन कोई लाभ न हुआ। बच्चे की हालत प्रतिक्षण खराब होती जा रही थी। इसी समय जज साहब के कोर्ट जाने का समय हो गया। उनको कोर्ट चलते देख उनकी पत्नी बोली—आज आप कोर्ट न जाएं। बच्चे के बचने की कोई उम्मीद नहीं है। ऐसी अवस्था में आपका घर पर रहना बहुत जरूरी है।

जज साहब ने कहा—नहीं, आज मैं किसी प्रकार रुक नहीं सकता। आज एक महत्वपूर्ण मुकदमा है। यदि आज मैं कोर्ट न जाऊं तो बेचारे गरीबों के प्रति ठीक-ठीक न्याय नहीं हो सकेगा। बेटे की जान भगवान की कृपा पर ही निर्भर है। तुम उन्हीं कृपालु का स्मरण करो। कोर्ट न जाकर मैं अपने कर्तव्य से क्यों चूकूं ?

पत्नी के बार-बार मना करने पर भी जज साहब निश्चित समय पर कोर्ट चले गए। बेटे की बीमारी की चिन्ता उन्हें कर्त्तव्य-पथ से विचलित नहीं कर सकी। जब कोर्ट का काम पूरा हो गया, वह कोर्ट से घर लौटे। पहुंचने पर देखा कि घर में कुहराम मचा हुआ है। वह समझ गए कि उनके पुत्र की मृत्यु हो चुकी है। पत्नी रोती हुई आकर बोली—बेटे को आखिरी समय में आप न मिल सके।

जज ने एक लम्बी सांस ली। बेटे की याद कर वह फूट-फूट कर रोने लगे।

क्या तुम जानते हो कि यह न्याय तथा कर्त्तव्य-परायण जज

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर अहल्या

दवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

सदियां बीतीं, होल्कर कुल के
जब मल्हारराव श्रीमान,
राजा थे इन्दौर नगर के
प्रजा जिन्हें थी प्राण-समान ।
वृद्ध हुए तब इन राजा न
लेना चाहा कुछ विश्राम,
अपने खण्डेराव पुत्र को
दिया राज्य का सारा काम ।
लेकर शासन अपने हाथों
पाकर सुत ने सब अधिकार,
भुला दिया निज कर्तव्यों को
दिया प्रजा को कष्ट अपार ।
किसी तरह चल रहा राज्य था
होते रहते युद्ध महान,
फलतः खण्डेराव एक दिन
रहे युद्ध में खेत निदान ।
खोकर खण्डेराव, अहल्या
विधवा हुई बहुत ही म्लान,
गीली आंखों देखा उसने
अपने पति का यह अवसान ।
और श्वसुर मल्हारराव भी
चले गए तज कर संसार,
पिता-पुत्र दोनों को खोकर
रोया राजमहल गुलजार ।
देवि अहल्या ने तब सौंपा
राज-काज का सारा भार,
अपने मालीराव पुत्र को
किया प्रजा ने जय-जयकार ।
किन्तु पिता की भांति पुत्र ने
किए प्रजा पर अत्याचार,
बढ़ी प्रजा की आहें, जिनका
खाली कभी न जाता वार ।
अधिक दिनों तक मिला न इसको
शाही सुख का यह सम्मान,
नौ महीने ही रहा तख्त पर
हुआ और इसका अवसान ।
खेल भाग्य की आंखमिचौनी
भूल दुखों की तीखी मार,
रानी ने अब स्वयं संभाला
राज-काज का सारा भार ।
देवी अहल्या दीन प्रजा को
सदा समझती पुत्र-समान,
तन-मन-धन से प्रजा-हितों का
रखती थी वह प्रति पल ध्यान ।
किन्तु अहल्या के मंत्री थे
गंगाधर जी कुटिल महान,
बातों से वह राज भक्त थे
किन्तु हृदय के कपटी, म्लान ।
इस कपटी ने छिपे-छिपे ही
लिखा एक तब पत्र निदान,
भेजा राघोवा दादा को
प्रकट किए अपने अरमान—
पूना में जो आज पेशवा
हैं हम सबके ही सरदार,

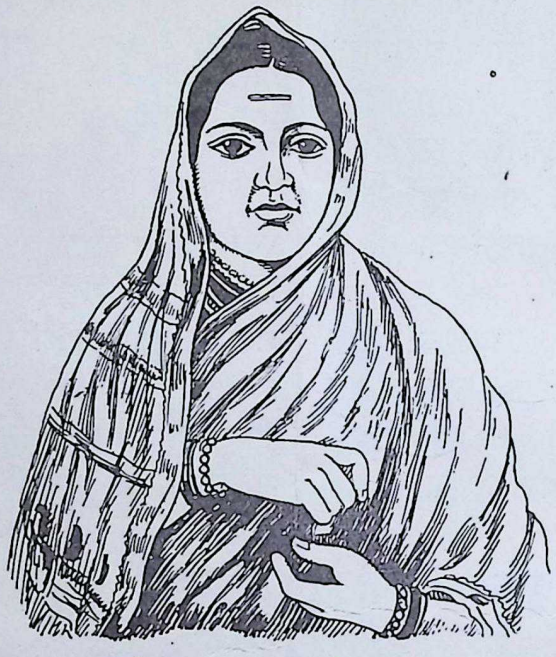

उनके चाचा आप पूज्य हैं
शूरवीर, गुणवान, उदार ।
आज अहल्या चला रही जो
बड़े राज्य का शासन-भार,
किया दान था कभी आपके
पुरखों ने ही कर उपकार ।
तब क्यों बैठे आप मौन हैं
अजी, दीजिए कुछ तो ध्यान—
विधवा है यह रानी एवं
पुत्रहीन भी हुई निदान ।
ले सकते हैं फौरन वापस
चाहें अगर आप सरदार,
उस रानी का यही राज्य अब
जिसका कहीं नहीं हकदार ।
राज्य-प्राप्ति के लालच से भर
सेनाओं को कर तैयार,
चले होल्कर राज्य हड़पने,
राघोबा दादा सरदार ।
जासूसों से जान हाल सब
आमंत्रित कर निज सरदार,
किया विचार अहल्या ने तब
लिखे पत्र फौरन दो-चार—
भेजे गायकवाड़, सिन्धिया
और भोंसले को तत्काल,
लिखा पेशवा को भी उसने
राघोबा का यह जंजाल ।
पा रानी का पत्र शीघ्र ही
आमन्त्रित ये मित्र महान,
युद्ध क्षेत्र में आए लेकर
शूरवीर सैनिक बलवान ।
वीर वेश सज स्वयं अहल्या
चली युद्ध के लिए निदान,
दिया तुकोजीराव वीर को
सेना-नायक का सम्मान ।
गंगाधर ने देखा जब यह
वीरों का नव पारावार—
राघोबा को चला छकाने,
करने को डटकार प्रतिकार ।
मन ही मन वह हुआ सशंकित
कांपे उसके कायर प्राण,
मिलने राघोबा दादा से
किया शीघ्र उसने प्रस्थान ।
राघोबा ने सुनकर सब कुछ
चली दुरंगी अपनी चाल,
एक दूत के हाथों भेजा
लिखकर एक पत्र तत्काल—
आए आप उसी से लड़ने
जो रानी का मित्र महान,
और सदा से करता आया
देवि अहल्या का सम्मान ।
पुत्र-शोक में रानी को मैं
आया देने धैर्य अपार,
लेकिन दिखता, हुआ आपके

(शेष पृष्ठ १० पर)

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुर जैक

शाकिर पुरुषार्थी

जैक, स्कूल के छात्रावास में रहता था। प्रत्येक शनिवार की शाम को वह अपने घर जाता और रविवार की छुट्टी घर पर व्यतीत करता।

शनिवार की एक रात को वह जल्दी-जल्दी अपने घर जा रहा था। आज उसे छात्रावास से निकलने में देर हो गई थी। अभी वह रास्ते ही में था कि चारों ओर अंधेरा छाने लगा। वह चाहता था कि रात से पहले पहले घर पहुंच जाए।

चलते-चलते, अचानक उसकी दृष्टि, पानी की एक पतली सी धार पर पड़ी, जो उस बांध में से फूट रही थी, जिसे समुद्र के पानी से बचाव के लिए बनाया गया था। वह गांव समुद्र-तट से नीचे था। समुद्र के पानी से बचाव के लिए गांव वालों ने समुद्र के किनारे-किनारे एक दीवार बना दी थी। जैक, जल्दी से दीवार की ओर लपका। पास आकर उसने दीवार में एक नन्हा-सा सुराख देखा। इसी सुराख में से पानी रिस रहा था। जैक यह देख कर बड़ा असमंजस में पड़ गया। उसके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार उभरने-मिटने लगे। सागर का यह पानी रोका न गया तो पूरा गांव समुद्र में डूब जाएगा। अभी वह इतना सोच ही रहा था कि उसने देखा कि सुराख, पानी के थपेड़ों से चौड़ा हो रहा है। जैक ने तुरन्त जेब से रूमाल निकाला। उसे अपनी अंगुली पर लपेटा और रूमाल में लिपटी हुई अंगुली सुराख में रख दी। इस प्रकार पानी आना बन्द हो गया।

—और रूमाल में लिपटी हुई अंगली सुराख में रख दी। इस प्रकार पानी आना बन्द हो गया।

पानी बन्द हुआ तो जैक को बड़ा सन्तोष हुआ। अब वहीं दीवार के सहारे बैठे-बैठे, उसने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई, ताकि किसी को सहायता के लिए पुकार सके, लेकिन कोई दिखाई न दिया। दूर तक सड़क सुनसान दीख रही थी, अंधेरा फैलता जा रहा था, किन्तु जैक इसी भयानक अंधेरे में निराश हो चुपचाप बैठा रहा।

कुछ देर गुजरी तो उसने ऊंची आवाज़ में लोगों को बुलाना शुरू किया। बार-बार वह जोर-जोर से पुकारता रहा, किन्तु उसकी पुकार सुनसान अंधेरे में डूब कर रह गई।

इस अंधेरी रात में, एक मात्र जैक ही था जो अपने गांव को बचाने के लिए दीवार के सहारे, बिलकुल अकेला बैठा था। सर्दी बढ़ती जा रही थी।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपोलियन और फलवाली

रमाकान्त आचार्य

यह उन दिनों की बात है जब कि एक होनहार बालक फ्रांस के एक सैनिक स्कूल में शिक्षा पा रहा था। उसी शहर के एक भाग में फलों की एक छोटी सी दुकान थी, जिसकी मालकिन एक बुढ़िया थी। यह लड़का फलों का बहुत शौकीन था, इसलिए वह प्रायः उस दुकान पर फल खरीदने के लिए जाया करता था।

अन्य विद्यार्थियों की तरह जब कभी इस लड़के के पास पैसे कम पड़ जाते, वह उस फल बेचने वाली से उधार फल ले लेता। जब उसके पास फल खरीदने के लिए पैसे नहीं होते तो वह उस फल वाली से कहता—माई! जिस दिन मेरे पास काफी पैसे आ जाएंगे मैं तुम्हारा पूरा हिसाब चुका दूंगा। बुढ़िया को भी इस बालक पर पूरा विश्वास था। यही कारण था कि वह उसे उधार देने में कतई आनाकानी नहीं करती थी।

एक दिन वह लड़का फल वाली के पास पहुंचा और बोला—माई! पाठशाला की पढ़ाई मैंने पूरी कर ली है। मैं दूसरी जगह जाकर अपनी पढ़ाई जारी रखूंगा। तुमसे मैंने जो स्नेह पाया है, उसे मैं कभी न भूल सकूंगा और तुमसे मैंने कई बार जो उधार फल लिए थे, उसके पैसे जल्दी ही चुकाने की कोशिश करूंगा।

यह सुनकर उस फल वाली की आंखों में आंसू आ गए। वह बोली—अरे! तो इसमें क्या हो गया। पैसे भाग के कहीं थोड़े ही जाने वाले हैं। इस बारे में तू तनिक भी चिन्ता मत करना।

कई वर्ष बीत गए।

वह होनहार बालक एक सैनिक बन गया। इस प्रकार आखिरकार उसकी अभिलाषा पूरी हुई। धीरे-धीरे उसकी तरक्की होती गई और अन्त में एक दिन वह फ्रांस का शाहंशाह बन बैठा।

बच्चो! जानते हो यह होनहार व्यक्ति कौन था? यह था प्रसिद्ध वीर नेपोलियन बोनापार्ट।

शाहंशाह होने के बाद नेपोलियन का काम बहुत बढ़ गया। पर उसे उस फल बेचने वाली की याद हमेशा बनी रही। एक दिन उसे संयोग से उस इलाके में जाने का अवसर आया।

सादे वेश में अपने साथ केवल एक-दो अंगरक्षकों को लेकर नेपोलियन उस शहर में जा पहुंचा। वहां कोई भी उसे नहीं पहचान सका।

बचपन में नेपोलियन जिन-जिन मकानों और

(शेष पृष्ठ ९ पर)

—माई! जिस दिन मेरे पास काफी पैसे आ जाएंगे मैं तुम्हारा पूरा हिसाब चुका दूंगा।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दर की आंखें

एच० एम० सुनन्दा

सिकन्दर का नाम सबने सुना होगा । वह एक बहुत बड़ा योद्धा था । उसे अपनी प्रजा की भलाई की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी ।

कहते हैं, एक बार सिकन्दर की आंखों में दर्द होने लगा और रोग इतना बढ़ गया कि धीरे-धीरे उसे बहुत कम दिखाई पड़ने लगा । सिकन्दर आंखों पर कपड़ा बांध कर बेचैनी से तड़पने लगा ।

जहां-जहां से हो सका बहुत बड़े-बड़े वैद्य बुलाए गए । दूर-दूर के देशों से आए हुए मशहूर वैद्यों ने भी सिकन्दर की आंख देखी । अनेक दवाइयां डाली गईं, पर कोई असर नहीं हुआ । वीर सिकन्दर आंखों की पीड़ा से छटपटाता रहा, तड़पता रहा । सारे संसार की विजय का सपना देखने वाला योद्धा आंखों के बिना क्या करता ? उसके लिए सारी दुनिया सूनी हो गई ।

तभी एक फटेहाल आदमी दरबार में आ पहुंचा । और दिन होता तो शायद वह सिकन्दर के पैरों की धूल भी न छू पाता । पर यहां तो ऐसी हालत थी कि मामूली-सा बच्चा भी कोई दवा बताता तो सिकन्दर उसे भी आज़मा कर देखता । आखिर सभी हार गए थे ।

उस निर्धन फटेहाल आदमी को बुलाया गया । उसने अपना परिचय देते हुए कहा—जहांपनाह, मैं पहले कभी बहुत मशहूर वैद्य था । मैंने हजारों की आंखें ठीक कर दीं, पर आप जैसा एक रोगी मिला, जिसकी आंखें मैं न बचा सका । बस उसी दिन से जिद में आकर मैं सारा घर-बार छोड़ कर इस रोग की औषधि ढूंढ़ने निकल पड़ा । आज बीस साल से भयानक जंगलों और दुर्गम पहाड़ों पर दर दर की ठोकरें खाता रहा ।

सिकन्दर बेचैनी से बोला—फिर क्या हुआ भले आदमी, जल्दी बताओ, तुम्हें वह दवा मिली या नहीं ? बोलो·····जल्दी बोलो ।

सिकन्दर चिल्ला उठा—जल्दी करो !

वैद्य कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला—मिल गई, बादशाह सलामत ।

सिकन्दर खुशी से उछल पड़ा, पर तुरन्त ही दर्द से व्याकुल होकर बोला—फिर देर क्यों करते हो, मेरे भाई ? जल्दी करो न, अपनी दवा लाओ, कहां है ? मैं तो मरा जा रहा हूं । लड़ाइयों में हजारों घाव लग जाने पर भी मैं कभी ऐसा बेचैन नहीं हुआ । दुनिया जानती है, मैं जब तक युद्ध में विजय नहीं पा लेता था, तब तक घोड़ा रोक कर चैन की एक सांस भी नहीं लेता था । पर उफ, इन आंखों का दर्द ! क्या कहूं, ऐसा लगता है कि मर ही जाऊंगा । मर जाना भी ठीक है, सहा नहीं जाता । हाय ! जल्दी करो ।

पर वैद्य चुपचाप खड़ा रहा ।

सिकन्दर चिल्ला उठा—जल्दी करो !

(शेष पृष्ठ १० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरह या तेरा

सत्या जैन

नानक की बहन का नाम नानकी था। दोनों में बहुत प्यार था। जब नानकी का ब्याह हो गया तो भाई का वियोग न सह सकने के कारण वह नानक को भी अपने साथ ले गई और अपने ससुराल में ही एक आटे की चक्की पर नानक को नौकरी दिलवा दी।

नानक अपना काम भी करते जाते थे और भगवान का भजन भी। एक दिन वह भजन करते-करते आटा तोलने लगे और तेरह सेर तक गिनने पर "तेरा-तेरा-तेरा" करते-करते माप से कहीं अधिक आटा उन्होंने तोल में दे डाला। जब रात को हिसाब लगाने बैठे तो अपनी भूल का ज्ञान हुआ और मालिक के क्रोध के भय से वह अपने घर लौट आए। पिता को जब इस बात का पता चला तो वह गदगद हो गए और कहा—तू अवश्य ही महान सन्त बनेगा।

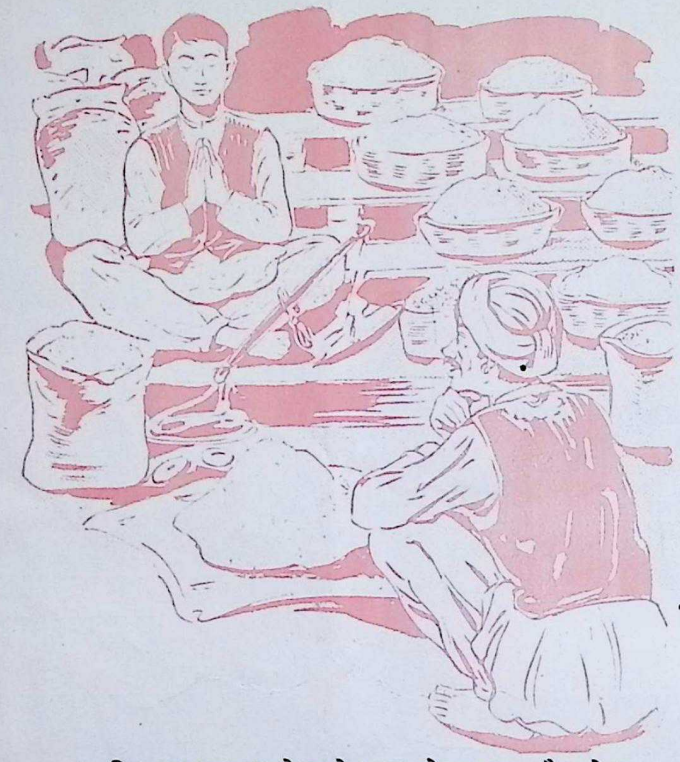

एक दिन वह भजन करते-करते आटा तोलन लगा और तेरह सेर तक गिनने पर "तैरा-तेरा-तेरा" करते-करते माप से कहीं अधिक आटा उन्होंने तोल में दे डाला।

सचमुच ही वह बालक नानक बड़ा होकर महान सन्त गुरु नानक देव बना। पिता की भविष्यवाणी सत्य ही निकली।

एक बार नानक अपने एक मुसलमान मित्र मरदाना के साथ यात्रा करते-करते मक्का जा पहुंचे। वहां पर वह मस्जिद के बाहर काबा की ओर पांव कर के सो गए। थोड़ी देर पश्चात वहां मुल्ला आ पहुंचा और वह नानक को इस प्रकार सोता देख क्रोध से भर गया और काबा का अपमान करने के कारण उसने इन्हें बहुत फटकारा। नानक ने शान्त भाव से उत्तर दिया—जहां तुम्हारे खुदा न हों, उधर पांव कर दो।

यह सुन मुल्ला ने नानक के पांव ज़ोर से घसीटकर दूसरी ओर घुमा दिए। परन्तु यह देख कर उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि जिधर उसने नानक के पांव घुमाए थे, काबा भी उधर ही घूम कर आ गया। मुल्ला अपने व्यवहार पर अत्यन्त लज्जित हुआ और नानक हँसते हुए वहां से उठ कर चले गए।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुर जैक——(पृष्ठ ५ का शेषांश)

उसकी देह कांप रही थी, दांत बज रहे थे। यदि वह चाहता तो चुपके से खिसक आता। पर उसे अपने गांव का ख्याल आया। अपने उन नन्हें साथियों का ख्याल आया, जिनके साथ वह खेलता था। उन बूढ़ों का ख्याल आया जो उसे दुलारते और कहानी सुनाते थे। उसके हृदय में गांव के सभी लोग थे। बच्चे, बूढ़े, पुरुष, स्त्रियां, सब के सब उसके नन्हें से दिल में बस रहे थे और उसकी दृष्टि में, वह प्यारी-प्यारी धरती थी, जहां हरे-भरे खेत थे, घर थे, मैदान थे, टीले और नदियां थीं। वे गलियां थीं जहां वह अपने हमजोलियों के साथ दिन भर खेला करता। यदि वह अपनी अंगुली सुराख में से निकाल लेता तो उसके गांव के बच्चे, स्त्रियां, पुरुष, खेत, खलिहान, मैदान और प्यारी-प्यारी गलियां हमेशा के लिए समुद्र में डूब जातीं। इसी विचार से, वह दीवार के सहारे डट कर बैठ गया। बैठा रहा।

सर्दी बढ़ रही थी। उसे सख्त भूख भी लगी थी, किन्तु बढ़ती हुई भूख और सर्द हवा ने उसे अपने स्थान से डांवाडोल नहीं किया। सुराख में अंगुली दिए वह उसी तरह डट कर बैठा रहा। सारी रात उसी स्थान पर अपनी नन्ही-सी अंगुली से आने-वाली मुसीबत को रोक कर, जम कर बैठा रहा।

बैठे-बैठे उसका शरीर सुन्न होता गया। थकान और सर्दी से वह निढाल होता गया और फिर मौत के ठंडे हाथों ने उसे हमेशा के लिए वहीं सुला दिया। किन्तु इस नींद में भी उसकी नन्हीं-सी अंगुली ठंडक से जमकर सुराख में अटकी रही। समुद्र के थपेड़े उस अंगुली को सुराख में से बाहर न निकाल सके।

सुबह हुई तो लोगों ने जैक को देखा। उसका शरीर सुन्न होकर बिलकुल अकड़ गया था।

इस नन्हें बहादुर की कहानी आज भी हालैण्ड की माताएं अपने बच्चों को सुनाती हैं, ताकि वे भी जैक की तरह वीर बालक बनें और अपने देश के लिए जीवन तक बलिदान करने से न हिचकिचाएं।

नेपोलियन और फलवाली——(पृष्ठ ६ का शेष)

गलियों में घूमा था, उन्हीं गलियों से इस समय वह धीरे-धीरे गुजर रहा था। उन स्थानों को देख देखकर उसे अपने बचपन की सभी बातें याद आ रही थीं कि सहसा उसे फलवाली की याद हो आई।

वह शीघ्र ही उस दुकान पर जा पहुंचा। दुकान बहुत ही पुरानी हो गई थी और साथ ही उसने यह भी देखा कि वह औरत अब बहुत अधिक बूढ़ी और कमजोर हो गई थी। उस समय वह अपने बच्चों के लिए भोजन बना रही थी। वह नेपोलियन को पहचान नहीं सकी। वह उसे कोई ग्राहक समझ बैठी। नेपोलियन ने कुछ फल खरीदे और उसी दुकान में फर्श पर बैठकर वह खाने लगा। भर पेट फल खा लेने के बाद जब पैसे चुकाने का वक्त आया तो नेपोलियन ने फलों की कीमत से बहुत ज्यादा रकम बुढ़िया के हाथ पर रख दी।

उसने पैसे गिने तो उसने समझा कि ग्राहक ने गलती से उसे ज्यादा पैसे दे दिए हैं। उसने कहा——जनाब, शायद आपने गलती से मुझे ज्यादा पैसे दे दिए हैं।

नेपोलियन ने कहा——माई! क्या तुमको याद है कि कई वर्ष पहले एक लड़का तुम्हारी दुकान से रोज ही फल खरीदता था?

फल वाली ने अपना सिर ऊपर उठा कर उत्तर दिया——हां, और साथ-साथ यह भी सुना है कि अब तो वह फ्रांस का शाहंशाह बन गया है। वह मेरी इस दुकान पर रोज ही फल खरीदने आता और मेरे ये फल तो उसे इतने स्वादिष्ट लगते थे कि वह मेरी दुकान छोड़कर और किसी भी दुकान से फल नहीं खरीदता था।

——क्या वह लड़का उन फलों के पैसे हमेशा ही चुका देता था?——नेपोलियन ने पूछा।

——हां, पैसे तो वह हमेशा ही चुका देता था। कितना अच्छा लड़का था वह, काश! मैं एक बार उसे देख पाती। किन्तु मुझ अभागी के भाग्य में यह शायद नहीं बदा। (अगले पृष्ठ पर देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ालियन ने मुस्करा कर कहा––माई ! तुम भूल रही हो । मुझे अच्छी तरह याद है कि उसने कई बार तुमसे फल उधार लेकर खाए थे और आज तक उसके पैसे नहीं चुकाए । आज मैं उस ऋण को चुकाने आया हूं । मुझे जरा अच्छी तरह देखकर पहचानने की कोशिश तो करो । तुम्हारे फल खाने वाला वह लड़का मैं ही था या और कोई ?

यह सुनकर बुढ़िया के आश्चर्य का पारावार न रहा । पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि फ्रांस का शाहंशाह नेपोलियन उस गरीब स्त्री की दुकान पर भी आ सकता है । पर नेपोलियन का मुंह अच्छी तरह देख लेने के बाद उसकी आंखों से खुशी के आंसू छलक आए । वह गदगद कंठ से बोली––हां, मैं पहचान गई हूं फल खाने वाले लड़के को । आज भगवान ने मेरी विनती सुन ली है·····।––खुशी के मारे वह आगे कुछ न कह सकी ।

शाहंशाह नेपोलियन ने बुढ़िया को एक नई दुकान खुलवा दी और जब तक बुढ़िया जीवित रही, उसकी अच्छी तरह देखरेख की ।

सिकन्दर की आंखें––(पृष्ठ ७ का शेषांश)

वैद्य बोला––हुजूर, एक खतरा है, मुझे आशा तो है कि इस जड़ी से आपकी आंखें ठीक हो जाएंगी, पर मैं चाहता हूं कि पहले किसी और आदमी की आंखों पर इसे लगा कर देख लूं । कहीं आपको इससे कुछ नुकसान न पहुंच जाए ।

सिकन्दर चौंक कर चुप हो गया । जैसे अपनी पीड़ा भूल गया । बोला––वैद्य, तुम सिकन्दर को नहीं जानते । अपनी आंखों के लिए मैं किसी और की आंखों को खतरे में नहीं डालूंगा । तुम मेरी आंखों की ही दवा करो । ठीक हो जाएं तो अच्छा है, अगर कहीं नुकसान कर जाएं तो तुम्हारा कोई कसूर नहीं होगा । पर दूसरे की आखें खराब हो गईं तो मुझे इस पीड़ा से भी बढ़कर दुःख होगा ।

सभी दंग रह गए । सिकन्दर कितना महान था ! वैद्य ने निर्भय होकर दवा लगाई और सिकन्दर की आंखें जल्दी ही ठीक हो गईं ।

अमर अहल्या––(पृष्ठ ४ का शेषांश)

मन में भ्रम का कुछ संचार ।
भेजा वीर तुकोजी ने पर
सुन्दर उत्तर उनके पास––
आए थे यदि मिलने को ही
नहीं तुम्हें था क्या विश्वास ?
मिल सकते थे रानी से तो
आप अकेले ही श्रीमान,
रणचण्डी का जाने फिर क्यों
किया आपने यह आह्वान ?
इस उत्तर से राघोबा तब
लज्जित हुए, रहे चुपचाप,
छोड़ी सेना, चले अकेले,
लिए हृदय में पश्चात्ताप ।
क्षिप्रा-तट पर तभी तुकोजी
राघोबा का कर सत्कार,
फूले नहीं समाए मन में,
किया नहीं उनका प्रतिकार ।
मिले अहल्या से फिर आकर
राघोबा दादा सरदार,
युद्ध-क्षेत्र से रानी लौटी,
हुआ नहीं फिर नर-संहार ।
किया अहल्या ने तब इनका
शाही स्वागत अपरम्पार,
राघोबा थे लज्जित, देखा
रानी का जब यह व्यवहार ।
किया शत्रुओं ने भी जिसका
नत मस्तक हो गौरव-गान,
प्रजा जिसे थी प्यारी अपनी
ठीक पुत्र के सदा समान ।
अमर हुई जो, अमर किया इस
भारत की नारी का मान,
वही अहल्या अमर रहेगी
जब तक जीवित हिन्दुस्तान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े जब छोटे थे

सत्यदेवनारायण सिन्हा

लोकमान्य तिलक–

एक लड़का था। उसके पिताजी संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे। उनका पुत्र जब संस्कृत का एक श्लोक कंठस्थ कर लेता, तो उसे वह एक पैसा दिया करते थे। इस बालक को मूंगफली खाने का बेहद शौक था। वह उन पैसों से मूंगफली खरीद कर खाया करता। उसके पिताजी कभी-कभी अधिक मूंगफली खाने से उसे मना करते थे।

एक दिन स्कूल के कमरे में चारों ओर मूंगफली के छिलके फैले देख, गुरुजी ने लड़कों से पूछा—किसने छिलके गिराए हैं ?—किसी लड़के ने उत्तर नहीं दिया।

अन्त में मूंगफली खाने में प्रसिद्ध उस लड़के को बुलाकर गुरुजी ने आदेश दिया—इन छिलकों को बुहार कर बाहर फेंक आओ। लड़के ने दृढ़ता से कहा—मैंने कक्षा में मूंगफली नहीं खाई, इसलिए मैं इन्हें बुहार कर बाहर नहीं फेंकूंगा।

लड़के की इस मुंहजोरी पर गुरुजी क्रोधित हो उठे और उसे स्कूल से अलग कर दिया। उसने स्कूल से निकलना स्वीकार कर लिया परन्तु अन्याय के आगे झुकना नहीं। यही बालक आगे चलकर लोकमान्य तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसने न्याय के लिए अनेक कष्ट सहे और न्याय के लिए ही अपनी जान गंवाई। अंग्रेजों ने उन्हें जेल में बन्द कर रखा था, तो इन्होंने जेल में ही बड़ी अमूल्य पुस्तक लिखी जिसका नाम गीता रहस्य है। बड़े होने पर तुम अवश्य इस पुस्तक को पढ़ना, भूलना नहीं।

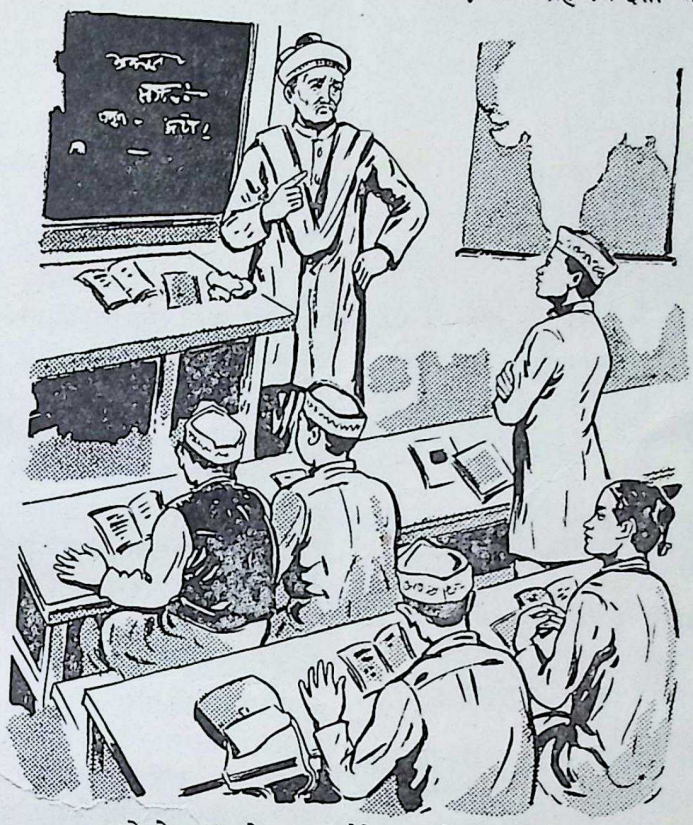

लड़के ने दृढ़ता से कहा—मैंने कक्षा में मूंगफली नहीं खाई, इसलिए मैं इन्हें बुहार कर बाहर नहीं फेंकूंगा।

मोतीलाल नेहरू–

बात उस समय की है जब भारत में अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेज अपने को भारत का मालिक समझते थे और घमंड में भारतीयों को वे हर जगह अपमानित किया करते थे। बात-बात में भद्दी गालियां निकालने से भी वे नहीं चूकते थे। अंग्रेजों के लड़के भी भारतीय लड़कों से इसी तरह पेश आते थे।

इलाहाबाद की सिविल लाइन्स में शरारती अंग्रेज लड़कों का एक गुट था, जिसका काम था किसी भारतीय बालक को देखते ही उसके साथ हो लेना और मौका पाकर जूते से उसके पैरों को कुचल देना। पैर कुचल जाने पर जब वह लड़का चीखने लगता, तो अंग्रेज लड़के माफ कीजिए कह देते और थोड़ी देर में ठहाका मार कर हँस पड़ते। एक दिन अंग्रेज लड़कों का यह दल इसी मौके की तलाश में खड़ा था कि सामने से पांच भारतीय बालकों का एक दल इन्हें आता दिखाई पड़ा। वे खुशी से झूम उठे और मौका पाकर एक भारतीय लड़के का पैर कुचल डाला। लड़का चीख उठा। तभी अंग्रेज लड़के ने 'माफ कीजिए' कहा और भारतीय लड़कों के दल के आगे बढ़ते ही ठहाका मार कर हँस पड़े।

भारतीय लड़कों के दल में एक ऐसा ताकतवर लड़का था, जो अंग्रेज लड़कों के इस व्यवहार से क्रोधित हो उठा। वह वापस लौटा और अंग्रेज लड़कों के दल के साथ चलता हुआ कुछ दूर तक गया। मौका पाकर इसने एक अंग्रेज लड़के को जोर से ठोकर मारी। अंग्रेज लड़का उलट कर औंधे मुंह गिरा। तभी इसने माफ कीजिए कहा और आगे बढ़ गया। अंग्रेज लड़कों के लिए यह एक नई बात हो गई थी। वे उस भारतीय बालक का पीछा करने को तेजी से लपके। उस ताकतवर भारतीय लड़के ने रुक कर अपनी कमीज की बाहें चढ़ा लीं और उनके आने की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। अंग्रेज लड़के यह देखकर दुम दबाकर भाग गए।

भारतीय बालकों के दल का यह ताकतवर लड़का, श्री मोतीलाल नेहरू थे। बचपन से ही इनकी प्रवृत्ति विरोधियों को पछाड़ने और निडर होकर रहने की थी। इन्हीं मोतीलाल नेहरू के पुत्र हैं हमारे भारत के प्रधान मंत्री और बच्चों के चाचा, श्री जवाहर लाल नेहरू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मेरी खिल्ली उड़ी

वृन्दावनलाल वर्मा

जब थक गया तब बन्दूक जांघों पर रख ली। सोचा कि जैसे ही तेंदुआ आया तुरन्त जांघों पर बन्दूक उठाकर दाग दूंगा। तेंदुआ बचकर नहीं जा सकेगा।

झांसी ज़िले की मोठ तहसील की पश्चिमी सीमा पर कई पहाड़ियां हैं। इनमें तेंदुए रहते हैं। शिकारियों को कभी मिल जाते हैं, कभी शिकारी भटक कर यों ही लौट जाते हैं।

बहुत समय हुआ मैं एक छुट्टी में वहां तेंदुए के शिकार के लिए गया। संध्या के कुछ पहले एक ओट वाली चट्टान पर छिपकर जा बैठा। गांव के गड़रिए तेंदुओं के उपद्रवों के मारे परेशान रहा करते थे। उन्होंने और गांववालों ने मेरा स्वागत किया, क्योंकि वे सब मुझे बहुत पहले से जानते थे। तेंदुओं को अपनी बैठक के पास आकृष्ट करने के लिए गांव के एक गड़रिए ने बकरा दिया। जहां मैं छिपकर बैठा था, उसके नीचे बकरा एक खूंटे से बांध दिया गया। बांधने के पहले मैंने गड़रिए से कहा था,

—रस्सी मजबूत है न ?

—हां, मजबूत है—गड़रिया ने भरोसा दिया।

गड़रिया मेरे स्थान से कुछ दूर सुरक्षित स्थान में जा बैठा। मचान पर बैठने के पहले मैंने गांववालों को और उस गड़रिया को शिकार के अपने कुछ करिश्मे सुनाए, कैसे मैंने तेंदुए, जंगली सूअर इत्यादि मारे थे। अपनी बन्दूक की सराहना भी मैंने उनसे की थी, कुछ शेखी के साथ।

सांझ होने के बाद बाट जोहते-जोहते मेरा जी उकताने लगा। चारों तरफ सन्नाटा छा गया, केवल बकरे का मिमियाना निकट और दूर से गांव से आनेवाली अस्पष्ट आवाजें सुनाई पड़ती थीं। गांव उस जगह से दूर था।

बैठे-बैठे नौ बजने को हुए। रात अंधेरी थी। तारे चमक रहे थे, परन्तु धरती पर बड़े-बड़े से धब्बों के सिवाय और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता था। केवल बकरा बहुत निकट होने के कारण साफ़-साफ़ नज़र आ रहा था।

मैं बन्दूक में कारतूस भर कर घोड़े चढ़ाए हाथ में लिए रहा। जब थक गया तब बन्दूक जांघों पर रख ली। सोचा कि जैसे ही तेंदुआ आया तुरन्त जांघों पर बन्दूक उठाकर दाग दूंगा —— तेंदुआ बचकर नहीं जा सकेगा।

लेकिन हुआ कुछ और। बड़े सपाटे के साथ तेंदुआ आया। तड़ाक से उसने बकरे पर धावा मारा। रस्सी टूट गई। तेंदुआ बकरे को लेकर गायब हो गया! जब तक मैं जांघों पर से बन्दूक उठाकर निशाना बांधू, तेन्दुए ने वह सब बिजली की कौंध की तरह कर डाला। मैं बन्दूक नहीं चला पाया। जब तेंदुआ गायब हो गया तब मैंने बन्दूक चलाई, पर उससे होता ही क्या था? बिल्कुल खाली गई।

थोड़ी देर बाद मैं अपने छिपाव के स्थान से उतरा। नीचे टूटी रस्सी का टुकड़ा खूंटे से बंधा था, बस। वहां और कुछ न था। मैं टार्च लिए था। इधर-उधर रोशनी डाली। न तेन्दुए का पता और न बकरे का! मुझे शरम आई, पर कर क्या सकता था? दूर बैठे गड़रिए को बुलाया। वह हर्ष मग्न था, शायद तेंदुआ मारा गया। पास आने पर उसने देखा कि टूटी रस्सी के टुकड़े के सिवाय वहां कुछ और है ही नहीं, तब निराश हुआ। हम दोनों गांव पहुंचे। कुछ गांव वाले एक मकान के सामने दरी बिछाए लालटैन रखे बैठे थे। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। देखा कि हम खाली हाथ लौटे हैं, तो हँसे।

एक ने फब्ती कसी——बाबू साब, तेंदुआ बड़ा चालाक जानवर होता है, बड़े-बड़े शिकारियों को धोखा दे जाता है।

मतलब, मैं किस गिनती में हूं।

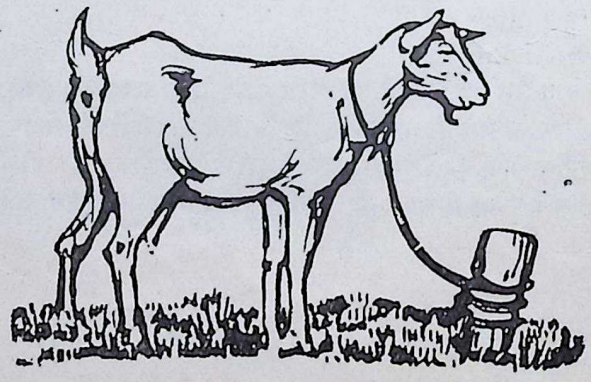

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे ने एक और विकट व्यंग किया--क्योंजी, एक अंग्रेज जब यहां शिकार खेलने आया था, वह तो तेंदुए को देखकर इतना डर गया था कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। उसने तो बन्दूक ही नहीं चला पाई थी! आपने बन्दूक तो चलाई।

मुझे भी उन लोगों की हँसी में अपनी हँसी मिलानी पड़ी। तय किया कि किसी अगली छुट्टी में आज की गलती का प्रायश्चित्त करूंगा। तभी शायद इस खिल्ली का जवाब दे सकूं।

और, कुछ समय उपरान्त एक छुट्टी में मैं फिर उस गांव की तरफ पहुंचा। मेरे साथ मेरा एक शिकारी साथी भी था। पहाड़ी के दाएं से मैं गांव की तरफ़ बढ़ा और बाएं से पहाड़ी को घेर कर मैंने अपने साथी को भेजा। सोचा कि पहाड़ी पर तेंदुआ कहीं न कहीं आ बैठा होगा। सांझ होने में कुछ देर थी। गांव के ढोर--गाय-बैल, भेड़-बकरे चरकर लौटने को थे। उनको भांपने, और मौका मिल जाए तो एकाध पर चढ़ बैठने की ताक में, तेंदुआ अपनी मांद से बाहर निकल आता है। आशा थी कि दिखलाई पड़ जाए तो उसी जगह कहीं मचान बांध कर बैठ जाएंगे और मचान के नीचे बकरा बांध लेंगे, और डट कर बैठे रहेंगे चाहे पूरी रात ताकते-ताकते बीत जाए।

मैं गांव की तरफ जा रहा था। ढोर मेरे आगे-आगे चल रहे थे। उनके और मेरे बीच में कोई सौ गज का फ़ासला होगा।

पहाड़ी की लगभग बीस फुट की ऊंचाई की एक चट्टान पर मुझे तेंदुए का शक हुआ। गांव के लिए रास्ता उस चट्टान के ठीक नीचे से था। मैंने कदम बहुत धीमे कर दिए, बन्दूक संभाली और पैनी निगाहों उस चट्टान की ओर बढ़ा। जब दस-बारह डग पर था तब साफ़ देखा कि एक बड़ा तेंदुआ गांव की दिशा में जाते हुए ढोरों को छिपे ढंग से ताक रहा है। अच्छा! तो यह वही महाशय हैं जिन्होंने उस रात बकरे को उड़ा दिया था और मुझे शर्मिन्दा कराया था। तेंदुए को मेरी आहट बिल्कुल नहीं मिली। मैं उस चट्टान के ठीक नीचे कुछ क्षणों के बाद जा पहुंचा। बन्दूक सीधी की। निशाना बांधा और मैंने तेंदुए को ललकारा। यह मेरी मूर्खता थी। खैर, उस समय मेरे जोश ने यही करवाया। तेंदुए ने पलटकर एकदम मेरी तरफ देखा। परन्तु तब तक मेरी गोली चल चुकी थी। तेंदुआ उचट कर पीछे की तरफ लौट गया। यदि वह कूद कर मेरे ऊपर आता तो मेरे सिर और शरीर के चिथड़े उड़ जाते। इसीलिए कहता हूं कि मैंने मूर्खता की।

मैं गांव चला गया वह मेरा साथी शिकारी मिल गया। रात हो गई। मैं अपने भीतर फूला जा रहा था--अब तो गांव के ये लोग मेरी दिल्लगी नहीं उड़ाएंगे।

दूसरे दिन सवेरा होते ही हम दोनों और गांव के बहुत से लोग इस स्थान पर पहुंचे जहां मैंने तेंदुए पर गोली चलाई थी। थोड़ी ही देर में तेंदुए के खून की धार चट्टान के ऊपर दिखलाई पड़ी। फिर नीचे भी वैसी ही धार के निशान मिले। कोई सन्देह नहीं कि तेंदुआ गोली खाने पर मरा नहीं था, केवल घायल हुआ था। रात में पहाड़ी के नीचे एक पोखर पर पानी पीने के लिए पहुंचा, फिर अपनी मांद में गया। हम लोग बन्दूक साधे उसकी मांद में भी घंसे। वहां नहीं मिला। फिर पहाड़ी पर चढ़े। तेंदुए की लाश पहाड़ी की कुछ ऊंची चढ़ाई पर एक झाड़ी में मिली।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गोली का वार होने के बाद तेंदुए में इतनी ताकत जरूर रही होगी कि वह मुझ पर कूद सकता था। मैं ईश्वर की कृपा से ही बचा।

मैंने गांव वालों को उस रात की दिल्लगी का जवाब दिया, परन्तु उन्होंने भोलेपन की ओट में बात छिपाली।

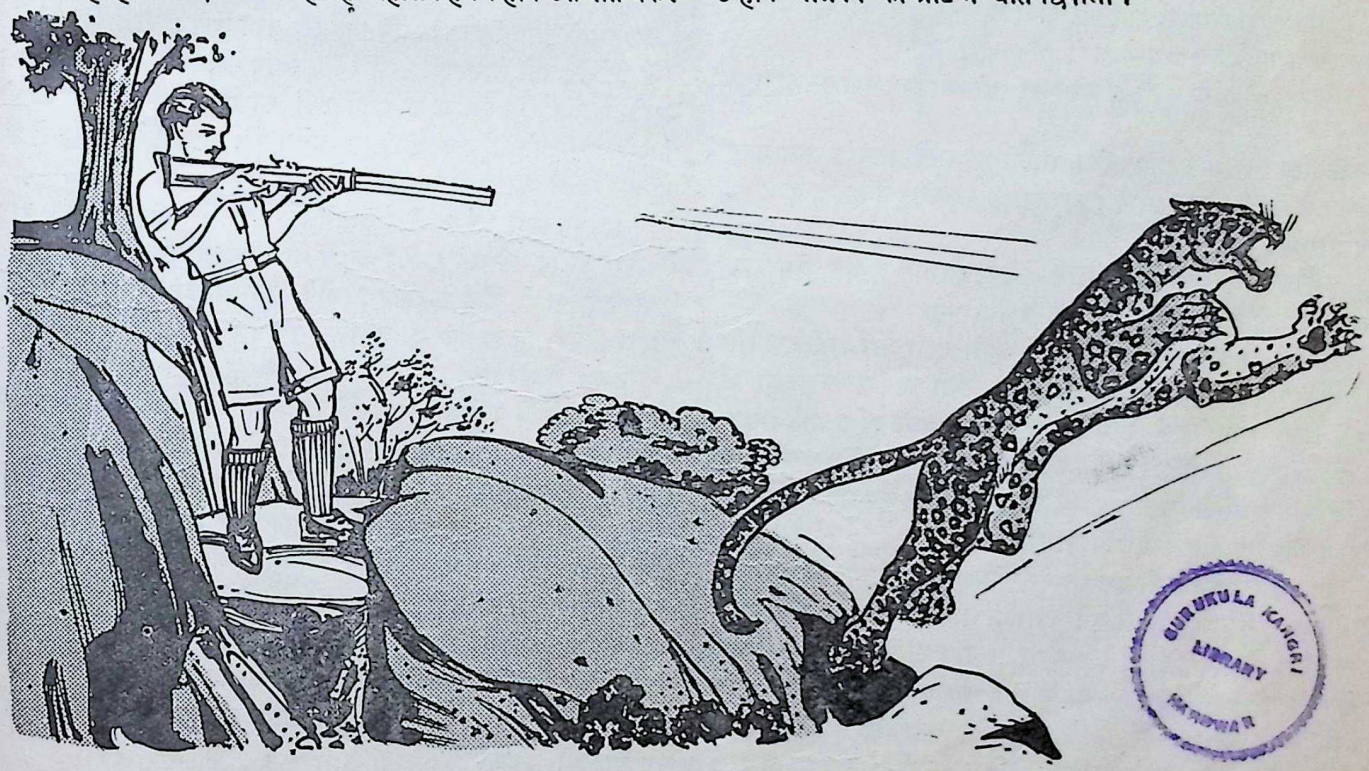

बन्दूक सीधी की। निशाना बांधा और मैंने तेंदुए को ललकारा।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अमर शहीद

मन्मथनाथ गुप्त

ब्रिगेडियर उस्मान— जब कश्मीर पर हमला हुआ, उस समय भारत के नौनिहालों ने जो वीरता दिखाई वह अपूर्व थी। ब्रिगेडियर उस्मान उन्हीं वीरों में से एक थे, जो आखिरी दम तक अपना कर्तव्य करते हुए शहीद हो गए। वे भारतीय पहले थे, मुसलमान बाद में।

एक उच्च पदाधिकारी के कथनानुसार वह इस प्रकार वीर गति को प्राप्त हुए —

तीन दिन हुए दुश्मन ने पाकिस्तान की चार बटालियनों के साथ झानगढ़ पर हमला किया। इसमें लड़ाई के नए-नए हथियारों का प्रयोग किया गया था। अपने वीरोचित स्वभाव के अनुसार ब्रिगेडियर उस्मान अपनी फौज के सब से सामनेवाले मोर्चे पर अपने सिपाहियों के साथ बातचीत करने और उन्हें तसल्ली देने पहुंचे। सिपाही वहां पर अधिक संख्या में मारे जा रहे थे। एक विशेष स्थान पर दुश्मन के गोले बराबर गिर रहे थे। जिस समय ब्रिगेडियर उनसे खड़े-खड़े बातचीत कर रहे थे, उसी समय दुश्मन के एक गोले से उनकी और सात सिपाहियों की मृत्यु हो गई।

ब्रिगेडियर उस्मान के आखिरी शब्द थे— मैं तो जा रहा हूं, पर ध्यान रखना झानगढ़ दुश्मन के हाथों में न जाने पाए।

और शत्रु के बहुत कोशिश करने पर भी झानगढ़ नहीं ही जीता जा सका।

ब्रिगेडियर उस्मान अविवाहित, शाकाहारी और सिगरेट तथा शराब न पीनेवाले संयमी वीर पुरुष थे। भारतवासी इस वीर को हमेशा इज्जत के साथ याद करेंगे।

शहीद मकबूल शेरवानी—यह कश्मीर के एक देश भक्त युवक थे। उन्हें साम्प्रदायिकता से सख्त चिढ़ थी।

कश्मीर पर आक्रमण से कुछ वर्ष पहले एक बार मुस्लिम लीग के नेता मिस्टर जिन्ना ने कश्मीर का दौरा किया था। वे बारामूला भी गए थे। बड़े समारोह के साथ उनका भाषण हुआ। जिन्ना ने भाषण में साम्प्रदायिकता को उत्तेजित करनेवाली कई बातें कहीं। उन्होंने कहा था कि सब कश्मीरी मुसलमान एक हों क्योंकि उन सबका धर्म एक है और वे लोग एक ही खुदा पर विश्वास रखते हैं।

मकबूल शेरवानी भी उस सभा में आए थे। जिन्ना की इस बात को वे पचा नहीं सके। उनके जैसे विचारों वाला व्यक्ति इस प्रकार के साम्प्रदायिक विचारों को कैसे सह सकता था। उन्होंने तुरन्त ही उठकर विरोध किया। उन्होंने कहा—एकता और संगठन की बात उचित है, पर केवल एक गुट मुसलमानों की ही एकता की बात ठीक नहीं। कश्मीर की सारी जनता हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, सिख, ईसाई, जैनी, पारसी सभी संगठित हों। केवल मुसलमान ही क्यों?

जिन्ना इस पर अप्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा—हिन्दू तो काफिर हैं। वे मुसलमानों के जन्मजात शत्रु हैं।

मकबूल शेरवानी ने दृढ़ता के साथ विरोध किया। उनकी दृष्टि में तो मनुष्यमात्र एक समान थे। धर्मों का कोई अन्तर मनुष्यों के बीच खाई नहीं बन सकता था।

वह बोले— हिन्दू भी मनुष्य हैं और सब की तरह मुसलमानों के भाई हैं।

जिन्ना उनसे बहुत नाराज हो गए और तुरन्त सभा छोड़कर चले गए।

पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को जिन्ना के इस अपमान की बात याद थी। बारामूला को तहस-नहस करने के बाद शेरवानी को बांधकर आक्रमणकारी दल के सामने हाजिर किया गया। शेरवानी निडर खड़े रहे।

आक्रमणकारियों के नायक ने कड़क कर उन्हें सलाम करने की आज्ञा दी।

पर वीर शेरवानी डर और अत्याचार के सामने घुटने टेकने को तैयार नहीं थे। उन्होंने दृढ़ता से उत्तर दिया—मैं पूज्य गुरुजनों (बुजुर्गों) को छोड़ कर दूसरों के सामने सिर नहीं झुकाता।

नायक के साथ ही सारा दल उनका उत्तर सुनकर क्रोध से तमतमा उठा, फिर भी नायक ने काम निकालने के लिए शान्तिपूर्वक कहा—देखो, शेरवानी, कश्मीर पर हमारी विजय हो चुकी है, जल्दी ही श्रीनगर पर भी हमारा झण्डा लहराने लगेगा। इसलिए तुम्हारा हित इसी में है कि हमारे साथ मिलकर रहो। हमारी मदद करो।

पर शेरवानी ने स्पष्ट शब्दों में इनकार कर दिया। उनका कहना था कि कश्मीर पर आक्रमण करनेवालों का सामना करना और उनको मुंह तोड़ उत्तर देना हर कश्मीरी का कर्तव्य है। तुम्हारे जैसे डाकुओं की सहायता करके मैं कश्मीर का कलंक नहीं बनूंगा।

आक्रमणकारी क्रोध से तिलमिला उठे। वे चीख-चीखकर दण्ड देने का सुझाव देने लगे। कोई कहता था कि इसे जमीन में गड़वा कर कुत्तों से नुचवा दो, कोई कहता था कोड़े मार-मारकर प्राण ले लो और कुछ सूली पर लटका देने का सुझाव दे रहे थे।

नायक ने शेरवानी की ओर देखा, पर वह वीरों की तरह गर्व से गर्दन ताने खड़े थे। देशभक्ति में डूबे शेरवानी पर किसी भी प्रकार का भय प्रभाव नहीं डाल सकता था। नायक ने समझ लिया कि शेरवानी इस तरह झुकाया नहीं जा सकता। उसने आज्ञा दी कि शेरवानी को बाजार के बीच में खड़ा करके कोड़े लगाए जाएं और जूतियों से पीटा जाए। यदि इतने पर भी न माने तो गोली से उड़ा दिया जाए।

शेरवानी को रस्सियों से कसकर उनके पैरों में बेड़ी और हाथों में हथकड़ी डाल दी गई। जल्लादों ने उन्हें घसीटते हुए ले जाकर बाजार के चौराहे पर डाल दिया। फिर वे कोड़ों से उनका मांस उधेड़ने लगे।

सारी देह लहूलुहान हो गई। मांस उधड़ आया। शरीर ऐंठने लगा, पर शेरवानी अटल रहे।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी लक्ष्मी बाई

दीदी

रानी लक्ष्मी बाई भारत की उन वीरांगनाओं में से थीं जिनका नाम अपनी आन, शान और स्वाधीनता के लिए मर मिटने के कारण इतिहास में अमर रहेगा। सन् ५७ का गदर वास्तव में भारत का स्वतन्त्रता युद्ध था। सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में—

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटि तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत, सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

महारानी उस युद्ध की प्राण और प्रेरणा थीं। शत्रु भी उसकी वीरता और गुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे। सर ह्युरोज ने रानी की प्रशंसा में अपनी डायरी में लिखा है—महारानी का उच्च कुल, आश्रित और सिपाहियों के प्रति उनकी असीम उदारता और कठिन से कठिन समय में भी अडिग धीरज, उनके इन गुणों ने हमारा एक अजेय प्रतिद्वन्द्वी बना दिया था। वह शत्रु दल की सब से बहादुर और सर्वश्रेष्ठ सेनानायिका थी।

अंग्रेजों ने तो इस विलक्षण बुद्धि वाली व्यवहार कुशल चतुर नारी की योग्यता पर अविश्वास कर उससे राजकाज का कार्य अपने अधिकार में ले लिया था, पर इस वीरांगना ने अपनी सूझ-बूझ, कूट राजनीति और युद्ध-कौशल तथा अद्भुत सेना संचालन से अंग्रेज़ों के दांत खट्टे कर दिए थे। पार्लमेंट के मध्य श्री टोरस ने उसके विषय में लिखा है कि वह फ्रांस की जोन ऑफ आर्क के समान वीर और देश भक्त थी।

PANTHER
the popular
A fine Pen of the Panther range. The quality nib, hold-tight clip makes it the pen for the million. It comes in pleasing shades and models and is priced to suit all.
AVAILABLE IN REGULAR SELF-FILLING.
Manufactured by
ZEBRA INSTRUMENTS (INDIA)
AGRA ROAD,
PUNJAB AGENTS
GURBUX SINGH & CO
206, MODEL TOWN
LUDHIANA
DELHI AGENTS
GENERAL PEN AGENCIES
4 CLUB ROAD
DELHI-8

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये बेजोड़ मजाक

नवीन दवे

बात सिर्फ इतनी है :—

ब्रिटेन के प्रख्यात साहित्यकार जार्ज बनार्ड शा के जीवन में मनोरंजक घटनाओं की कमी नहीं। एक बार उनके मकान पर एक मित्र ने आवाज दी। शा काम में डूबे हुए थे। इस कारण खिड़की से झांककर उन्होंने नीचे खड़े हुए मित्र से पूछा—क्या काम है ?

मित्र ने दिल्लगी करने की दृष्टि से कहा—जल्दी नीचे आइए, एक बहुत आवश्यक काम है।

शा नीचे आए तो मित्र ने कहा—बात सिर्फ इतनी है कि आपका स्वास्थ्य तो अच्छा है न ?

शा को मित्र पर क्रोध तो आया, किन्तु वह बोले—आओ, ऊपर चलें, वहीं मैं तुम्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में बताऊंगा।

जब मित्र सीढ़ियां चढ़कर कमरे के द्वार पर आए तो शा ने कहा—बात सिर्फ इतनी है कि मेरे स्वास्थ्य के हितचिन्तकों के कारण मेरे सर में दर्द होने लगा है। अब आप जा सकते हैं।

* * *

सिर कैसे मुंडा :—

एक बार स्वामी विवेकानन्द के यहां बनारस से कोई साधु आया। स्वामी जी उस समय भोजन कर रहे थे। अतः साधु तब तक बैठा रहा जब तक स्वामीजी भोजन न कर चुके। साधु ने इसमें अपना अपमान समझा, पर उसने सोचा कि वह स्वामीजी से कोई ऐसा प्रश्न करेगा कि वे निरुत्तर हो जाएंगे। जब स्वामीजी आए तो उसने प्रश्न किया—साधुओं और ज्ञानियों को धातु-स्पर्श न करना चाहिए, फिर आपने धातु के बर्तन में भोजन क्यों किया।

स्वामीजी भी कब चूकने वाले थे, उन्होंने साधु के मुंडे हुए सिर पर हाथ फेरकर कहा—शायद यह ओले गिरने से साफ हो गया होगा।

* * *

बादल पहले गरजते हैं, फिर बरसते हैं:—

न्यूटन बहुत गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे। किन्तु मीठी चुटकियां लेने में वे बड़े कुशल थे। उनकी पत्नी स्वभाव से बड़ी झगड़ालू थीं। छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ कर विवाद कर बैठती थीं।

एक दिन किसी विषय में पति-पत्नी में कहा-सुनी हो गई। न्यूटन चुपचाप आकर एक स्थान पर बैठ गए और पत्नी जोर-जोर से चिल्लाती रही। न्यूटन तमाशा समझ कर आनन्द से देखने लगे। पत्नी को पति पर और अधिक क्रोध आया तथा उसने पानी से भरा घड़ा न्यूटन के सिर पर उड़ेल दिया।

न्यूटन ने हँसकर सिर्फ इतना ही कहा—मुझे मालूम है, पहले बादल गरजते हैं, फिर बरसते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानाडे की उदारता

गोविन्द झा

१८९७ ई० की बात है। उस समय बम्बई में प्लेग काफी फैला था। उसमें रानाडे के घर के कई नौकरों को भी प्लेग हो गया। रानाडे दिन-रात काम में लगे रहते थे। घर पर ठीक से उनकी देखभाल नहीं हो सकती थी। इसलिए उन्होंने नौकरों को अस्पताल भेज दिया। काम में लगे रहने के अलावा भी दिन में एक बार वे अवश्य उन लोगों को देखने अस्पताल जाया करते थे। अगर न जा सकते तो किसी न किसी से पूछकर ही दम लेते थे। जब कभी पता चलता कि उनमें से कोई भी अधिक बीमार है, तो उनकी आंखों में आंसू छलछला आते। उनकी पत्नी रमाबाई यह देख कर डरने लगी भय होने लगा, कहीं वे भी न बीमार पड़ जाएं। कभी-कभी तो रमाबाई टालने के बहाने कहती—आज तो कोई पता नहीं लगा उन लोगों के बारे में।

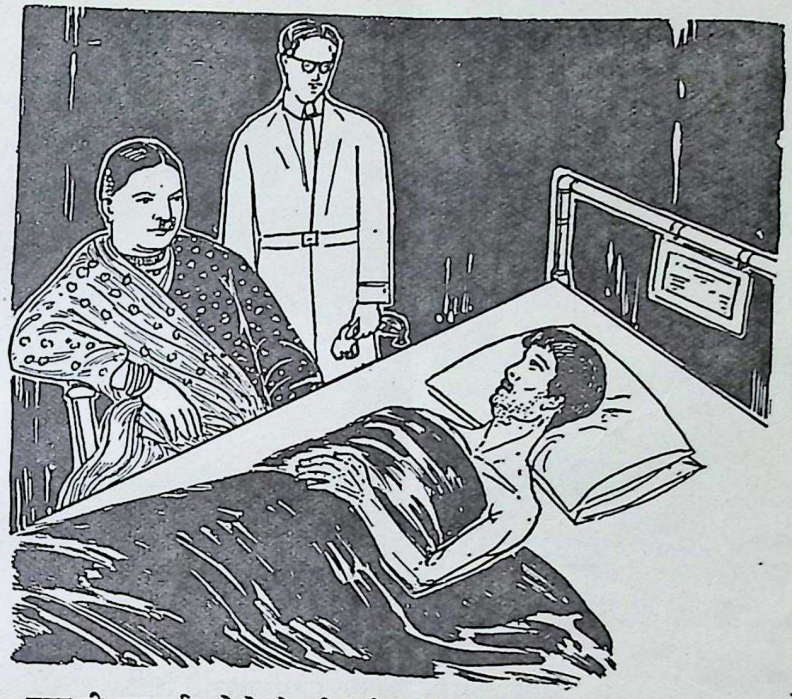

सुबह ही रमाबाई उसे देखने गई। धीरज बंधाती हुई कहने लगी—घबराना नहीं। तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे

इतना सुनते ही वे खाना छोड़ देते और नौकरों को देखने के लिए चल देते।

बीमार नौकरों में एक का नाम काशीनाथ था। वह उनकी सौतेली मां के गांव का था। रानाडे के प्रति उसके मन में बड़ा ही आदर था। पढ़ा-लिखा तो साधारण ही था, परन्तु था वह बड़ा परिश्रमी। रानाडे भी उसे बहुत मानते थे। उसकी दशा सब से अधिक खराब होती जा रही थी। सुबह ही रमाबाई उसे देखने गई। धीरज बंधाती हुई कहने लगी—घबराना नहीं। तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे। आज शाम को रानाडे भी तुझे देखने आ रहे हैं।—काशीनाथ खुशी के मारे सब दुःख भूल गया। सामने डाक्टर को देख कर कहने लगा—देखा, मेरे मालिक की महानता को! सुबह अपनी स्त्री को हम लोगों को देखने के लिए भेजा है। मैं उनका नौकर हूं, एक छोटा-सा नौकर। देखते हो कितना प्रेम है उनको हम लोगों पर। शाम को वे खुद आ रहे हैं। आना ही चाहिए। मेरे बिना उनका काम नहीं चलता होगा। मैं क्या नहीं हूं। मैं उनका नौकर हूं, रीडर हूं, प्राइवेट सेक्रेटरी हूं। जानते हो न जस्टिस रानाडे को? तो ठीक है, मुझे जल्दी अच्छा कर दो। मैं उनके लिए काम करूंगा। मैं जा रहा हूं।

कहते-कहते वह उठकर खड़ा हो गया। डाक्टर के कहने पर रमाबाई चली गई। अस्पताल के नौकरों ने उसे लिटा दिया। जिस समय रमाबाई घर लौटी उस समय रानाडे भोजन कर रहे थे। उसकी दशा सुनते ही उनकी आंखों में आंसू भर आए। खाना छोड़कर उठ गए। कुछ देर के बाद ही नौकर के मरने की खबर आई। उस समय रानाडे रो पड़े। उन्होंने कहा—काशीनाथ की मृत्यु से हमारा बड़ा नुकसान

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल पाण्डे

माणिक पण्डित

१८५७ की आजादी की लड़ाई मंगल पांडे ने शुरू की। वह खूब ऊंचा मोटा ताजा और ब्रिटिश सरकार का एक वफादार सैनिक था। मंगल ने सुना कि नई कारतूसों को गाय और सूअर की चरबी में डुबोया गया है, और सिपाहियों से उन कारतूसों का उपयोग जबरदस्ती कराया जा रहा है। तब उसे बहुत दुख हुआ। उसका स्वाभिमान भड़क उठा। पलटन में हिन्दू-मुसलमान जितने भी सैनिक थे, उन्होंने इन कारतूसों को छूने से इनकार करने का फैसला कर लिया।

इधर जनता अंग्रेज के अत्याचार से भी तंग आ गई थी। सेना में भी जब असन्तोष छा गया तो आग को भड़कते देर नहीं लगी।

धीरे-धीरे एक पलटन से दूसरी पलटन को कारतूसों को इस्तेमाल में न लाने का संदेशा पहुंचा दिया गया, और अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करने की भावना पलटनों में जोर पकड़ने लगी। तब अंग्रेजी सेना ने कड़ाई से काम लिया। अपने ईमान और धर्म का नाश मंगल से न देखा गया। वह सबसे कहने लगा कि उन अपवित्र कारतूसों को कोई हाथ न लगाए।

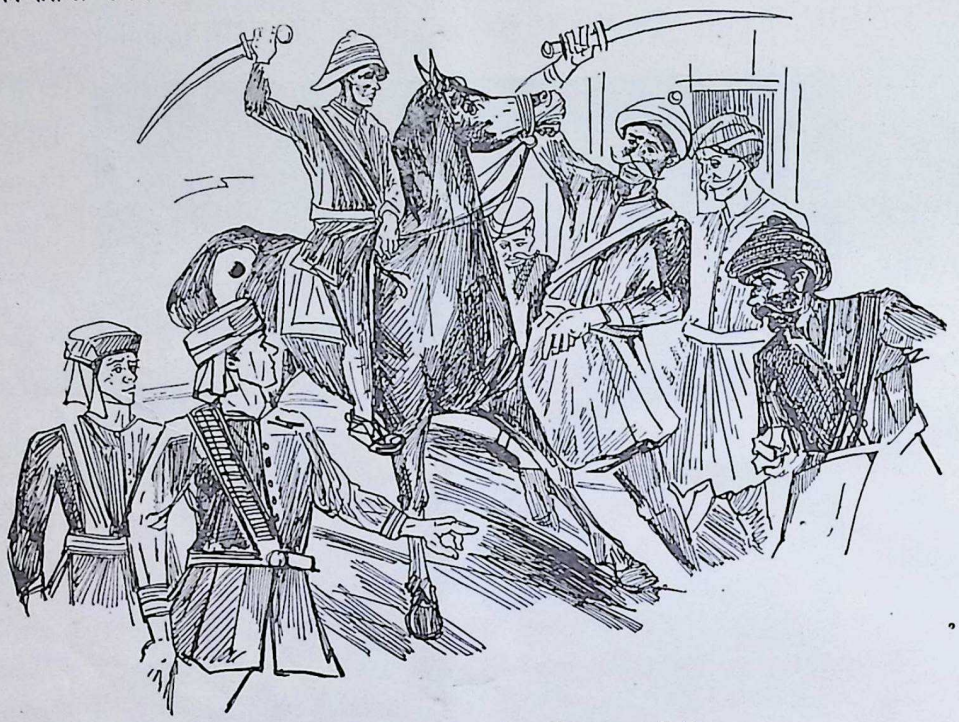

तलवार का जवाब मंगल ने तलवार से दिया

सेनानी बक को जब यह मालूम हुआ तो वह मंगल को पकड़ने घोड़े पर गया। उसने मंगल को पुकारा। तोप की आड़ से मंगल बोला। गुस्से में बक ने बन्दूक उठाई। अपने को बचाने के लिए मंगल ने बक के घोड़े को गोली से मार दिया। बक गिरा, पर उसने पिस्तौल से गोली चलाई। मंगल बच गया। जोश में दो अंग्रेज सिपाही मंगल पर तलवार लेकर टूट पड़े। तलवार का जवाब मंगल ने तलवार से दिया। मंगल की सेना के सारे सिपाही केवल तमाशा देख रहे थे। मंगल ने एक अफसर को जख्मी कर दिया तो शेख पल्टू ने उसका साफा पीछे से पकड़ लिया। मगर शेख पल्टू के साथ-ही साथ दूसरे अफसर को भी मंगल ने जख्मी कर दिया।

अंग्रेजी सेना के जनरल हेयर्स ने अपने बेटों की मदद से मंगल को किसी तरह पकड़ लिया। उसका खुदकशी का यत्न भी असफल रहा। ८ अप्रैल को सब सिपाहियों के सामने मंगल को फांसी पर चढ़ा दिया गया। मगर उसके मरने से लोगों का स्वाभिमान जागा। लोगों को चेतना मिली। और देश भर में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

ये अमर शहीद—(पृष्ठ १४ का शेषांश)

आक्रमणकारी कबायलियों ने चिल्लाकर कहा—अब भी समय है। अगर तुम हमें सहायता देना स्वीकार कर लो, तो जान बच सकती है। कहो—पाकिस्तान जिन्दाबाद!

शेरवानी कोड़ों की चोट से बेहाल हो गए थे। वे अचेत होते जा रहे थे, उसी हालत में उनके मुंह से क्षीण स्वर में सुनाई पड़ा—कश्मीर जिन्दाबाद!

कबायलियों की तीन बन्दूकें धांय-धांय गरज उठीं। शहीद शेरवानी ने इतना कष्ट सहा, प्राणों का बलिदान दिया, पर कश्मीर के विरुद्ध सहायता देने को क्षण भर के लिए भी तैयार नहीं हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्तूरबा

शान्ति भटनागर

दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में महिलाओं के भाग लेने की चर्चा उठी, लेकिन गांधीजी ने बा से कुछ नहीं कहा। तब एक दिन वह दुखी होकर बोलीं—तुम मुझ से सत्याग्रह में भाग लेने की चर्चा नहीं करते, इसका मुझे दुःख है। मुझ में ऐसी क्या कमी है जो मैं जेल नहीं जा सकती ? मैं हार कर छूट आऊं तो मुझे मत रखना। मेरे बच्चे सह सकें, तुम सब सह सको और अकेली मैं ही न सह सकूं, ऐसा तुम क्यों सोचते हो ? मुझे इस लड़ाई में शामिल होना ही होगा।

बा के इस साहस के सामने गांधीजी को झुकना पड़ा और उन्होंने उन्हें भी सत्याग्रह में शामिल होने की आज्ञा दे दी।

साबरमती आश्रम में एक बार गांधीजी ने एक अछूत परिवार को बसने की आज्ञा दे दी। आश्रम की अन्य स्त्रियों के साथ बा को भी यह काम पसन्द नहीं आया कि एक अछूत स्त्री रसोई में जाकर खाना बनाए। लेकिन पति को परमेश्वर मानने वाली हठीली बा गांधीजी के समझाने-बुझाने पर इसके लिए राजी हो गईं। गांधीजी ने जब एक अछूत कन्या लक्ष्मी को अपनी पुत्री घोषित कर के बा को एक अछूत की मां बना दिया तब भी उन्होंने कोई आपत्ति न की।

डर्बन में बापू के यहां जो मेहमान आते थे, उनकी खातिरदारी तो वह करते ही थे, उनका मूत्र तक उठाने में वह संकोच नहीं करते थे। रात को जिस कमरे में वह सोते थे, वहां पेशाब के लिए बर्तन रखा रहता था। उसे बापू सुबह उठा कर ले जाते थे। कभी-कभी बा को भी यह काम करना पड़ता था, लेकिन उन्हें यह काम करना अखरता था। एक बार किसी के मल-मूत्र का बर्तन उठाते हुए गांधीजी ने बा के मुख पर यह ग्लानि का भाव देखा तो उनमें कुछ कहा-सुनी हो गई और बात यहां तक बढ़ी कि गांधीजी ने क्रोध में आ उन्हें घर से बाहर निकाल दिया और द्वार बन्द कर लिया। लेकिन पतिव्रता बा आवेश में यह कैसे भूल जातीं, कि उनके पति की लाज तो उन्हीं के आंचल में बंधी है। उन्होंने धीरे-से द्वार खटखटाया और कहा—द्वार खोल दो। आप को तो नहीं, लेकिन मुझे तो इस बात की शर्म है कि लोग क्या कहेंगे।

और गांधीजी ने अपनी गलती महसूस करके दरवाजा खोल दिया।

देखने में बा बापू की एक छायामात्र थीं, लेकिन उनमें इतना आत्मिक बल था, कि उससे स्वयं बापू को शक्ति मिलती थी। साबरमती आश्रम में बा बापू के नहाने-धोने, खाने-पीने का प्रबन्ध करती थीं, अतिथियों का सत्कार और रोगियों की देखभाल करती थीं, अपने वस्त्रों के लिए सूत कातती थीं, लेकिन काम में इतनी लगी रहने पर भी पति से दो बातें करने का समय मिल सके, इस कारण रात को सोते समय बापू के सिर में बादाम का तेल मलने का काम उन्होंने अपने जिम्मे ले रखा था। उन्हें इतना अथक परिश्रम करते देख कर कभी-कभी गांधीजी चिन्तित हो उठते थे, लेकिन बा मुस्करा कर उन्हें बेफिक्र कर देती थीं।

बापू ने हिन्दी के नवजीवन में एक बार लिखा था—वह मेरी मां, सेविका, रसोइया, बोतल धोने वाली सब कुछ है—हमने आपस में यह समझौता कर लिया है, कि सभी सम्मान मुझे मिलें और सभी मेहनत उसे करनी पड़े।

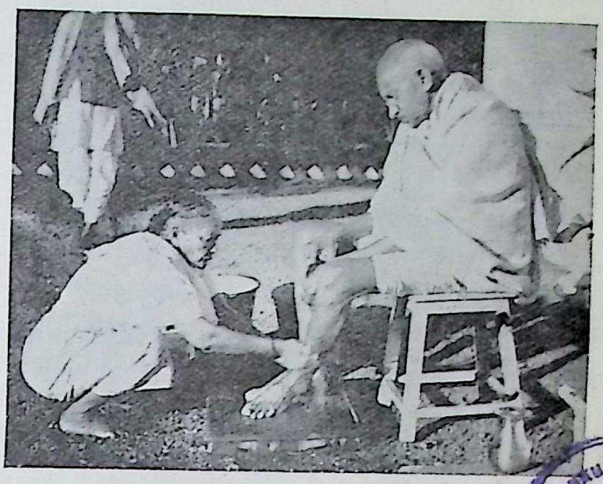

पति की सेवा में तत्पर

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

बापू के इन विनोद भरे शब्दों में हमें बा के जीवन की सच्ची झांकी मिल जाती है।

यह उनकी इसी सेवा और प्रेम का नतीजा था, कि बापू स्वयं बा से डरते थे। एक बार जब खेड़ा सत्याग्रह के सिलसिले में बापू सख्त बीमार पड़ गए, तब डाक्टरों की दवा और इन्जेक्शन ही नहीं, उन्होंने दूध तक लेने से इनकार कर दिया। क्योंकि जिस निर्दय तरीके से गाय, भैंस का दूध निकाला जाता है, उसे देख कर उन्होंने सारी उम्र दूध न पीने की प्रतिज्ञा कर ली थी। उनका जीवन खतरे में देख कर कस्तूर बा जरा कठोरता से बोलीं—परन्तु बकरी के दूध से आपको कोई एतराज नहीं हो सकता।

और उनके डर से बापू को बकरी का दूध पीना पड़ा। उसके बाद से वह सदा बकरी का दूध लेते रहे।

एक बार आश्रम में कुछ मेहमान आ गए। बा तभी भोजन निबटा कर और रसोई साफ कर के सोई थीं। बापू ने चुपके से बा के सहकारी रसोइये से भोजन तैयार करने को कहा और उसे आदेश दिया—सब काम तुम्हीं कर लेना, उसे मत जगाना। उसे तभी बुलाना जब जरूरत हो। अगर वह मुझ पर नहीं बिगड़ेंगी, तो तुम्हें इनाम दिया जाएगा।

शाम को प्रार्थना के बाद बा बगल में दोनों हाथ दबाए उनके सामने आ खड़ी हुईं और क्रोध में बोलीं—आपने मुझे जगाया क्यों नहीं ?

बापू ने क्षमा मांगते हुए कहा—बा, ऐसे मौकों पर मुझे तुम से डर लगता है।

यह सुन कर बा हंस पड़ीं—आप मुझसे डरते हैं ?

इन घटनाओं को पढ़ कर हमें लगता है, कि यदि बा जैसी पत्नी न होतीं, तो बापू का व्यक्तित्व शायद अधूरा ही रह जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजरत मोहम्मद साहब

जहूर बख्श

हजरत मुहम्मद साहब ने जिस जाति में जन्म लिया था, वह 'कुरैश' कहलाती थी। कुरैश जाति मक्का नगर और उसके आसपास के प्रदेश में बसती थी तथा सम्पूर्ण अरब में बहुत आदरणीय समझी जाती थी। इस जाति की स्त्रियां बहुधा बच्चा उत्पन्न होने के बाद, उसे पालने-पोसने के लिए मक्का नगर के बाहर रहनेवाली किसी स्त्री को सौंप देती थीं। इससे लाभ यह होता था कि बच्चा मक्का नगर की बुरी हवा से बचता और मरुभूमि की भली हवा मिलने से खूब तन्दुरुस्त हो जाता था। इस नियम के अनुसार माता अमीना ने भी अपने नन्हें-से मोहम्मद को हलीमा नामक स्त्री की गोद में डाल दिया था।

हलीमा बरीसद जाति की स्त्री थी। वह मोहम्मद को मक्का नगर से बाहर अपने निवास स्थान पर ले गई और उनको अपने पुत्र के समान बड़े प्यार से अपना दूध पिला-पिला कर पालने-पोसने लगी। मोहम्मद चार-पांच वर्ष तक हलीमा की गोद का, हलीमा की ममता का सुख उठाते रहे और खूब तन्दुरुस्त हो गए। जब मक्का नगर की बुरी हवा का कोई खटका न रहा, तब माता अमीना ने उनको अपने पास बुलवा लिया।

मोहम्मद को देख-देख कर माता अमीना बहुत प्रसन्न होती और उसे कहती—बेटा, तुम हलीमा की नेकियां हमेशा याद रखना। उसने तुम्हें अपना दूध पिलाया है और बड़ी-बड़ी तकलीफें उठाकर तुम्हारा लालन-पालन किया है। तुम उसे अपनी दाई मत समझना, सगी मां से भी ज्यादा समझना और कभी उसके आदर, सत्कार म किसी तरह की कमी न करना।

मोहम्मद ने माता अमीना की यह आज्ञा गांठ में बांध रखी थी। समय आने पर वे अरब की जनता को मुस्लिम धर्म का उपदेश करने लगे और बादशाहों के समान सम्मान पाने लगे, तब भी वह हलीमा को कभी नहीं भूले। उसको सदा माता के समान मानते थे, माता के समान ही उसका आदर करते और प्रसन्नता से उसकी सेवा के लिए तैयार रहते थे।

एक बार अरब में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। जनता भूख के मारे इधर-उधर भटकने लगी। बेचारी हलीमा भी इस विपत्ति से न बच सकी। वह घबराकर मोहम्मद साहब के पास पहुंची। उसे देखते ही मोहम्मद साहब उठकर खड़े हो गए। जल्दी में उनको चटाई न मिली, तो उन्होंने चट से सिर का साफा उतार कर धरती पर बिछाया और उसी पर हलीमा को बिठाया। फिर बड़े प्रेम से उसका हाथ अपनी छाती पर रख लिया।

मोहम्मद साहब की यह भक्ति देखकर हलीमा बहुत प्रसन्न हुई। वह बड़े प्रेम से उनको बार-बार आशीर्वाद देने लगी। इसके बाद बोली—बेटा, अकाल का हाल तुम से छिपा नहीं है। मेरी हालत भी बहुत खराब हो रही है। बताओ, मैं कहां जाऊं……क्या करूं?

मोहम्मद साहब ने उत्तर में कहा—अम्मीं, मेरे रहते तुम्हें फिक्र करने की क्या जरूरत है? मैं तो तुम्हारी खिदमत के लिए हमेशा तैयार रहता हूं। अल्लाह ने चाहा, तो अकाल का वक्त आसानी से कट जाएगा और तुम्हें कोई तकलीफ न होने पाएगी।

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

हाथकरघे के वस्त्र

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड,
शाहीबाग हाउस, विटेट रोड, बम्बई।

ALL INDIA HANDLOOM BOARD

DA-57/195

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ों का विनोद

नारायण सिंह

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी बड़े विनोदी हैं। जब मद्रास में हिन्दी पढ़ाया जाना अनिवार्य किया गया, तो उसका बहुत विरोध किया गया था। उस समय कुछ आन्दोलन करने वालों ने सत्याग्रह शुरू कर दिया था। मद्रास नगर के एक मोहल्ले में हिन्दी के प्रचार के विषय में एक सभा हो रही थी। उस में श्री राजगोपालाचारी भाषण दे रहे थे। इतने में एकाएक उन पर किसी ने पत्थर फेंका। पर उनको लगा नहीं और समीप ही गिर गया। राजाजी विनोदपूर्ण ढंग से कहने लगे--हमें तो अच्छी निशाने-बाजी करना भी नहीं आता, नहीं तो स्वराज्य कभी का समीप आ गया होता।

× × ×

भारतीय रजतपट के प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर बार-बार कानपुर में अपने नाटकों का प्रदर्शन करने आए। अन्तिम दिन नाटक के अन्त में पृथ्वीराज ने कहा--शीघ्र ही हम अपने दूसरे नाटक लेकर आपके सामने उपस्थित होंगे।

पीछे से किसी नवयुवक दर्शक ने चिल्लाकर कहा--जियो, बेटा!

पृथ्वीराज जाते-जाते रुक गए और मधुर मुस्कान के साथ बोले--आज इस बच्चे ने अंग्रेजी की इस कहावत को चरितार्थ कर दिया कि बच्चा ही मनुष्य का पिता होता है।

× × ×

प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अयोध्या में किसी भिखारी को यह कहते सुना कि-- बाबूजी की टोपी ऊंची रहे।

उन्होंने उसके हाथ में दुअन्नी रखकर सलाह दी--अगर तुम औरतों से भिक्षा चाहते हो, तो जब किसी स्त्री को जाते देखो, बोला करो--मेम साहब की जूती ऊंची रहे।

× × ×

पं० नहरू को विनोद करने की बड़ी आदत है।

कुछ वर्ष हुए श्रीमती देविका रानी और श्री पृथ्वीराज कपूर के प्रयत्नों से राजधानी में चित्रपट के सम्बन्ध में एक गोष्ठी हुई थी। वहीं पर चाय पार्टी में हँसते-हँसते नेहरू जी ने नर्गिस, दिलीपकुमार, आदि से कहा--मेरी लोकप्रियता आप लोगों से कम नहीं है, यदि देखना हो, तो बाहर चलो और देखो कि किसके पीछे अधिक लोग चलते हैं।

GURUKULA KANGRI LIBRARY Haridwar

पहेलियां

एस० कुमार नवीन

वाह सांई यह तेरा काम--बाहर हड्डी भीतर चाम!

छोटा-सा जवान बांकी कमान--मारे कमान गिर जाए जवान!

मोटा-पतला सबको भावे--दो मीठे का नाम धरावे!

मैं पक्षी, मेरा मीठा स्वर--उल्टा पढ़ो तो होता बन्दर!

तन के छोटे मन के हीन--बेसुर ताल बजावे बीन!

काले मुंह की छोटी नारी--उसके वश में दुनिया सारी!

चढ़े नाक पर पकड़े कान--कहो कौन है वह शैतान!

एक गांव में अचरज हुआ--आधा बगुला आधा सुआ!

एक सींग की गाय--जितना खिलाओ उतना खाय!

हरी डंडी लाल कमान--तोबा-तोबा करे पठान!

चार कबूतर चारों रंग--मुंह देखो तो एक ही रंग!

बीसों का सिर काट लिया--न मारा न खून हुआ!

एक नारी जब गिली खावे--जिस पर थूके वह मर जावे!

पवन चलत वह बढ़त है--जल पीवत मर जाए!

खेत में उपजे सब कोई खाए--घर में उपजे घर बह जाए!

गज भर कपड़ा बारह पाट--बन्द लगे हैं तीन सौ पैंसठ!

कहो वस्तु वह कौन है--काटे में बढ जाए!

कछुआ, बिच्छू, शकरकन्दी, पिक, मच्छर, कलम ऐनक, मूली, चक्की, लाल मिर्च, पान, नाखून, तोप, आग, फूट, वर्ष, मास, दिन, गट्ठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान का कठपुतली नाच

जिस प्रकार शहरों में सिनेमा, थियेटर आदि तमाशे लोग देखते हैं उसी प्रकार गांवों में कठपुतली का नाच लोकप्रिय है।

कठपुतली का नाच भारत में सभी जगह प्रचलित है। राजस्थान में यह कला एक लोक-कला के रूप में फली-फूली है। कठपुतलियों की वेशभूषा, उनका नाच, रंगमंच पर अदब-कायदा आदि में राजस्थान के प्राचीन लोक जीवन की छाप है और ऐतिहासिक महत्व है।

आजकल पुतली का नाच न केवल गांवों में ही, बल्कि बड़े-बड़े शहरों में भी खूब लोकप्रिय होता जा रहा है। इनकी कहानियों का आधार राजपूताने की वीर-गाथाएं हैं। अमरसिंह राठौर की कहानी भी उनमें से एक है।

अमरसिंह जोधपुर का राजकुमार था। वह बड़ा निडर, बहादुर और साथ ही साथ एक मस्त नौजवान था। अपनी बहादुरी से उसने सम्राट शाहजहां को प्रसन्न करके सेना में बहुत जल्दी एक उच्च पद प्राप्त कर लिया था।

इससे वजीर सलावत जंग को बहुत चिढ़ लगी और वह अमरसिंह को नीचा दिखाने की ताक में रहने लगा। वजीर ने अपने साथियों से मिलकर एक षड्यन्त्र रचा और एक दिन अमरसिंह को भरे दरबार में हाजिर होने का हुक्म भिजवाया। अमरसिंह को उसका यह ढंग अच्छा नहीं लगा। तो भी वह अपने अंग-रक्षकों के साथ दरबार में हाजिर हुआ। वजीर सलावत जंग ने अमरसिंह का मजाक उड़ाते हुए कुछ ऐसी ओछी बात कह दी कि वह अमरसिंह को चुभ गई। पर उस समय दरबारी अदब-कायदे का ख्याल करके वह चुप हो गया।

मन बहलाव के लिए दरबार में कई खेल तमाशे हुए। अन्त में राज-नर्तकी गौहर जान ने वीर रस पूर्ण एक राजस्थानी गीत गा कर सब का मनोरंजन किया। इस गीत की कड़ियों ने अमरसिंह को राजपूतों की अपनी आन पर मर-मिटने की बात याद दिला दी और फिर जब उसे दुष्ट वजीर ने अमरसिंह की शान के खिलाफ दुबारा कुछ कहा तो उसने अपनी तलवार से वजीर के दो टुकड़े कर दिए और फिर मुगल दर-बारियों पर टूट पड़ा और सबको मौत के घाट उतार दिया। बादशाह यह देख कर हैरान रह गया और अपनी जान बचाने के लिए वह महल के अन्दर चला गया। बाद में एक हिन्दू दरबारी आकर अमरसिंह को समझा-बुझा कर शान्त किया। जब इस मार-काट का समाचार पाकर मुगल सेना ने अमरसिंह को पकड़ने के लिए घेरा डाल दिया तो वह वीर राजपूत किले की छत पर से कूद कर घोड़े पर चढ़ कर उनकी पहुंच से दूर निकल गया।

✲

नन्हें-मुन्ने

(जो कल नव-निर्माण करेंगे)

रमेश पगला

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

नन्हें-मुन्ने बांधेंगे कल रेखा नए विधान की
भारत के निर्माण की, बापू के स्वप्न महान की,
नया वर्ष है, नई किरण से, फैले बेल बहार की,
नन्हें-मुन्ने बच्चों से आशा है नव निर्माण की,

आज हिन्दी-संस्कृति आधारित 'नन्हीं-मुन्नी' जान पर,
होगा भी उत्थान राष्ट्र का, बालक के निर्माण पर,
देखो बीज अंकुरित होकर ही खिलता इक फूल है,
उत्पत्ति से मन आनन्दित, फल से भूख विहीन है,
सिंचन पर ही आधारित, अंकुरण बीज का शेष है,
'नन्हें-मुन्ने' बच्चों का भी श्रेष्ठ अंकुरण श्रेष्ठ है,
कल का सुन्दर भाग्य राष्ट्र का उदय इन्हीं के भाल पर
बापू का सुन्दर सपना भी 'नन्हीं-मुन्नी' जान पर।

✲

मुझको तो अच्छी लगती है

देवेन्द्र मोहन नेहरू

अम्मा को अच्छी लगती है अपनी टूटी चप्पल
इसीलिए उसको पहने वे जातीं फिरतीं घर-घर।
दद्दा को अच्छे लगते हैं बिना बन्द के बूट,
इसीलिए वे ऐसे लगते जैसे कोई नया रंगरूट।
भाभी को अच्छा लगता है, सोडा, लेमन, जिंजर,
फिर भी वे दुबली-पतली हैं, जैसे अस्थि-पिंजर।
चाची को अच्छा लगता है फेस-पाउडर, तेल,
इसीलिए वे ऐसी लगतीं जैसे मरकना बैल।
बुआ को अच्छे लगते हैं अपने दोनों बच्चे,
बाकी चाहें जाएं भाड़ में काम उन्हें मतलब से।
दीदी को अच्छा लगता है दाल सेव व लइया,
लेकिन मुझको तो भाती है 'बाल-भारती' भइया!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

राजस्थान का कठपुतली नृत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

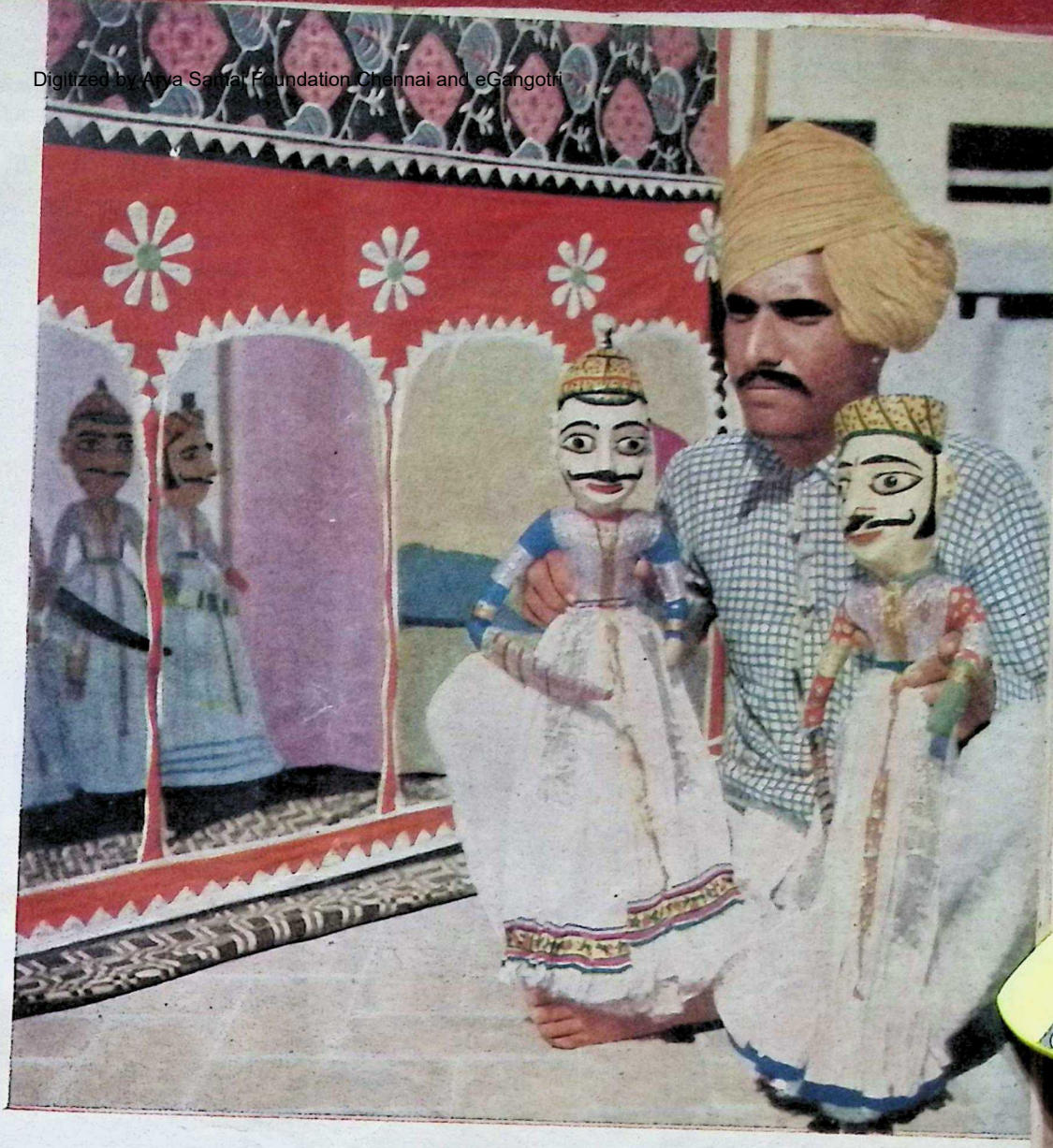

GURUKULA KANGRI
LIBRARY
HARIDWAR

मारवाड़ी पुतली वाला कठपुतलियों के नचाने में बहुत चतुर है। कठपुतलियां लकड़ी की बनी होती हैं और चमकते हुए रंग से रंगे होने के कारण उनके चेहरे बड़े आकर्षक दीखते हैं। पात्र के अनुकूल उनकी वेश-भूषा, पगड़ी, मुकुट, राजसी ठाट-बाट, जेवर आदि होते हैं। रंग-बिरंगी कनात का बना हुआ स्टेज का पर्दा होता है। कठपुतली वाला पर्दे के पीछे चला जाता है और उन्हें पीछे से नचाता है। जब कि उसकी पत्नी ढोलक पर गीत गाती है।

कठपुतलियों का नाच देख कर आश्चर्य होता है कि कठपुतली वाला किस प्रकार उनके हर अंग को मटकाता है। उसके पात्र हँसते, रोते, लड़ते, प्रेम करते भटकते, नाचते, इठलाते और बातचीत करते हैं।

यह बातें कठपुतली वाला याने सूत्रधार बड़ी निपुणता के साथ करता है। जनता की रुचि और सरकार का सहयोग अपने अनुकूल पाकर अब कठपुतली कला अधिक से अधिक लोक प्रिय हो रही है और इसमें नवीनता और आधुनिकता लाने की कोशिश की जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबार का एक दृश्य

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

राजदरबार में नर्तकी नाचकर मनोरंजन कर रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो महान महिलाएं

चन्द्रकिरण सोनरिक्सा

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

प्राइमरी कक्षा में मैंने एक कहावत पढ़ी थी—होनहार बिरवान के होत चीकने पात। गुरुआनी दीदी ने उसके अर्थ बताते समय कहा था—जिस प्रकार अच्छे फलदायक पौधे के पत्ते शुरू से ही सुडौल होते हैं, उसी प्रकार जो बालक-बालिका बड़े होकर महान बनते हैं, वे बचपन से ही अच्छे गुणों को अपनाते हैं।

फ्लोरेंस नाइटेंगेल—धनी घर में पली, सब प्रकार के सुखों व विलास सामग्री से भरपूर परिवार की सम्पन्न बालिका कुमारी फ्लोरेंस नाइटेंगेल का नाम आज ब्रिटेन में कौन नहीं जानता। इंग्लैंड ही नहीं विश्व भर में लोग इस दयामयी का स्मरण बड़े आदर व श्रद्धा से करते हैं।

फ्लोरेंस का जन्म सन् १८२० ई० में इटली के फ्लोरेंस नगर में हुआ था। महात्मा गौतम बुद्ध की भांति फ्लोरेंस के हृदय में भी जीव मात्र के प्रति बड़ी करुणा थी। वह भी किसी को रोगी अथवा दुखी देखकर व्याकुल हो उठती थीं।

उस समय इंग्लैंड के अस्पतालों में दाई तो होती थी परन्तु नर्स का काम पुरुष ही करते थे। नाइटेंगेल एक बार अस्पताल गई। उन्होंने देखा, पुरुष सेवक जल्दी ही रोगियों पर नाराज़ हो उठते थे। फ्लोरेंस को लगा, ममता की भावना नारी में अधिक होती है। मैं तो अवश्य ही नर्स या डाक्टर बनूंगी तथा रोगियों की सेवा करते समय कभी उन पर रुष्ट नहीं होऊंगी। और उसके बाद तो उनके जीवन की गति ही बदल गई, किसी रोगी को देखते ही वे उसकी सेवा में तत्पर हो जातीं।

एक बार वे किसी के विवाह भोज में गईं। दावत के पश्चात जब उनके माता-पिता वहां से चलने लगे तो देखा फ्लोरेंस का कहीं पता न था। भोज में भी किसी ने उसे नहीं देखा था। खोजते हुए जब लोग नौकरों के क्वार्टरों की ओर गए तो देखा फ्लोरेंस कोचवान की रोगी पत्नी की सेवा में लगी हुई थी। पीड़ितों की सेवा में ही फ्लोरेंस को सब से अधिक सुख मिलता था। अन्त में उसने अपने माता-पिता की अनुमति लेकर पेरिस जाकर धात्री विद्या सीखी। वह इंग्लैंड के अस्पताल में प्रधान धात्री बन कर आ गई। उस समय क्रीमिया का युद्ध चल रहा था। सैंकड़ों हज़ारों घायल सिपाहियों को सेवा-टहल, मरहम पट्टी ही नहीं उनक भोजन-वस्त्र तथा मनोरंजन सब के लिए चौबीसों घण्टे जो अथक परिश्रम लगातार वर्षों तक फ्लोरेंस ने किया उससे उस समय के बड़े-बड़े डाक्टर भी चकित रह गए थे। आज भी फ्लोरेंस नाइटेंगेल को 'ज्योति की देवी' और 'दया की देवी' के नाम से स्मरण किया जाता है। दया की देवी का थोड़ा परिचय तो आप लोगों को हो गया, अब एक वीरता की देवी से भी साक्षात्कार करिए।

गेतीआरा बेगम—आठवीं शताब्दी में ईरान देश के अन्तर्गत जाबिलिस्तान प्रान्त के शासक अलीमर्दा खां के यहां गेतीआरा का जन्म हुआ था। गेतीआरा बहुत ही बुद्धिमान व साहसी बालिका थी। साधारण बालिकाएं जिस आयु में गुड़िया खेलती हैं गेतीआरा उस आयु में पिता की प्रसिद्ध घोड़ी से उत्पन्न छोटे बछेड़े पर बैठ कर अकेले ही दूर-दूर खेतों व वनों की सैर को निकल जाती थी तथा अवसर पाते ही पिता के सैनिकों से तलवार व बरछी चलाना सिखाने की ज़िद करती थी। अन्त को इन साहसी कार्यों की ओर उसकी इतनी लगन व रुचि देख कर उसके पिता ने उसे युद्ध विद्या सिखाने की हामी भर ली। गेतीआरा ने इतनी शीघ्रता से यह सब कार्य सीखे कि बड़े-बड़े योद्धा तक दांतों तले उंगली दबाने लगे। बारह वर्ष की अवस्था में वह युद्धकला तथा घुड़सवारी में निपुण हो गई।

तेरह वर्ष की किशोरी राजकुमारी गेतीआरा एक वीर सैनिक बन गई थी, परन्तु नगर व प्रान्त की अन्य बालिकाओं को देख कर उसे बड़ी निराशा होती थी। जाबिलिस्तान की कोई भी स्त्री अथवा कन्या घुड़सवारी या युद्ध कौशल न जानती थी। गेतीआरा के मस्तिष्क में एक विचार आया, क्यों न यहां की बालिकाओं को सैनिक शिक्षा दी जाए? उसने ईरान की अबलाओं को सबला बनाने का निश्चय कर लिया। पिता से आज्ञा लेकर उसने एक बालिका विद्यालय खोला। वह इस सैनिक विद्यालय में सभी अविवाहित युवतियों व बालिकाओं को शिक्षा देने लगी।

कुमारी गेतीआरा ने कुछ ही दिनों में ४,००० युवतियों को युद्ध विद्या विशारद बना डाला। उसी समय उसके पिता की मृत्यु हो गई। गेतीआरा के कोई भाई न था और नियमानुसार पिता का सिंहासन उसे प्राप्त होना चाहिए था। परन्तु जाबिलिस्तान के अनेक वीर पुरुष गेतीआरा की वीरता से जलते थे। उन्होंने षड्यंत्र रचकर उसके चाचा को जाबिलिस्तान के राज-सिंहासन पर बैठा दिया। गेतीआरा की कोई सुनवाई नहीं हुई।

गेतीआरा के हृदय को बड़ी ठेस लगी। अपमान से उसका रक्त खौल उठा। हाथ में तलवार लेकर वह अपने सैनिक विद्यालय पहुंची और अपनी सभी स्त्री सैनिकों को एक ओजस्वी भाषण देकर बताया कि किस प्रकार उसके अधिकार का अपहरण किया जा रहा है, क्योंकि वह एक स्त्री है। युवती सेना में हलचल मच गई। सभी ने शपथ खाई, हम अपनी रानी के साथ हैं। और उसका अधिकार वापिस लेने में प्राणों की बाज़ी लगा देंगी।

अपूर्व दृश्य था। एक ओर जाबिलिस्तान के समस्त पुरुष राज-कर्मचारी व सैनिक और दूसरी ओर राजकुमारी गेतीआरा और उसकी ४,००० योद्धा महिलाएं। वीरांगना गेतीआरा घोड़े को एड़ लगा कर दुर्ग के नीचे पहुंच गई और कमन्द लगा कर दीवार पर चढ़ गई। किले से पुरुष सैनिक निकल आए और स्त्री-पुरुषों में भीषण युद्ध छिड़ गया। तीन घंटे युद्ध हुआ और स्त्रियों की भीषण मार से भयभीत होकर पुरुष सेना के पैर उखड़ गए। वे भाग खड़े हुए। गेतीआरा ने उन्हें दूर तक भगा कर दम लिया। विजय पताका स्त्रियों के हाथ रही।

गेतीआरा सिंहासन पर बैठी। स्त्रियों द्वारा उसके चाचा व अनेक पुरुष कर्मचारी उसके सामने दण्ड देने के लिए उपस्थित किए गए। परन्तु वीरता की पुतली गेतीआरा सिंहासन पर दया की पुतली बन गई। उसने सब को क्षमा कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आप रेल से यात्रा करते हैं

तो क्या आप अपने साथ आभूषण, जवाहरात, घड़ियां, रेशमी वस्त्र, शाल, कैमरे, वाद्य यन्त्र

अथवा

अन्य मूल्यवान वस्तुएं साथ ले जाते हैं?

आप यदि ऐसा करते हैं, तो हमारी सलाह है कि अगर एक पेटी में बन्द ऐसी वस्तुओं का मूल्य ३०० रु० से अधिक हो तो उसे हिफाजत से ढोने के लिए रेल प्रशासन को सौंपते समय आपको ये दो काम करने चाहिएं--

(१) बुकिंग के समय वस्तुओं का मूल्य घोषित कर दें, और

(२) साधारण माल भाड़े के अलावा घोषित मूल्य पर अतिरिक्त प्रतिशत रकम दें।

ऐसा न करने पर रेल प्रशासन ऐसी वस्तुओं के खोने, हानि अथवा क्षति के लिए उत्तरदायी न होगा। उपर्युक्त वस्तुएं तथा ऐसी ही अन्य विशेष वस्तुओं की सूची रेलवे टाइमटेबल और गाइड में दी हुई है।

पास के किसी भी रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर से सम्पूर्ण ब्योरा प्राप्त किया जा सकता है।

उत्तर रेलवे

GURUKUL KANGRI LIBRARY HARDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

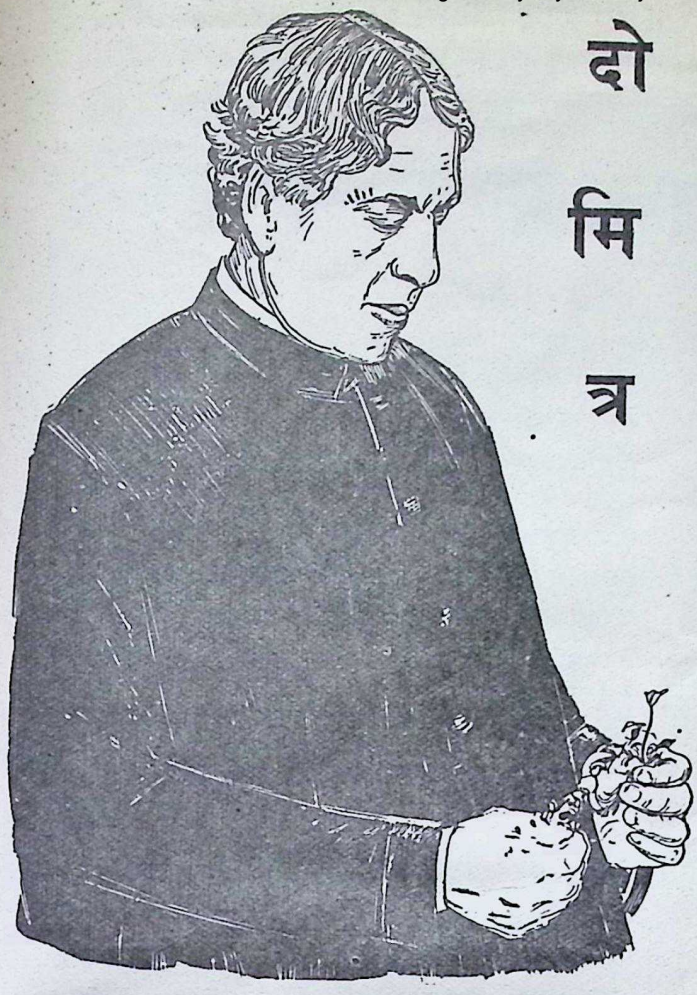

दो मित्र

सन् १८९६। डा० जगदीश को विलायत से लौटे अभी अधिक दिन नहीं हुए हैं।

एक दिन.....

वह घर से कहीं बाहर गए हुए थे। घर लौटे तो देखते क्या हैं कि मेज पर गेंदे के बड़े-बड़े फूलों का एक गुच्छा पड़ा हुआ है।

लेकिन गुच्छे के साथ वह कागज़ का टुकड़ा-सा क्या है ?

यह है एक चिट्ठी। उन्हीं के देश के एक महान कवि उनके आविष्कार के लिए उन्हें बधाई देने आए थे। जगदीश को घर पर न पाकर बेचारे लौट गए। हां, मेज पर चिट्ठी और फूल छोड़ते गए।

देखो चिट्ठी के नीचे पढ़ो। ज़रूर नाम लिखा होगा।

अरे, यह तो अपने रवि बाबू हैं। चिट्ठी के नीचे लिखा है ? र-वी-न्द्र-ना-थ ठा-कु-र।

जगदीश चन्द्र बसु और रवीन्द्रनाथ ठाकुर। दोनों में बड़ी गहरी मित्रता थी। एक वैज्ञानिक, दूसरा कवि। दोनों अपने-अपने क्षेत्र के महारथी। विज्ञान और कविता का पवित्र गठबंधन। भारतवर्ष के इतिहास में ऐसा कभी न हुआ था।

दोनों का ही प्रकृति और जीवन से निकट का सम्बन्ध था। दोनों अपने-अपने काम के बारे में एक-दूसरे से बात-चीत करते। प्रकृति तथा जीवन का जो पक्ष एक ने नहीं देखा था, वह दूसरा उसे दिखाता।

वैज्ञानिक कवि की वाणी से अनुप्रेरित होता, कवि वैज्ञानिक के विचारों से।

एक बार रवीन्द्रनाथ ने जगदीश चन्द्र को सियालदा से एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने लिखा कि कुछ दिनों के लिए यहां चले आओ, हमारे साथ कुछ दिन पद्मा नदी के तट पर रहो। उन दिनों रवीन्द्र बाबू सियालदा वाले अपने घर में रहते थे।

पत्र पढ़कर जगदीश चन्द्र मुस्कराए। उन्होंने उत्तर लिखा—मैं आने को तैयार हूं, अगर आप एक कहानी रोज लिखकर शाम को मुझे सुनाया करें।

रवीन्द्र बाबू ने उनकी बात मान ली। उन्होंने जो बहुत-सी छोटी-छोटी कहानियां लिखी हैं न, उनके पीछे इस वैज्ञानिक की प्रेरणा थी।

सन् १९०० में जगदीश को फिर इंगलैंड जाना पड़ा। इंगलैंड गए तो थे वह वैज्ञानिक खोज के सम्बन्ध में, लेकिन एक ऐसा काम भी कर आए जिसके लिए भारतीय साहित्य उनका सदा ऋणी रहेगा।

बंगाल के श्रेष्ठ साहित्यिकों में स्थान पाने पर भी अभी रवि बाबू का नाम विलायत में नहीं फैला था।

विलायत जाते समय जगदीश अपने साथ रवि बाबू की प्रसिद्ध कहानी "काबुली वाला" का अंग्रेज़ी अनुवाद साथ ले गए थे।

रूस के विख्यात क्रांतिकारी प्रिन्स क्रोपोटकिन उसे ज़माने के एक प्रसिद्ध समालोचक थे। रवि बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज तथा विकास शिक्षा केन्द्रों, बेसिक शिक्षण केन्द्रों, ग्राम-पंचायतों, पुस्तकालयों और गृहों में संग्रहणीय

बहु-प्रशंसित और पुरस्कृत

सचित्र लोक-कथा-माला

भारतीय

विन्ध्य-भूमि की लोक-कथाएं	१.२५
आंध्र की लोक-कथाएं	१.५०
राजस्थान की लोक-कथाएं	१.२५
ग्राम्य लोक-कथाएं	१.२५
काश्मीर की लोक-कथाएं (१)	१.२५
काश्मीर की लोक-कथाएं (२)	१.५०
ब्रज की लोक-कथाएं	१.५०
पंजाब की लोक-कथाएं	१.२५
बंगाल की लोक-कथाएं	१.५०
मालवा की लोक-कथाएं	१.५०
गढ़वाल की लोक-कथाएं	१.५०
हरियाना की लोक-कथाएं	१.२५
मनोरंजक लोक-कथाएं (१)	१.२५
मनोरंजक लोक-कथाएं (२)	१.२५
सौराष्ट्र की लोक-कथाएं	१.५०
हिमाचल की लोक-कथाएं	१.२५
उत्तर भारत की लोक-कथाएं (१)	१.२५
उत्तर भारत की लोक-कथाएं (२)	१.२५
उत्तर भारत की लोक-कथाएं (३)	१.२५
निमाड़ी की लोक-कथाएं (१)	१.२५
निमाड़ी की लोक-कथाएं (२)	१.२५
हमारी लोक-कथाएं (१)	१.५०
हमारी लोक-कथाएं (२)	१.५०
छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएं	१.५०
अवध की लोक-कथाएं (१)	१.२५
अवध की लोक-कथाएं (२)	१.२५
उज्जैन की लोक-कथाएं	१.२५
आदिवासियों की लोक-कथाएं	१.५०
राजनीतिक लोक-कथाएं	१.२५
सिंध की लोक-कथाएं	१.२५
महाराष्ट्र की लोक-कथाएं	१.५०
गुजरात की लोक-कथाएं	१.५०
आसाम की लोक-कथाएं	१.५०
तलंगाना की लोक-कथाएं	१.२५
विदर्भ-देश की लोक-कथाएं	१.२५
पूर्वी भारत की लोक-कथाएं	१.५०
भारतीय गौरव की लोक-कथाएं	१.५०
कूर्माचल की लोक-कथाएं	१.५०
कुमाऊं की लोक-कथाएं	१.५०
भोजपुर की लोक-कथाएं	१.२५
केरल की लोक-कथाएं	१.५०
तमिलनाड की लोक-कथाएं	१.२५
कर्नाटक की लोक-कथाएं	१.५०
बारामण्डल की लोक-कथाएं	१.२५
कुरु-प्रदेश की लोक-कथाएं	१.२५
जौनसार-बाबर की लोक-कथाएं	१.२५
बघेलखण्ड की लोक-कथाएं	१.२५
मिथिला की लोक-कथाएं	१.५०
मुलतानी लोक-कथाएं	१.५०
मध्यकालीन लोक-कथाएं	१.५०
वन्य-जातियों की लोक-कथाएं	१.५०
बिहार की लोक-कथाएं	१.५०
संथाल की लोक-कथाएं	१.५०
कृष्ण-सम्बन्धी लोक-कथाएं	१.२५
अलमोड़ा की लोक-कथाएं	१.५०
नैनीताल की लोक-कथाएं	१.२५
तराई-प्रदेश की लोक-कथाएं	१.२५
चम्पावत की लोक-कथाएं	१.५०
डोटी-प्रदेश की लोक-कथाएं	१.२५
पश्चिमी अवध की लोक-कथाएं (१)	१.२५
पश्चिमी अवध की लोक-कथाएं (२)	१.२५
फूलों की लोक-कथाएं	१.५०
प्रकृति की लोक-कथाएं	१.५०
पशु-पक्षी सम्बन्धी लोक-कथाएं	१.२५

विदेशीय

तिब्बत की लोक-कथाएं	१.५०
नेपाल की लोक-कथाएं	१.२५
फ्रांस की लोक-कथाएं	१.५०
रूस की लोक-कथाएं	१.२५
चीन की लोक-कथाएं	१.२५
अरब की लोक-कथाएं	१.२५
जर्मनी की लोक-कथाएं	१.२५
जापान की लोक-कथाएं	१.५०
फारस की लोक-कथाएं	१.२५

● सुन्दर मुद्रण ● बहुरंगा आकर्षक मुखपृष्ठ ● नयनाभिराम साजसज्जा

आत्माराम एण्ड संस,

मो० ऑफ० १४२९, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कहानी "काबुली वाला" उन्होंने भी पढ़ी। पढ़कर मुग्ध हो गए। बोले--ऐसी करुण कहानी मैंने आज तक नहीं देखी ! इस कहानी को पढ़कर मुझे अपने देश के महान लेखकों की याद हो आती है !

यही कहानी जगदीश बसु ने हार्पस नामक पत्रिका में छपने के लिए दी। लेकिन वे लोग छापने के लिए तैयार नहीं हुए। उन्होंने कहा--पश्चिम के आदमी पूर्व के आदमियों की जीवन-कहानी पढ़ना पसन्द नहीं करते।

पन्द्रह वर्ष बाद। अमेरिका की यात्रा के समय इसी हार्पस पत्रिका ने रवि बाबू का एक लेख छापा। लेख में पन्द्रह वर्ष पहले की एक घटना का उल्लेख करना वह नहीं भूले। हार्पस पत्रिका से सम्बन्धित कुछ लोग तो काफी उलझन में पड़ गए। और उलझन में पड़ जाने का कारण भी था। रवि बाबू का नाम अब सारे संसार में उजागर हो चुका था।

जगदीश बसु को भी रवीन्द्रनाथ से कुछ कम प्रेरणा नहीं मिली।

दोनों के बीच मैत्री एक ऐसे समय हुई थी जब सत्य की रक्षा के लिए दोनों को ही संघर्ष करना पड़ रहा था।

उस समय तक समूचा वैज्ञानिक जगत जगदीश वसु का लोहा मानने को तैयार न था। बहुत से लोग उनके विरुद्ध थे। संघर्ष करते-करते जगदीश वसु को जब कभी निराशा हुई और वह हताश होने लगे तो रवि बाबू ने उन्हें सहारा दिया, उनका साहस बढ़ाया।

इस मैत्री के बारे में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बाद में लिखा था--

"उम्र तब कम ही थी। सामने का जीवन भोर के कुहासे जैसा था--अस्पष्ट, लेकिन तरह-तरह के रंगों से भरा हुआ। इन्हीं दिनों जगदीश से मेरी पहली मुलाकात हुई। वह भी अब तक प्रतिष्ठा के शिखर पर न पहुंचे थे। पूर्व उदयाचल की अंधेरी दिशा की ओर से खड़ी चढ़ाई पार करते हुए वह

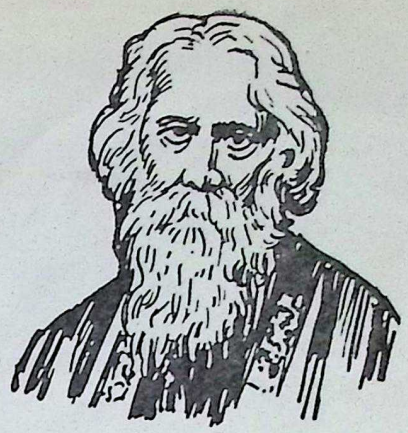

ऊपर की ओर बढ़ रहे थे। कीर्ति रूपी सूर्य ने अभी अपनी अनगिनत किरणें फैलाकर उनकी सफलता को आलोकित नहीं किया था। अब भी बहुत-सी बाधाएं थीं, बहुत से सन्देह थे.....सुख और दुःख के देव और असुर मिलकर जगदीश चन्द्र की तरुण शक्ति को मथ रहे थे--अमृत निकालने के लिए। इसी समय मैं उनके अधिक समीप आया।"

मैत्री के लिए इससे अधिक शुभ समय दूसरा नहीं होता। बाद में तो जीवन की दोपहरी में यह लम्बी-चौड़ी दुनिया आदमी को घेर लेती है, उससे अपना प्राप्य, अपना अधिकार मांगने लगती है।

तब किस से क्या आशा की जा सकती है, किस की दर क्या है, किस की मूल्य-सूची अमिट अक्षरों में छपकर निकलती है--इसके अनुसार ही नीलाम होता है, भीड़ जुड़ती है, तब, मनुष्य के भाग्य के अनुसार फूल-माला, चन्दन, पूजा-अर्चना, मिलती है। परन्तु भोर की सूनी बेला में, अकेले पथिक के खाली हाथ को मैत्री का जो स्पर्श भाग्यवश मिलता है, उससे मूल्यवान वस्तु संसार में दूसरी नहीं है।

एक जगह उन्होंने लिखा है--

"धर्मतल्ला वाले उस घर से निर्जन पद्मा तट तक फैली मैत्री की विस्तृत छवि ! बचपन से मैं अकेला रहा हूं। समाज से दूर--परिवार की चहारदीवारी में, घर के एक कोने में, मेरे दिन बीत रहे थे। जीवन में मेरी पहली मित्रता जगदीश से ही हुई। जगदीश ने मुझे मेरे पुराने, पूर्व-परिचित,

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

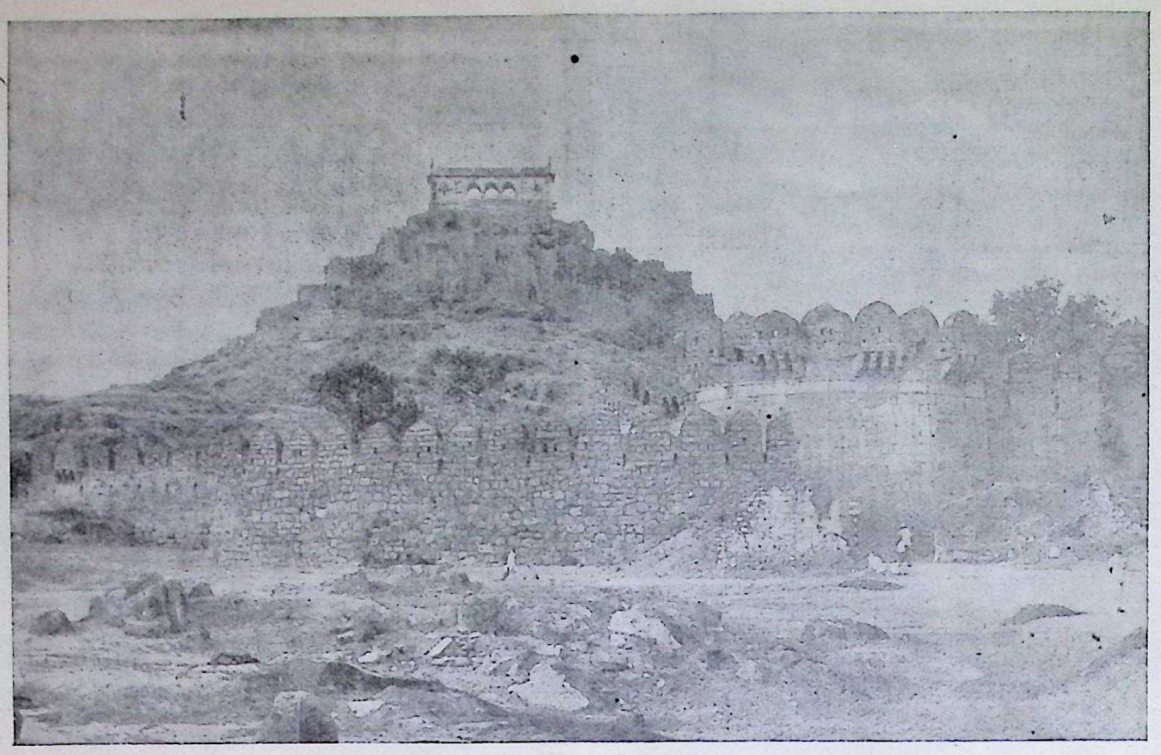

आंध्र प्रदेश आइए और यहां की सुन्दर झीलें, विशाल नदियां तथा श्रीशैलम् तिरुपती, कलाहस्ती, भद्राचलन और लेपाक्षी आदि शानदार मन्दिर देखिए।

विशाखापटनम् में स्थित देश का जहाज कारखाना, मचकुण्ड योजनाकार्य, नागार्जुन सागर योजना कार्य और नक्कापल्ली, वारगंल, करीमनगर और निर्मल के अनोखे कुटीर उद्योगों को देखना न भूलें।

आंध्र प्रदेश के जंगल तो शिकारियों के लिए स्वर्ग के समान हैं। यहां क़िसी भी मौसम में पक्षियों से लेकर शेर तक का शिकार खेला जा सकता है।

आराकु घाटी की स्फूर्तिदायक और स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु इतनी आकर्षक है कि आप कुछ दिन वहां जरूर ही बिताना पसद करेंगे।

आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद शहर समुद्र की सतह से २००० फुट की ऊंचाई पर बसा है और अक्तूबर से लेकर मार्च तक वहां की जलवायु बड़ी सुखद रहती है। गोलकुण्डा का ऐतिहासिक किला, सालार जंग का बेजोड़ संग्रहालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय की इमारत और प्राचीन गौरव के प्रतीक पुराने महल यहां के दर्शनीय स्थान हैं।

सभी दर्शनीय स्थानों पर आधुनिक होटल, यात्रियों के बंगले और विश्राम गृह बने हुए हैं और आने जाने की बहुत अच्छी व्यवस्था है।

विशेष जानकारी के लिए लिखें :

आफिसर इंचार्ज
टूरिस्ट इन्फारमेशन ब्यूरो,
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग,
आंध्र प्रदेश सरकार, हैदराबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

अनुपम त्याग

रघुनाथ प्रसाद विकल

[घटना प्रसंग—गुडफ्राइडे १८९९ को सौथम्पटन से 'कैवेलद्वीप' के लिए 'अस्टला' नामक जहाज दो सौ से अधिक यात्रियों को लेकर जा रहा था कि इतने में……]

लहरें लगीं तीव्रतर होने, हिलने लगा जहाज़;
घबड़ाए यात्रीगण सारे—नहीं बचेंगे आज !
प्रभु से लगे प्रार्थना करने—शांत करो तूफान।
कुशल-क्षेम से मिले किनारा, हे मेरे भगवान।
दया करो प्रभु ! दया करो ! —सब लगे कांपने भय से।
इतने में जलयान अचानक टकराया पर्वत से।
पर्वत जो जलमग्न शिला-सा पड़ा हुआ था भीतर,
उससे टकरा, टूट अचानक, पोत गया जल से भर।
लाइफ-वेल्ट—थे टंगे पोत पर, सब लगे उन्हें पहनने।
उसे पहन कर—लाइफ बोट—पर उछल-उछल कर चढ़ने।
मेरी—राजर्स दौड़-दौड़कर थी दे रही सहारा।
उसने देखा—लाइफ-वेल्ट—हित एक युवक बेचारा।
खड़ा ताकता। उसे वेल्ट दे अपना, मेरी बोली—
जल्द जा चढ़ो, नाव खुल रही, तेरी पत्नी भोली,
बुला रही है। —युवक कह उठा—चलिए, चलिए आप।
मेरी बोली—मेरी चिन्ता छोड़, चढ़ो चुपचाप।
मैं उस पर यदि चढ़ी नाव वह पूरी जा डूबेगी।
अपने लिए नहीं मैं इतने जन को कदापि मरने दूंगी।
नाव अधिक अब बोझ वहन करने से है लाचार।
यात्रीगण, अलविदा ! बढ़ूं, मैं ग्रहण करूं मंझधार।
तब तक नाव खुल गई, इधर था डूब रहा जलयान।
मेरी भी थी डूब रही, करबद्ध किए थी ध्यान !
हो प्रसन्न-चित्त मांग रही थी, प्रभु से यह वरदान—
मैं तो डूबी, औरों को देना विपत्ति से त्राण।

खूब रही

नवीन दवे

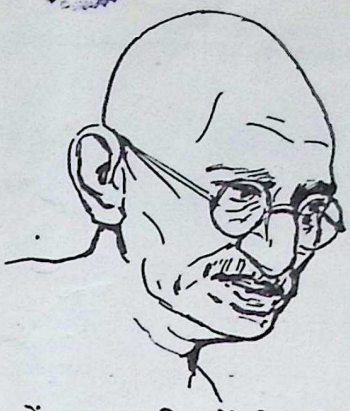

गांधीजी की दो पत्नियां :—

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक चल रही थी। गांधीजी के पास सरदार पटेल तथा खान अब्दुल गफ्फार खाँ चादर सिर पर ओढ़े बैठे थे। बैठक में अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त कुछ पत्रकार भी उपस्थित थे। कई पत्रकार बहुत देर तक यही समझते रहे कि चादर ओढ़े बैठी ये कोई महिलाएं हैं। अंत में जब एक पत्रकार ने श्रीमती सरोजनी नायडू से पूछा कि ये दो चादर ओढ़कर बैठी हुई महिलाएं कौन हैं, तो श्रीमती नायडू ने कहा—आपको नहीं मालूम, ये दोनों गांधीजी की पत्नियां हैं।

भागो, वरना सींग मार दूंगा :—

बापू बड़े विनोदप्रिय थे। एक बार एक सज्जन उनसे मिलने आए। वह बापू का विश्राम करने का समय था। उन सज्जन से बातों के दौरान बापू ने कहा—खान-पान व संगति का असर आदमी पर आ ही जाता है।

इसी समय एक कार्यकर्त्ता बापू के लिए गिलास में बकरी का दूध लेकर आया। उन सज्जन ने बापू के दूध पीने के पश्चात कहा—तो बापू, आपने अभी-अभी बकरी का दूध पिया है, आप में बकरी का असर आ जाना चाहिए।

बापू भी हाजिर जवाब थे। उन्होंने फौरन कहा—क्यों नहीं, मेरे अब सींग निकलने वाले हैं। जल्दी से तुम यहां से भाग जाओ, वरना सींग मार दूंगा।

रानाडे की उदारता—(पृष्ठ १७ का शेषांश)

हुआ है। वह सचमुच एक होनहार और परिश्रमी लड़का था। उसके मरने का दोष भी हम लोगों के सिर है। अगर हम लोग १५ दिन पहले यह बंगला छोड़ देते तो शायद यह दिन देखने को न मिलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल

अनन्त-हरीतिमा और अक्षय सौन्दर्य की भूमि।
सुरम्य सर-सरिताओं और जल-प्रपातों का प्रदेश।
भू-भ्रमण करने वाले अश्रान्त यात्री !
छुट्टी के दिन सुखपूर्वक बिताने की इच्छा रखने वाले भ्रमणार्थी !
आप एकांत-यात्री हों या संघ के साथ हों
इस राज्य की
सुशिक्षित, सुसभ्य एवं सुन्नेही जनता
आपका हार्दिक स्वागत करती है।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

अनुपम मनोरंजन के लिए कथाकली एवं मोहिनियाट्टम।
जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक निवास-स्थानों में देखने के लिए तेक्कड़ी का वन्य जन्तु-विहार।
अविस्मरणीय नौका-विहार के लिए पेरियार झील।

अन्य आकर्षण-केन्द्र

तिरुवनन्तपुरम का अनन्तशयनम् मन्दिर। मट्टाचेरी का यहूदी प्रार्थनालय। कोवलम का स्नान घाट। पालघाट की मलम्पुषा योजना। स्वादिष्ट खान-पान और सुखदायी निवासस्थान।

सब कहीं उपलब्ध हैं।

अधिक जानकारी के लिए लिखिए :
दि डायरेक्टर ऑफ टूरिज्म,
केरला स्टेट
त्रिवान्ड्रम।

जन सम्पर्क विभाग, केरल द्वारा निविष्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लड़के को आप क्या बनाना चाहते हैं?

उसका भविष्य आपके हाथों में है। यदि आप चाहते हैं कि उसे अपना जीवन सफल बनाने के लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा और ट्रेनिंग मिल सके तो आपको अभी से रुपये बचाने की जरूरत है।

नियमित रूप से बचाने में भारत सरकार की 'बढ़ने वाली सावधिक जमा योजना' आप की मदद करती है। अपने डाक घर में एक निश्चित रकम नियमित रूप से हर मास जमा करते रहने पर ५ या १० वर्ष बाद आप एक बड़ी रकम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी रकम पर कोई आयकर नहीं लगता। अवधि पूरी होने पर ५ वर्षीय खाते में लगभग ३.३ प्रतिशत और १० वर्षीय खाते में ६.८ प्रतिशत ब्याज मिलता है।

राष्ट्रीय बचत संगठन

बढ़ने वाली सावधिक जमा योजना के बारे में विस्तृत जानकारी आप अपने डाक घर से प्राप्त कर सकते हैं

DA 1818

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

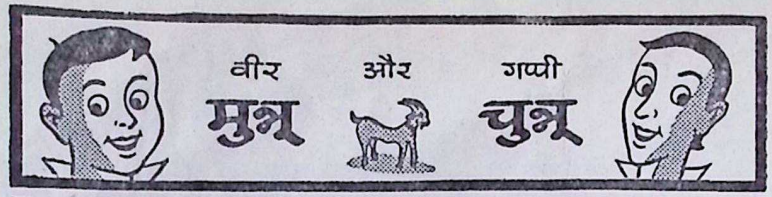

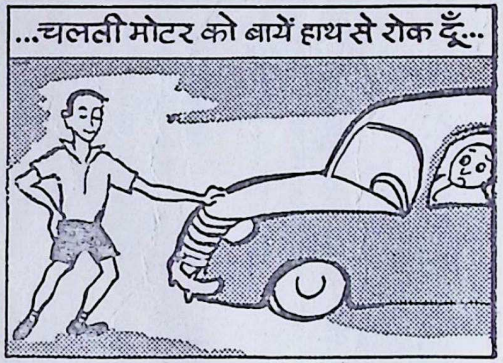

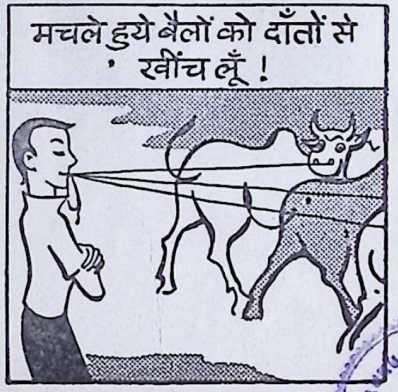

DL 479A-50 HI

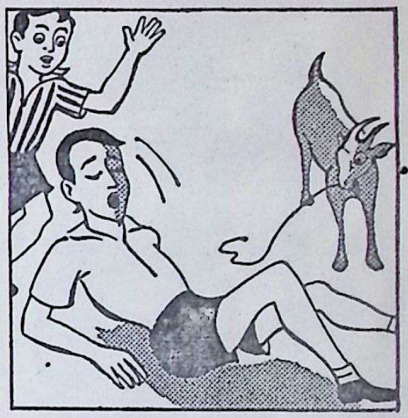

हाँ बच्चो, ताकत के लिए 'डालडा' वनस्पति बड़ा जरूरी है। इस में विटामिन ए और डी मिलाये जाते हैं। 'डालडा' में पके खाने बड़े स्वादिष्ट होते हैं। अपनी माताजी से कहिये कि वे आप का खाना हमेशा 'डालडा' ही में बनायें!

डालडा

हिंदुस्तान वीनस लिमिटेड, बम्बई

DL 479B-50 HI

GURUKULA KANGRI LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोला बनाइए

लीला प्रकाश

लीजिए आप अपनी नन्हीं बहन के लिए यह झोला उसी के हाथों तैयार कराइए। इसके बनाने में ज्यादा समय भी नहीं लगेगा और एक आकर्षक वस्तु तैयार हो जाएगी। यह फूल का नमूना भी आप अपनी नन्हीं से ही कढ़वा सकती हैं। केवल उल्टी बखिया, चेन टांके अथवा सादे टांके के सहारे ही इसे अपनी बालिका से बनवाइए। आप स्वयं बनाएं तो भर कर भी काढ़ सकती हैं। मशीन की कढ़ाई के लिए भी यह नमूना उपयुक्त है।

आवश्यक सामग्री

१।२ गज, एक गज अरज का हल्के रंग का कपड़ा (केस मेन्ट, लिनेन या पापलीन)। लीजिए काढ़ने के लिए क्लार्क की लच्छियां लीजिए हरा रंग (५००), लाल रंग (७००) गुलाबी रंग (७३०) पीला रंग (५९०) नीला रंग (५०७)। प्रत्येक की एक लच्छी लीजिए। सिलाई के लिए कपड़े के रंग का डोरा व सुई।

कपड़े में से ३ इंच की पट्टी अरज की तरफ फाड़ लें (१ गज लम्बी होगी।) इसे दोहरी कर के सीलें व सीवन पर इस्तरी करके सीधी कर लें। बीच से काट कर दो कर लें। यह झोले के स्ट्रैप हैं। अब बाकी कपड़े को बीच से मोड़ लें। लम्बान १/२ गज रहेगी। इसमें दोनों तरफ बीचोंबीच नमूना खींच लें। अब उल्टी बखिया चेन टांके, पत्ती व डंडी हरे रंग से बनाएं। बीच का बड़ा फूल लाल रंग से चेन टांके या काज टांके से बनाइए। ऊपर के दो फूल भी गुलाबी बनाइए। बीच का गोला पीले से भर दें। ऊपर की कली का बाहरी भाग हरा व बीच का गुलाबी बनाएं। नीचे का फूल नीले रंग से बनाइए। फूल काढ़ने के बाद झोला सीना चाहिए।

ऊपर के दोनों किनारे के पल्लों को दोनों ओर दो इंच तक पतला मोड़ कर तुरप लें। किनारे की ओर से ४ इंच छोड़ कर दोनों पल्लों में दोनों ओर एक-एक प्लेट डाल लें इसी पर बाद में स्ट्रैप भीतर की ओर

लगाकर टांकने होंगे। अब १ इंच मोड़ कर ऊपर के दोनों पल्ले तुरप लें।

अब दोनों पल्लों को बराबर कर के दोनों साइड सी लें। नीचे कपड़ा दोहरा किया गया था, वहां सिलाई की जरूरत नहीं है। जहां प्लेट डाली थीं, वहां नीचे की ओर स्ट्रैप (१ इंच) रख कर सफाई से टांक दें।

लीजिए झोला तैयार है।

मैं अपने कर्तव्य से क्यों चूकूं—(पृष्ठ ३ का शेषांश)

कौन था? यह सर गुरुदास बनर्जी थे। यह कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रथम भारतीय न्यायाधीश थे और कलकत्ता विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भी थे। उनकी कर्त्तव्य-भावना से प्रसन्न होकर सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिटको

काली टूथ पावडर

हमेशा इस्तेमाल करनेसे दांत मोती समान चमकीले होते हैं।

बिटको केमिकल इन्डस्ट्रीज , नासिक रोड.

HVB

छोटे बच्योंकी ताकद और तन्दुरस्ती के लिये अत्युत्तम

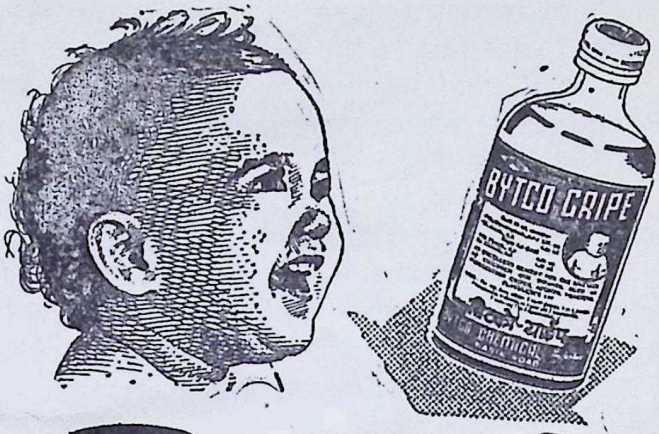

बिटको

ग्राईप

भरपुर कॅल्शियम युक्त

बिटको केमिकल इन्डस्ट्रीज, नासिक रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मित्र—(पृष्ठ ३१ का शेषांश)

घर के कोने से बाहर निकाला—ठीक उसी तरह जैसे शरत बाबू के ओस से भीगे सूर्योदय की महिमा मुझे सदा मेरे शयन कक्ष से बाहर खींच लाती है।"

जगदीशचन्द्र की प्रतिभा को रवीन्द्रनाथ ने तभी पहचान लिया था। इस सम्बन्ध में उन्होंने और भी कुछ लिखा है—

"अपने मित्र में मैंने एक प्रकाश देखा था। मुझे इस बात का गर्व है कि दूसरों के सामने यह सत्य प्रकट होने से पहले ही मैंने सही अनुमान लगा लिया था। प्रत्यक्ष रूप से हिसाब लगा कर जो श्रद्धा की जाती है, उनके लिए मेरी श्रद्धा उस जाति की न थी।"

जगदीशचन्द्र जब सत्तर वर्ष के हुए तो उनकी वर्षगांठ बड़ी धूमधाम से मनाई गई। उस अवसर परं रवीन्द्र बाबू ने एक कविता पढ़ी थी। सुना दूं तुम्हें भी ?

निपट अकेले थे साधना के क्षेत्र में तुम——
बाधा वेष्टित रुद्ध मार्ग संशय का संध्याकाल !
कंठ में तुम्हारे कवि ने बढ़कर डाली जयमाल !
जनता के समर्थन की अपेक्षा न थी समीप !
दुर्दिन में रिक्त अर्घ्य-थाली में जलाया लघु दीप !

जगदीशचन्द्र ने उस दिन कहा था :—

अपने सारे प्रयत्नों में मैं कभी अकेला नहीं रहा। जब हम दोनों अप्रसिद्ध थे, जब हमें कोई जानता नहीं था, तभी से रवीन्द्रनाथ मेरे साथ हैं। दुविधा और संशय के उन दिनों में भी उनका विश्वास कभी नहीं डिगा।

विज्ञान ने कविता का हाथ पकड़ा, कविता ने विज्ञान का।

इसीलिए तो देश ने आगे कदम बढ़ाया।*

*पीपल्स पब्लिकेशन्स की पुस्तक 'जगदीशचन्द्र वसु' से साभार उद्धृत

किशोरों के लिए

उपन्यास
और
कहानी

नयनाभिराम आकर्षक पुस्तकें

गुलिवर की यात्राएँ
रॉबिन्सन क्रूसो
ख़ज़ाने की खोज में
कठपुतला
जादूनगरी
रॉबिनहुड
वीर सिपाई

प्रत्येक का मूल्य १.५० रु०

डेविड कॉपरफ़ील्ड
क़ैदी की करामात
बर्फ़ की रानी
जादू का दीपक
अस्सी दिन में दुनिया की सैर
चमत्कारी तावीज
काला फूल
तीस मारखाँ चाँदी का बटन

अनुवादक : श्री श्रीकांत व्यास

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

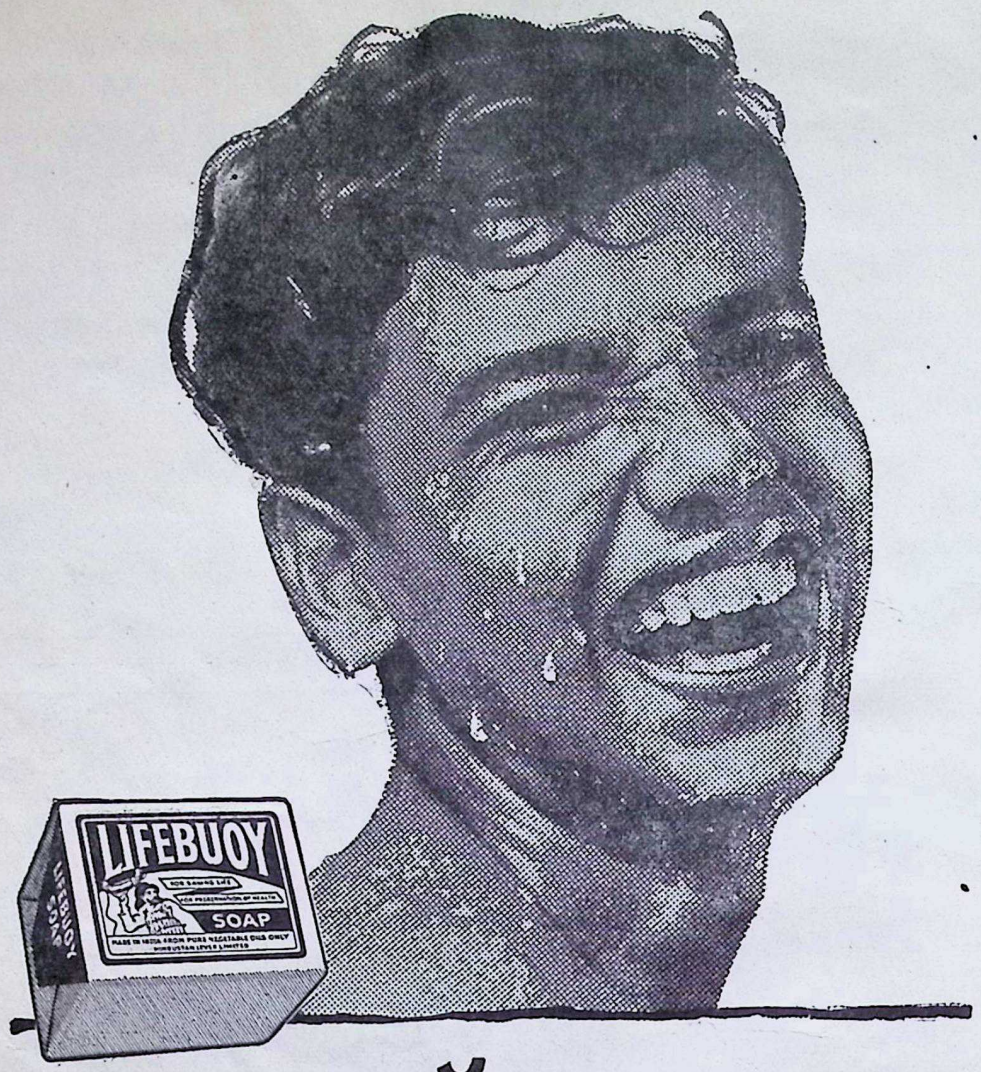

लाइफ़बॉय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहां!

गरमी, पसीना, घबराहट ...! जब आपका दम घुट रहा हो तो लाइफ़बॉय से नहाने का क्या आनन्द आता है! आपकी सारी थकान और पसीने की घबराहट फ़ौरन दूर हो जाती है और तबीअत में एक नई ताज़गी आ जाती है। आप कुछ भी काम करते हों गन्दगी से नहीं बच सकते। लाइफ़बॉय ग़न्दगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है और आपकी तन्दुरुस्ती की रक्षा करता है। लाइफ़बॉय से आपका सारा परिवार तन्दुरुस्त रहेगा।

L. 18-23 HI

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अंग्रेजी कथा के आधार पर—

जीवन डोर

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

सावित्री देवी वर्मा

राजू एक छोटा-सा प्यारा-सा लड़का था। उसके घुंघराले काले-काले बाल और गो ा-मटोल हाथ पांव तथा हँसता हुआ गोरा-चिट्टा चेहरा सब को मोहता था। वह मां का दुलारा बाप का प्यारा था। अपनी तोतली-तोतली बातों से वह सब का मन हरता। मां उसे लोरी गा-गाकर सुलाती, पुचकार कर उठाती। बाप काम पर से जब भी लौटता उसके लिए हर रोज कोई न कोई नई चीज लेकर आता। इसी लाड़-चाव में राजू के बचपन के सुनहले पांच बरस बीत गए।

एक दिन उसके बाबूजी उसे स्कूल में दाखिल करा आए। आखिरकार राजू को पढ़ना-लिखना भी तो सीखना था। बिना पढ़े-लिखे कौन होनहार बना है? इसी तरह कई साल बीत गए। अब राजू को पहले जैसी आजादी नहीं थी। यदि वह कोई गलत काम करता तो उसे डांट पड़ती, मां रोकती-टोकती। पाठ सीख कर नहीं ले जाने पर उसे क्लास में मुंह पर उंगली रख कर कोने में खड़ा होना पड़ता। कहना नहीं मानने पर पिताजी उसे नए खिलौने नहीं देते। मास्टरजी उसे डांटते।

राजू! लो, इसे संभाल कर रखो। यह तुम्हारी जीवन डोर है।

एक दिन वह स्कूल पाठ सीख कर नहीं गया। उसे अध्यापिका ने छुट्टी हो जाने के बाद क्लास में भी कुछ देर तक रोक रखा। इससे राजू का मन बड़ा उदास हो गया। वह शाम को बगीचे में एक कोने में बैठकर सोचने लगा—यह पढ़ाई भी क्या मुसीबत है। जब मैं स्कूल नहीं जाता था तो कितनी मौज थी। दिन-दिन भर खेला करता था। यह सोचते-सोचते उसे ऐसा लगा कि मानो एक परी उसके पास आई है। उसके हाथ में रेशम की डोरी का एक गोला है। वह गोला राजू को देकर परी बोली—राजू! लो, इसे संभाल कर रखो। यह तुम्हारी जीवन डोर है। जब तुम्हें किसी बात की इच्छा हो इसकी डोरी को झटका देना। डोरी खिंच जाएगी। पर याद रखना इस डोर का सिरा भी है। उसके समाप्त होते ही तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति का अन्त हो जाएगा। इसलिए इसे सोच-समझकर झटका देना। यदि अक्ल से काम लोगे तो तुम्हारी जिन्दगी सुख से बीतेगी।

राजू उस गोले को अपने दराज में रखकर कुछ दिनों के लिए उसे भूल गया। एक दिन गुल्ली-डंडा ठीक करने के लिए उसे चाकू की ज़रूरत पड़ी, उसने चाकू निकालने के लिए अपनी मेज का दराज खोला। उसे जीवन डोर का गोला दिखाई पड़ा। एकदम से उसके मन में खयाल आया—अरे, मैं तो भूल ही गया था इस करामाती गोले के बारे में। क्यों न इसको एक बार आजमा देखूं। यदि यह सचमुच में चमत्कारी है, तो इसको थोड़ा-सा खींचने से मेरी पढ़ाई की मुसीबत शायद खतम भी हो जाए।

जैसे ही राजू ने उस जीवन डोर को थोड़ा-सा झटका देकर खोला, उसे ऐसा लगा कि वह एक बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

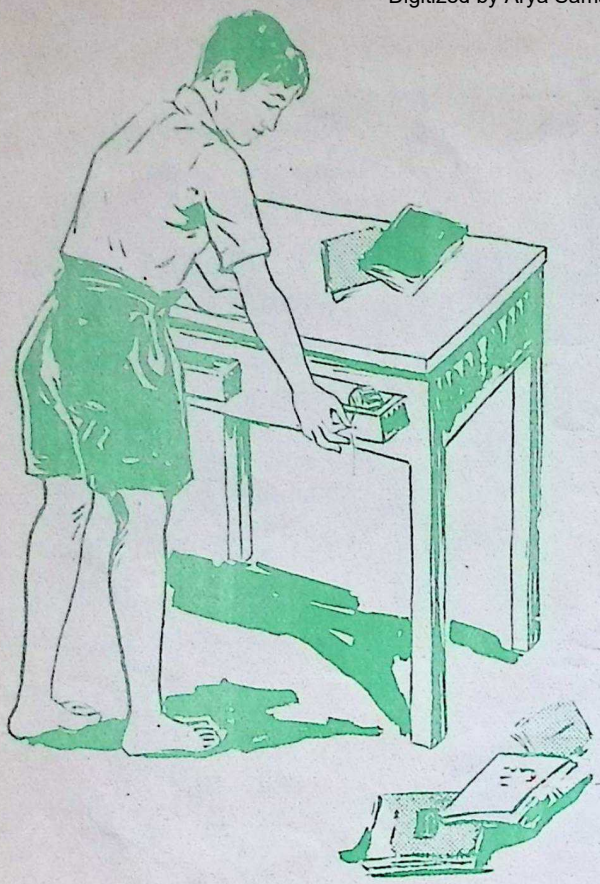

उसने चाकू निकालने के लिए अपनी मेज का दराज खोला। उसे जीवन डोर का गोला दिखाई पड़ा।

से बढ़कर एक दम १५-१६ बरस का किशोर बन गया है। उसने स्कूल की सब पढ़ाई खतम कर ली है। उसे अब खिलौनों में कोई दिलचस्पी नहीं रही। तैरना, शिकार, फुटबाल, गेंद, बल्ला और टेनिस आदि खेलने का उसका शौक बढ़ गया है। राजू को लगा कि जीवन का आनन्द तो असल में अब है।

कुछ साल बाद एक दिन घर पर उसके मौसेरे भाई अपने दोस्तों के साथ आए। वह वकालत पढ़ते थे। राजनीति की बातें करते थे। राजू को लगा मैं भी इनकी तरह एक वकील बन जाऊं तो कितना अच्छा हो। बस उसने जीवन डोरी को एक झटका और दिया। अब वह अपने भाई की तरह एक सुन्दर नौजवान था। उसकी वकालत खूब चमकी। उसने धन और यश दोनों ही कमाया। वह दुनिया की सैर-सपाटे के लिए निकला। उसने खेल-तमाशों, थियेटरों और नाच-रंग में भाग लिया। इन सबसे थककर उसकी इच्छा हुई अब मैं चैन से बैठूं।

इतने बरस कैसे चुपचाप गुजर गए थे! पता भी नहीं चला कि कब वह जवान हो गया। और उसके मां-बाप बूढ़े हो गए।

फिर एक दिन उसके मन में आया कि मेरे पास धन है, दौलत ह। घर-बार है। कितना अच्छा हो यदि इस घर में मेरी इन खुशियों को बंटाने वाली एक बीवी भी होती। पालने में एक नन्हा-मुन्ना-सा बच्चा भी होता। और एक दम से उसे उस जीवन डोर की याद आई। उसने गोले को एक झटका दिया। सर्र से कुछ साल और गुजर गए। अब राजू का घर बाल-बच्चों की किलकारी से गुलजार था। जब वह काम से लौटता था तो नन्हें-नन्हें बच्चे उसके पांवों से लिपट जाते थे। उसकी वफादार घरवाली उसके जीवन में खुशियां बिखेरती थी। राजू चाहता था कि बस अब यही दशा हमेशा बनी रहे। पर उसकी नेक पत्नी ने उसे याद दिलाया—हमें अपने बच्चों का भी तो सोचना है। उन्हें अपने पांवों पर खड़े होने योग्य बनाना है। उन्हें पढ़ा-लिखा कर कमाने के लायक बनाकर उनका घर भी तो बसा देना है। तभी मां-बाप का फर्ज हम पूरा कर सकेंगे।

बस, राजू ने जीवन डोर को फिर झटका दिया और उसकी जिन्दगी ने करवट ली। अब उसके बच्चे सब पढ़-लिख कर होशियार बन गए थे। अपने धन्धे और घर-बार को लेकर वे सब मस्त थे।

जिन्दगी फिर कुछ साल मन्द गति से चलती रही। जीवन में कुछ सूनापन आ गया था। राजू को एक दिन इसी उधेड़-बुन में देखकर उसकी पत्नी ने कहा—इस उदासी को दूर करने के लिए अब हमें पोते-पोतियों की जरूरत है।

राजू को यह बात बहुत पसंद आई। उसने जीवन डोर के गोले को निकाला। देखा, अब वह झटके देते-देते बहुत ही छोटा रह गया था। राजू ने उसे संभाल कर एक छोटा सा झटका और दिया। जिन्दगी में फिर एक बार चहल-पहल की धूमधाम मच गई। लड़के-लड़कियों की शादी हुई, उनके बच्चे हुए। नाती-पोतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

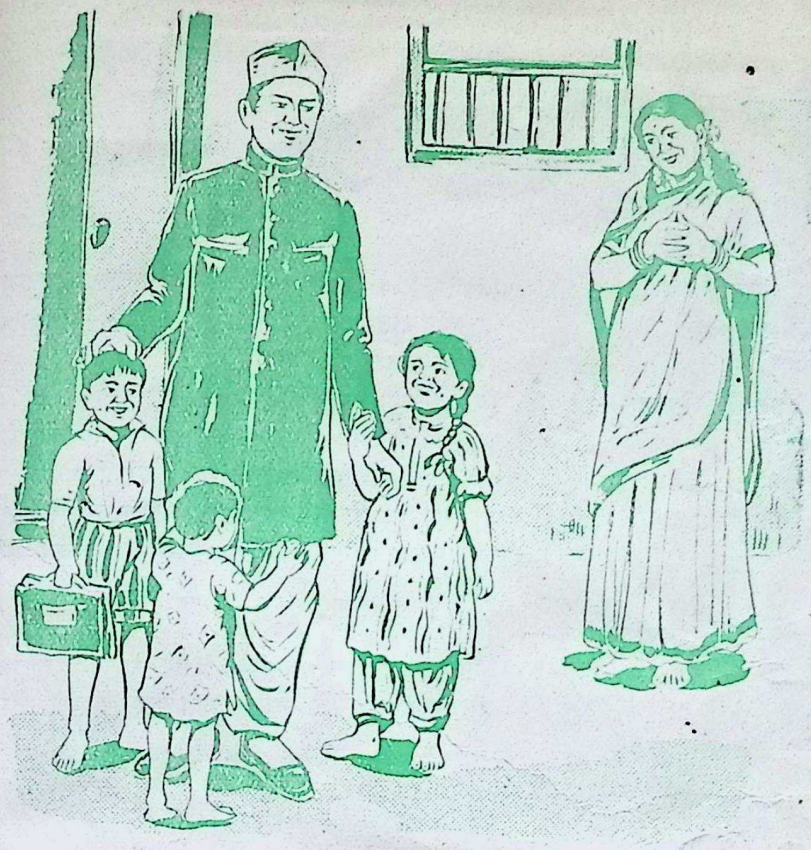

जब वह काम से लौटता था तो नन्हें-नन्हें बच्चे उसके पांवों से लिपट जाते थे। उसकी वफादार घरवाली उसक जीवन में खुशियां बिखरती थी।

की किलकारियों से उनका घर गूंज उठा। राजू और उसकी पत्नी इन बच्चों में मस्त थे।

एक दिन अपने अस्सीवें जन्म-दिन पर राजू को इस जीवन डोर की याद आई। गोले में अब केवल एक-दो लपेटे ही डोरी के बाकी रह गए थे। राजू ने सोचा अब मैं और क्या मांगू अपने परिवार के लिए? इतने में नाती-पोतों का झुंड चिल्लाता हुआ आया—बाबाजी, जन्म दिन मुबारक हो! नानाजी, जन्म दिन मुबारक हो!!

बच्चे उसके कंधे और गोदी में उछल-कूद मचाने लगे। राजू ने सिर उठाया, देखा, उसकी पत्नी दरवाजे पर खड़ी यह तमाशा देखकर मुस्करा रही थी। राजू की आंखों में आनन्द के आंसू आ गए। उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे जीवन डोर को हमेशा ठीक समय पर ही खींचने की अक्ल दी। फिर उसने फूल से नन्हें बच्चों के सिर चूमे और बचे-खुचे जीवन डोर के गोले को दराज में रखकर ताला लगा दिया। अब जीवन डोर को आखिरी झटका देने का काम उसने भगवान पर ही छोड़ दिया।

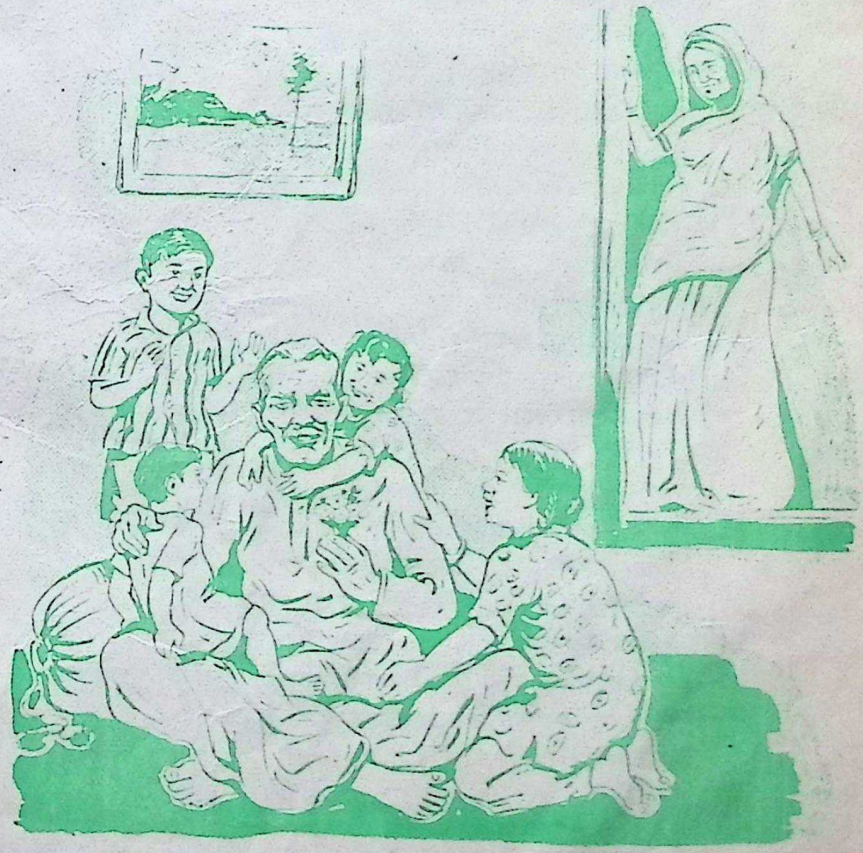

राजू ने सिर उठाया, देखा, उसकी पत्नी दरवाजे पर खड़ी यह तमाशा देखकर मुस्करा रही थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

तुलसी का राम-प्रेम

केशरी किशोर भाटी

(रघुनाथजी के मन्दिर के सामने एक बालक भजन गा रहा है। "रघुबर तुम को मेरी लाज।" भजन समाप्त करके)

बालक-- हे रघुनाथजी, भूख लगी है। मामी कहती थी, तुम्हीं मेरी मां हो। बोलो न, मेरी मां! भूख लगी है। मुझे भोजन दो और मां की तरह प्यार भी करो। (भूख से व्याकुल होकर रोने लगता है। पुजारी का ध्यान उधर जाता है।)

पुजारी-- क्यों रोता है लड़के?

बालक-- भूख लगी है, रामजी खाने को नहीं देते।

पुजारी-- तेरा नाम क्या है?

बालक-- मामी कहती थी कि मैं राम का गुलाम हूं, वैसे मेरा कोई नाम नहीं है।

पुजारी-- नाम बोलो भाई, राम के गुलाम तो सभी हैं। लो, प्रसाद खालो।

बालक-- (प्रसाद लेकर) आप बड़े दयालु हैं पुजारीजी! मेरी मां को भी मरे साथ भेज दीजिए। मेरी मामी कहती थी, य रामजी ही मे ी मां है। इन्हें मुझे दे ीजिए, पुजारीजी!

पुजारी-- पागल हुआ है लड़के! मन्दिर में से भगवान को ले जाना चाहता है? जा भाग यहां से। अब सोने का समय हो गया है। मन्दिर के पट बन्द होंगे। (बालक को निकालकर ार बन्द कर लेते हैं।)

बालक-- तो ये पुजारीजी ही मेरी मां को मेरे पास नहीं आने देते। पर आज मैं अपनी मां को जरूर अपन साथ ले जाऊंगा। इस खिड़की से अन्दर घुस जाऊं? (अन्दर जा कर) अहा मेरे रामजी! मेरी मां! अब हम साथ ही रहेंगे। चलो यहां से भाग चलें (मूर्ति उठा कर खिड़की से कूदता है। पुजारी आहट सुन कर आते हैं।)

पुजारी-- कौन है? लड़के! तू क्या कर रहा है? तेरे हाथ में क्या है?

ालक-- पुजारीजी! मैं और मेरे भगवान यहां से कुछ भी नहीं ले जा रहे हैं। आप चिन्ता न करें। (भाग जाता है)

पुजारी-- (चिल्लाकर) अरे! दौड़ो! एक बालक रघुनाथ जी की मूर्ति चुरा कर भाग रहा है, इसे पकड़ो। (सेवक दौड़ते हैं)

बालक-- (दौड़ते हुए) चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जाएं। पर अब मैं अपने भगवान की मूर्ति किसी को भी नहीं दूंगा। (ठोकर खा कर गिर जाता है, पर फिर उठ कर भागता है। सामने तुलसी का बाग देखकर उसमें घुस जाता है और गिर कर मूर्छित हो जाता है।)

नरहरिदासजी-- (सेवकों से) क्या बात है?

सेवक-- (प्रणाम करके) गोस्वामीजी! एक बालक रघुनाथ जी के मन्दिर स मूर्ति चुरा कर आपके बाग में भाग आया है। हम पुजारीजी की आज्ञा स मूर्ति लेने आए हैं।

—आप चाहे मुझे कुछ भी दण्ड दें, पर मैं इन्ह किसी को भी नहीं दूंगा।

नरहरिदासजी-- (बालक के पास जाकर) उठो, बेटा! क्या नाम है तुम्हारा?

बालक-- मामी कहती थी कि मैं राम का गुलाम हूं। ये रामजी ही मेरे माता-पिता सब कुछ हैं। आप चाहे मुझ कुछ भी दण्ड दें, पर मैं इन्हें किसी को भी नहीं दूंगा। (फिर भागने की चेष्टा करता है।)

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

वीरबाला लाइना

जनार्दन दुबे 'पीड़ित'

अबीसीनिया में थी एक लड़की,
नाम था जिसका लाइना ।
प्यारा मुखड़ा उसका चमके,
चमचम जैसे आइना ।
सेना के सरदार पिता की,
प्यारी राजदुलारी थी ।
अभी उमर थी नहीं अधिक,
कुल तेरह की सुकुमारी थी ।
इटली से था युद्ध चल रहा,
जो अब दो दिन से था बन्द ।
था सरदार इसी चिन्ता में,
इसीलिए था चेहरा मन्द ।
लाया समाचार एक सैनिक—
इटली की सेना चढ़ आई !
चौंक पड़ा सरदार अचानक,
फौरन बिगुल तेज बजवाई ।
खाली कर दो शहर—
यही था हुक्म दिया सरदार ।
छोड़ शहर सब लगे भागने,
मचा हुआ था हाहाकार ।
लड़की बोल उठी—पापा,
मैं नही यहां से भागूंगी ।
जन्मी खेली, पली जहां,
वह देश नहीं मैं त्यागूंगी !
समझाया सरदार बहुत,
पर लड़की जब न मानी ।

बोला—भेद न पाए दुश्मन,
देश की रखना इज्जत पानी !
राष्ट्रीय झंडा लिए हाथ म,
शांत खड़ी थी लड़की ।

तब तक कुछ सैनिक आए,
आवाज एक फिर कड़की—
कहां छिपे हैं लोग ?
नहीं बतलाऊंगी—वह बोली—
समझाया, भय दिखलाया,
फिर भी वह कुछ न बोली ।
एक सैनिक ने अपने बूटों से,
नन्हें पैरों को कुचल दिया ।
फिर हंटर ले उस लड़की का,
खाल खींचना शुरू किया ।
—हा ! हा ! करती वह रही मगर,
कुछ भेद देश का नहीं कहा ।
जर्जर हो कांप रही थी वह,
कप्तान देखता खड़ा रहा ।
फिर मार-मार हत्यारों ने—
लड़की का प्राण निकाल लिया ।
यह सुनकर देश-वासियों ने,
भी मर मिटने की ठान लिया ।
वे निकल पड़े तलवारें ले,
इटली की सेना भाग गई ।
था देश बना आजाद किन्तु,
लड़की थी स्वर्ग सिधार गई ।
है नहीं लाइना आज यहां,
पर अमर बनी है अब तक ।
वह अमर रहेगी दुनिया में,
चन्दा सूरज है जब तक ।

बड़ों की महानता

नारायणसिंह सावन

एक बार महाराज रणजीतसिंह कहीं जा रहे थे । अचानक एक मिट्टी का ढेला आकर उन्हें लगा । महाराज को बड़ी पीड़ा हुई । सिपाही दौड़े और ढेला मारनेवाली एक बुढ़िया को महाराज के सामने उपस्थित किया । बुढ़िया ने हाथ जोड़कर महाराज से कहा—महाराज ! मेरा बच्चा तीन दिन से भूखा है, अभी तक उसे खाने को कुछ नहीं मिला है । मैंने उस पेड़ के पके फल को देखकर ढेला मारा था । यदि ढेला लग जाता तो एक-दो फल गिर जाते और उन्हें मैं अपने बेटे को खिलाकर उसक प्राण बचा सकती, पर दुर्भाग्य से ढेला आपको लग गया । मैं निर्दोष हूं, महाराज !

उस गरीब बुढ़िया की बात सुनकर महाराज रणजीतसिं सिपाहियों से कहा—इस बुढ़िया को एक हजार रुपए औ का खाने का सामान देकर आदर से घर भेज दो ।

इतने में उनके एक मंत्री ने कहा—महाराज इसने आपको मिट्टी का ढेला मारा, इसे तो कड़

महाराज रणजीतसिंह बोले—भाई ! जब मारने पर सुन्दर और मीठा फल देता है, तब दण्ड दे सकता हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू की विनोद-प्रियता

डा० हरिनन्दन पांडे

एक बार एक अंग्रेज पत्रकार ने बापू से पूछा—मि० गांधी, आप अपने देश के प्रिय नेता हैं, फिर भी आप हमेशा रेल के तीसरे दर्जे में ही सफर करते हैं। ऐसा क्यों?

गांधीजी ने तुरन्त उत्तर दिया—इसलिए कि रेल में चौथा दर्जा नहीं है।

\+ + +

एक बार हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार बनारसीदास चतुर्वेदी ने बापू से कहा—बापू! इन दिनों मैं आपके विरुद्ध अपने पत्र में काफी लिखता हूं।

गांधीजी झट बोल उठे—यह तो माना, लेकिन तुम्हारे लेख को कोई पढ़ता भी है?

\+ + +

एक बार गांधीजी के बाएं हाथ की केहुनी में कुछ दर्द था। डाक्टर आए। उनसे भिखमंगी पर बात छिड़ गई, डाक्टर साहब ने कहा—हट्टे-कट्टे आदिमयों का भीख मांगना बन्द करवा देना चाहिए।

गांधीजी ने कहा—अवश्य, आप उचित कहते हैं।

—तो आप इसके लिए कानून बनवाएंगे?

—हां, अवश्य कानून बनवाऊंगा। मगर उसमें मुझ जैसों के लिए भीख मांगने की छूट रख ली जाएगी।

\+ + +

एक बार प० मोतीलाल नेहरू अपने पुत्र जवाहरलालजी के साथ गांधीजी से मिलने साबरमती आश्रम पहुंचे। शाम का समय था। गांधीजी की कुटिया में एक नन्हा-सा दीप जल रहा था, और दरवाजे पर गांधीजी की लाठी खड़ी रखी थी। मोतीलालजी के भीतर घुसते ही दीप बुझ गया। अंधेरा हो जाने के कारण जवाहरलालजी लाठी से जा टकराए, घुटने में चोट लग गई। उस समय जवाहरलाल तरुण थे, फिर क्या था आप झुंझला कर गांधीजी से पूछ बैठे—आप तो दिन-रात अहिंसा की दुहाई देते रहते हैं, फिर लाठी क्यों लिए फिरते हैं?

गांधीजी ने हँस कर कहा—तुम जैसे शरारती लड़कों को दुरुस्त करने के लिए।

\+ + +

एक बार एक सज्जन गांधीजी के पास पहुंचे और बोले—बापू, आपने पशुओं के लिए बहुत किया, परन्तु अब भी एक जानवर बचा जिसके लिए आपने कुछ भी नहीं किया। वह बेचारा जानवर है—

हँसते हुए कहा—क्या ही अच्छा हो कि आप 'अखिल भारतीय पशु-उन्नति' नामक संस्था खोल कर, उसके प्रधान मंत्री कर[illegible]स करें कि इसके लिए मेरा शुभाशीर्वाद आपको

पुजारी— कौन [illegible]

में क्या [illegible] + +

[illegible]ालक— पुजारीजी [illegible]-कान्फ्रेंस में शामिल होने के लिए लन्दन नहीं ले जा रहे हैं। [illegible]निश्चित हुआ। पास खड़े एक अंग्रेज पत्रकार ने पूछा—क्या आप इन्हीं कपड़ों में बादशाह से मिलने जाएंगे?

गांधीजी ने फौरन जवाब दिया—नकली रूप बना कर मैं बादशाह के प्रति अभद्रता प्रदर्शित न करूंगा।

पत्रकार निरुत्तर रह गया।

तुलसी का राम-प्रेम—(पृष्ठ ४४ का शेषांश)

नरहरिदासजी— नहीं बालक! तुम भागो मत। तुम और तुम्हारे रघुनाथजी अब यहीं रहो। मैं तुम्हें पहचान गया हूं। तुम आत्माराम दुबे के सुपुत्र हो। मैं तुम्हें पढ़ाऊंगा। बोलो! तुम्हें आश्रम में रहना स्वीकार है?

बालक— मुझे सब कुछ स्वीकार है। पर मैं अपने रामजी को अपने से दूर नहीं कर सकता।

नरहरिदासजी— नहीं, बेटा! तुम अपने रामजी के साथ ही रहो। तुम मुझे तुलसी के बाग में मिले हो, इसलिए मैं तुम्हारा नाम तुलसीदास रख देता हूं। बोलो, तुम्हें यह नाम पसन्द है?

बालक— यह तो बहुत अच्छा नाम है गुरूजी! अब अपने रामजी के साथ तुलसीदास यहीं रहेगा। (खुशी से नाचने लगता है)

नरहरिदासजी— (सेवकों से) तुम लोग जाओ। महन्त जी से मेरा जय श्री राम कह कर कह देना कि भगवान की इच्छा से यह मूर्ति तुलसीदास के पास ही रहने दी जाए।

(तीन वर्ष पश्चात)

(तुलसीदास अकेले खड़े हुए कुछ सोच रहे हैं।) आज गुरुपूर्णिमा का उत्सव है। सभी विद्यार्थी गुरुजी के लिए भांति-भांति के उपहार ला रहे हैं। पर मैं क्या करूं। सबके मां-बाप और घर द्वार हैं, पर मेरे तो सभी कुछ ये रघुनाथजी हैं। हे भगवान! अब मेरी लाज आपके ही हाथ है। अरे! गुरुदेव तो यहीं पधार रहे हैं।

नरहरिदासजी— (आकर) तुलसीदास! बेटा, क्या कर रहे हो? आओ, आज शुभ मुहूर्त में तुम्हें आशीर्वाद देने आया हूं। (तुलसीदास एक कमल पत्र गुरुजी के चरणों में रख कर दण्डवत प्रणाम करते हैं।)

नरहरिदासजी— (कमल पत्र उठाकर) बेटा! तुलसी! आज तुमने मुझे बड़ी अमूल्य भेंट दी है। जरा पढ़ कर तो सुनाओ इसमें क्या लिखा है?

तुलसीदास— (उठकर पढ़ते हैं)

बन्दौं गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर।

नरहरिदासजी— (प्रसन्न होकर) तुम्हारी रचना में प्राण हैं, विचार हैं। मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हारी रचना लोक कल्याण के लिए हो और तुम्हारा नाम अमर हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

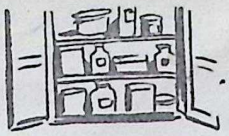

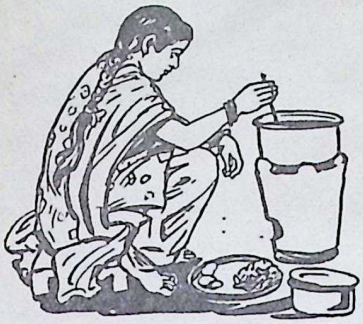

पाक-विज्ञान

शकुन्तला देवी भल्ला

आज कल गर्मी के दिन हैं। शरबत बनाएं और मेहमानों को भी पिलाएं। घर पर बनाए हुए शरबत बढ़िया और स्वादिष्ट अधिक होते हैं। आप नीचे लिखी विधियों के अनुसार शरबत तैयार करें।

आम का शरबत

पके हुए आम कुछ खटास पर हों। उनका गूदा निकाल लें।

गूदा—१२ पौंड (६ सेर)
पानी—१२ पौंड (६ सेर)
चीनी—१२ पौंड (६ सेर)
साईट्रिक एसिड—५ औंस

सब को मिला कर कपड़े में छान लें—सौ पौंड, चीज़ तैयार के पीछे एक औंस पोटैशियम-मेटाबाई-सल्फेट डाल कर बोतलों में भर दें और कार्क अच्छी तरह लगा दें।

नीबू का शर्बत

	मामूली मिठास	ज्यादा मीठा
नीबू का रस ...	१/२ सेर	१/२ सेर
चीनी	१० छटांक	१ सेर
पानी	६ छटांक	१ १/२ छटांक

सबको अच्छी तरह मसल कर कपड़े में छान लें। तैयार पदार्थ में सेर पीछे एक छटांक मेटाबाई-सल्फेट मिला दीजिए। बोतलों में भर कर कार्क लगा दें।

नारंगी का शर्बत

सामग्री :

नारंगी का रस	५ सेर
चीनी	३ १/३ सेर
पानी	३ १/२ सेर
नीबू का रस	१ १/२ छटांक

एसेंस—(१०० नारंगियों के पीछे ५ नारंगियों के छिलकों को बारीक पीस कर मिला दें)

नारंगी का रंग—१० माशे।

सब चीज़ों को मिला कर कपड़े में छान लें।

प्रति सौ सेर तैयार शरबत में १ छटांक पोटैशियम-मेटाबाई-सल्फेट मिला लीजिए। याने एक सेर शरबत में लगभग एक माशा मिलाएं।

फिर उबलते हुए गरम पानी से बोतलों को साफ करके उनमें शर्बत डाल दें और कार्क को अच्छी तरह बंद करके उनके ऊपर मोम लगा दें ताकि हवा अन्दर न जाए और बोतलों में भर कर रख दें।

अदरक का शर्बत

१ पाव अदरक को रात को भिगोकर पीस लें।
१ प्याला अदरक का रस।
१ प्याला नीबू का रस।
४ प्याला चीनी।
८ प्याले पानी।

सब को मिला कर पोटैशियम-मेटाबाई-सल्फेट डाल दें। जिस मात्रा में सन्तरे के शरबत में पोटैशियम-मेटानी-सलफाईट मिलाई है, उसी के अनुसार इसमें भी पड़ेगी।

गुड़ियों का परिवार

दरिया अहमद खान

जी हां, आप गुड़ियों का एक परिवार तैयार करें। अपनी मर्जी के मुताबिक उन्हें वेश-भूषा पहनाएं। देखिए मनोरंजन का मनोरंजन और काम का काम। गुड़ियों के इस परिवार को आप अपनी बैठक में सजाएं। सहेली को भेंट कर दें। बहन के दहेज में दे दें। सभी जगह इसकी मांग है। बढ़िया चीज जो ठहरी। जहां रखेगी वही जगह सज जाएगी। इसे बनाना कोई मुश्किल नहीं है। हर कोई बना सकता है।

सामान—कुछ गज लोहे या पीतल की तार, पांव बनाने के लिए कुछ बटन, रंग-बिरंगी रेवदार कटी हुई पापलिन की पट्टियां या वायस वाईडिंग गुड्डा-गुड़ियों की पोशाक बनाने के लिए रंगदार कपड़ों के टुकड़े, कुछ लेस के टुकड़े, आंख बनाने के लिए काला और लाल रेशमी लच्छी का धागा। चेहरे के लिए हल्का गुलाबी रंग का पापलिन का टुकड़ा, या पुरानी फेल्ट हैट का टुकड़ा, थोड़ी सी रुई।

चित्र न० १ : पहले एक तार का टुकड़ा लेकर दोनों ओर उसके छोर मोड़ लें।

चित्र न० २ : फिर एक छल्ला तार का और बनाएं औ ऊपर की ओर बांहों की तार फंसा दें।

चित्र न० ३ : सिर के लिए एक तार का टुकड़ा मो दो बल दें।

चित्र न० ४ : पांव के लिए एक तार बटन के ले कर उसे नीचे की ओर फंसा

चित्र न० ५ : अब सिर, बांह, धड़ और ट बल दे कर उन्हें जोड़ दें शरीर का ढांचा तैयार बड़े और दो छोटे ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र न० ६ : इस ढांचे पर थोड़ी सी रुई लपेट कर गुलाबी रंग की रेव की पट्टी या वायस वाइंडिंग (इसके पैकेट भी बाजार में मिल जाते हैं) लेकर लपेटें, ताकि तार का ढांचा बिलकुल से ढंक जाए।

चित्र न० ७ : अगर आप के पास पुरानी फेल्ट हैट का टुकड़ा है तो चेहरे उसके काट लें, नहीं तो हल्के गुलाबी रंग की पापलिन की, चेहरे की आकार की छोटी-छोटी सी थैली काट कर सी लें। उसमें रुई भर कर काले धागे से आंख नाक और लाल से होंठ काढ़ लें। भूरी या काली ऊन से सिर के बाल बनाएं।

कपड़े कैसे पहनाएं

कपड़ों को तसवीर में दिए आकार से काट लें। फिर गुड्डे-गुड़ियों को पोशाक पहना कर लेस या सुन्दर डोरी से सिलाई ढक दें। लड़की को लेस रिबन आदि से सजाएं। उसके बाल सुनहली ऊन से बनाएं। लड़के के मौजों की जगह स्लेटी रंग की ऊन पांवों पर लपेट दें। लड़की को फ्राक पहना कर कमर पर रिबन बांध दें और कालर पर लेस का टुकड़ा टांक दें।

मां-बाप बड़े आकार के बनाएं, पर बच्चों के लिए छोटे आकार का ढांचा तैयार करें। आप इन गुड्डे-गुडियों को जोकर या सेठ-सेठानी के रूप में भी सजा सकती हैं।

गुड्डे-गुडियों की एक पलटन सी तैयार कर लें और विभिन्न प्रदेशों के पहनावे उन्हें पहनाएं। लखनऊ के मिट्टी के खिलौने आपने देखे होंगे। कैसे प्यारे लगते हैं। आप इन तारों को मोड़ कर उन खिलौनों की आकृति दे सकते हैं। धोबी, सेठानी, कहारी, कुंजड़िन, आया, फलवाली, फूलवाली सभी बना सकती हैं। तार मोड़ कर गुड़ियां बना लें और उसी के मुताबिक कढ़ाई और सजावट कर दें।

नोट--आपके पास पापलिन, छींट आदि की जो कतरनें बचती हों उन्हें जमा करती जाएं। गुडिया को कपड़े पहनाने के यह काम आएगी। अगले पृष्ठ में जो चित्र दिए गए हैं उन्हें देख-देख कर तारों को मोड़ कर गुड़िया का ढांचा तैयार करने में सहूलियत होगी। अन्त में तारों को सिरे पर भली प्रकार दबा कर मोड़ ताकि वायस वाइंडिंग उन पर सफाई से लपेटी जा सके।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

हजरत मोहम्मद साहब--(पृष्ठ २० का शेषांश)

इसके बाद मोहम्मद साहब ने हलीमा को एक ऊंट, बहुत सी भेड़ें और बकरियां दिलवाईं। इनके सिवाय कुछ अनाज और कपड़ों के साथ बहुत से रुपए भी दिलवाए। यह सामान पाकर हलीमा के आनन्द का पार न रहा। वह मोहम्मद साहब पर आशीर्वादों की वर्षा करती हुई अपने घर चली गई।

करने
आपने पत्र
जिस
उ
कर
पुजारी-- कौन
में क्या
ालक-- पुजारीजी
नहीं ले जा रहे हैं। आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुडियों का ढांचा और पोशाक

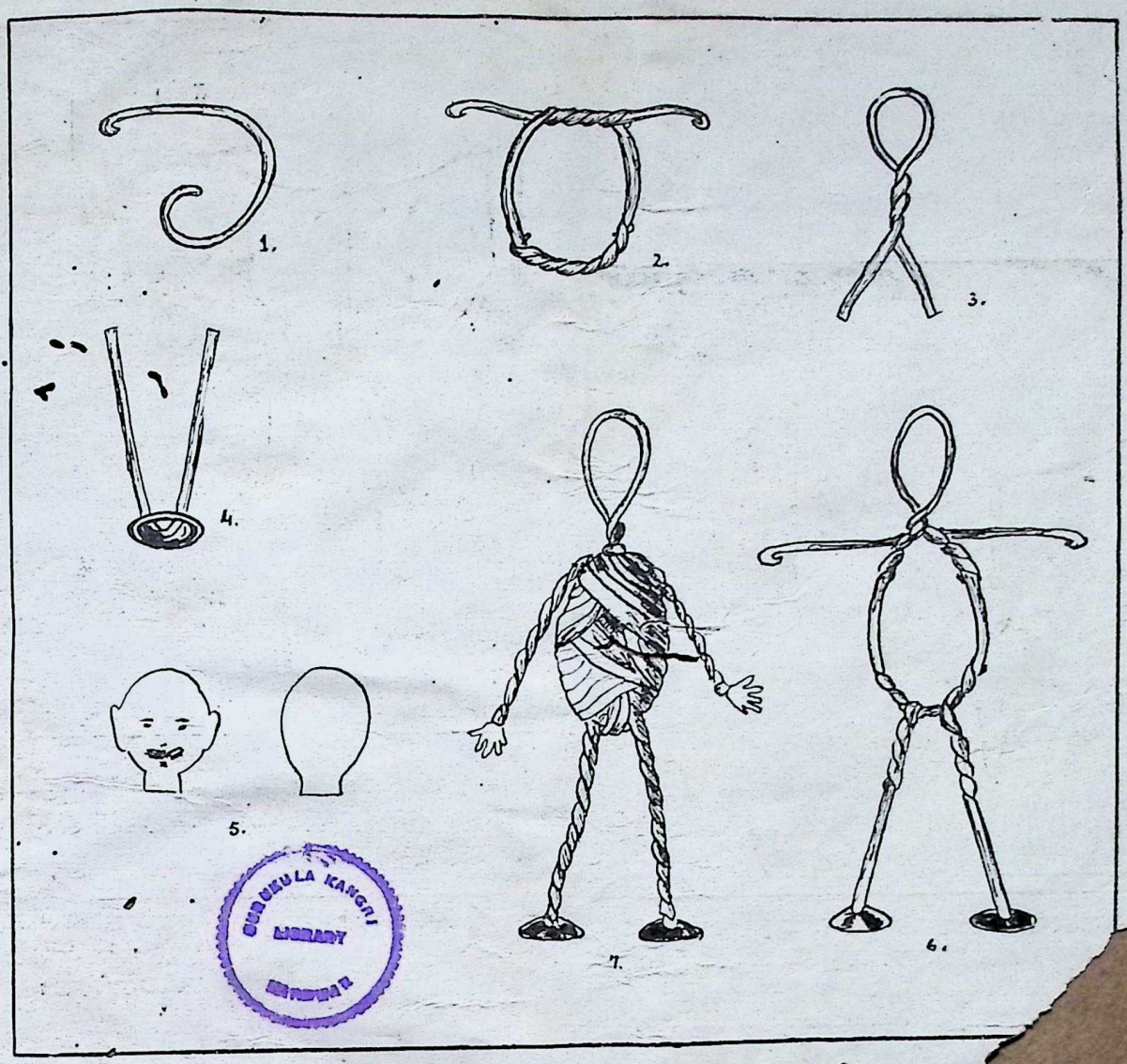

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARIDWAR

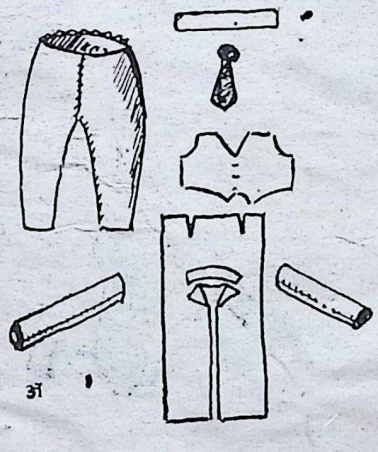

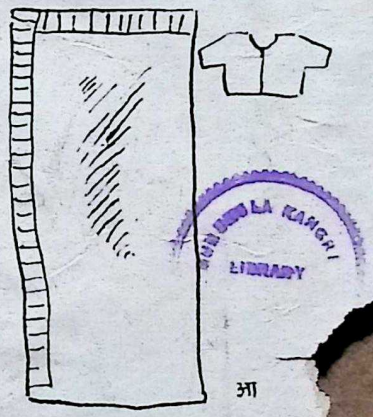

GURUKULA KANGRI LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता का सम्मान

चन्द्रकान्ता जैन

श्री कृष्णदास पाल बंगाल के बहुत बड़े आदमी थे और वायसराय की कौन्सिल के सदस्य थे।

एक दिन एक अंग्रेज किसी काम से उनके दरवाज़े पर आया और उसने एक आदमी को धोती पहने, नंगे बदन दरवाज़े पर खड़े देखा।

...ग भीतर से कृष्णदास भी निकल आए। उन्होंने जब ...अंग्रेज के घोड़े की लगाम पकड़े देखा, तो जल्दी से आगे ...से लगाम खुद ले ली।

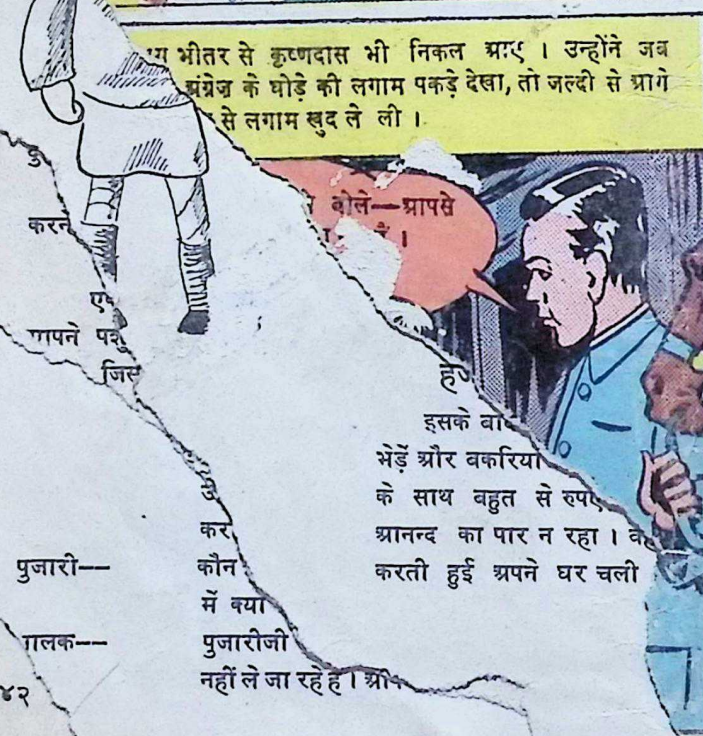

...करने ...
...ए ...
...आपने पशु ...
...जिस ...
...हो ...
इसके बा...
भेड़ें और बकरियां ...
के साथ बहुत से रुपए ...
आनन्द का पार न रहा। ...
करती हुई अपने घर चली ...

पुजारी— कौन ...
में क्या ...
...ालक— पुजारीजी ...
नहीं ले जा रहे हैं। ...

यह सुन कर कि वह सीधा सादा बूढ़ा कृष्णदास जी के पिता हैं, उस अंग्रेज का सिर शरम से झुक गया। उसने आगे बढ़ कर बहुत गरमजोशी से बूढ़े के साथ हाथ मिलाया और बोले—माफ करें, मुझ से भूल हो गई।

उस अंग्रेज पर कृष्णदास पाल की पितृ-भक्ति का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने सोचा इसमें कोई शक नहीं कि यह एक महान बाप का होनहार बेटा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...केटेरिएट, दि... सम्पादित तथा प्रकाशित और
मुद्रणालय ... दाबाद द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Cataloged
19 2008

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar